



ন প্ৰদেশত আন্দিল্লাল মেডিক নাজী লালনা। নক্ষাপূৰ্ক আন্তেল নাছত মংনান্তন কংশিক বা মন্তানিক বাৰ্কিন কৰিছে। বিশ্বীক নামনি নিৰ্মাণ প্ৰায়েশ কৰি লোকৰা ক্ৰিছ প্ৰপূৰ্তি প্ৰতিভাৱি কিংক প্ৰচৰত সংগ্ৰেক কৰিছে। নিৰ্মাণ ক্ৰিকিট বিশ্বীক জনজন্মিনি ক্ৰাণ ক্ৰিকিট ক্ৰিকিট ক্ৰিকিট ক্ৰিকিট কৰিছে। সমূল ক্ৰিকিট ক্ৰিকিট ক্ৰিকিট

#### % শুরের মহিলা।

#### खनहर्शास्त्र ।

করা চকুর নার আমাদিথের
কাবের থ পাম কোশলকারী প্রত্যান কালাল আম্পুন্ন কৌশল বিদ্যান আমাদিপের অবঁণ ক্রিয়া সাম্পন্ন বিষয় জনা জনদীপর ফ্রেডে যত প্রহার স্কার্যাক্র করিয়াছেল, বিশ্ব আননা ভাষা সমান্ত করেওছেল, বিশ্ব আননা ভাষা সমান্ত করেওছেল, বিশ্ব আননা ভাষা সমান্ত করেওছ অর্থান্ত সকল ভাবে দুক্তিপাত করিয়েও লগার কর্ণান্ত স্থানি, আনন্ত শাস্তা ও পাওয়া যায়।

কৰ্ণ একটি অপুথে যতা, ৰাজীপৰ কৰ্ণকৈ এমনি অপুন কৌশলে নিৰ্মাণ করি লাছেন যে তথারা আমরা অনায় দে ব-কল প্রকার শ্বন জান বাভ করিছে সমর্থ হই। আমারিগের কর্ণ কৃষ্ণ মধ্যে যে কোন প্রকার ক্ষিত্র করিছে ব্যাআমরা তথাকার তথাকার তথাকার তথাকার ক্ষিত্র করিছে প্রকার করিছে বিশ্বনিয়াকার কর্ম করিছে ক্ষিত্র করিছে বিশ্বনিয়াকার ক্ষিত্র ক্ষি

एव छाए। जमानि दक्षेट शतिकात के विक्रो वित द द्वाउँ शास्त्रम बार्ट, छोरा वित्रविष् ভारिता भिश्रां दियहार्थम स्ट्रेंट स्या কংগ্র ন্যায় অস্তুত আগণ মন্ত্র কেছ মনেতেও কম্পনা ফ্রিতে পারেনা। পর**্যেশ্র** মনি সকলে চনৎকার পদার্থের সংখোঁটো কৰের রচনা ক্রিয়াছেন ক্র্ডেডারাকে मनि प्रभूखं अठेन अपन कंडिसार्टन हैं ভদার। কোন<sub>্ত</sub>ঞ্জার শহাই সার **সমূত্র** क्हेंटि जरभके थाटक मा। य गाउँ क वर्षासित्राहर व्ययस्था मन्त्र व्यवस्य स्थान बार्ण लड़ीका कहिए। (नर्ग, रम खाद्र केंग्र-নীপারের অপার করন। ফীর্ডন না ক**রিয়া** কোন কপেই নিয়ন্ত থাকিতে পাল্লৈ নাঞ পश्चिम्प्रांत रमेशियोद्यान, व्यक्तिमें बाला धक्क कांग्रे एसम शृहेक काम गंद्र क्लामा का मा विदयन रेनपुन्न नहनाता चीम करि यक शक्क करते, बामापरगत न तीत तह न संख्य भू प्रवेश हम है वर्ग निमृत्य विश्व कतिश धरे खबला सामा प्रकार CER 10 कर रेश केंद्रमा ट्या स्थाप हा शक्कि गर् त्वर ७ म्बल्ड हान वहिना

कर्रांत्र, यञ्चलता क्या गम् ममृत्र त्य ०-কটি আশ্চিষ্য অবয়ৰ আছে, তাহাতে পর-নেপর চমংকার টোশস প্রকাশ করিয়া-(इन। एका भेट्र वे वक्कि मामानाफः कर्न कुरत वर्ष ९ कारनत है। ५ विलेश छे छ इत। अभिनेत्रा । ति नेत्र भूषक् भूषक् त्रामना-च्छित यहा भएन अस्त स्वात स्वाहरू या-বরণ ক্রিল উজ ক্সের্ররচনা ক্রিয়াছেন। में पुरावर है रहान अकात भक्त मश्चाद रहेरन हरकतार से वर्षि हड़केंद्र एक कारन म्थ-নিংও চর এবং ঐ ক্রীছির অপর প্রাশুন্ধিত क्षराजी अर्थ (मरे अस मधानिक इरेग्रा মধ্যিক উপনীত কওয়াতে শব্দ জ্ঞানের উৎপত্তি ময়। বে মৃক্ ছারা কর্ণ কুহরের ক্ষুমা করিয়াজেন, ভাছা এত সুবল যে হয়ি **এছতি** তুল্লকার পশুর, শরীর ভিন্ন মন্ত্র-बार्गि सन कान भी। करत करने छार कुक्दे का मा। विश्व लाक्या वह त्य व-अतः इका प्रत्य वाम् धाउर् इदेश भ-ক্ষেদ্র ভিথপতি হয়। কর্ণ কুহয় ফোন সা-भोग महत्त विवासह मास महत्र छेन्। भाषांत ন্যায়। আৰম্ভন বিশিষ্ট, কর্ণের বাহিন্তে ও াশভা ছরে যে সমস্ত অধ্যাব দেখিতে প্রাওয়া যায় ভাষার একটিও শির্পক নহে, ভাষারা সকলেই আমাদিগের শব্দ জ্ঞানের অন্ত কুল-काष्ट्रतम कतिमा सारक, जनार्था अकिए सन-वद्दरा अवाद दहेता आमानिद्यत अवन में या ध्रश्मात सम्मत करा तालाम करें रच पहित्र गा। कान मिना कि बिनव का शिहि पर्वा पदना दक्षान शकात प्रशासना भक्ष क-रादा पाँच प्रजीतः नारम् शास्त्रप्रमिष रह कि कर् करत गरश दकान मक त्रमन অভিযানত হয় সৈত্ৰপ

STATE OF THE CONTRACTOR OF THE PROPERTY CO.

कृष्टे हत सा। कर्णत जानसहसीत भक्ति अरगरे जायता गर्स श्रकात अवन देश नाज করি। सम्म কোন উভয় বস্তু পর । जिह्छ हरें जा नास्मत छिए निक्क हरे अधि के বস্তু করের প্রতিয়াত ছারা হত গুলি বায়ন) য় পরমাণ্ড ক্ষান্ত হর ততগুলি, সুমক্ পু ক শবের উৎপত্তি হইয়া ধাবে কিন্তু আন কৰ্ণেতে কথন কোন কাৰণ জানত শব্দকেই বিচ্ছিন্ন ও বিভিন্ন প্রবণ করি না, যে কোন কারণে শব্দের উৎপত্তি ইউক, আমরা তাহা मर्जनाई जितिष्क्ति जरुत करण स्वतन कि अनंश्या शत्रमाः, विशिष्ठे बीगः नि सञ्च रहेर्ड ৰে শব্দ নিৰ্মাত হয় তাহা কথান এ**ক নছে**। তাহাও অসংখা, কিন্তু আমরা ভাষাদিগের व्यवस्थितित अक्रिकस्य वे व्यवस्था भस्मत সমষ্টিকে এক প্রিয়া প্রভায় করি। জগ দীখর স্বাম্যাদ্যের শ্রবণেন্দ্রিয়েতে উল্লিখিত কপ আক্র্যা শক্তি প্রদান করিয়াছেন ব-निशारे भागता (वन् वीगामि स्थावा वाना যত্রের শক্তকে মার জ্ঞান করিয়া আনন্দিত सहै विभिन्न विद्याती एतत विकास कुट्यात क শোহন ৰঞ্জীত প্ৰধণ করিয়া অভুল স্থপ লাভ कति अवर बस्तुवा कर्श विषय । आकर्षा म धूत मश्री छ खोषन कतिहा छिन्डटक विस्मामयुक्त করিতে পারি। আমরা যদি প্রত্যেক প্ त्रमात् ममुध्यम मक माज्ञरक खटक कारण অমুভৰ করিতে পারিতাম, তাহা হইলে कान चत उ कान बनिहे जामानिका करने सर्व बिनहा अञ्जितमान-इक्ट मा, भागता এমন জপৰূপ আৰুণ স্থৰে এক কালে ৰঞ্চিত **FROIN** 

व्यासमितात मश्रदकत छेख्य शार्ष छ-सन कर्न मरदाकित वार्ष, किछ बामान-रमंत ताम प्रकिन मण्यू थ १९७१ अदर छे भारा या निर्क त थकात भरपत छेदली सन व्यापता छदकार । छान्न स्रादन कविर्क क्यर्ष रहे। छन्ना विरक्त त्यान भरके क्र स्राप्त स्रादक ना अक्ष्मात व्यक्तिक क्रिकेट स्राप्त स्रादक ना अक्ष्मात व्यक्तिक स्राप्त क्रिकेट स्रादक स्रादक ने विभाविक स्राप्त क्रिकेट स्रादक स्रादक ने विभाविक स्राप्त क्रिकेट यानंव कतिए तादि ना, किंब काराव क्षेत्र मेंगुर्क गंडिंग, त्व खादा अके खादन दिस बा क्षित्र न्या नम् अस्त कतिए शाहि। আমাদিবের চকু বারা আমরা পাতাংখিত যে কোন বিষয় প্রতাক করিছে না পারি, हाहा कामाहित्सत अवदर्शक्तितत बाता म-सुकुछ इस् । अस अहत्यत कमा जगरीयत सन्दर्शिक्षरात्र वक्षि माज १४ कतिया क्राय इत्त्रम नाथे, प्रसूखा बधन मर्ग भव किया दिका-न भक्त धाउन कतिहरू मा चाता, उथन तम मुश नात्माम कविद्यां किव्यिक सम्म खेत्र क-विश्व शास्त्र, मूटणंत मशा किया खबरनंत्रि-েও ১কটি কুত্ৰ পথ আছে, আনেকে স্তুন্দর নপে কোন বিষয় জাতি পৌচর করিবার কলা শারণ কালে মুখ বিস্তার করিয়া যদি অকুষাৎ কোন কারণ রশত: আবণেলিয়ের বহির্দেশস্থ অশন্ত পর্য स्टात शतिया गांस, जाहा कहेताल जातक अयः कारण कावन स्टब्स विकित रहा को हो-ংকু অভ্যান্ত্রস্থ ধারা শবের কিঞ্ছিৎ অনুভব 'হয়। আমাদিধের তাকণ শক্তি মাদুশ তেলস্থিনী হটলে আমরা সম্পূর্ণ ৰূপে নুখা হইতে পারি ফরুণাকর বিশ্বপি-তা তাখাতে তত্ত্বপ করিলাই রচনা করিলা-ह्म। अवर्षक्षित्र देश अस्थिक ममिक क्ततान् इहेटल अस्तरः इत्तत आभाविद्शत कर्त करहे । व कर्रूण रहीय इस्के अवह किश्विक प्रवेश हरेलाउ वामेता पारनक नक আৰণ করিতে না পাইয়া বিশদত ইইতাম।

কর্শান্ত জগণীত আমানিগের আব-শেক্তির ক্রের সহিত প্রের বে কি অন্ত ত সম্বন্ধ নিবন্ধ করিবাছেন, ভাষা এক মুংথ বর্ণন জরিয়া পোন করা যার দা। কোন প্র-কার স্থাব জরা কেনির আমরা তাহাতে কর্ণ পাত না করিয়া কেনির অপেই নিরও বাহিন্তে পারিনা হার্রের উৎপত্তি হই-নে আমানিগের মন সামিন হার্তে ভা হাতে কভিত বাইতে পারেন। শাসেতে ও আরব লেক্তে এই প্রের ক্রিন্তি কর্ম সম্বন্ধ করিছে পুরু হান্তিন আহ্নে ক্রেন্ত্র

राष्ट्रि नावव स्ट्रा त्नाक पुरेग्ड कर निर्धान कतिश होरात श्रमक्त का श्रमक्तानो द कात करा अवस्था आवर्षन क्रिकेट रह बीय कर्रामेश्य एशमेश नहीं व कार्य हाना अकात केंद्रक है तार्थत आठीकात कतिक. वनः कान कान मही विश्वन बाकि स भन व्यक्तीकिक भाषार्य विमानित्य महत्व নুষ্যকে উন্নত্ত করি**তে পারিত। সঙ্গীতের** সংখাহিনা শান্ত প্ৰা**জা**হৰ পাৰীণ ক্ৰীভূত र्था, गुठ जीविड रहेश, विक्षार क्षार व्यक्षित उद्भवि हुना अवर द्वित व्यक्ति कीव रुख्या हेल्यामि । व्यत्नक क्षकातः व्यक्तिक काशा मन्त्रेष रहेवात अनुक्र कि स्थादह. अवर यागानि **चरमेक घरनाथ लाटक खाड़ा** সতা বলিয়া বিশ্বাস খার**ঁ। আরুতিক** नियम विक्रम अहे मगत्र उरक्ष वर्ग दक्ष প্রকারে সভা এ সম্ভব হুইকে পারে না<sub>ং</sub>থক यनिश्र हेराट्ड रकान निषाम आश्रम कविरेख পারা যার না, কিন্তু সঙ্গাতের মেটি্মী শক্তি ধরা একত প্রস্তাবে যে সকল খুটনা যটিয়া থাকে, তাহা প্রত্যক্ষ করিলেও ল-কল্যক বিশ্বমাপন হইছে হয় এবং ভাছা অলৌকিক ঐক্রজানিক ক্রিয়াবৎ প্রতীত হয়। কোন ব্যক্তির বেণ্ডুর **অংগ করিয়া** প্রাম্র মধ্যে গো, অস্ত্র প্রভৃতি শশু নির্মাদ এ হয়।ভিমুখে থাবিত ছাইতে দেখা বিয়া-ভেগ । স্কীতপ্রিয় বুরস্কাতি যে **স্বস্থা** বংশীক্ষে আক্লট হুইলা কাৰ্য কর্ত্ত পুত হয়, ইহা অনেকেই অবগত আছেন। আ मार्गि अपरा कुषशीत वामा कतिस विषे রস্থ ভুত্তকাকে খুড ভ্রিটে দেখা বার্ছকি প্ধর ভুক্ত জাতিকেও যে অগদীয়া স্থ थान्त ग्रेट द्रभ भारतत्र अ**हिस्तती अहिस** ছেন, ভাষাতে বিভু মাত্র মন্ত্রেক্সাইন সা-शुक्ति। मान (धमारे वात नमह वक ध कार ओवाजिक क्रिया बाह्य में ने नर्गटक मार्ग

 হাবে, আরব দেশীর নশিকের বর্ম আজি-কার এখন প্রশাস সক্ষী অতিক্রম করির। দেশান্তরে বান্ডিয় করিতে যাত্রা করে তথ কালে তাহানিধের পণ্যভারবাহী উই স-কল কুং নিপোষায় আন্ত হইলে উই চাল-কেরা এক প্রকার গাণ করিয়া ঐ সকল প্র-রিআ্য ভ ভারাক্রাশ উত্তের পথআতি দুর করে।

ডেনমার্ক নুপতি চতুর্থ ছেনিরি একদা मधीरतत भाजि भंदीका कर्यार्थ हेक्ट्रक **इट्रे**श ७ व वर्*छ शायकरक चारम* व ति-লেন, " যে বুনি স্থানীর স্থীতালাপ দারা সহজ মন্ত্রণকে উমস্ত করিবার বে গর্বা কর, তাহা অদা আমান প্রত্যক্ষ দেখাও "া গা-युक् ब्राकात अहे चारमभाकुमारत अमनि **অপূর্ব্য স**্কীত আরম্ম করিল, যে তৎপ্রারণে ঐ রাজা স্বয়ং অচেতন ও উন্মান্থস্থ হইয়া পড়িলেন এবং উন্মন্ত হুইয়া নিক্টস্থ চারি भाष्ट्र याक्तित था। नके कवितन श । का-ন্ধানো একবার এক বাজি উন্মন্ত কোন लारकत आकर्या दीना वाना खादन कतिया भीर्य कारमञ्ज जिल्लाम रहाश स्ट्रेटिंग पारताश লাভ করিয়াছিল ¶। সঙীতের অদ্ভত মোহিনী শক্তির এই রূপ অনেক উদাহরণ প্রাপ্ত হওয়া যায়। ফলতঃ করুণানিধান বি-শশিতা যে শব্দের দহিত ভাবণেক্তিরের অ-निर्वहनीय मध्या नियम कविया जाशनात মহিমা রাশি প্রকাশ করিয়াছেন ভাহাতে আর কোন সন্দেহ নাই। তিনি কেবল আমাদিধের বিগদদারাও স্থথ বিস্তারের উদ্দৈশে অসংখ্য প্রকার মধুর স্বরের কৃষ্টি করিয়াছেন এবং তাছা সম্ভোগ করিবার बना जामानिनरंक वह जाकरा खरलिस्र ' এবান করিয়াছেন। কোকিল প্রভৃতি যে ें रुक्त सूत्रवे विश्वक कुरमत शान व्यवन क-রিউলে সুখের সঞ্চার হয়, তাহারা অবস্থা বিশেবে ও ঋতু বিশেষে লোকালয়ের সনি-কট বাগমন করিয়া স্থাপতে গান করিতে शांक - वर परनक सुभन्न शकी देवान थ-कात नमेरीक यह खरन कतिरन छ।हाटक चीत चत्र भिक्षिक कवित्रा विद्यान विद्यार

क्याही व्यवना मत्या त्य क्टन त्यान नक्-त्यात वान बार्क, छत्रव विरुष्ट कुन भागना হ**ইতে সেই স্থলে স্থাগত ই**ইয়া গান **করে**। অনেক ভ্ৰমণ কাৰি লোকে পক্ষী বিশেষকে সন্দর্শন করিয়া সন্নিহিত লোকালয় জানি-তে পারে। একজন প্রসিদ্ধ এম্ব কার 🛊 বাজ কবেন যেতিনি একদা ক্রানয়া রাজ্যা-गुर्का औं कान कानन मर्था असान छूटे पेंछे. যোজন পথ পর্যাটন করিয়া লোকালরের নিকট ভিন্ন আর কোন স্থলে পক্ষী জাতি जन्मर्जन कर्तन माई। आत अक जन अ মণ কারী শ ব্যক্ত করিয়াছেন,যে তিনি কোন সময় কোন স্থানে ভ্রমণ করিতে করিছে কোন মহাবালয় না পাইয়া কুৎ পিপানায় মৃতক পশ হইয়াছিলেন, অনন্তর এক দল শুক প্রতী সন্দর্শন করিয়া তাহাদিগের প-শ্চাৎবন্তী হওরাতে ক্রমে লোকালয় প্রা**প** হইয়া প্রাণ দান পাইলেন। এই ৰূপ अ-নেক প্রকার পক্ষির আচার দুক্টে বোধ হয় ए जनभीश्वत एक आमामिरशत धावरणिक-য়ের তঞ্জি সাধন করিবার উ**দ্দেশেই সমস্ত** স্বমার স্বরের কৃতি করিয়াছেন। তিনি व्यामानिशतक अवर्गितिस अनान कतिस विन শকের হাটিনা করিতেন ভাহা হইলেও উলা নির্থক হইত এবং **সমস্ত শব্দ ক্র**ক করিয়া তাহা অহণ করিবার ইন্দ্রির রচনা भा कतिरमा कीशात मक ब्राम्म विकल र-ইত ৷

পরনেশর আমাদিপের এই এক শ্রকণ শক্তি প্রদান করিয়া যে কি পর্যাত মদল বিবান করিয়াছেন তাকা কত কীর্ত্তন করিব। প্রবণ শক্তি আমাদিপের অনব করেবা হেতু এবং অশেষ প্রকার ছংগ নিবারশের উপায়। বিশেষতঃ প্রবারেকারের রারা মন্ত্রা লাতির বাদুশ উপকার দর্শে বংসার মধ্যে আর কোন শীর প্রকার কর্পে করার কালি প্রকার করেবা আতি ক্রানা মধ্যে আর কোন শীর প্রকার করেবা আতি ক্রানা করেবা ক

Marie Vigo.

পথাতীত দুরবভী বিপদ বার্তা অবগত ই-हेशा कुछ नमूद्र नावधान ও नजर्क स्टेट्ड পারে এবং অক্স হইলেও কেবল শক্ত জ্ঞান-দারা আপন আল্লীর গণের পরিচয় লাভ করিতে পারে। কত সময় কত ভ্রমণ কারি उक्ट विका वावभाशी मसुमा भग भारकारः বর্জিত অন্ধীসূত গিরি ক**ন্দর** বা বন বিবর মধো গভিত ইইয়া কেবল এক শক্তনা-নের অপ্রায়ে গুরুতর বিপাদ কইতে পরি-ত্রাণ পাই ।ছেন। মাব্য সাতি আবণে-দ্রির বিবজিত ছইলে অনেক প্রকার মুখ (जान ७ फान लाट रिक्ट ४३ड, म**ा**न्स्ट নাই। মত্যা শ্রেণেশ্রির বিধীন স্টালে তা-গর বাণিন্তির বিফল হইত। সেবাণি-জিন্ন আমাদিকের বিলেশ ভূমণ **স্বরূপ** এবং আমাদিগের সমস্ত গৌরবের নিদানভূত তা-হা ভাষণেভিয়ের সাহত্য। বাতিয়েকে ক-नानि कार्याकाती है। हो, इन्य विश्व का-कित दम्। शि वादा का दि इस ग। य ताखिक अन्य दिवित क्या स्मी व्यवस्था है भूक क्-ইয়াথাকে। জল ব্যৱতাই যে মুক্ত ই-পার প্রতিপ্রবল কারণ ভাষার ভুরি ভূরি **প্রমা**ণ প্রাপ্ত হওয়: সিগ্রাছে। এক জন জন্ম বধির আনার চড়বিবংশতি বর্ষ বয়ংজনমর সময় পুনর্বার আবৃণ শক্তি লাভ করিয়াছিল. बात वक कन मूटा के बद्ध दिश्यवर्थ वहर ক্রমের সময় **অ**বণ শক্তি প্রাপ্ত হওয়াতে বা চাল হইয়াছিল। সে বাস্তি এক দিন অ-কমাৎ কথা কহিতে আরম্ভ করাতে সমস্ত লোক বিসায়াপল হইয়া ভাহার কারণ জি-জ্ঞান। করিলে, সে কহিল আমি ইহার তিন চারি মাস পূর্বে অবণ শক্তি প্রাপ্ত হইয়া গো-পনে সকল শব্দ অভ্যাস করিতেছিলাম এক-ণে বিলক্ষণ স্থাসন্সাম হওয়াতে কথা কহিতে আরম্ভ করিলাম। অতএদ মানব জাতি आवरनेक्सित विविधि ७ इट्टेंग रा परिएक স্থাপি ও অনেক জ্ঞানে ব্যক্তিত হইত এবং স্তরাং তাহার মান্ব জন্মই বিকল হইত **जारात जात मरमह मारे। सन्नीयत म**-কল ইন্সিরকেই পরস্পার সকলের সহায় कतिता करे पश्चि तर्क्षात्रत प्रध्ना कति-सहरू । विनि जागामित्रत्र स्वरंगित्रहरू সমুদার শক্ত এহলের উপযুক্ত ওরিয়াছেন এবং শক্ত সকলকে সম্পূর্ণ রূপে ক্ষরণ যো-গ্য করিয়াছেন। আনুমরা সেই স্থপ দাত। সনাতন পুরুষকে বার বার নমকার করি।

# মরুভূমি ও মরীচিকা।

জন শূনা শুষ্ক বালুকামর প্রশস্ত ভূমি পশু যে ছালে ভূপানি কোন প্রকার উদ্ভিদ উংগ্রাহর বা, ভারার নাম মরুভূমি। এই মক্তভূমি পুৰিণীয় অনেক স্বানেই বিদামান অন্তেঃ অন্দিয়া বহুত্তর মধ্যে পার্নীক দেশে ও মারেব দেশে বিস্তর মরু ক্ষেত্র দে-থিতে পাওনা যায়। কিন্তু আফুিকা **গঙ**ে তে যেম্ম প্রযারিত মরুদেশ সকল বি-দানান আছে, পৃথিবী মধ্যে আর কুত্রাণি তেমন মরু ক্ষেত্র দেখিতে পাওয়া যায় না। প্রায় আফ্রিকার অর্ফাংশ মক্রভুমিতেই প্র রিপুর্ণ। ভাক্তিকার **সর্ব্ব**ালন **মরুভূমির** পরিসাণ অতি বিভীর্ণ, ইহা প্রায় এক সহস্ত সাদ্দ ভিন শত জোশ দীয় এবং তিম শত ণ্টি কেশে প্ৰশন্ত। এই ভূমি খণ্ড ভূম-ধান্তিত ৰাগারভীরে হুটতে মিসর রাজেনর নীমা প্রয়াভ ব্যাপিয়া আছে এই দুর প্রসা-রিত ক্ষর্নর মক মেন্ট এক প্রকার বেং-হিত বণ বালুকা কণায় পরিপুরিত এব: লেখিতে অতি রম্ণীর। পৃথিক গণ **য**থম मुत्र हरेटड ये विश्वीर्ग एक फ्राप्तित श्राप्ट मु টিপাত করে, তথ্য উটা উদ্বেশ সাগর তুলা তমুমূত হয় এবং উহার মধ্যস্থিত কৃত্রে কুন্ত জন পদ সকলকে বীপত দেখায়। তীৰ যাতি,বাণিস্যকারি ও রেশ দর্শফাদি পথিক तन एवं करने उत्पाद क्योगाल के हु-র্গন মরু দেশ অভিক্রম করে ভাষা মনে व्हेरल हमरकुछ क्ट्रेस्ट क्या कक्नानि-ধান বিশ্বপিতা যদি ঐ প্রকার জুর্গমন্থান শতিক্রম করিবার জনা বিশেষ উপায় স্থ कर ना रुद्रिटिन, छोश हरेला त्यांथ हेस মনুব্য ভাতি শত **বর্ষ** পরিশ্রম করিলেও উহার জোশার্ক পথ উল্ভান করিতে পা-ক্লিড না।

আরব বৈশীয় বণিকেরা বখন ও তুর্বন তুৰি শতিক্রম করিয়া আক্রিনা বড়েবা

শিক্ষ্যা করিতে যায় তথন ভাহারা শত পিউ ु जिर्देश भूरके भग जात अमान करत जवर শত শত ব্যক্তি একুত্র দল বন্ধ হইরা বা-ত্রা করিতে থাকে। যাত্রা কালে উহারা রুপন মরু ভূমির উপর দিয়া সরল পথে গ্ৰাম ক্রিতে পারে না। পথিক এবং ব-ণিক নেগের বিশ্রামের নিমিক্ত ঐ ম**রু কে**ন ত্রের মধ্যে মধ্যে জলাশয়ও লোকলিয় আ-চে, বণিকের। তথায় উপস্থিত হইয়া কি-য়ংকলে অবস্থান পূর্বাক পথতাবি চুর করে, স্বতরাণ ঐ সমস্ত বিজ্ঞাম সানের অ-ন্তুরোধে পথিক ও বণিক দিগকে নানা প্র-করে বক্র গতিতে গমন করিতে হয়। প-থিক গণ এই ৰূপ এক একটি বিশ্ৰাম স্থানে সপ্তাহ কাল বাস করিয়া পুনবার যাতা করে এবং এই ৰূপ গমন করত ক্রমে নিরা ऋ या वाक्षिक अनानिकात निर्मिक सान

স্থান পরিত্যাগা করিয়া চলিতে আরম্ভ ক-বিলে পুনববার যতক্ষণ আর **এক** বিভাগে স্থান প্রাপ্ত না হয়, ততক্ষণ আর োন **ন্দেই কোন স্থানে বাস করিতে** বা অন **আ**র পাইতে পারে না, ততক্ষণ ডা*ই* (দিগ-কে জনাগত পর্যাটন করিছে হয়, এবং তৎকালে ভাষ্টিগের প্রতিযে কোন গ্র কার থিপদ উপস্থিত হয়, তাহাও অপ্রতি-হত চিত্তে সহাকরিতে হয়। এই প্রকার মধাবভী পথে কখন কখন এমন অগ্নিদ্য উত্তপ্ত বায়ু প্রবাহিত হইতে থাকে যে তা-হাতে মনুদাও উট্ট প্রভৃতি সকল প্রাণীই এক কালে দধ্যবৎ কইয়া পতে, উক্ত বায়ু জারা তাহাদিগের সমভিব্যাহারী সকল বস্তু*ই*। नी व्याप्त **अक्ष हरेगा याग्र**ा दनिक अवर প্রথিকেরা ঐ কল খুন্য শুষ্ক দেশে পান করিবার জন্য আপনাদিগের সঙ্গে এক প্র-'হার চর্মা কোৰ মধ্যে জল সঞ্চয় করিয়া লইয়া যায়। কিন্তু খনতর উত্তপ্ত বায়ু প্র-ৰাহিত হইতে আরম্ভ হইলে সেই চৰ্ম কোবস্তি জলও শুদ্ধ হইয়া ক্ৰান কৰান একেবারে নিঃশেষিত হয় এবং ঐ শুক্ক খায়ু क्यानं क्यान् अमन्न नत्रकृतः निर्मान क्रिमां**ट**दात सार्व निवंश्व रहता । वह महिद्या ल्या- বিত শোষণ করিতে থাকে। 

ক্রে কার বর্ণন করিয়াছেন, 
ক্রে এই দ্বাদ ভরম্বর বিপদ কালে আরবের ধনাত্য ব-ণিক দিগকে কথন কথন পাঁচ শত রক্ত মুদ্রাগ্য প্রদান করিয়া এক অঞ্জলি ভল ক্রয় করিতে হয়।

১৬-৫ খ্রীষ্টাব্দে এক বার এক দল ববিক আফুকার অন্তর্গত তম্মুকু চইতে তাকিলেত নামক স্থানে গমন করিবার সময়
প্রান্তর্গিত নিয়মিত বিজ্ঞাম স্থানে জল প্রাপ্ত
না হইয়া পিপালায় কণ্ঠ শুদ্ধ চইয়া প্রাপত্যাগ করে। এই ঘটনার ছুই সহক্র মনুযা ও এক সহক্র অন্তশত উপ্তের প্রাণ
নত হয়। মরু ভূমিতে মধ্যে মধ্যে এই
কপ ভূমিনা ঘটিরা স্থানে স্থানে মন্ত্র্যা ও

মরু দেশানীর্ণ আফ্রিকার বাণিজা প-থে বৃথিক দিগের এক একটি দিলন স্থান আছে! নানা দেশ হইতে বণিকের: নানা গণে আগমন করিয়া ঐ স্থানে মিলিত হয় এবং মিলিভ ভইয়া পুনর্কার সকলে একজে যাত্রা করে। যথন অধিক লোকে একত মিলিভ হয় তখন বৰিকের: নিঃশক্ষে মৃদ্ দেশের উপর দিয়া গমন করে এবং অ-ক্রেশে দম্ভাভর অভিক্রম করিতে পারে। কোন কোন স্থানে উহাদিগতে **অন্ধ মানের**-ও অধিক কাল যাপন করিয়া উট্র ও ময়ু-থোর আমত্থে দূর করিতে হয়। তর্তু হরতৈ ফেঙ্গ নামক স্থানে গমন করিতে চারি মাস নয় দিবস লাবে, কিন্তু ইহার মধ্যে গথিকেরা ছাই মাস চতুর্কিংশতি দি-বস পর্যাটন করে এবং অবশিষ্ট **চুই মাস** शक्षनम मित्रम तिखाग कतिया थात्क । 🗥

মক দেশীর পথের মধ্যে তির তির অধিকার আছে, বণিকেরা যথন বে অধিকারে গিরা উপনীত হয় তথন তত্তত্ত্ব অধিকারী তাহাদিগের রক্ষার নিমিত কভিপর
রক্ষক সজে দের ঐ রক্ষক গণ তাহাদিগকে
আপন অধিকার পার করিয়া অপর কবিকারের নীরার উপনীত করিয়া ক্ষাকার
বাধানের ব্যাহ্য করিয়া করিয়া আহিন।

বলি কাছায়ও অধিকারে বিশিকেরা থকাৰ কলে অগত্তুত বা অপমানিত হয় তাহা হ-ইলে সেই অধিকার ভুক্ত সকল লোকেই তাহাতে অপমান বোধ করে এবং তাহার। সকলে একবাক্য হইরা ঐ অত্যাচারের প্রতিকল প্রদান করিতে চেন্টা পায়।

সারব দেশীয় উক্ত প্রকার বাণিজ্য যাত্রি দিগের এই রূপ সংস্কার আছে, বাণিজা পথে গদন করিবার সময় কোন প্রকারে ভোজন পানের অত্যাচার করা অবিধি, ঐ শ্বর কেই কোন প্রকার অত্যাচার করিলে আহাকে ধর্মা ভাষ্ট হুইতে হয়। উহার। ঐ সময় কেবল মুখকিঞ্ছি পিণ্ড থক্স র ও এক বিশ্বু জল মাত্র পান করিয়া দিন যাপন করে এবং সামান্য প্রকার বেস ধারণ ক-রিয়া কাল হরণ করে। উহার। উক্ত সময় खेरकुके एवाक्स ७ डेप्कृके तम कृता व-विकार भेरक। राधन कथन कान विभिन्न मरन त्यवन किक्षिश्याताल माज चक्क क-রিয়া দিনপাত করে। দিবাবসাম হুইলে প্রথিক ও ব্রণিকের। এক স্কলে মিলিত হইর। অবস্থান করে এবং শিবির স্থাপন করিয়। শকলে একতে জগদীশরের উপাদনা করে।

त्कांन क्वांन भगत ४ १७ ३ वश्च पाता म কুভূমির বালুকা সকল উড্টান হইয়া আতি ভরকর ঘটনার উৎপত্তি হয়। বায়ু স-**হকারে প্রভূত** বালুক। রাশি অনবরত উ-ত্তীয়মান হইয়া চতুর্দ্দিক আচ্ছল করিয়া কেলে, এবং ছুর্ভাগ্য পথিক গরের দৃষ্টি পথ রুজা করে৷ এই সময় পাণিক গণ চ-ভূদিক কেবল যোরতর অন্ধকারমগ বাব-লোকন করে এবং চতুর্দ্দিক হইতে যেন গাঢ় কৃষ্ণ বৰ্ণ প্ৰস্তিরময় প্ৰশস্ত পর্বত ভারা বে-चित्र हहेरत थादक। जाहाता ना छिक्क मिटक দৃষ্টিশা্ড করিয়াই আর কিছু দেখিতে পার, দা অবোভাগ সন্দর্শন করিলেই কোন लगार्थ व्यवताकन कतिए मधर्य इत এवर ना वाम मिन्दिश शुद्धशकार मिदक्रे काम বর্ত্তর বাকাৎ পায়। সমুদ্র মধ্যে প্রচণ্ড बाबू अवक्रिकानि छनाइक स्ट्रेटन रवयन প্ৰতি আমাৰ ভবল সকল উৰিক বইনা ' क्लाम आविक भगटक आहि निविद्य हुन्।इ

कीयन कुर्जि जन्मभीन कुनान एक के कुन अरे লমরেতেও সমুজ সদৃশ মন্ত্র কেরের সর্বাত্র পর্বত তুলা বালুকার তরঙ্গ সমস্ত আন্দো-লিত হইয়া প্রতিপলকে নিরাজ্রিত পথিক भर्गत जीवनाभारक रत्नग कतिराज थाएक। এই বলে বালুকা রাশি অনবরত উড্ডীয়-মান হইয়া কথন কোন স্থানকৈ গভীর খাতে পরিণত করে এবং কথন কোন স্থানে বালুকার উচ্চ পর্মাত প্রস্তুত করে। এই অবস্থার পথিক গণের আর ষম্রণার শেষ থাকেনা তাহারা চকু মুদ্রিত ও নিশাস রুদ্ধ করিয়া কোন মতে জীবন ধারণ করি-या शादक धवर जानगामिद्रात जिल्लामा न ধ দেখিতে না পাইয়া পদমাতা বিকেপ করিতে পারে না। কিন্তু এই সময় ভ: রবাহী উষ্ট্র গণের অসাধারণ কাষ্য সন্দর্শন করিলে সমুবা মাত্রকেই বিস্ময়াপন ও স্থুক एके(ट इ.स.) उंद्रे भन अहे ममस (य 呑)-শংস বিপদ অভিক্রম করে ভাষা দেখিলে व्याप इस. या नर्वत्य शुक्रम शहे कथ वि-পদের প্রতীকার উদ্দেশেই আরুর প্রস্তৃতি নেশে উদ্ভেব ফটি করিয়াছেন। উই ভিন্ন আর কোন জন্তই এই বিপদ হউতে উ-দার পাইতে পারে না। এই সময় উটে-রা আপনাদিপের দাব এীবা উনত করিয়া উদ্ধার্থ ইইয়া চলে এবং অধিরল প্রমন্ত স্থূপ নেরপত্র থারা ১ম্মু আচ্চাদন করিয়া রাখে। জগদীধর এমনি অপুসা কৌশলে উট্ট জাতির পদ রচনা করিয়াটেন যে তা-হারা অক্রেশে বালু ক্ষেত্রের উপর দিয়া চলিতে পারে,উট্ট জাতিঃ কোমন ও ধারত পদের কৌশল শুলে ডাফা বলে ভূমিতে প্রবিষ্ট হয় না এবং ভাছারা আপনাদিগের भिनं शह मृद्ध पृद्ध विद्याल कविहा जाशह পশু অপেক্ষা অতি সম্বরে মরু তুমি উত্তীর্ণ হইতে পারে, স্কুতরাং তাহারা অধিক আত্তি হয় না। যে বালু ভূমিতে অস্থাদি **দ্দনা কোন পশু অভিকটে ও অভি বিল-**व्य कित्रम् त यहिष्ठ भारत या। छेड्डे साछि रमरे इर्गमें गांलूका स्कटन अदक्राम अधिक पूर्व अवन क्षिएक वृत्र्य एव। क्रूना शून लिय विशासी जनन शतिका मन स्वित्स

প্রিক্ত্রু পরের জন প্রান্তিরও উপার করিছা।
রাধিরাহেন, আক্রিবার মর দেশের জন
করিছা অপুর কৃষ্ণ জন্মার, তৃন্ধান্ত পরিক
বাদ জ বুকেনে ক্রিয়ান্ত করিলে অথবা
উহার মধ্যে জোন কৃষ্ণের পত্র ভঞ্জন করিলে এচুর নির্মাণ জন প্রান্ত হয় এবং
ভাগ পান করিয়। শীতল হইয়া থাকে।
গ্রের নারে রচনা করিয়াছেন, জ পত্র মধ্যে
ভাচুল পরিকাত জল সঞ্চিত থাকে এবং
উহার অল্লভাগ রুদ্ধ থাকাতে কোন রপে
এক বিন্দুনাল জল শহ্হ হইতে পারে না।
প্রিকাণ গ জ পরের অল্লভাগ ছিন্ন করিছো
ই তর্ম্বা হইনেত অপুর্যা প্রিকৃত জল প্রাপ্ত
হয়।

লেফটনেন্ট পটিংগর নামক এক জন মাহের একদা ভারতবর্ষীয় এক লোভিত বর্ণ মরু ভূমি উভীর্ণ হইতে এক চমৎভার ঘ-টনা প্রভাক্ষ করিয়াছিলেন, ঐ মরু ক্ষেত্রে পতিত হইরা ভাঁচার বোধ মইয়াছিল বেন তিনি কোন লোহিত বর্ণ সাগরে গতিত হুইয়া সমূর্ণ ক্রিতে**চেন** এবং **কথ**ন ক-খন ভাঁহার চড়ার্কিকস্থ উচ্ছীয়মান বালুকা রাশিতে ইফীকময় ভুত্য প্রাকার ভ্রম হই য়াছিল। এ বালুকার ক্স ক্ত কণা স-কল তাঁহার এবং উ.হার সজি লোকের मुथ. हकू, माना, कर्ग क्षकृति ऋ।दन शरिके হওয়াতে সকলেরি জীবন সংশ্র হইয়া-ছিল এবং সকলেই পিপাসায় কণ্ঠ শুষ্ক ধুইলা মুক্ত কম্প হুইরাছিলেন। কিন্তু এ-মন অবস্থাতেও উক্ত নাছেবের ভারবাহী উট্ট দকল ঐ বালু ভূমিতে জালু ও জজা। পাতিত করিয়া **দমস্ত দ্রব্য ভারের স**হিত আরোহি দিগকে পৃষ্ঠেতে ধারণ পূর্বক চ-লিয়াছিল। এই মৰু কেত্ৰকে উক্ত সাহে-বের পুনঃ পুন: সাধ**র বা বিস্টৌর্ণ জলাশয়** विश्वा अब क्लेग्ना**क्त** ।

বারু বেগে মরু ভূমির বালুকারাশি উ-চ্ডান হইয়া কথন কথন নানা প্রকার কু-প্রের উৎপদ্ধি হয়। উলিখিত প্রতিকার নাহের থ বালুকানায় করে ক্ষেত্রক প্রিয়া-হিলের। উচ্চি আক্র ক্ষরের ক্ষেত্রক বালুকাম কর্ম কর্মার ক্রিকার প্রথম কর্মার ক্রমার কর্মার কর্মার ক্রমার ক

क्थन क्थन के मक्न खब्र এक अकात আশ্ৰুৰ্য্য ও অনিন্ধিষ্ট গভিতে নানা স্থানে পরিভাষণ করে। বুদ নামক এক জন দা হেব ব্যক্ত করিয়াছেন যে তিনি এক**ন**: নরু কেতে ঐ একার আশ্চর্যা জান্যমাণ ত্তম্ম সন্দর্শন করিয়া আপনার সদল বল সকলে বিস্ময়াপর হুইয়াছিলেন। তিনি এক নত্ন ভূমিতে উপনীত হইয়া দেখিলে-ন, বে কতক গুলি প্রকাণ্ডাকার স্তম্ভ এক বার প্রবল বেগে ভাঁহার নিকটে ধারিত হুইয়া আদিতেছে এবং কথন ভাহার নি-কট হইতে অতি দুরে গমন করিয়া এক কালে অদুষ্ট হইভেছে। কোন কোন ম-मत्र भे नकन सरम्ब मधा (मन किय हरेगा ছুই খণ্ডে বিভক্ত হুইতেছে এবং কৰন ৰা তাহারা দীর্ঘ কাল এক ছলে স্থায়ী হইয়া কাল যাপন করিতেছে।

বুদ নাহেব এক দিন প্রাতে ঐ প্রকার কতিপর স্কয়কে অমিনর ব্যক্তর নার অবলোকন করিরাছিলেন। ঐ ভঙ্ক সকল প্রাতঃকালোকিত দিরাকরের অক্তর্যকর কর্ম বর্তনি করণে লোকিত ক্রারাজ্য এক আমারা করিবলৈ লোকিত ক্রারাজ্য এক আমারা করিবলৈরে চক্ষে ক্রারাজ্য স্কর্মারাক্রিক ব্যক্তর প্রকার করিবলৈর চক্ষে ক্রারাজ্য স্কর্মারাক্রিক ব্যক্তর প্রকার করিবলৈর চক্ষে ক্রারাজ্য স্কর্মারাক্রিক ব্যক্তর প্রকার করিবলৈ বিশ্বর করেবলৈ করিবলৈ বিশ্বর করেবলৈ বাহার করেবলৈ বিশ্বর করেবল

হততেত্ব হইরাছিল এরই প্রশন্ত কালের সমাগম মনে করিরাছিল, অনুভর উহার কারণ অবগত হইয়া শাস্ত হইল।

পূর্বেই উল্লেখ করা গিরাছে, মধ্যাত্র-কালে বর্থন দিবাকর অনুবর্ত প্রথম কিরুণ বৰ্ষণ করিতে খাকে তৎকালে কথন কথন প্রসারিত মরু ক্ষেত্রে পৃথিক গণের সাগর বা প্ৰদান জলাশয় জন হয় এ মিখ্যা জল मुख्ति नाम महीिका। यामाता महीिकात তত্ত্ব অবগত না থাকে, তাহারা কদাপি তা-হাকে মিথা। জল বোধ করিতে পারে না। যাহারা প্রশস্ত প্রশস্ত মরু ভূমিতে মরীচিকা অবলোকন করিয়াছে, তাহারা কহিয়াছে, যে প্রবিস্তীর্ণ জলাশয়ের সহিত মরীচিকার কিছু যাত্ৰভিয়তা **বেখে হ**য় **না। এক**প জনপ্রতি প্রসিদ্ধ আছে, নিশাঘ কালে ভূ-ম্বার্ত মূগকুলও মরীচিকায় **জল ভা**ম ক-রিয়া তৎপ্রতি ধানমান ইইয়া প্রীণ ত্যাগ যত মরীচিকার প্রতি ধাবমান হয় ততাই ঐ মিথা। জলাশয় তাহাদিগের নিফট হইতে অন্তরিত ইইতে থাকে এবং তাহারা ক্রমা-গত উদ্বাদে ঐ মরীচিকাভিমুখে গমন করিয়া উত্তরোক্তর কণ্ঠ শুক্ক হইয়া প্রাণ ত্যাগ করে। **অনেক অজ্ঞ পথিক**ও পি-পাসা শান্তির উদ্দেশে মন্নীচিকার প্রতি পাৰিত হইয়া ঐ প্ৰকারে প্ৰাণ হারাইয়াছে। क्योन दिनीय अक कम मारहत्या मिनद्वत স্মিকট একবার মন্ত্রীচিকা সন্দর্শন করিয়া-ছিলেন, সমন্ত মক্ল ক্ষেত্ৰকৈ তাঁহার জলা-শয় বোধ হইয়াছিল এবং তৎপাৰ্ম ও মধ্য-বন্ধী আম ও নগর সকলকৈ তিনি সাগর বেটিত ও দাগরস্থিত দীপবং অবলোকন ক্রিয়াছিলেন।

দার্ক লাহের বাজ করিয়াহেল বে তাঁ-বার পরিজ্ঞান কালে তিনি একলা আর-বের মরু ভূমিতে এক মরীচিকা রুম্পূর্ণন করিয়া চমংক্ষক হুইয়াছিলেন। তিনি এ মুক্ত ভূমি অভিজ্ঞান করিয়া এক আলে বাই-তেছিলেন, কিন্ধ আহার বোল কুইয়ানিল, কে ভিনি কামে করে কুইয়ানিল,

अभगेल एक्टल्ड्स अवस्था नहीं केली र-रेप्रा डीशास्त्र शेष्ट्र शास्त्र वारेटज रहेटा-क। कान मनी जला स्वान छर्डीतक রুক্ষ, পর্বত ও গুহাদির শ্রতিরূপ দেখিতে পাওয়া যায় ক্লাৰ্ক সাহেবও দেই ৰূপ উ-লিখিত ভাক্ত জলাশয়ে তন্তীয়ত্ব সকল প-দার্থের পরিষ্কার প্রতিষ্কাপ সন্দর্শন করি-রাছিলেন, ঐ মরীচিকায় ঊাহার এমন গাঢ় ভ্ৰম ক্ষিয়াছিল, যে তিনি তাহাকে ধ্বাৰ্থ জল বোধ করিয়া আপন নেতাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, যে আমরা কি উপায় ছারা এই সম্মাধ্য নদী পার হছব। উলোর নেতা এই কথা আরণ করিয়া হাস্ত করিয়া কহিল छेश ननी नरह, वालुका छूमि, धामद्रा धडे ৰূপে উট্ল পুষ্ঠেই অবিলয়ে উহা উন্তীৰ্ণ হুইব, কিন্তু সাহেনকে একথা পরিহাস বোধ হইল। পরে ধর্থন ভাঁহার নেতা ভাঁহাকে পশ্চাৎ ভাগে নিরীক্ষণ করিতে কহিল, তথন তিনি দেখিলেন, যে ভাঁহারা যে স্থান উভীৰ্ হইয়া আদিয়াছেন তাহা-ও ঐ প্রকার নদীর ন্যায় প্রতীব্যান ২ই-তেছে, তথন তিনি এই অভূত ঘটনার বিষয় চিন্তা করিয়া বিন্যায়াপন হুইলেন। মরীচিকায় এই ৰূপে অনেক সময় অনে-কের জল ভ্রম হইয়া থাকে এবং **অনেক क्वारनके मन्नीहिका स्विधिट भाष्ट्रा मान्न।** কোন কোন পণ্ডিত নির্দেশ করিয়াছেন, প্রথার হুর্যা কিরণে বায়ু নমান্তিত জল क्षा मकल बाकूके ७ जामभान इवलारक একপ মরীচিকার উৎপত্তি হয়।

> মহাভারত্র। আদিপর্ব। গুড় মধ্যায় সম্ভবপর্ক

> > **पक्रामाणांनाम**्

বৈশপায়ৰ কৰিলেন, রাজা ছবাত এই ৰূপে প্রতিক্ষত হইয়া প্রস্থান করিলে শকুরীলা বর্বা হালে স্থানকা নভান অভি-ভেলবী এক পুত্র ক্ষাৰ করিলেন। বে ক-ন্তেল্ড স্থানের বিক্তিপ্রবাহনে প্রি-

भूर्व क्रेरल भूगाचा कर् छारात काछ कर्मानि সংক্ষার সকল গণাবিধানে সম্পন্ন করিলেন। চক্রোজিতকর মহাবল, রাজজুমার দেব কু-मारतत नाम न द्रात वर्कमान रहेर७ नाभि-েল্ল । সেই বালক ছয় বংশর বরাক্রম প্রমন্ত্রেরন হইতে দিংহ,ব্যাজ্র,বরাহ,মহিব ও গঞ্জ দকল আনর্দ করতঃ আতাম সমিহিত রক্ষে রক্ষন করিয়া রাখিতেন এবং কোন যন্ত্রপঞ্জের উপর আরোহণ করিয়া বা কেনে সিংহকে দমন করিয়া জনীয়া করিতেন, এ-নিমিত্তে আভাম নিবাসী লোক সকল ঠা-চাকে স্বাদ্মন ৰলিয়া আহ্বান করিত। সেই অবধি তাঁহার এক নাম দর্বদমন হয়। অনন্তর ঋষি রাজকুমারের এই ৰূপ অ-लोकिक कथा मिथिशा अवः काँशास्क विक्रम, তেজ ও বল সম্পন্ন উপলব্ধি করিয়া ''ইহাঁর যৌব রাজ্যের সময় উপস্থিত হ্ইয়াছে'' শা 🚜 কুদ্রলাকে ট্রা বলিয়া শিব্যদিগের প্রতি कारमभ कविरमान राग मधीनकान मन्यान कहे। পুতের সহিত শকুওলাকে ভর্তু গৃহে লইয়া या । माही भागत वित्रकाल भिक् भृदह খাকা বিবের নচে, ভাষাতে কীর্ত্তি, চরিত্র ও ধর্ম নিট হইবার সম্ভাবনা, সভাহৰ শীয়ে ইহাঁকে ভর্ত গৃহে রাখিয়া আইন। মহা-ভেম্মন্ত্রী শিষা গণ তথাস্থা বলিয়া স্থীকার ন্দরতঃ সপ্রভাশকুরুলাকে ত্মগ্রে করিয়া গ-क्षनाञ्चर बर्गता क्रुवाच श्रुत्त याजा कतित्रक। অসর কুমার, ভুলা কমল লোচন পুত্রকে रकारफ करेगा नकुष्टला दन रहेर७ शमन করতঃ ক্রমশঃ ভূষাত রাজার গৃহের গিয়া উ-প্ৰিত হটলেন। শিষ্য গণ সপুতা শকু-ন্তল্যকে ব্রজার নিকট অর্পণ করতঃ আন্ত্র-মোদেশে প্রস্থান করিলে, শকুন্তলা রাজাকে ১খাবিধি প্রণাম করিয়া কহিলেন, মহারা-ল ' এই পুত্রকে যৌব রাক্ষ্যে অভিবিক্ত কক্ন। আপনি <u>জামার গতে এই পুত্র</u> উৎণয় করিয়াছেন, মতএব হে পুরুষোভ্য! পূর্বের যে, অভিজ্ঞা, করিয়াছিংবাদ, তাহা आडिभागन कक्रमा शूर्यर क्यामित चा-काम सामान करित काम कर्मा मानान ्रवारो व्यक्तिक र सरे प्रविद्यान । व्यवस्थान । व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक कार्याक व THE THE PERSON NAMED IN COLUMN

् भन्देत बोका इवाक नकुरुवात करे निमन राका अत्रो कर्नेका अत्रक किया क-त्रित्रा करिएमैंन, कृति वाशा करिएन आमात्र **जारात किंदूरे चात्र १रेटबंट**इसा , क्लांबात সহিত আমার যে কখন সাকাৎ সইয়াছিল এমনও অরণ হয় না, অভএব ভুমি क्षान रहेरू बाख वा क्षारन व्यवहान कड़, যাহা ইছে। হয় ভাছাই কয় ৷ ইহা আংৰণ করিরা বরারোহা তপবিনী শকুরলা লক্ষায় न**ञ बल्दन खटाउन नाम जन्म हरेग्रा ज**ाव-স্থিতি করিতে লাগিলেন এবং ক্রোধে তাড় বৰ্ণ অয়ন ও প্ৰেক্ষিত ওঠ হইয়া কটাক बार्या महन कब्रुडा अक अकवाद बाकाटक বক্র নয়নে অবলোকন করিতে লাগিলেন। তথন শ্বীয় ক্রেনুধের ভাব গোপন করিতে ই-ছে। করিয়া প্রবস্ত শোক স্বারা ভালা প্রকাশিত হইবার উপক্রম ফইলেও তপোবলে তাহাকে আয়ত্ত ক্রিয়া ব্লাখিলেন, এই ৰূপে মুহুর্ড-মাজ গ্রান করতঃ শোক ছুঃখে অভিভূত হ ইরা ক্রোধে রাজার প্রতি কটাক্ষ করিয়া कहित्तन। महाताम ! जुमि जानिश। 🥸 নিয়াও: কি নিষিজে, এৰূপ : নিঃশঙ্গ হইয়া मावीतः। ब्लादकन्न बाह्य कहिएछङ, य जामि কিছুই জানি না, একলে সভ্য সিধা৷ ভো মার অন্তঃকরণই জানিতেছেন, অভএব তৎ-সাফী সমিধানে কুমি সভা ব্যক্ত কর, অ-ভঃকরণকে অবজ্ঞাকারিও মা। যে বাজি এক প্রকার জাসিয়া অন্য প্রকারে প্রকাশ করে:বেই আত্মালহারী সৌর কর্ত্ত কোন্ পাপ না কৃত হয়*। াভুমি* মনে করিডেছ বে -वामि । धरा । धरे कर्य । कतिहासि, ४ कर जा-নে না, কিন্তে মুনি **ৰে অন্তৰ্মানী** চচাছা ভূমি জান না, নিনি পাল পুণ্য নামুদায়েয় তত্ত্ব-দশী তাঁহার নিকট ভূমি গোলাম াচরিবে? পাস কর্মা করিয়া ক্রাকে ামনে করে যে সামার একর্ম বেহেই সাক্তিত পারে বাই, কিন্ত দেবভারা ও ক্ষত্রবাহী পুরুষ বে ব-कन है के निरुष्ठ शीदन्तन व वाज क्या, व्या, काशू, व्यक्ति, वर्षा, अकी, काब्द, अविकासन, यम, चित्रा, काति, केंच्या मध्यम एउ पना चेरीता AND MALE AND MEMORIES COMME

बाहात शतिकुके बाटकम, देवब्बूल वम छा-श्रत ब्रुकुट नकण दिनान करतन, বে ছুরাছা পুরুবের ক্ষেত্রজ্ঞ অপরিভূষ্ট খা-কেন, হম সেই পাপকারী বাক্তির পাপ বৃত্তি করেন। ধে ব্যক্তি আত্মার অপনান ক-বিহা যথাৰ্থ বিষয় অনাথা ৰূপে প্ৰতিপা-দন করে, দেবভারা ভাষার মঙ্গল বিধান করেন না এবং ভাহার আত্মান্ত তাহার কা-াং হন নাঃ আমি পতিব্ৰতা, অভিসা-বিকা মনে করিয়া আমাকে অবভা করিও না, ভোনার সমাদরণীয়া ভাষ্যা আমি স্বয়ং আবিয়া উপস্থিত হইয়াছি, কিন্তু তুমি খামাকে সম্মান করিতেছ ন।। এই সভা নধ্যে ভূমি কি নিমিত্ত আমাকে সামান্যার নায় উপেকা করিতের? আমি কি শুনো রোদন করিতেছি? ভূমি কেন শুনিতেছ না। সামি সেধাত্ঞা করিতেছি, ভূমি श्वि आमात तात्का छेडत श्रेषांग ना केत्र, ्ड प्रसास्त ! छाडा इ**ट्रेश अम्य ट**ामात स-পুরু শতথা বিভিন্ন হইবে। পতি ভাষাার উদ্বে প্ৰতি উ হইয়া গে স্থাং পুত্ৰ ৰূপে জ-খাল ভাছাতেই জানার জারাত্ব, ইছা পৌ-রাণিক কবিরা ব্যাখ্যা করেন। যথন পুরু বের মেই পুত্র জনা গ্রহণ করে, ভথন সে, শস্ততি ছারা তাহার পূর্ব মৃত পিতামহা-দিকে উদ্ধার করে। যে হেতু সন্থান পি-ভাকে পুলাম নরক হইতে উদ্ধার করে. মেই জনা স্বরং ব্রহ্মা তাহাকে পুত্র বলি-म्ना बार्था। कतियादहर। त्यहे जाया। विनि পুহ কৰ্মে কুশলা, সেই ভাষা। বিনি পুত্ৰ-বতী, সেই ভার্যা। মিনি পতিপ্রাণ, সেই ভাষ্যা বিনি পতিব্ৰতা। ভাষ্যা পুৰুবের वर्क भंदीत, ভार्या हे शुक्रत्यत अधान नशे; जाया। जियर्जन प्रवा, जाया। रे जेकारान কারণ। ভাষ্যাবস্তুই ক্রিয়াশালী, ভাষ্যা। वस्रहे भृशे, जार्गावस्रहे क्खे हिंख, जार्गा-বস্তুই দৌভাগ্যশালী। প্রিয়ম্পা ভাষ্যা নিঃসহান্তের স্থা স্থ্রপ্, ধর্ম কার্য্যে পিতৃ স্বৰূপ, আৰু ব্যক্তির মাতৃ স্বৰূপ এবং ছ ় প্ৰমুপুৰে প্ৰিক্ষের বিজ্ঞান আৰুপ। যে ব্যক্তি नवात्र त्वरे विश्वान भाव, सावधर नातारे পরা গজি। বে ব্যক্তির বন্ধ পরী বে শ-

ক্ষপাতী হইকেওঃ্ভাহার य जी পভिত्रण, तरे राशत असूनामिनी হয়। পতি সড়ে ধে স্ত্রীর পরকোক হয়, সে তথায় গিরা পতির প্রতী**কা** করিয়**ে** থাকে, আর প্রথমে পতির পরলোক হইলে. সাধী <mark>স্ত্ৰী ভাহার অন্ত্রণামিনী হয়, অভ</mark>এব *ে* রাজন্! যে হেডু ইছ লোকে ও পরলোকে পতি ভাষ্যাকে প্রাপ্ত হয়, দেই নিমিজেই লোকে পাণিএছণ বিহিত হইয়াছে। আত্ম দারা, আন্ত্র: উপস্মাহর বলিয়া পণ্ডিতের: ভাষাকে পুল্ল শব্দে কহিয়াছেন, অতএব পু-জের মাতা ভাষ্যাকে স্বয়ং মাতা বলিয়া জান: আনশ্রক। আদর্শে দ্বীর মুখ প্রতিবি-ষের নায়ে ভার্যাতে পুত্র উৎপন্ন হয়, পুণ্য-কুংবাক্তি সংকাথ সূৰ্গ পা**ইলে যে**মন আ-নন্দিও হন, পুত্ৰ জনিলে ভাহাকে দে-থিয়া সেই রূপ আঞ্লাদ হয়। মনোতুঃগো भक्तमानके कंडेक, कात नाधि बाता बाका-फरे इंडेक, निमाचार्त गालित **सम शाशि**द নায় স্বীর দারাতে লোকে আহ্বাদিত হয়। ন্ত্ৰী কৰ্ত্ব ভংগিত চইলেও রতি, শ্রীতি ও ধর্ম ভাহার আয়েক্ত দেখিয়া অপ্রিয় तावण्तं कतिरवदः मा। ্ৰীলোক আ-মারে পুণা **জন্মকে**ন্ত্র জানিবে, নতুরা ক্লাধি দিগেয়ত এমত শক্তি হয় না, যে জা বা-ভীত পুত্র উংপাদন করেন। পিতৃ প**ন্** अगान कत्र है। श्रीयतीय भूगात सुर्वित हरें। বেও পিড়া কর্ত্ব পুদ্র আলিঞ্চিত হয়. ইছ্ হইতে অধিক আর কি **হটতে পারে**। অভএব স্বাধাণত সাভিলাম এই পুতাকে ক্টাকে দর্শন করতঃ কি নিমিত্রে অপ নান করিতেছ: পিপীলিকারাও স্বীয় খণ্ড সকল মতি ষড়ে রক্ষা করে,ভাহা নক্ষ করে না,কিন্ত ভূমি ধর্মাঞ্জ ক্রমাও স্বীয় সন্তানকে अध्य कतिएक **रकम श्रीकात कतिएउ**छ्ना? णिक महान**्क जानिकन** क्रिट्रिंग सामुख ম্পূৰ্ণ **স্থ কৰে**, বস্ত্ৰ বা স্ত্ৰীগাত অথবা শীতন জন সংস্পাদেও তাদুশ সুখামুভব रम सा। स्वयम चिश्रामत मार्था खामान, চ**তুশনের যথে** গো<sub>র</sub>ও ক্সভর ব্যক্তির मध्या निका रक्षके स्टब्स, कक्षाश न्मर्भवान् शर्मादर्यत नराहा भूक नक द्वार्क, वाहे जिल

न्मार्भ खूंचे डेट्लामन करून, शुक्के न्मार्थ क्-ইতে প্রধানর স্পান আর কিছুই নহে। ছে অবিনাম! ইইংর বয়ংজম তিন বর্ষ পরি-भून इकेरल कर् अधि देहाँ क किरोशिंड সমুদায় সংখ্যে সংখ্যা করেন, অতথ্য **भाकाशस्त्राम्य कति-**ইনিউ তোমীর त्वमः १ श्रीत्र । एष्टं श्रीत् দুমিল চইবার সমযে আমার প্রতি আ-काम वानी ३१, त्म धरे कुमात यथाकारन ্রক শত অখ্যেধ গঞ করিবেন। স্থেই ব-শতঃ 12% সন্তামকে ক্রোচে করিয়া এ**:** মাৰুৱ গানন ক্রিলে পর পিতা ভাহার মক্তক আল্লার করির। আনন্দিত হরেন। সন্তা-त्मद्र जः करम्बं जान्तरभंता स्वरणामिरभंत्रध াতি এই সকল মন্ত্র উচ্চারণ করিয়া থা-কেন, ভাগা লোমারও বিদিত থাকিতে भारत। ह भूछ ! जुमि सङ्ग इहेरज छैदेशन ংইয়াজ, জদয় হ্টতে উভূত হ্ট্য়াছ, ভূমি আমার আলা পুতা নাম ধারণ করিয়াছ, ভূমি শত বর্ব জীবিত হও। আদরে জী-বন ও অক্ষয় বংশ ভোমারট অধীন, গত-এৰ ভূমি শত বৰ্ষ স্থাধে জীবিত গাক। চে ताक्त ! कहे दालक ट्यामातक अम इटेट डेल्श्न इडेशाएड. **य**ङ्खन स्थान मानानन জ্লাত আত্ম দৰ্শনের নায়ে এই দিউটা সীয় মুখ সদর্শন কর। দেমন গাইপতা হইতে আহবনীয় অগ্নি আনীত হয় ডক্রেপ ডোমা ১ইতেই উৎপন্ন এই পুক্ত, এক মাত্র ভূমিই বিধারত হইরাছ। তে রাজন্! পূর্ব কালে ভূমি মুগ্যায় গমন করতঃ মুগ কর্তৃক আ-কৃষ্ট হুইয়া পিতার আশ্রমে আমাকে প্রাপ্ত হইয়।ছিলে, তথ্য অমি **কুমারী ছিলাম**। डेकी, शृद्धि हिंह, महत्रमा, समका, विभा-ু ছাড্টো, অপুসর গণের মধ্যে এই

ভন্ত কন (আছা। তালাদিগের মধ্যে এক লোক বাদিনী মেনকা বর্গ হলতে পৃথিবী-তে আগমন করিয়া বিখামিত দারা আদা-কে উৎপল্ল করিয়াছেন। তিনি হিমালয় প্রত্যু আমাকে প্রস্বাহ করিয়া প্রত্যুক্ত ক্রামাক্ত লায় তথায় পরিত্যাগ করতা ক্রামাক

দর্শন পুরা তৈয়ে কর্তৃক আলিকিউ ইবা । বিন । বাদিপুর্কে আন্তরে এত কি আলিকিউ ইবা । তা কালিকিউ র এত কি আলিকে পরিয়া হিল্পে, যে বালা কালে ভাত কর্প করিয়া হিল্পে, যে বালা কালে ভাত ক্রিভাগ করেব এবং এ- ক্রেজির ইই বর্গক্ষ তিন বর্ষ পরিপূর্ণ ভইণেল কণু কবি ইই ব ক্ষান্তিয়েটিত ক্ষান্তিয়া করেব করেব , অতএব ক্ষান্তি । তামীর শোকাপনোদন করিইনিউ তোমীর শোকাপনোদন করিবন । তামীর শোকাপনোদন করিবন । তামীর শোকাপনোদন করিবন । তামীর শোকাপনোদন করিবিল ভালিক শোকাপনাদন করিবিল ভা

#### বিজ্ঞাপন ৷

তবানীপুরস্থ শ্রীযুক্ত শ্রামাপ্রসাদ হৈটো পাধ্যার নামক এক ব্যক্তি, বাল্য কালে ক্রম বশতঃ খ্রীন্টীর ধর্ম অবলয়ন করিয়াছিলেন, এক্ষণে তদ্ধপ্রের কাম্পানিকতা প্রত্যক্ষ ক-রিয়া পুনর্বার হিন্দু ছইরা ব্রাক্ষধর্ম অবল-মনের প্রার্থনার যে প্র লিখিয়াছেন, তাল নিরে প্রকৃতিত ইইল।

To the Editor of the Tattwa suddings
Patrina, Calcutta.

Hitherto I was a follower of the reli-gion Jesus Christ. My conversion into the inch did take place on the 25th of Merch 1855, when I was about 16 years of age But deep and candid enquire lands we ne occur of its worthlessness to satisfy the religious cravings of mankind. I have also been convinced that its fundamental doctrines are not reconciliable with the rational dictates of reason and of moral instica, uclusion that such a system of religion containing as it does, great many absurd theories such as the Trinity, the Itesurrection and the Association, could not have come from God-the Immeterial and Common Father of the Universe. I therefore publicly renounce Christianity through the medium of your wide circulated Journal. I beg you will be good enough to insert the above declaration in your next issue, and oblige.

Your's very truely,
SHAMA PROBAD CHATTERJEA.
Bhwanipore,
The 1st April, 1867.

ক্লে এই বজাবোধিনী পরিকা, কলিকাখা নগারে যোড়াসাঁকোখিত বজাবোধিনী সন্ধার কার্যান্সত ইউ-ডেপ্রতিমানে প্রকাশিত হয় — ইয়ার বুলা এক ইবি ১ ইংশার রবিবার বুলা ১৯১৪ ক্লিম্বার্থকে ১১



क्रवातक दिशव श्राणीतामा कि क्रमाणी रोजव भागे देन कर इंदर्स विकाश आवासमध्ये भिवर संदर्श के इति व देन क्रिकेट वे मक्षदार भिज्ञ दिन कृष्ण क्षा आवाण में रिक्स में श्रीलेट स्वापन क्षेत्र के क्षित क्षेत्र के क्षित्र क्षेत्र के क्षित्र क्षेत्र के क्षित्र क्षेत्र के क्षेत्र क्ष

#### टिखान।

হে পূর্ব পরিস্তব্ধ পরাৎপর পরমাত্মশ্ ভোমার অপার কর্মণী প্রদানে আমরা এ কাদি ক্রমে ঘাদশ মাদ অতীত করিলা পু-নব্যার জ্বায়া এক বংগরে প্রবেখা করিতে-ছি। এই সম্বংসর কাস মধ্যে ভূমি আম 🥴 দিনোর প্রতি যে সমস্ত করুলা বর্ষণ করিয়াছ, তাহা আমি কি প্রকারে বর্ণন করিব এবং কি উপায় স্বারাইনা মনেতে ধারণ করিব। এক নিমেবের মধ্যে ভূমি আমাদিটোর প্রতি र मक्त प्रसुशम एस श्रक्त रुद स्वीत আনরা তাহাই নির্দেশ এবং নির্পণ করি-তে পারি না, তথ্য সম্পূর্ণ এক বংসর বা-लात कब्रमात विष्यु कि अकारत देशक कविव। चामात यम यर्थन द्यायात चन्नीय कत्रवान সাগরে পতিত হয় ছম্ম ভাহার পার প্রাপ্ত ना रहेश कर करत उन्नथाय हरेगा, बा एक निर्मात निर्माण (यनमें नीमा नार्ट (महें ৰূপ তাহাৰ তুলনা দিবার ভার স্থানও নাই। षाम्बा वर्ष वर्ष क्वन छामाहरू बनीग अञ्चलकरूना अनुस्तान । काउँहा जीवन ধারণ করির কালতেছি। তোনার অক্স विका कान भारिका बाक बरेगा प्रायम श

কে আলোক ও উত্তাপ এদান করিয়া স্থ ফির নক্ষ সাধ্য করিতেছে, তোমার বায়ু আবহমান কাল এবাহিত হইয়া কৰন আভ হুইতেছে মা, ভোমার মেঘাবলী চির দিন বারি বর্গণ করিয়াও কথন নিংশেষিত হইতে-ছে না এবং ভোমার স্থাট গ্রহ, নক্ষত্রাদিও এত কাল খুনা পথে আৰামাণ চ্ছৰা কণ্ কালের জন্য স্থ প্রথ পরিত্যাগ করিতে-ছেলা। হে অচ্যতানক অব্যন্ত স্বৰূপ। ভূমি বে কি অস্তুতে নৌশলে এই অপূর্যে বিশ্ব যন্ত্র রচনা করিয়াছ তালা কি কলিব , এমন ফফর ও আক্র্যা ম্প্র আরু কেছ মনেতে-ও কম্পানা করিতে পারে না। কোন য**্ত্রী**় কোন মন্ত্ৰ নিৰ্মাণ কৰিলে বাৰহার স্বারা **डाहा करब किरा किरत कक्ष रहेशा गांग**े खबर लाहादक मरतनाधन ना क्रिट्स क्रांटन-তে তাহা মুকুৰ্যুণ্য হইয়া উঠে,ক্লিন্ত তোমা-র অন্ত বিশ্ব নত্র নিব্তর চালিত হইয়াও कथन का इंटेएटइ ना अवर द्वान काटनरे তাহার সংশোধন করিবার আবশ্রক হইতে-ছে না। তুসি এ বিশক্তে প্রথমতঃ বেমন তে मचान कार्या रेकि केनियांच, देश अन्याशि तारे अन गरजन त्रिशारक क्षणां नितन लिएन केश मात्रक फिक्किएके शाश्च रहेएक **बागात (कोलेंग अंश**ाद शांचेगी क

নানা শ্রুকার বিদ্যার প্রচার হইয়া শামাজিক শোভারও উল্লিভি ইউডেছে। এমন উল্লে স্বভাব আশ্রুকার রচনা আর কুরাপি দৃষ্ট ইবরের সন্ত্যানা নাই। জগতের এই কপ তেল্পিনী প্রকৃতি সন্দর্শন করিলে বোধ হয়, ধে ডেমোর সকরুণ ইচ্ছা জগৎকাশে মৃতি-লভী হইয়া নির্ভর প্রকাশ রহিয়াছে, এ জগতে লাল গাছার্থ ইইয়াও ভোমার ইছার-সহ্মোগে তেওঁনা বিশিষ্ট সজীব ছইয়ার-হিছাতে প্রভাগত সন্দর্শন না করিল, ভাহার প্রাথত প্রভাগত সন্দর্শন না করিল, ভাহার

্ গ্ৰেমসিন্ধ প্ৰথ বন্ধু ! যে ব্যক্তি কেন্দ্র অনুসংখ সৌন্দর্যে ও অম্ভান্য ভাগে % ্ষী হা **হইল, কোন্ৰূপ ও কোন্য'**-প্ৰদান বিশেষক <mark>আন্তৰ্যণ কৰিছৰ। যে ব্যক্তি</mark> ৪০,৪ ভোষায় বাশ লক্ষ্ম করে, শে কি প্ৰায় জানা **কোনমতে**ই **বিস্তুত ক্টা**ডে পান্য বস্তান্ত মন জোমাজেই আক্রমী হ ना ५०% व्यव स्थामास्य है। आर्थमा करहा। यागत । श्राम प्रकृत । व्यक्तिय दशमाद ह एम লৈতে লিপাত ভালরাই তেমেটা প্রতি-ভাগে করিয়া জন বিষয়ে ম্য প্রেণ: তে মতে অমূতময় অনুপ্ৰ স্বৰূপের এমনি ভাকৰণী শক্তি যে কক **সন্য ভাহা**র নহিত ক্ষা অন্তিপিত্রের অসার বিষয় মিশিও भवेषा किय बिनाम भगा भवेग्नाहरू खबर करू অনত বিষয় সতা বাপে গৃহীত হইয়াছে। হোমত অভুলা এনী শক্তি আপনা হইতে মন্ত্ৰ মনেৰ আন্ধা ভক্তি ও প্ৰতি আকৰ্ষণ ান বীন অবোধ লোকে কণ্ণিত া 🗀 ে তোনার অভিতীয় প্রিয়ত্ম নিন্দী কৰিব আরোপ করিয়া কভ সময় প্রামার প্রায় করে ক্র**ন্মার মনুব্য** বিলোগনের কেন্দ্রাহালনে **প্রত্যন্ত করিয়া তাহার** प्राप्ताकतः मित्रा गाउदन**् ए मर्काधात्र मर्क-**ভক্ত বিষয়ের সাঞ্জয় ও ভোমার সৌ-লাক্ষ্রিন ক্লিড। আল্লা এক নিনেরও শীবন ধারণ করিছে পারি না। আমাদি-ার দেহ যেমন যুভিকা আতার করিয়া **অব্দিরত রহিরাছে আমাদিনের আ্যা সেই** वन जिलाद अवन्त्रम कत्रिक्ष अवस्थि

করিতেরে। তাম বাধ আনাবিগকে কুল কালের ক্ষা পরিতাল কর, তাই। বইকে কোবার বা আনাবিগের বন, অন, বৌরন, বিদ্যা, বৃদ্ধি, অংকার, কর, সভাল, রাজা, জী থাকে। তুমি আনাবিগকে কুথী করি-বার জন্য বিভিন্ন প্রকার ইছা প্রধান করি-রা বিভিন্ন প্রকার বিষয়ের কৃতি করিলে, এবং আমাদিগের নিকট বীশ্ধ মহিমা বি-ভার করিবার করা এই ক্যাৎ উৎপন্ন ক রিলে, কিন্তু আমরা এমনি মৃচ বে কেবল ভোমার কৃতি বিধায়তেই ক্যকে মগ্ধ করি-য়া রাখিলাম, কথ্য ভাছা হইতে মনকে উথিত করিয়া ভোমাতে সন্নিবিট করি-ভাম না।

বে ভাগাবান্ বাক্তি সৌভাগাক্তম ভোমার স্বৰ সন্দ ও সহ্বাদ জনিত ভু-(यह याचान धाथ इंडेबाट्ट, माई चीर আহাতে কেবল ভোষাতে অপণ করিতে ব্যস্ত রহিয়াছে। নী**রস নিদাঘ কালে প্রচ**ণ্ড স্থান্ত কিন্তুৰ সভাৱ প্ৰাৰ্থ কৰে কোন দূরবানী অবিরল শাখাপঙ্কব বিশিষ্ট বৃহৎ বিউপির ছারা প্রাপ্ত হুইলে যেমন সুখী হয়, ভোষার প্রেমানুরক্ত ভক্তবৃদ্ধ পৃথিবীর প্রেলঃ সভাবে সভাবে স্ক্রা বর্থন ভোষার শীতল আভায় লাভ করে, তথন সেইৰূপ ভুগু হয়। আমরা পুথিনীর দাবদাহে দগ্র **ক্**টাশীতল ইইবার জনা কত **স্থান প**ৰ্জ টন ও কত স্থান পরিজ্ঞমণ করি, কিন্তুযা-বং না ভোমাতে উপনীত হই, ভাবৎ কোন মতেই ক্ষয়তাপ দুর করিরা সম্প্রতেপ শীতল হইতে পারি না ি যে বাজি সতত ভোষার আশ্লামে বাস করে, কোন তাপ আর ভাহাকে স্পর্শ করিছে পারে না

দে শ্রেমপূর্ণ প্রিয়ত্ত্ব ঈশর! তুনি
বেমন জানেতে অজান্ত শবিক্তে অনন্ত,
নেইরপ করণা বর্ষপেতা অনিজ্ঞান্ত। তোনার তুলা এমন অন্ত কিবি আর আমরা
কোণায় প্রাপ্ত হটব, কোনাতে সকলের
নামানারণে ও বিশেষরশে ক্ষমিকার রহিরাছে। তুলি আমানিকার প্রত্যেকরই
নিজত ধন এবং বক্ষেত্রের সামান্ত ধন।
আমি তোনাকে কোন শবেক সভাবণ করি-

য়া যে বনের ভারিনাগর করিব তার কির করা অনাথা। কুমি কামার মরনের অ-জন, কঠের হার, সিপানার জল এবং বি-আনের কুল। আমি ববন তোমার বিবন্ধা-প্র অমৃত্যার অনাহনেত সদর্শন করি তবন পৃথিবীর ক্ষম হুংখ সকলি বিশ্বত হই, এবং দ্বন ভোমার অনাহানিত প্রেম-রনের আ-বাদ প্রাপ্ত হই,তখন সকল তুফার লাভি হয়।

### केशदब्द महिमा।

স্পাদেশিক্তিয়।

শ্লাশন্ত্রিরে অতি চমৎকার ভাব। শরীর নবো দর্শন প্রবাদি অপরাপর ইক্সিরের শহিন্তান জনা যেমন চক্ষ্, কর্গ, প্রভৃতি এক একটি নির্দ্ধিটা স্থান দেখিতে পাওরা যার, শার্শনিরের দেৱপ কোন বিশেষ একটি স্থান নাই, উহা শরীরের স্ক্রেই ব্যাপিষা আছে। আপাদ নক্ষক কোন স্থাই শ্রীরস্থান ও

রীরবিধান বিদ্যা বাবসাধী সন্থিত গণ নি-ৰূপা কৰিয়াছেন, যে মন্তিক্ষ নিঃস্ত ধ্যনি সকল পদৰ্শ ক্তানের কারণ। বমনি ব্যতি-द्धारक न्यानी कहारमञ्ज छेश्मिक दश मा; यही-दब्ब भरण (य इति समिति ने शिद्ध, भ স্থানে স্পর্ম জ্ঞান জ্ঞানা বে স্থানে অ-ধিক ধ্যনি আছে, সে স্থানে স্পর্শ জ্ঞানের-আধিকা হইয়া খাকে ও খেখানে ধননির ভাগ অপেই থাকে তথায় স্পর্শ জ্ঞানও ঘণ্প হয়। কিন্তু অন্ত্ৰত কৌশসকর। জগদীশ্বর বে কি প্রকার আভর্যা কৌশলে আমাদি-গের শরীরময় স্থার্শেন্সিয় ব্যাপ্ত করি-য়াছেন, তাহা চিভা ছার ছির করা বার ना, जानानित्वत शहाल दर्कत नवा क जादन अक नाहि त्यम कार्न स्ट्रेटन वामता वा-নিতে সার এবং মন্তকস্থিত কেশাগ্রেতে একটি স্বিক্ষা উপবেশন করিলেও তাহা **७९क्नोर जामानिट्राद कान ट्रनावद इत्र।** न्नाटर्न जित्र मामाविद्यात नहीं द्वतः अर्थन व নৰ্কা। কৰ্মান থাকিয়া অতি নতৰ প্ৰহ-्रद्रीह कार्या नाथन कडिएक्ट्रक अवश् मानाहि-महक्क नाना अनुकास नाना स्वकादत नामधान

क्रिया बच्चा कविरक्तक, स्व नमन भाषा-पिरंगेत मर्भारनिस्त्र ७ व्यवस्थित छब ७४: অসাবধাৰ থাকে, উৎকাৰেও স্থানেজির जामामिश्वत कार्या मास्य कतिएक कृषि करन मा। अयुष्टिकारन क्षेत्र बसुबारक छेटेलः খবে আহ্বান করিলেও জাঞ্ড করিতে পারা যায় না,ভংকাবেও ভাহার গাক স্পর্শ করিয়া অনায়াসে নিম্রা ভঙ্গ- করা যার। विटमवडः आमता अव्य नर्मनानि हेल्छित श्हेरण य विषयात महान वाश्वाना हहे. न्नर्मित्र व्यापानिशस्य त्यहे ममख विषय অবগত করে। শীতবাত আতপাদি যে नक्व श्रुका भगार्थ यामानिटशंत एक् कर्नानि দার। অরুভূত না হয়, আমর। ভাত। স্প-র্শেক্তির ধারা অনায়াদে ত্যাত হইতে পারি। व्यामापिरभत नहीरतत मर्नवहर स्नर्रास्त्र য়ের ভার মুক্ত রহিয়াছে, স্পৃথ্য বিষয় বে দিকে বে কোন পথে আগনন করুক, ভাহা অবশ্বই আমাদিগের জ্ঞান ভূমিতে উপ-नीठ हशेरदक।

दन्तनी निधान छशनीयत आमानिरशत স্পর্যেক্তিয়কে ঘেষন নাম বিষয়ক জ্ঞান লাভের পথ করিয়া স্থাটি করিয়াছেন, সেই রূপ উহাকে আসাদিগের অশেক প্রকার স্থ ভৌগেরও করেণ ইরিয়াছেন। বে ব্যক্তি কথন নিশাবসানে গাতোপান পূর্কক কোন প্রদারিত প্রান্তর বা প্রবিদ্ধীর্ণ নদী তীরে পরিভ্রমণ করিয়া স্থান্তিত স্থানির্দাল প্রভাত সমীরণ সেবন করতঃ বেই প্লানি সূর করিয়াছে, কি নিশাঘ কাবের দিন পরি-ণামে স্থ্যাসিত মহায় সায়ত উপভোগ ক-রিয়া অঞ্চ সন্তাপ দূর করিয়াছে, অথবা প্র-চণ্ড গ্ৰীয় কালে উত্তাপাৰস্থায় ক**ৰৰ শী**ডল চন্দ্ৰাদি উপলেপৰ ধারণ করিয়া সুখী হ-ইরাছে, কি শীত সময়ে দিকাকরের মন্দ শুন্দ রশ্মি সভ্যোগ করিয়া তথা হইরাছে. त्न हे जानिशास्त्र, त्व क्रक्रनानिशान विश्वाल-ত आमाहिरगत क्ष बहुबन जमा न्यार्भ-खिद्वत र पि क्रिक्सद्वन। न्यटर्गक्तिय वाता বে সামরা কর ব্যর কর প্রকার প্রথ ভোগ ক্রমা পাকি ভাষা বান করিয়া শেব করা भैनाधा। ब्रिप्निकः, नक्षेत्रिक कर्वा समाजन

THE MINIFECTA COLOTIONENCE अकृषि स्वर्कात (कीमन अकान क्षित्रादक्रम) ि आमानित्यत नतीत्वत त्य शत्म न्यादनिका व अतिगाद एक मान् रहेट कामा किरत कार्गा नाथम ७ पुःच निवातन क्रेंटक शास्त्र, िनि तारे एटल अरे बाग कविशारे जानी শালি প্রকান করিয়াছেই। अट्राक मगन भानक नगुपारक शक उटक क्येकाइड व-রণা ও ছঠিন করব ময় প্রভাদি অভিক্রম ক্রিয়া প্রায়াত ক্রিতে ইয়া স্কুতরণ প্ मकार पाविक न्यार्थ शक्ति थाकिता भरमक श्रदान दक्षा एडाय रहेतात महार्यमा, अजना कवनाथन अवोदनत नक्षणाम त्यात्राका भाग-মতে গুলামার ভাগে খণ্ড প্রদান করিয়াছেন भवर इस प्रति न स्त्री नक्ष क्रिका न्यूक ত্তপু পরীক্ষা করিরা সেপিটেড **হয়, স্ত**ভরাই হত্তে স্পূৰ্ণ কৰি অহিক থাকা আৰম্মত একনা ব্রাং/ বিতে কতিপান স্থান স্থান আ-भारती भग्नि विस्तायान आहरू। स्थित (र का-भाषिताहरू यथारायामा स्थान स्किन् असीन केति-ता स्ट्रांगव देशाल संस्कृत कृतिहासरून, एन-्डाटड जात बरागर नारे। जामानिरणंत স্পর্কেন্দ্রির মাদ এখনকার করেছা কার किश्विद ८७ जची 'इडेए, ७१६। इडेएन टकान প্রকাষ স্পর্শ প্রয়ন্ত হওয়া দুরে খা-कुक स्टब्स्या कुस्य भगाउप अंत श्या বোৰ হইড. স্থান্তেন মন্দ্ৰ ব্ৰেকেও ৰাজে यात्रमा कता विश्वि हरेख अन्य प्रेरक्के मन সমীলুগকে অসম অভিবাতৰং অমুভৰ হ-্ইত। আমাদিণের শরীরের সর্বজ্ঞাশ শক্তি সমান তেজখিনী হইলে কোন সতেই ্পানর প্রথা হটতাম না। সরব শরীর চ-ू कृत तात्र दिनायम स्ट्रेटन वसूचा कि **अरगा**त বজারি ধারণ করিতে **সক্ষম হইছ।** 

আমাদিনের দেহ পতন হইবার পুরে

চক্ত: শ্রোকাদি অপরাপর ই শ্রিম সকল একে

একে মগুহিত হইতে থাকে, কিব্রু আক্রান্ত,
কর্মান ইলিয়ে মুত্যুকাল প্রয়ার আমাদিনের

সক্ষে থাকে, উহা করাপি আমাদিনকৈ আদি

করে নাল ব্রাব্যাত মখন মনুষ্য করেও

লবর করিতে বা চলেতে নাল্য করিতে
পারে বা ক্রান্ত আবর বা

কা বাদ্যতি কাছ বছীত কাকে কা কানেও কাৰ্য্য আৰু আৰু কাৰ্য্যতা কে কান্যিক লাবে

भवाश करते. अवद नेस्ट्रिक विवर्गनी প্ৰতিনিধি হয় ৷ কোন কোন খাৰা ব্যক্তিয় न्मार्थ स्ट्रियं क्षेत्र सहस्य हता है है है है वि বস্তু স্পাৰ্গ করিয়া জাতার বৰ্ণ পরিষ্ট আনত रहेए गाउँ। वहेन बामक बहुनम गाँ-(रूप राक्त कडिगादकरे, ति काम धार्क শৰ্ম দারা বড়ের নীয় পাঁত প্রচৃতি বর্ণ লানিতে পারিত। অন্যান্য সকল বর্ণ অ-পেলা ডাহাকে রক্ষণ অধিক বছার ও ীলত্ব অধিক নক্ষন বোধ হইত এবং সে এইহপ লাশ-জানের ভারতমা অনুসারে সকলে বর্ণই জানিতে পারিত। পণ্ডিতবর অপুৰেন নাহেত বাজ করিয়াছেন, যে কোন অন্ন বালিকার এমনি আক্র্যা স্পর্ন শক্তি ছিল, যে নিৰ্ফিউকালে রম্বকালয় হইতে विक्र आभित्य, त्य मञ्जूषाय विदेखक मधा स्टेटन আপদায় বস্তুজন চিনিয়া লইও। ঐ বস্তু मक्ष व कत्भ रावश्विक थाकुक, छेड़ कना। বদাপি আগন ৰস্ত চিনিয়া লইতে আন্ত ट्रेंड ना । अक दा कि स्वा चीत्र स्नामाना न्गरमंत्रिय वरण काम जर्भन काम लाय-প্রকাশ করিয়াছিল, অনেক প্রশ্ব পরীক। वावमाञ्जी लाद्य रुक् सिमिके इरेग्रा छेल অস্থের ঐ লোধ জানিতে পারে নাই অনস্তর डिशिथिङ अटवात निक्षे हहेट हेहा घर-গত হইয়া বিশায়াপন হইল এবং ভাহাকে थे (मार कार रहेगात मन्नाम किकामा क-हिल । जन्न करिन<sub>ः</sub> (य आप्रास्कृ*वे जा*यत शक एक समा कक् आ लोका विकास मी उन र्ताथ र्थमार्टर सामि किला कार् रनाय वर्गानटक शाहिताहि। प्रश्निमें नामस्य वक् कन কুমানৰ অন্ধ প্ৰিত হোম দেশীৰ পুতা नक्न कानीयच् थानिकात क्रिके क्रिके हात धकरात नाम कहिन धम्म पुरस्का केंटन SANTERIOR PROPERTY AND THE THE REPORT OF THE PARTY OF THE

TIPECH MESTICVATOR - THE CONT. वर्ष काला अब वागरत वागरत कान का-र्वाणव वा क्षाकानदाह निकट वेश कि र-हेटाहे करकनार झालिए गाहित, वे थ-কার জাবে উপস্থিত হক্তৰানাত কাৰাদি-াগের পদতলে এক প্রকার আক্র্যান স্পর্ণা জ্ঞান অনুভূত হইত। ভাজার রূপ নামক লাহেৰ কহিয়া**ছেন, ৰে** কোন কোন ৰখিব ्रार्थ हिन्तांत्र नमत्र क्यंत्र स्नारमं सिन्न धादा এত পূৰ্বে তৎপথ প্ৰচলিত শক্টামির আ-গ্ৰন বাৰ্ত্তী অবগত **হয় যে তখন নৰ্কেন্ডিয়ে** শশ্বন কোৰ ব্যক্তিও তাহা **জাুনিতে পা**-রে না। বধিরেরা **অনেক সমীয় স্পার্শে**-ন্দ্রির খারা ভারণ কার্যা সমাধা করে। এই অপ প্ৰবাদ আছে বে কোন কাৰণ ৰশতঃ ফরাস দেশীর এক জন ভদ্র লোকের অক-খাং চকু, কৰ্ণ প্ৰভৃতি সকল ইন্দিয়ই নট ক্ইয়াছিল কেবল ভাষার মুখ মণ্ডলের এক ,ৰিকে কিঞ্ছি স্পৰ্শ শক্তি বিদামান ছিল, কিন্তু আশ্চৰ্যা এই যে তাহাকে কোন বিষয় অবগত করিতে হইলে তাহার মুখের সেই मित्क भे विवस वर्गानिक कतिरहाई स छ ७-ক্ষণাৎ তাহা বুঝিতে পারিত। ভাহার প রিবারেরা ঐ প্রকার করিয়া তাহাকে সকল বিষয় জ্ঞাত করিত ১। খাতএব জগদীশ্বর যে খনামাদিগের বিশেষ উপকারের জ্না স্প-র্শেক্তিরের স্থি করিয়াছেন, ডাহার জার नत्मह नाहे। न्यार्ट्सिय बाता अनाना अ-নেক জীব ক্ষত্তরও অপেম উপকার সিদ্ধ रस, रःम अपृष्टि सानकः शकी गाहाता जल में बार हरे हैं अभिताशिक अनुके दल हहे ए শীবিকা সংগ্রহ করে,তাহাদিগের চঞ্চু অত্যে এপ্রকার আভ্রা। স্থান শক্তি আছে,বে তা-ছারা ঐ স্পর্ন শক্তির প্রথে স্বাক্তিত ও अवाकातम्ब कात्म अनामारम आभनापिदशत (Wiff) die Wiffen file file (Olena al-मक अके खेलाह असी दिविष्ठ आसकात्रमह बाद्य विक्रम सार्थित अजीत कुगाव यहरा PR PIT OFFI CAME FOR WISH ----

জিবা কোন কাইকোও ডিকি জাগানত বি তাহার বক্তে এক অন্যর পত্ত পাছিতেন। কিলোডেনাকর নাম নিবারী পানা করি প্রদান করিয়াছেল, উক পদীর তই ব্যক্তি সম্ভাচনতে লগতে কোন কা চকু লগে বড়ত ও কাইকো আন্তর্যা ইয়ালয় বা লোকাইকোট বিক্ট উপাছিত হ-

**जिन वरि बामोरिनांक कार्यक्रित** ध-मान ना कतिएउन, छारा रहेटन कामानिरात भाव भाव भाव करनक केलिक्क विकास करें । कामता हकू: त्थाव विभिन्न स्ट्रेग्री याद-कीदम मर्भनानि दिसदह जान शाकिनाम, আমর। কোন দৃষ্ণ বস্তুরই প্রেরত জ্ঞান লাভ করিতে পারিতান না। পুরু পূর্ব প্রভাবে **উলেখ क**ता शिवाह्ह, य बामता हुने हुन् দারা বে কোন বস্তু নিত্রীকণ করি, তাহ বস্ততঃ এক হইয়াও আমাদিগের চঞ্চে ছুই নেখায়, কিন্তু কেবল আভৰ্য্য, স্পশ্চেম षामामिरशत छेङ जम दूत करता नानक দাবং না **স্পর্কেন্তির চালনা করে ভাব**ং कान कर्ण है जाहात मृष्टि अम भूत इस ना । क्तान जमाक राख्नि यथन कान करण नृष्टि শক্তি প্রাপ্ত হয়, তথন সে সমস্ত দৃশ্য বস্তুকে ু জতি বিপরী**ত ভাবে সন্দর্শন করে, সে** তৎকালে কোন বস্তুরই প্রকৃত আকার ও প্রকৃত অবস্থা দেখিতে পার না। তা**হার** বোধ হয় **বে সকল** বস্তু**ই** তাহার অস্কের नत्त्र विश्व रहेश तरिशाहर अनः नकल व-স্তরই উর্ছ ভাগ নিম্নে ও অধে। ভাগ উপরে রহিলাছে। অনন্তর সে যথন হস্ত ভালা বস্তু সকল স্পর্শ করিতে প্রয়ন্ত হয়, তথন তাহার উলিখিত ভ্রম রাশি পরিকৃত হইতে থাকে তথ্য সে প্রত্যেক বৃদ্ধর প্রকৃত আ-কার, গান্ত সংখ্যা ৬ একত স্থান অবগত হিম এবং ক্রেমে এই ক্রেণে ভাহার নিভা পভাগ হারা এমনি একটি অপূর্বে স্বভাব হুইয়া বার, বে সে পরিণামে কোন বস্তু নিরীকণ করিলে তাহা স্পর্শ নাকরিয়াও ঐ পূর্বন ৰংকার হেডু ভাষার প্রক্লাভ জ্ঞান প্রাপ্ত रत। कार्य नामक क्रम नात्र्य কোন জনান্ধ ব্যক্তির চক্ষ রোগ জারোগ্য कतित्र। प्रिक्तिन, स्व त्व कालि अध्ययकः स्व कान शरार्थ वर्षक अधिक उदम्माग्रह त जानम् भन्न न्यूके त्यां कतिन। अहे

Francisco Principal and St. & Boulett Steder, No. VI. 9, 71.

কন্য অবস্থায় স্থান বস্তু মার্চাইক ভারার বিষ কোপ হই গ্রাচিল এবং অসমান প্রাথ কই ক ও। শিশু স্থান গেনা কানা করে পেই কিলা কানা করে সেই কাপ শক্ষ সকলকে বাছা প্রদার্থ কানা করে সেই কাপ শক্ষ সকলকে ভারা প্রদার্থ কানা করি কার্না করি কার্না করি কার্না করি কার্না কর্ণা করি কার্না করি কার্না কর্ণা করি কার্না কর্ণা করি কর্ণা করে কর্ণা কর্ণা কর্ণা করে ক্রানা ক্রানা করে ক্রানা করে ক্রানা করে ক্রানা করে ক্রানা ক্রানা ক্রানা ক্রানা ক্রানা করে ক্রানা করে ক্রানা ক্রানা করে ক্রানা ক্রানা করে ক্রানা করে ক্রানা করে ক্রানা করে ক্রানা ক্রানা

সংগ্রেম্ব বিদয়ে আর একটি সম্ভত নলপার দেখিতে পাওয়া হয়ে। আনরা শহ সাহতে স্পর্ণ করিয়া এক মান করি. বিভ কি কৌগলে দে শাৰ্প বাবা বন্ধয় একর শ্রেভত হয় ওয়ে। নিজেশ করা **ক**-টিন। লগধীমন দেওকার নিহ**নে** আ বাহিতার শরীরে স্থানীত্রির হাদান করিয়া-रहान, खादात विन्धुमान वर्गाक क्रम ध्रेशन है 'বা'**মাদিগকে** বিষম হলে ভাত হলৈও হল। করত**লে ক্**ল ফর্তি**লাকার** কোন প্রাথ রা-ল বিয়া ভাষাতে বৃদি **সাভাতিক কপে** ভঙ*ী*। 'अ व्यक्तिमा अर्थे हुई आज होता साता स প্রাথ সায়ে, স্থান্ত হাইলে ভাইন একটি সভাই द्यात्र **ए**क् विर्केष च क्रमे अञ्जूषील स्ति कि ক্ষিত্র ভাষান্তর মতা মার অখান এক অস্থ্র-থীর উপর জন। অঙ্গুলী রাখিলে ভন্দার। অনভাষ বলে ঐ বস্তুকে মুরাণ বার ভাষা ार्टर अक महारक हुई।हे रदाव रहा, घाट-এর বিভাগন দৃষ্ট ছইতেছে গে আমাদিনের শহী মন জিলা জলা**দির যে ইন্দ্রিয়াকে বে** তথাত্ৰ বঢ়ল করিবাছেল, ভালার কিঞি-কাৰ কাৰো হউলেই আমাদি**গেয় স্তথের** নানি ৮ ৪:খেন উৎপত্তি **হর, তাঁহার** কৌ-নগ্রত আন্মানিরের সুধের **মুল, এবং জা**ন ात रहरी है आमानितगर मंगल मन्त्रम्।

> বিজ্ঞানবান্ত্র গোতির –ইউরোপের জোতির্রিণ্ড পাবি

কের। বুনজার কর্মী প্রথম এই প্রথম বার করিবারের। বর্ষদের ১৮৯০ ব্রিটারেরের ৩১ নার্চ বিবর্ধে পেরিল জনর ক্ষরেত বর্মান নামক প্রতিত হর প্রথমিকে আনির ত্রকরিয়াহেন, ভাষার ক্ষরে করেনানির। এই রক্তিত হর্ষদারে, এই এইটি কেনিতে একটি নকতের নায় উজ্জ্ব । আয়ে জল্জ নগরে হইতে গোল ভইন্মিথ নামক পরেত রক্তি ভারিত ব্রিটারশাবের ২২ মে কিন্দে, এইটি প্রকাশিত ইইয়াহে, ভাষার নাম ভেলনী এক বলিয়া অধ্যারিত ইইয়াহে,

পদার্থ বিদ্যা।

১।—ইউরোনের পদার্থবিত প্রতিতের। পানীকা করিয়া দেখিয়াছেন, বে শুদ্ধ করিয়া করিয়া করিয়াছেন, বে শুদ্ধ করে করেন করিয়া নিকটন্ত ছারে অধিক রুক্তি হইয়া থাকে, এবং তাঁছিল গাতের করেব বিনাম করিয়াছেন হা

द्धभाष्ट्रम विमाध

২ ।— ইউরেপে দিন দিন রমায়ন বিদারে এমনি প্রার্ভাব হুইতেছে, বে উভ
বিদ্যার এভাবে এলুকালিক ন্যাপারবং
নানা প্রকার অসম্ভব কার্য্য সম্পাতিত হুইভেছে। ইংলণ্ডের কোন কোন মিন্দ্রীয়কার কেবল এক নবনীতকে পরিগত করিয়া
তন্ময়া নানা প্রকার করের আন্তার উৎপদ্ধ
করিতেছে, ভাছারা কেবল নবনীত্রনারে
এমন স্কল মিন্দ্রীয়া প্রস্তাত করে কি ভাষা
ভক্ষণ করিকো আহাত করে কি ভাষা

heideminis Tistory of Animals, vol. 1884.

বিল কলের সাধাৰ সাধুত বর্ধা কর্ত্ত নাজি বিশ্বী কোন বংসাবান্য কর্মি কর্মির ক্রমির ক

#### सुटक्ष विशा:

া—নংগতের অন্তংগাতী কেন্টাদ নামক নগরের এক ছানে এক অসাধারণ গতীর কুপ খনন করিয়াও তল প্রাপ্ত হওয়া যায় নাই। খননকারির। নুনাবিক আট শত হও মুজিকা খনন করিয়াও বর্থন তলিম হইতে কিছুমাত্র জল প্রাপ্ত ইইল না, তথন তাহারা খনন কার্যো বির্ভ ইইল। আনেকানেক ভূতর্বিহ পণ্ডিত এই অসত্তর ঘটনা প্রভাগক করিয়া বিশ্বরাপন হইয়া-

Minerary Grantin, 8th November, 1866.
Chimber's Journal, August 1866.
Chimber's Journal, September, 1886.

ं ं ना जीवीं वंशतिक त्व शस्त्र के नतं श्रामक यान-मस्ति जिक्कमान स्मार्क, केक शर्का महता पुलिस केलार है। ब्राट्ड डेल मान मन्त्रिक परित भारत थ कांत्र शतिमानानि किशी मुन्नेन हरेगात था। याज इहेशाङ्गि। मान मैनिक्स (म नार्य ক্ষেত্ৰে আকাশহ নক্ষ্ৰের প্ৰতিবৃদ্ধ পৃতিত হওয়াতে কোন তিনিং পণ্ডিটের। গরিকার : ৰূপে নক্ষত্ৰ সকল সন্মুৰ্ভন কৰেন, উ**লি**খিত*্* পর্বত কম্পিত হওয়াতে ঐ পারণ কেরা এৰপ আন্দোলিত হইয়াছিল, যে ভালাভে व्यक्ति अवि याज मेक्टब्राई श्रान्थि मुके হর নাই। অনতঃ পুতত্ত্ববিৎ পণ্ডিতের। বিলেম মন্ত্ৰণা কবিলা ঐ কম্পান ট্ৰিন্মার প্রভীকার,করিয়াছেন। তাঁহার। ঐ নন্দিরের 🗄 নিমে কোন ফোন ছানে গভীর কুপ খনন করিয়া তৎসমুদার ইফক-চুর্ন প্রভৃতি দানা প্রকার পদার্থে পরিপূরিত করাতে উক্ত কম্পন ক্রিয়ার প্রতীকার ইইয়াছে ৯।

#### लिल्य बिल्मा।

১।— আল রাজ্যে নৌরকাপ পরিমাণ করিবার জন্য এক অন্ধৃত বন্ধ প্রস্তুত হই-নার প্রভাব হইরাছে। যে দিবন বত উ-ভাগ রাজ কইবে তারা ঐ যন্ধে স্পশ্রুত প্রজাশ থাকিবে। ঐ যন্তের উপর রৌজ পতিত হইলে পর আগনা-ন্ইতেই ভাষার ভাগ পরিমাণের চিহ্ন অন্তিত ইইতে থান কিবে। ঘটিকা মন্তের নায়ে উন্নিথত বন্ধ আগনা ইইতে সঞ্চালিত ইটবে।

২।—ইংলতে তথাপান্তন। প্রস্তুত হই বার এক অপুর্বা দত্ত দিখান হইতেছে। উক্ত ব্যত্ত-সহকারে এক দিবনের মধ্যে ২০০ ছই শত যোগা গাছকা শ্রেত হইবে, এবং তাই। বিশক্ষণ স্থানা জ্বালী

ত। — ইংলও প্রভৃতি কানে থানা গোধূম প্রভৃতি সদা ছেবন করিবায় এক আপূর্ব থক প্রভৃত ইবরছে। উক্ত থক ধারা
কর্মকেরা এক কান হর্মক আনক ক্ষেত্রের
করা কেনেক ক্ষিতি সর্কাহে, প্রথং উহার

<sup>•</sup> Chaseler's Josephal, August, 1856.

ধারা জ্বল্স কালের মধ্যে বিজ্বুত ভূমির শন্য ছেন্দ্র করিতে পারা বার। উক্ত বজ সহকারে একনা এক ব্যক্তি ক্লক নর ঘন্টার মধ্যে অভ্যান ২০ বিখা পরিমিত ভূ মির শন্য ভেদন বা মাছিল।

৪।—সন্তাগতে শটিকা ও অতিবাতাদি ভিপত্তিত তথাক জাহাজের নক্ষতিভিত্তী অনেক লোহের প্রাণ সজ্ঞ ও অনেকের বি-শাল উপাত্ত তইয়া থাকে। রিচার্ড রস্টন নামক একজন সাহেব এক্ষণে এ সমস্ত ভিশাসের প্রতিভিত্তা করণের এক প্রকার উপান ক্ষিত্র করিয়াজেন, তৈনি এমনি এক একার যক্ষ্র প্রস্তুত করিয়াজেন, তে তাহা নালায়ের রজ্জাত সংলগ্ন থাকিলে কন্মিন কালে আর নক্ষর নক্ষী হন্তবে না ১১।

# বিপুরা ত্রান্সসমজে পঠিত ডোত্র।

三字四門前 194四間衛

হে ব্ৰহ্মাণ্ডতে! অন্য আন্ত্ৰা আত্ৰ এক ব্লের কলে জন্য জীবন পথে অগ্রসর চহ্যাস অভ্না এড চুপলকে ভোমার স্ত-ান-বৈল মহিলা দংগাড়ান জনিত বিমলানক উপভোগারে আমার মন নিজান্ত উৎস্থক হট্যা উঠিয়ানে, কিন্তু উক্স্থিত ফলা-ঁকাজনী উৰ্দ্ধান্ত বামকের ন্যায় আমার এ বাসনা যদি সাতিশয় উপহাসাম্পদ বটে ভিপাপি ভর্মা যে প্রায় পোষা শিশুর মুগ বিনিধাত অন্ধিশুন্ট বাকা থেমন তক্ষ্য-মক সমনীত অপরিষীণ আহ্বাদ দারক হয়, ং েরহপিডা: আমাদিনের **অসম্পূর্ণস্কতি** বলক ভোষা কর্ত্ত নিং**স্ক্রেছে উক্রেপে**, শনিষ্ট্রিক কইয়া **ধার্কেন**া **হে দর্মনিজো।** শোষাত কলেও গ্ৰ**মাণাৎ গত বৰ্ষ মধ্যে বে** कर परिवर्णान्य **अर्था सर्वाद्याप्रहरे क**ः ্রেরাছি প্রাঞ্জ কি অর্থ**ন করিব! ক্ষামানের** भरान समरह समात मुख्के **सूथ कर्त्र कक्क मरना** हत শোভাইবা দর্শত বরিলাছে, রসনা কত মু-चार जिलादक भाग है। उसेवा चार पाकियर कतिप्राटक, नामिक जनका अकात कि

-> Literary Gazerie, 22nd November, 1856, 12

AND AN OTHER MEMBERS CHIEF MI-প্ৰাৰ করিচাতে, কৰ্ম ক্ৰামিৰ প্ৰাথমিক স ধুর হর্তবা জ্বাবা করিয়াছে, তাগিলৈয় কত धाराव न्यानी स्थारेका नएकान कातकहरू, भागादमक सदन अवस्थित सहाय छात्र तक-ल उपिट इरेशा क्रक्टिस विमनानम ध-मान करिडारिक । यनि के के कानि करिका य-कारक सम्मित्र नासवात मिलक्किक-रेग्राहि अवर क्षमासन लायामि लिया माना অধ্নিশ অন্তৰ্জাহ দ্বীয়াছে, কিন্তু হৈ মঞ্চ সাকর ' ভোষার অনুকল্পায় ভাষারাও অভি হিতকোজনী সদ্প্রসর ন্যায় করু জাতুল্য ও थम्बा खारनां भरनको धानान कतिशारह ! লোকে রোগ শোকাকান্ত হইয়া ভাম ও মে: হ্ৰণ্ডঃ ইচ্ সংঘাৰকে কথন কথন কেবল ছাখ্যময় বিবেচনা করে বটে, কিন্তু শমরাভরে ভাষাতেই আবার ভো**মার ম**-কল অভিকার প্রতীতি করিয়া ভাষাদের আলা মহা উল্ভাবস্থা প্রাপ্ত হয়, হে ক-ঞ্ণানিধান ! আমাদের নিক্**ট** আপাতভঃ প্রতীয়মান বিগদ সমূহ তে ভূমি স্লখোদে-শেই ণিধান করিয়াছ ভাহাতে আৰু কোন मत्मह माहै। ८६ व्यवनीम! मनुषा कीव-्रमतः यादिकारण **स्थायत्** उर्हे विविध स्थ সংস্থাগ করিয়া খাকে; কিন্ত হক্ষমা ভব-দীয় প্রেমে নিম্য হুইরা সূত্রভঙা প্রকাশ कात धामन ल्याक किं वित्रज्ञ, कमा-তিৎ ক্ষণস্থায়ী স্বস্প সুংখ ও বিস্পত যদি উপস্থিত হয় তবে স্থামানের ক্রুডায় রদনা ভোমার পরিভক্ত নিক্সক মহিমাতে ক-লক্ষারোপ করিতে জমনি উদ্ভাত হয়। वंसामि जारा चात्र निकल्टनत मोग्निविन छ च ष्ठांथ निर्वाह्यक दकाम कियाज निष्काहर सहा वाज छटत मसुया, कामिटक भाइन एक दिन-প্ৰাৰ্থি আলৱণ তিমি ছত প্ৰকাৰ বৈশিক ও আহরিক অপুর্ব্ধ বিদ্যাল<del>ক</del> ভোটেক विशाहन एर जननात कैश्राक अब क्रिका नांक इत्भरणांभी रूपेरक रूपे भारत विकास मार्टन कार्टन चलाविमक्टा १७ महिनेद तार को कमा त्रज विकास करेंगा करिया THE PROPERTY AND ADDRESS OF

'प्रमुख हरेश बादका मिन् बाब पन त अकात सर्वातंत्राति पणि क्रकाल अमाना-वानाकरम् अवित् मुर्वापक् ब्राम्स अवः-করণে প্রতীতি করিতে পারে কা, হৈ বি-अनाथ! अञ्चानाका विशृष्ट मानव श्रेने ७ जुजारा মাতৃ কেহাদি তোমার করণার অনুংধা নি-দর্শন দর্শন করিয়াও ভবদীয় মঙ্গুল সন্ত্রাতে প্রভার স্থাপন করিতে সক্ষম হয় ন। পরমা-ज्ञम्। आयारपत अयन विषम जम कर्म ক্ষাল ? আমরা কি ক্লাপি ইছা হইতে উদ্ধ হইব ল<sup>ে</sup> চোনার প্রতি ভব্তি ও গ্রান্তি থাকিলে এবং নিয়ন্ত জ্ঞানাত্রাল ক-বিলে, পরিণানে ও ভাত্তি ঘরশ্বাই কুরীছিছ करेंद्र। ८६ नर्कनिकिल्लाहा ! ु दुनि एकि ? या याएकत आर्थनात भटनका ना कतिसा ্রেলাজনাতিরি জ নানানির ক্রথর সামগ্রী অংগ্ৰেই বিধান ভাটিয়া বালিয়াছ তথাপি ভূমি লাভা, খালারা ঘণীজা গুখাঁতার স্বভাব এই যে দানশাল বাজি সভ্যাতী-ড স্থাএলান কাঁবলৈও তাহার আশার নিবৃত্তি মুল্লা, লাডএৰ পেই আশানে একটি ভিজা প্রাপনা করিছেটি। ভদতে গৈনি বখন কোন সাংসারিক কোর বিপদ ভারা বিশন্ত হিয়া ফোন হাদ্যানিক শ্বন্ধন বিয়োগ জনিত শেক জারা বিশ্বন হই তথ্যত গেল ভ্রম্বীর मलन वकरत जामात कृष्ठ विद्यान शहरः, এবং সেই সমুদর **ঘটনাব সধো**ও যোগ তোমার করণা দেবীপামান দর্শন ভ্রিনা তোমার প্রেমে পুলকিত হটয়া জীবনের সার্থকা সম্পাদন করিতে পারি, এই আমা-क्र कामना।

### বিপুরাহ শাখা ব্রাহ্মসমাজের বক্ত তা।

अमे नाथ। वाक्षनगांव हरेररमंत्र नर्था कं चित्र शक्स जार मीनिय शक्तिया चम्य (व क्योत नर्नर्थ नय अस्किन स्विद्धित्व हर्षे मेनिय चानार्यत्र नर्थ स्व अकात चान्नम् स्वात न्यमत मन्द्रस्य स्व स्वात स्वात स्वात स्व

नम जामता जात कर्तक गरमान कति नाहै। भिक्त वासि अहल छन्न छाएम नवश रहेश কোন রক্ষের ছামার ছারার উপরেম করতঃ मन्द्र मन्द्र माङ्ग्छ (मन्द्रन (व ध्यक्ति अ व्छ रबाव करहा बादिक जहानक ममुख दा थ-इन्छ (तनवंधी ननी खेखीन सरेएक शाहरन काशात वर्ग ता अकात जानक नित्क मध হয়, শীতাৰ্ড ৰাজি হৌদে ৰা উপযুক্ত বস্ত্ৰ প্ৰাণ্ডে যে অকার ছখ ৰোধ করে এবং वर्ष्ट निवन । शांत चारमां मात्र भू **श्री । ७** ७ ङि ভালন পিতা মাতা এবং প্রেমান্দার পুত্র দারার ৫৯ম রস'ভিসিত্ত চ<u>লামন্ সক্</u>শন दविया भद्रकवन त्य श्रकात भानसङ्गरम भारित रहा, अमा ाहे मार्था ताक्तमगारकत বিতীয় সাধংস্কিক সভা উপস্তে আমা-नितर्भत भाग उद्धार्थ निर्माण जानन नक्षाय इहेर उर्छ। 🖟 ८ए कुना निवादन क्रमा बदल् এই ব্যাক বজবিণ ভূষ্টনা আভিজ্ঞা ক রিয়া অন্যাপি বর্গমা**নী আ**হেদ, তাঁহাত্তে ম-নের সহিত্রগরেবার সুষ্টার না করিলা ফোন লালারেই চি**ন্ত প্রসাদ** লাভ করিতে नगर्थ हरेगा। अहे नगान अवर नवनंत्र ता প্রকার ত্র্ণার পতিত হুইয়াতির ভাগতে যে ইছা জীবিত থাকিয়া এই সকল ব্য-कारिश्यत क्षेत्राचि वास्त्र कैतिएव केस् काः দ্রিও জালা ছিল বা, কিম সতা ধর্মের কৈ अभितिभीय अस्मि ? यह भग ह उध दर्ज বার জন্ম বিপক্ষেকা যে সংগ্ৰহতত্ত্ত रहित्र किन, त्म अक्षि है । एकाइन्ट्रिय कोहल-র করলে **এামে প**তিত ইইখনেছ। যদি**ত** करे क्य मनक राज मायाउन्हां करे क-সংস্কারানিকী নেশের কোন উপকার হই-बात नक्षानी नाई, उपान हेमात शाता (व छेलपा रहेगाइ जाहारे जाहारिताक অধিক বলিয়া খীকার করিতে হুইবে। যে কুনং কার পাশে এতনগরীৰ ভদ্র জন গণ ৰন্ধ আছেন, তাহাতে এই সমাঞ্জ নে **এত দিন** निर्यास जीवित आहा, हेशाई भागामिरगद्ध शदम त्मीखारगान विश्व कक्रमानिधान क्यार निष्टा कृमि व जा-मानिश्वत केमन असुकाला धकाल करतः भी भीना तरणांका अञ्चल नक्या अवर्णन कति

মাছ এবং আধনা খারিবার পুরেষ আজা দিবের সকল কাননা পূর্ব করিয়াছ, জনাচ লামরা ভোষার নিকট পার না। ছেকক বামরা ভার ভারিবার পারি না। ছেকক বামরা ভার ভারিবার কালত এই কুন্দ্রেরাভিট বা দেশকৈ এই সকল এম নবং বামরা ভার হুটচে উরার কর এবং দ্রা ধরা ভারা করিবার ক্ষমতা একান কন্দ্রেরান্ত্র ভারার ভ্রার করিবার ক্ষমতা একান কন্দ্রেরান্ত্র ভারারান্ত্র ভারান্ত্র ভারারান্ত্র ভারান্ত্র ভারারান্ত্র ভারান্ত্র ভারান্ত ভারান্ত ভারান্ত ভারান্ত্র ভারান্ত ভারানান্ত ভারান্ত ভারান্ত ভারান্ত ভারান্ত ভারান্ত ভারান্ত ভারান্ত ভারান্ত ভারান্ত ভারা

তে প্রকাস্ম্। তেমার করণার বি-ন্দ্ৰ জানি কি বৰ্ণন করিব! তে.মার সপার কক্ষেণা অংশ ভাৰজ্জগৎ ৰক্ষ রহিয়াছে। কুমি ইচ্ছামাত্র এই নিশাল ব্রহাণ্ড বিচিত্র কেশিক ভারা রুশেটিত ফরিয়া স্থাটি कृषि जगुरुकाः क्षमान शृ क्षिणाइ। काम स्मार्था जीत्वत शक्ति कतियां मर्क ১০৭ ডাংগদিখনে দরার সহিত প্রতিপালন প্রিলের । কে কর্মণানিখান জগভাসে। ट्यामात कातृ ।। गणना कता कारात माना? ভান বিধিব উপায় দ্বারা পর্বাছ শিশুকে নিয়ত আহার প্রসাম করিতেছ, ভুমি তা भाग पूर्विक हरेगात गुरुव मा**क** खान ভূম ধ্ইবার নিরম সংস্থোপন করিছাত্ चर: कृषिणे माकाम **क्राया** क्रिकंटनीस हार अमान कतकः कुस्य मन्न वहनाल्य লিশ্ব নওলীকে প্রতিপালন করিতেছ। হে कत्रवीयत दिचल जक हिम्सि व क्विया खा নাদৈনের উপরে নির্মান্ত করেবা বাজি বর্ষণ हिल्डा अपने नर्द , अहे **जूम छटन स**-नहीत बीर थाएंड नेकरतत व्यांवरे . चूनि निवड ममज्यातं कक्षणां वर्षणं केविएक। कि गर्स, कि शकी, कि महीस्म, कि पाँउ क्ता एक की है, तम द्वान जी देवत है। कि चा-भक्षा त्रज्ञाला कहि करे गर्मन विचन्न व्यागक्षा वित्मव पान्य व्यात्माहना कृतियां त्रि वि ভাষারই বিশ্ব ভোষার ক্রমন অপার ক রুণার চিক্ল কেথিতে পাই যে তক্ষারে **অতি** च्टिंग क्राभात मन्ड छामात छामे ब्राम काळ इहै।

स्थानिकः । स्थानिकः। १ समाहः स्टब्स्

लक्षाक लानगर

हराह कहिलम, भेकूछल ! एडामार्ड বে আমার পুত্র জবিয়াছে ইহা স্থামি জ্ঞাত নহি, অতত্ত্ব মিথাাবাদিনী ভূমি, ডো-মার বাকো কে বিমার করিবে ? **ংঅতি** জ্বনা বুকটা মেনকা ছোমার ক্বনী, সে ভোষাকে ছিমালয় প্রত্তৈ নির্মালার ন্যায় পরিস্থাপ করিয়াছিল, আর তোমার পিতা বিশ্বামিত্র ভাষাতি কথনা, যিনি স্বয়ং ক্ষতিও অথচ ব্ৰাহ্মীয় প্ৰাপ্ত হইয়াও লোডে কা-त्मत **बल्पाल्य क्रह्या**क्रिका (सनक) বলি অপুসরার মধ্যে জোঠা, আরু বিশানিত यनि अक्तिनिहर्भन्न मटभा कार्यान, करा की-हानिरशत क्ना हरेका (कम जूबि कूनोगत ন্যায় বাকা ব্যয় করিছেছ? বিশেষত আ-मात्र माक्यारेक यह नक्या व्यवस्थात क्या কহিতে তোদার লক্ষা বোধও হইতেছে না, অতএব হৈ দুকি ছাপ্ৰদি! তুমি এথান হ-ইতে প্রস্থান কর। কোঁথার বা ভোমার ঋবি ভোষ্ঠ বিশ্বামিতা, কোণাল বা সেই মেনকা অপ্ৰরা, আর কোণায় বা তাপদী বেশ-ধারিণী জুন্দারিশী জুমি। তোমার এই পুত্ৰ বাৰা কাৰেই ছুহুৎকাছ এবং অতি বলবান দেখিতেছি, অউএব এই অণ্য কা-लाई होने कि बाल आज उत्कर साम ब्रह्ट **२३८एन 🖟 लामान छै० पछि आछि निक्रके** रहेरक, त्य रहकू जुलि कूलगात माहि बाका অব্যোগ করিতেছ এবং কাম সাগাসদা ম-व्यक्तातिनी सनका कर्बक स्ट्रीह प्रश्ना इरेसाइ। तर छोगलि। कृति साहा क्रिएक नकत्र विभागम् भरताकः विभाग विकेशस्त्र ও তোহাকে আৰি কৰণৰ কালি না, স 19-47 CO NIE CONTICE PE SE SEE FE THE PERSON NAMED OF THE PERSON THE REPORT OF THE PARTY OF THE

यामात स्थ कर उरक्के रहेत। दर्ब काल कृति गृथिवीएक भवावेन कत्र, मानि অনুরীকে গুডালত করি, অতএব ভোষা-रिक जागारक स्व कार्यक कार्य स्वरू क শ্র্মপর ন্যায়। আর আলার **অভা**ব **দেখ**, ्यामि हेल्द, यम, कृत्वत ७ वजन्तित १८६. নাতায়ত করি। মহারাজ! এছলে আমি श्रिक लोकिक क्षेत्रिक नेका कथा मुख्यास শ্বৰণ উপাপন করি, আপনি ভাগ অবণ্ট করিয়া রুট্ট কইবেন না এবং আনি যে ছেব: করিয়া কাইতেছি এমনও মনে করিবেন না বিৰূপ পুরুষ হতক্ষণ আদৰ্শে আপনার গুৰ্বজ্ঞান দেবে, এতকণ আপনাকে অন্য গ্রীতে **রূপ্**বাদ্মনে করে, আর মেই ব্যক্তি আপ্লার বিরুত মুখ**্**টী কুমনে, তথন আপনার ও **অ**ন্যের মুখ**্রী**র দিভিনতা জানিতে পারে। স্থরপদশ্র গোক্তি কুত্ৰণ গোৰুকে "**স্বৰু**জ। করিবে मा। त बाकि जिमक नाका करह टाहारक हेटाटक प्यनर्थ वानी वटन। रायन श्रुकत পুরীষ আহণ **ক**রে, তাহার ন্যার মুখ্য ক্রঞ্জি লৈকের ওভাওড় নিজিত বাক্য জবণ ক-রিয়া ভাষা হইজে অভভ নাকাই এছন করে, আগু হংকা বেমন জল হইতে করি াহণ করে ভক্ষণ প্রাক্ত ব্যক্তি মিঞ্জিভ ৰাক্য ভাৰণ করিয়া ভাষা হইতে গুণ-বছাকা গ্ৰহণ করেন। যেমন সাধু ব্যক্তি: ন্দানের অপবাদ বিশ করিয়া পরিতপ্ত হন, অসাধু ব্যক্তি তেমনি আনোর অ-शवाम विज्ञा ऋषी हत । त्यमन नाह गाँख मोना लाटकत नवर्षना कतिया जुध रम, पूर्व राजि गकात्मत खनमान कतिया ठक्र कृषि वाङ करता। भटनायम्भी नाबू ताकि ऋदय पादक्त ७ त्मापोक्तभी पूर्व श्रुवी रहा, त्यदर्ज् अदुरविता नाश्रुदक निमा इता किछ नाइ काकि पूर्वत्कक विका क तिम ना 🖟 रव दानि वर्ष हर्मन हरेगा। नव्यत्ते क्षूचन विश्वानिका कात्र, काहरू THE PERSON NAMED AND UNKNOWN THE REPORT OF STREET MANAGER STATE

দর্শারা হন, অভ্যাৰ ভোষার কম বৃহত্তে বিষয় ব্যা, তখন আবিকেরী আর কোখার माहदूस । (व राक्ति चत्र अंतर्भ श्रूत केरणायन कतिया चाराटक मधायत ना करत, দেবতারা ভাষাকে জীতাই করেন থাকা সে मर्टीके त्यादक अभग कतिहरू शहर वा! णिज् तन भूकारक कूत वः त्मक अधिका ॥ न-का भरकां जाला करण काचा कान्याक म. पार्ड धर श्रृद्धांक शतिपालि कतिरवक बा। मस् करियाद्यन, यश्री मञ्जूष, ने ক্রীত , বিবর্দ্ধিত ও ভানাক্রেক্রক্ট**্রিঞ্**র পাঁচ প্রকার পুক্ত হইয়া থাকেঃ মন্ত্রোর र्थिक कार्या मन्नामक ए बीडि विवर्धन बंदर' ধর্মা প্লব স্বৰূপ পুরা জন্ম এছণ করিয়া পিতৃ भगद्यः नज्ञक हेहेटल छकात करत। (ह मुन শ্রেষ্ঠ । ভূমি পুত্রকে পরিত্যার করিও না, (क् शृथिवीशटण । काशादक व्यवश् महाः ও ধর্মকে প্রতিপালন কর। হে নরে-<u>জ</u>াকণটভাব পরিত্যাপ্তর, শ**ত কুপ**্ चनन इहेर७ এक शुक्रतिनी त्यकं, भए शुक्रति ণী হইতে এক ব**জ**ামুকলে জ্বেষ্ঠ, শত বজা रहेट जक भूटजादशामन ट्यारे जरू नक शृक्ष रहेए अब मेडा एक । अक निरंक नरुक अधारित राष्ट्र अना नित्क अक मन्त्र नहेब्रा जूनना क्रिका लिबिटन मस्ट धन-মেধ স্ইতে এক সতাই **অধিক** হয়। হে আজন্! সাজেশপাক সমুদার বৈদাধারন ও নৰ্ব্ব তীৰ্থে অবগান্দ, এসকলও সভ্যোৱ मधान रह कि मां भएकह इस्ता। मः ত্যের সমান আর ধর্ম নাই, স্ভা হইতে উरह कें 3 जात गारे जरा मिथा। हरेएड ভীত্রতর পদার্থ ইং সংসারে আর কিছুই নাই। দে রাজন্ সভাই পরবৃদ্ধ সভা व्यक्तिक उरहाके, बहुत्व मण अहिना অভিক্রম করিওনা, সভ্য ভোমা কর্ত্তক 🚓 তিপালিত হউক ৷ াদি ভূমি অনুতা-क्रिशामी परेख भागामित्रत क्रिक आचा ना करे, जारा रहेटन आबि सानाविके अक्रान করিব, তোমার বহিত আর স্বানাগঙ ক कि ना दर प्रयाक दानीय वाजीयक नामाद्र पुळ देनमहानु हिनानाद्वत वर्ग कु रा प्रमा गरूआक भार नृतिरीत व्यवक्रत अविनातन कतिएक प्राप्ति गटकर गारे।

देवमालाहम करिएमम, नकुलना जानी-क हेर करिशा निराय रहेगामाण करि ক্ পুরোহিত, জাচার্যা ও মঞ্জি গণে পা-রিবেটিত ছ্বাডের প্রতি: আকাদরাণী কাল । মাতা ভক্তা হৰণ, পিতারই পুঞা জানিকে, স্করাং পিতৃ ইইতে ভালপুত্ৰ পিডারই হরপ , অভএৰ ছে-ুত্তকৈ প্রতিপাধন কর, নকু-ভলার অলমান করিওনা। (इ नवरानवे! শুক্র শোণিত্তোগেল পুত্র পিতাকে খন ভাষন এইড়ত উদ্ধার করে । শকুস্তর। महारे विरिश्तिम व दुवि करे पूछ छैद-্লান ক্ষিত্ৰিছ। আগমার অফ হিবও ক্ষি-ধা প্রতিবাস পুরুকে পাত করে, অসমত কে দুবাৰ ! শকুৰদা গৰ্মাৰ এই পুৰুদ্ধে প্রতিপাদন কর। জীব্য শস্ত্র পরিস্থাপ श्वविश्वी त्य विर्वाहरू श्वासा हिंशी मामना क्षमण बारक, बात दश के दलीतम त्यांचे ' " कु प्रका লামত এই বহারা স্থাঃ পুরুষর ভাগে পেন ान करें। (कर्ड हामाप्त वह महान-কে স্থানার থাকোতে ভরণ করে কর্তবা ্টল অভনে ইইনে দৰে ভয়ত হইৰে। গোরেবানেও প্রক্ষা চূপান্ত এই স্বর্ত্তীক বাণী ভারণ করিয়া সক্ষান্তিত পুত্রেছিত ও অম্ভা গালে কহিলেন, ভোমরা এই দৈব-नानी धाना कतित्व जनः चामि ह हेन्तक चा-মারেই সভান বলিয়া জানি, কিন্তু যদি কঠাৎ ইহাকে এইণ কৰি ভাষা হইলে পাছে , लारक भरन्त् करत अवः श्रुखंश कनहीं হয়, এজনা এতীক করিতেছিল। বৈশ-স্পায়ন করিবেন, হে ভারত! রাজা স্ত-या ह रेमद दारका भूकारक स्थाधन कतिहा স্ফটিতে ভাছাকে এত্ণ করিলেন। খনওর ্যাজা ঐতিপ্রকৃত্ত হৃদত্তে ভাষার পিতৃ कार्य। प्रकल वंशादिशादन नामान कतिल গত্তৰ আন্তাগ করতঃ বেই পুর্বাক আলি-अन् कांत्रहरून । एथन बीका भक्त ६ व-देशलंदक खत कांत्रक लामिन। चर किशा लोगा अकु उर्गादक अविति। शामक भूकत भारत मा स्तिका करिएनक रर

বৈদ্ধি । লোকের অনুষ্ঠাক কিন্তু আনি
ভাষার সহিত বংবর্গ বিরুদ্ধিকার কিন্তু
কাল ভাষার ভাষার নিমানে আনি অভ্ন কাল এতজার নিমানে কার্যার। বাছে লোকে তোনাকে মনে করে বে জীবভাবে ইনি রাজার নিমানে আমতা এবং রাজাও ইহার সভানকে রাজে। অভিনিতা করি-লোম। তুমি যে অভ্যন্ত কোপিতা করি-লাম। তুমি যে অভ্যন্ত কোপিতা করিবা ভাষার প্রতি অভিন বাক্য ক্রেণা করিবার, কে গ্রাহারী বিশালাকি। ভাষা আমি অভি বোল্ল বাক্য জ্ঞান করিয়াছিন

ে ভারত রাজা দ্বান্ত মহিনীকে ইকা ক-ছিয়া বস্ত্রান্ন পানাদি **ছারা তাই**ার **প**রিভো**ষ** জনাইলেন এবং শকুন্তলার সভানের লাম ভরত রাধিয়া ভাঁছাকে ঘৌৰনাকো অতি বিজ্ঞ করিলেন: ভরত যুবরাল হক্ষ প্রবাশর মহীপলৈ সকলকে জয়া ছার বৃদ্যভাপন করিলা সাধু বর্ষাচরণ করাজ্য चालिनाम् यमत्री इंदेलन, श्रद्धां नार्का छेन क्षां के कार वर्षी इसेशा रक्ष मामानुकार न तावरं, हेर्नुक न्यामः स्वर्केमिशान समान-इगीय हरेरतम । जनसङ जिमान् मन् अवि चीहाटकः स्थाविधाटन नक् मकिनानिए ातिकारमानक **काबायम अंक असुर्ध म**ाक वाहेरलंग, य याकारण अवच कन अविद्या अरुद्ध शक्ष मिक्ना (मना , एन**रे**, जर्दछ হটতে এই ভারতী কীর্ত্তি ও ভারত ,निवा निथाक धरे नेजबंद कुन, उर्शन हरेतारह। अहे छत्रछत्र बंदरेन स्म कुना महारक्षण्यी जाका मन्त्र व्यक्तिकारमक ताक एकंदर्की छेट्मझ इत । किलानिएमझ अवन-রিমের নাম, অতএব হে ভারত। বাংদি-গোর নথো মহাভাগ দেবতুলা বভা বার্কা शहासन अधान अवादतत नाम जानि की कर

Comparine Compar



াগ্ৰহেওবংখনসাল্যানী স্থানিক কিন্তানী কিনিক স্থানিক ক্ষাত্তিক ৷ তেন্তেনি ভাগেজ নিম্পান্ত শিবং সাজে বিব্ৰুত চন্দ্ৰ নিৰ্ভাৱ । ২ এং গ্ৰেপ্ত স্থানিক স্থানিক স্থানিক ক্ষাত্ৰিক বিশ্বস্থানিক স্থানিক নিজি এক শ্ৰেষ্ট্ৰ গ্ৰেষ্ট্ৰ স্থানিক ক্ষাত্ৰিক ক্ষাত্য ক্ষাত্ৰিক ক্ষাত্ৰিক ক্ষাত্ৰিক ক্ষাত্ৰিক ক্ষাত্ৰিক ক্ষাত্ৰিক ক্

## কলিকাত। বাগসনাজের

वक्ता।

5 . Y .178 5442 Mile

ছপুর উপান্যা মৃদুষা জাতির স্বভাব-भिक्षः प्रमुधा, कर्रात प्राह्माटा श्रीत खरी। পরম পুরুষের পরিচম প্রাপ্ত হইয়া এবং ক্রিলার পূজা করিলা চরিতার্থ ইইতে পারে, কুপামর প্রমেশ্র করণা পূর্বক তাছার অবারিত পথ গ্রন্থত করিয়া গ্রাখনাছেন। তিনি মানৰ জাতির প্রকৃতিৰ মূলেই উজ মহৎ ব্যাপারের বীজ বপন করিয়াছেন। তিনি মানব জাতিকে আপন উপাসনার व्यक्तिकाही कतिकात अना जाशानिभटक अ भनि अविषे अशुक्त जुका धानान कतिहा-ছেন, যে ধধন ভাছানিগের সেই ভূঞার উ দয় হর, তথনি তাহারা তাহার বিষয় অবে-ষণ করিতে বাশ্র হইতে থাকে এবং যত কৰ পর্যাপ্ত সেই বিষয় প্রাপ্ত না হয়, ডাড ক্ষণ কোন ৰূপেই মলুধোর উক্তৃকার শাণ্ হন্তুমা। প্রচুর ঐখ্যা হারাও উক্ত তৃকার निवृद्धि रहा मा, विचित्र क्षकात्र भागीतिक उ দামাজিক সুপ ভে'গ স্থারাও উলার শেষ रम् ना अदश नामा अकात विकासमत ममारणा-চন মারাও উলিধিত পিশাসার নিবারণ হই (क माद्रि सा। क्या क मिन्द्र चेक् लिकामा विशासलय क्षेत्राक केवर।

ক্লানিরাত্ত করিবার জনা মনুয়া যেমন খ্যম উপক্ষেন করিতে আপনা দইতে বাস্ক হয়, পিপাসা শান্তির নিমিত মানব বেৰপ জলের জনা স্বতই লাখানিত হয়, সেইকপ ঈশ্বর লাভের ভূফা শাহির নিমিত্ত মনুষ্য व्यापन अके। त्क भारतेगात छन। मन्तना बा कृति हम्। देवत लाट्ड रेव्ह मसुग ফাতির সকল প্রকার ইচ্ছ, স্ইতে গুরুতর গ उक्त इंफ ठांत्र भं ना करिया पसुधा क्यांमर নিবন্ধ পাকিতে পারে না। শরীরী জীবের প্रकारयम्ब कृषा ५क. व व्यक्टि ६९॥ अ সন্তান, চেডনবোৰ্ মনের পাকে গেন্য ক্রেন দ্য়াদি বৃত্তি ৰজিং ত চঙ্গা আধুকৃত, মন্ত্ৰ দেরে আহার পঞ্চে স্বর আরোদন্ত ইচ্ছ। ৰ জি ভ সংখ্যাও সেইয়াগ অসম্ব । ইছ। 🗣 अर्थशरोहे । या मकल कारण संमकत रा**राण म** दक्ष छादण्य प्रस्पा ध्वमहत्र अभिष्ठात्र আর্ ধ্ল ক্ষর লা, দেশতের র ও কাশ তেনে স্মানের ভারতখনত্ত্ব বে বিভিন্ন প্রকারম-মুষা বিভিন্নবেপ ওলার উপাসনা করিয়া পাৰে। কেই জাপন মূলত। ধেতু ভাঁছাকে অচেত্ৰ পাৰাণ বা সচেত্ৰ মনুষ্যাদি জীবে অনবিভূতি নিখাস করিয়া তদনুষ্থী আরা-ধন কৰে; ক্ষেহ বা উত্থাকে কোন কম্পিড न्त्रीपि कि कि चारन व्यापन कि सारम ৰূপে অন্তৰ্না কৰে; কেই তাঁহাকে মনুণ্যাহি জীবৰপে অৰতীৰ্ণপ্ৰভাগ্ন করিয়া দেই সেই

ক্শিত অবতারের উপাসনা করিতেও প্রবৃত্ত হয় এবং কোন ব্যক্তি বা ভাঁহাকে মহুযোর নারে রাগ তেব লোভ কোভ মারা মোহাদি ভাবের অধীন কম্পনা করি-রা তদমুলারেই তাঁহার অচলা করে, এবং दिरान जातावान् शुक्रम श्रीय मोजाता दमछः অগদীখনের প্রকৃত তত্ত্ব অনগত হইয়া তী-হাকে সক্ষরাপৌ দর্কাশ্রয় নিত্য নির্বিকার পূণ ও পঢ়িশুক্ষ ৰূপে প্রত্যক্ষ করিয়া কে: বল বিশুদ্ধ প্রীভিও অচলা ভব্তি সহকারে ক্লাছার আরাধনা করিয়া মানব জমকে বজ-क्ष करता किन्न य राक्ति य करने के हात আরাধনা করুক সকলেই যে সেই অভভুতি लुकाम ताकृषिण रहेमा जँकात आकृषा क-রিতে ধাবিত হয়, তাহরে অর সন্দেহ নাই। মানবছাতির দঙ্গে সকেই উক্ত পিপাসার श्रक्ति इहेशार्ष, अवः मसूयाकूलात नहिष् নিত্যকালই উহা সর্ভমান থাকিবে। কোন কালেই মনুষা ভাতিকে ঈশ্বর উপাসনা विक्किं उत्तर्शा साम्र ना, ऋखिकाल इट्रेटडर् मञ्जा काम मा काम करण मेचदात आहा-ধনা করিয়া আসিতেছে। মন্তব্য জাতি म्बन (म अकात व्यवहा आख इहेनाहरू, ज-খন সেই ৰূপেই স্বীয় আরাধ্য দেবের উপাসনা করিয়াছে। পৃথিবীর পূর্বে হভাত্ত পাঠ করিলে দেখা যায়, যে মানৰ জাতি যে | স্ময় স্মাঞ্জ্য হইয়া কোনগ্ৰাম নগ্ৰাদি পঞ্জন করিয়া বাস করিতে শিক্ষা করে নাই, ৰংকালে তাহারা বিচ্ছিন ও বিক্ষিপ্ত অবস্থায় অর্থের অর্থের অমণ করিয়া কালহরণ করিত, তৎকালেও ভাষারা সেই স্বরণ্য মধ্যে স্থাপ-ম আপন প্রত্যের ও জ্ঞানাস্কুসারে স্কর্গৎ ক-র্ত্তার উপাসনা করিতে নিযুক্ত ছিল, পরে বখন তাহারা সামাজিক উন্নতি প্রাপ্ত হই-য়া একতা সমাজবন্ধ হইরা বাস করিতে অন্তেম্ভ করিল ওনানা প্রকার শিশ্প কৌশন অবগত হইরা অপুর্বা গৃহ মন্দির ও অটা-লিকানি নির্মাণ করিতে আরম্ভ করিল, তথন ডাছার: পরমার্থ নামনেরও বিশেব স্থান প্ৰস্তুত করিয়া তথাক্ষ অসমীক্ষয়ের ত্ৰ-कं ना कतिएक जोतिन। जनसङ्घ मध्य नामा र्राकात ज्ञाम अजारम व्यक्तका अक्रिक्

क्रिक्र ग रहेग, बरर वर्ष अवृत्ति अञ्जिक হ্ইল,তথৰ ভাহারা ভদসুবারী উৎকৃত ৰূপে ও পরিশুদ্ধ কপে পরমার্থ সাধনে তৎপর रुरेंग। अञ्जब कश्मीयदात्र উপामग् त মানব জাতির স্বভাব সিন্ধ, তাহাতে আর (क्∤न नरमस् नार्¦ नकल प्रमा, नकल কাল ও সকল অবস্থা **হইতেই তাহার** প্রচুর প্রমাণ প্রাপ্ত হওরা যায়। কোন-কালেই মনুষ্য জাতির ঈশ্বর ব্যক্তি হইবার সম্ভাবনা নাই। মনুষ্য পূবে যে প্রকার অবস্থার কাল যাপন ক রিয়াছে,তথন দেইৰূপেই ঈশরের আরাধ-না করিয়াছে,এফৰে যে ৰূপ অবস্থায় আছে তদনুসারে ভাঁহার উপাসনা করিতেছে এবং পরিণামে যেমন অরস্থায় অবস্থিত হইবে, সেইকপেই উ।হার অজনা করিবে। ঈশবের আরাধনা মানবের প্রকৃতি **সিদ্ধ**, উহা মনুযোর অজ্ঞানতার কার্য্য নহে। ম-सुरवात जवज्ञा निरमस्य जेम्बत बाहाश्नांत्र পদ্ধতি ভেদ হওয়াই নম্ভৰ কিন্তু কোন কালে উহা মনুষা সমাজ হইতে বিলুপ্ত रुप्ता नजु ज नरह। यादश मसूया काजिब क्षे-কৃতির নাল না হইবে, ভাৰত মনুধা মণ্ডলী হ**ইতে ঈশ্রের জারাধনাও তিরোহিত** স্ট্রেনা। আমরা বিলক্ষণ **দেখিতেছি** বে, জ্ঞানোলডি সহকারে বেমন মানব জা তির সামাজিক ও শারীরিক প্রভৃতি অন্যা-मा विषरत्रत्र ध्वकात एक ७ उन्ना के क्रिक्ट क्रिक्ट দেইৰণ উহার ঈশর উপাসনা বিষয়েরও পদতি ভেদ ও উন্নতি সিদ্ধি হইয়া আসি-তেছে, অতএৰ জ্ঞানপরিপাক ছারা পরি-ণাৰেও যে মনুষ্য সমাৰে জগ্ৰীখন্তের छेगानमात क्वम बर्भाखन रहेना प्रेमिड হইবে, তাহাতে ভার কিছুমাঞ লংশর 7. 4

धरेकरं रा व वस्त स्विमाणां कान-नान् ममूरवात वृद्धि नामा श्रकात श्राम-निक निकाम नाट्या नमादनाक्त काता निक्ष के क्रेसारक बाँकाना नामा श्रामत विमा क्ष्मि कृति स्वाकान स्वर्धि कृत्रकात नाम स्वेरक वृद्ध क्ष्मिस्टक, श्राप निकास कृति वृद्धि श्रामायक्त, श्राप निकास

भारत्वत अबधिष्टि नकल एएनन कतिशास्त्रन, তাঁহারা আর পূর্বতন অজ্ঞানাক্ষা মন্ত্যা-দিনের ন্যায় অচেতন মৃৎ পাষাণাদিতে বা পচেতন মনুব্যাদি জীব বিশেবে ঈশর ताभ कतिता नामामा भूष्य हम्मम ७ मृर्सानि উপহারে কেবল বাছ কার্যান্থারা ঈশরের আ রাধন। করিয়া কোন মতে প্রীত হয়েন না, অংকা প্রকৃষিত অগ্নিকুণ্ডে মৃত্যাছতি প্রদা-ন করিয়াও ঈশর আরাধনার স্থা লাভ क्टबन मा अवर क्यान मिर्फिके द्वारम शमन কুলিচা কডিপয় নিয়মিত অমুষ্ঠান না করি াল যে জগদীশ্বরের আরোধনা সিন্ধ হয় না, কি উপাসনা কালে কোন ব্যক্তি বিশেষের নামেজারণ না করিলে যে জগদীপর লে উ-পাদনা আছ করেন না,ইহাও তাঁহারা কোন ধ্বপে প্রতায় করিতে পারেন না।কিন্তু ইহা ৰলিয়া কখন্ট একপ মনে করা উচিত मारक एय काँचा किरानत भारक केंचत छेभागनाई অধিকার সঙ্কীর্ণ ইইয়াছে। জগদীশরের উপা-স্নার জনা বদিও তাঁহার৷ পুরেবালিধিত ৰূপ কোন প্ৰকার বাহা চমর অবলয়ন করিতে পারেন না বটে, কিন্তু তথাপি তাঁ-হাদিগের জন্য অন্ত বাহ সকল দিকেই ঈশ্বর উপাসনার শত শত উপচার প্রস্তুত त्रस्त्राष्ट्र। **ज्**रलाक ७ प्रारताक रमहे यः কণী পরনেশবের ৰূপ প্রকাশ করিতেতে, সমুদর বিশ্বমন্দির উঁহোর উপাসনার মন্দির হইর। রহিয়াছে, প্রত্যেক প্রাকৃতিক কার্যা चाहार्र्यात कार्या नवाशा कतिराउटक, निर्माल **बीफि शूक्ष फैरि**रात शृक्षात शूक्य इहेगारह, এবং আৰাদিগের এইআত্মা কেবল এক মাত্র देनद्वना अकल रहोबादः। यनि यथनाभाना পুত্তলিকা সন্ধর্শন করিয়া পৌত্তলিকের मान काहात रेके एक दिन वार्विकाव स्टेट পারে, ভবে এই প্রতাক পরিদৃশামান व्यवस्य वर्गः नम्पूर्णन कतिया कि स्वानित्ना-কের ক্ররাকাশে জগদীখরের উদয় হওয়া निठाक माइव इस ना? प्यारवाध लाएक यकि मृद्रभाषांगमत । व्यटण्डन পুত্তলিকায় **পুষ্পাঞ্জল প্রদান করি**রা ভৃত্ত হইতে **भारत,ाहार कानी मसूरा हेहजनाश्चक म**९-भूतनरक अक्यातः श्रीष्टः भूनावाता भूवा

করিয়া কতদুর পর্যান্তই আনন্দিত হই-(क शाद्यम? यहि यथनामाना दिन्दमिन्द्रः नम्हर्गन कत्रित्व श्लीखनिक निर्धत मानत প্ৰাশন্তা জয়ে, তবে এই বিশ্বৰণ মহান্ মনিং-রে উপবেশন করিলে কি জ্ঞানবাদ্লো-কের মন ঈশার জারাধনা করিতে প্রশস্ত इत्र ना ? यमि जम अनाम विभिक्ते मसूरा। था-ৰীত শাস্ত্ৰ **সক্ষৰ্যন করি**য়া লোকে ধ**র্মগং**ধ গমন করিতে শক্ত হয়, তবে জ্ঞানিলোকের পক্ষে অভানত অপ্ৰয়ন্ত বিশ্বন্ধ পুৰুষ বির্ভিত এই বিশ্বপ বিশাল এছ পাঠ করিয়া তর্ম উপরেশ প্রাপ্ত হওয়া কি নিতান্ত সঞ্জ হইতে পারে না? যদি **অম্প বুদ্ধি মু**ঢ় लाक् चारुकन शुक्रिकारक मामाना देन-विषा अमान कविशा जुल शहेटड भारत,जदव ज्हानरान् लाटक कि जिया मध्यकाशत দিক্ট ভাপন আল্ল: নিবেলন ক্রিরা **দিরা** মনোগত ভূপ্তি সাধন করিতে পারে না থে जानाना शुक्रम अहेबर्ट्स जननीत्रस्तर चा-ज्ञायमा क्षिता थात्क. त्य*हे का*रन त्य कक्क्या-পুণ পুরুষ,জ্ঞান মাজিক ই সংক্ত ব্যক্তি দিগের উপাদনা গুরুধ করিবার জন্য কত প্রকার উপচার প্রস্তুত করিয়া রাখিয়াছেন এবং সেই ব্যক্তিই বলিজে গারে বে উল্লি-থিত ৰূপে ঈশবের আরাধনা করিলে সমুধ্য কত হাথে স্থী হইছে পারে।

यिनि क्रणा कतिहा स्थाभाविशतक ४ वहे **সমুদ্য প্রজাঞ্জে স্জন** কবিয়াছেন, তিনি व्यामानित्त्रं हिन्नकारलं नक्षी, हिन्न कारलंड শরণা ও চিরনিবের স্বস্তং। আমরা ভাঁহা হ্টাতে উৎপন্ন হট্যাচি, তাঁহাতে স্থিতি করিডেছি এবং অত্যে উহিচ্ছেই অবস্থান कतित। भागत। कान कारण है छ। इ। इहरफ স্থাতন্ত সক্ষম নৰ্চি, তিনি আমাছি-গের চিরাজায় ও নিত্যাবলয়ন, আমরা **বধন** সকল প্রকার জ্ঞান বাজ্জতি ছিলাম, তথ্যও তিনি আমাদিণের ঈশর ওআরাধ্য ছিলেন এবং জামরা যখন নানা জ্ঞানে বুহেপন্ন হইব, তথ্বত তিনি আমাদিগের উপাদ্য भेषत् थाकिरवमः आभन्ना मीनकारव अवस्थान कतिरवः जिनि मीमवक्क मीननाथ अनः आपता বুদি নাজাল্যের রাজা ক্ই, ছবাশি তিনি

रामहाध्याक बीनहां डिल श्रेरका बानेका भिनंतर रहेटन रिन आमाहिएको एकरहर शहानदम्य अपर भामता अर्थवानी स्वेटलंड चित्रं यामामित्रत निताकुकु शबद्दीता মন্ত্রী যদি জ্ঞান বলে সাগর শুক্ত ও পর্যাত শাত- করিতে পারে, তথাপি ডিনি ভাইন্ত केंबर धरः म गमि चकीत वृक्ति कोलंडन মূলুর্ভেকের মধ্যে সকল প্রক্ষাপ্ত প্রেক্ষণ করিতেও সমর্থ হয়, তথাপি তিনি তাহার बाह्मधा ७ शृक्तीशः बामान्नी मंका लाटक থাকিলেও তিনি আমাদিগের জ্রফী ও পাতা এবং আমরা চন্দ্রলোক বাদী হইলেও তিনিমাত তাতা ও রক্ষা কর্তা। মনুষ্য ভাতি বে কিছু মহত্ব প্রকাশ করুক, সে কে-বল একমাতে ভাঁহারি গৌরব এবং দে যথন যে অবস্থায় অবস্থান করুক, তথ্যনই তিনি তাহার ঈশর ও উপাসা। আমরা ভাঁহার আভিত ও উপাসক, ইহাই আ-মাদিগের প্রধান গৌরব। তিনি বে আ-মাৰিগতে কৰু প্ৰকার হুখ ভোগের অধি-কারী করিয়াছেন, তাছার সংখ্যা করা ক-ঠিন, কিন্তু তল্পধ্যে তিনি যে আমাদিগকে উলোকে জানিয়ার ও তাঁহাকে উপাসনা করিবার অধিকার অদান করিয়াছেন, ইছাই আমাদিলের পরম স্থপ ও প্রধান গৌবর। এ-স্থার সহিত কোন স্থোরই ভুলনা হইতে পারে না, এবং একুখ কৌনরূপে ও কোন কালে শেব হয় না। অতএব বাহাতে আম-রা এমন অপূর্ক অমৃত্যয় স্থাস্থাদনে ব-किंछ मा हरे असेना डांशांठ राज्यान एउना डे किछ।

# ने पटवड महिमा।

বসনে দিয়ে ও ভাগৈতিক।

তীবের সুগ বঞ্জনের নিমিতে জগদীক
র আরু তুইটা জানে ক্রিকের ইটি করিয়াচেন। কেনে বস্তর রুগ উত্প করা উ প্রাণ গ্রহণ কর ঐ তুইটি ইন্সিকের কারা। ঐ ইন্রেক্তর ভারা শুড়, পশী, ইটি, শুড়ের, সমুভ ভীরাই স্কুখ ভোগা ও শারীয়া বিশি

THE PROPERTY OF THE PERSON NAMED IN · 47/4 - 4149 - 448, NINTERS (क्रेड्ट इम्ट्लिक क्रिकेट THE PARTY PARTY IN THE PARTY IN কি প্রকার করিয়া ভোজা অধ্যক্ত ক্রম त्याथ करत जबर चारखन भगार्यन आने नक याति । जाहा चालाणि मधाक् बद्धा चेवन রিত হয় নাই, কিছ বে লবক মন্তর্গালী (गश्चित्र अ समस्मित्र क्षकान भारेत्रक्र তৎ সমূদ*হের আবোই समे*री**परतत ज्ञातिह** করণার নিদর্শন ভূটি হইয়াছে। ভৌজ সংম্ঞার রস এহণের জন্য আবরা কিন্তা शाल हरेग्राहि, किस वे अक किसाइडहै লগৰী শবের কভ কৌশল াকাশ রহিরাইছ ৰ ক্রণাকর পরমেশ্র এই সমস্ত ারজ गारम ও শিরাসি ছারাই রসনার রচনা করিয়াছেন, কিন্তু ভাতাকে কে কি আকাৰ চমৎকার শক্তি প্রশাস করিয়াছেন জারা किहूरे वना योगमा। कर्रे जिल्लाकाह প্রভৃতি কোন **প্রকার রদকে আন**রা <del>য</del>ুদ শউবার স্পর্শ রা দর্শন করি, কোনা ইইটেন কোন মতেই ভাষার জ্ঞান পাইডে পারি गा. किन्छ উक्तानमा कामा विद्यान क्रमलकेक স্পৰ্য ইয়ামান্ত্ৰ আমনা ত্ৰকণাৰ ক্ৰিক তত্তি হইতে সমৰ্থ হৰী চলনায় উলিয় ভাগে ধৰ্মানৰম কডকঙলৈ বিশ্ব বিশ্ব কি দেখিতে পাওয়া যায়, সকলো মায়া লাখ করিলেও ঐ বিষয় সকল বিলাদৰ অভান হয়, বিশেষত শ্ৰেমীয়েতে আনাদি ক্ষেত্ৰ ব্যাপ उभाव अवरमा भी निर्माणनेक समितिक প্রকাশ পাইয়া উটে, তৎকালে কিন্দু त्रकार्भ रहा। जो ध्यतिषक किन्यु अधिकारी त्व कारनव क्रांशन काल्या शक्कालक व्यक्त विषेत्र । अहे । देव । काकारित एका अपन्य । मक्ता पूर्व भट्यक े का किन्द्र विकास Unique of the state of the state of PUTE STREET, MAY FATER HAND MAR OF A PROPERTY AND PROPERTY. THE REPORT OF THE PARTY OF THE (44. ALI \* 14. ABI ABI ABI ABI ABI ABI THE REPRESENTATION

विकुछ स्टेटि मा भारत, अहे जमा करूपी-ময় প্রমেশ্র উহাদিগকে এমনি এক জ-কার চমৎকার স্থান ত্ব দারা আবরণ कतियाद्यात्म । य ज्यासाद्य तम । त्याद्यत्य কোন ব্যাম্ভি জনে না, নথ্য এদৈনিরের-ও কোন হানি জনিতে পারে না। রগন आभावितात मुथ भाषा द्रम शर्दीकक ह-रेशा कामचारन कतिरहरू, आमता रहान चल केम्त्रच काँत्रवात भू**टर्क तमनाचाता व्य**ध्ध ভাহার ভাগের পরিচয় পাই, এবং পরিচয় পাইয়া অনায়াদে স্বেধাস হইতে পারি। যে কোন রস উদরস্ত হসুলে আমানিয়ের শরীরের প্রতি সমূহ হানি উপজ্ঞ ২উ৫০ পারে, তাহা আমাদিগের জিল্বাতো সংলগ্ন **ছ্ট্রামাত্রই জানিতে পারি, এবং এরপ** ন্ধানিতে পারিয়া আমর। উপকারী দ্রখা সকল গ্রহণ ও অন্তপকারী বস্তু সকলকে গ-রিত্রাগ করি। জলদাপর যদি আমাদি-शदक अध्याप आकर्या तम भन्नीकात छेभात প্রদান না করিতেন, তাহা ছট্লে যে আনা-দিনের কত একার অনিষ্ট ঘটিত, তাহ্ লৈখিয়া শেষ করা যায়না;ভাষা হঠ্নে আমরা অনায়াসে প্রাণ নাশক বিদ পর্যাত্ত গুলাখ্যকরণ করিয়া সূত্রা আমে পতিত হ ইতাম, আমরা ভোজন স্থাপ এক কালে ৰঞ্জিত হুইডাম। আমাদিগের মুখেতে জ্বগদীপর যদি রসনা যোজন না করিতেন, जाहा इट्रेंग नाना श्रदांत कल मुलानि छे-পাদের রদ নাধ্যোর স্ক্রখানুভব কেংগান থাকিত বৈকোন প্রকার স্থরম সংমগ্রী আর ष्यामानिशतक सुधी कतित्व भातिक नी. এ-মন অনুপম ভোজন স্থ আমাদিগের পক্তে বিফল হইত। অতএব যখন কোন প্রকার উপাদেয় দ্রব্যের আত্মাদ গ্রহণ করিয়া আ-নন্দ জন্মে, তথন তজ্ঞা দেই সুখদাতা জ-গদীশরকে সক্ততভ চিত্তে স্মরণ করিয়া **প্রীতি পূর্বাক নম**স্কার করা নিতাস্থ উচিত। **तरमञ्जित किस्तारक या शारन योजनो कति** ल भागामित्वत कलांग इरेट शास क পৰীম্বর ভাষাকে সেই স্থানেই যোজনা ক-'রিরাছেন 'এবং যে প্রফার গঠন করিলে गोनर्यत मेक्क इत, एनरे अकात कतिता नि-

র্মাণ করিয়াছেন। রুবেন্দ্রিয় জিহর। কেবল আমাদিগের রসামুভবের দার নহে, উহা আমাদিপের বাগিন্দ্রিরেরও একটি প্রধান অফ : ফিল্লা ভিল্ল কথনই আমাদিণের वाका पर्डिशाना, जलना जन**ीयत** छै। থাকে আত্ত্যা সুকোমল করিয়া **নির্মা**ন ক্রিয়াছেন। আম্রা ইচ্ছা ক্রিলে আব্দ্র-কমত জিলাতে সকল দিকে স্পালন ক-রিয়া সার প্রকার শব্দ উচ্চারণ করিতে পারি। জিলা অফি শ্না ও এপ্রকার কো-মল নাহ্টলো কোন মতেই তদ্ধার আমা-দিগের যাকা ক্তি হুইত না, এবং আ-মরা কোন মাতেই তাহাকে সকল দিকে মঞালন করিতে পারিতামনা। ছারা ! প-রনেখেরের কি আহম্য কৌশল। তিনি এক একটি অসার্চনা ভারা আমাদিগের কত आशक्तिरे निक क्रिश्राइका रेटा तक्ता আমি, দিলের রূপ জ্ঞান লাভের প্রধান কারণ, ভাহাই আনার আমাদিবের বাকু করের প্রধান অন্ন লইয়া মন্ত্রবার মহৎ কল্যাণ সাগন ফ্রিভেডে। জগদীপ্র যে নিয়মে জিল্প: রচনা করিয়াডেন, তাহার বি**ন্দু মা**-ত্রের বৈলক্ষ্য হইলেও এই দণ্ডেই অশেষ অনৰ্থ উপস্থিত হয়, এই ক্ষণেই মন্তুদা বা-কা রহিত ইতর পশুর নায়ে মুক হইয়া কাৰ যাপন করে।

াকেই উল্লেখ করা গিরাছে, যে গশু, পশুনী, কাঁট, পভক প্রভৃতি কোন জীবল রপেন্দ্রির নাজিত নতে। যে সমত পুঞ কুব কাঁটশরীরে জিবলার নায় রস প্রহণের অল নাই, ভালারা স্পাশুর দারা ভোজা দ্রবের আলাদ এল দেরে। অনেক প্রকার ক্ষান্ত পান্ধা বার, ভালার যে দ্বা ভক্ষণ করে, থাবো ভালতে এ অব্যব স্থিনিট করিলা তাহার আশ্বাদ জানিয়ালয়, পশ্যাহ ভালা ভোজন যোগা বোধ হ'ল গ্রহণ করে, নতুবা ভাহা ভহক্ষণাৎ পরিভাগে করে শা

<sup>\*</sup> Rogets animal and vegetable physiolog, Vol. 11.

ः आयापिरशत खानकिया नवाधा रहेवाज कर्मा क्राअमीयत व्यामानिभटक खाटपंडिया नामिका श्रमान कतिशास्त्रन, थे नामिकात व्यस्त्रहरू সকল অবয়ব পরীকা করিয়া মেখিলে নিলফণ প্রভীতি হয়, বে এক জন अवज्ञान अवानि भूसम वित्यय देन-পুণ্য সহকারে নাসিকার রচনা করিয়াছে-ম। পদার্থবিদ্যার অনুশীলন ছারা ইহা নিশ্চর কইরাছে, যে আড্রের বস্তর যে স**-**মন্ত অতি হুকা ও অলকা প্রমাণ্ বায়ু সহকারে অনবরত উত্তীয়মান হয়, সেই সমস্ত ভূমন প্রমাণু আমাদিগের ত্র-ক্ষরক্ষে প্রবিষ্ট হইলে আন্তাণ বোধের উ-ৎপত্তি হয়, কিন্তু এতাদৃশ সূক্ষ্ম পদার্থ সকল অনুভূত হইবার জন্য পরমেশ্বর না-শিকাকে যেপ্রকার কৌশল সম্পন্ন করিয়া-ছেন, তাহ। ভাবিলে অবাকৃ হইতে হয়। নাদিকাতে অতি অন্তুত প্রকার অন্থি শিরা ধমনি ও মাংসপেশী সকল দেখিতে পাও-স্তা যার। আর্ণেন্ডিয় নাসিকা বদি মন্তকের সহিত তুলা ৰূপ কঠিন অন্ধি দ্বারা নির্দিত হইত, তাহা হইলে কোন মতেই তদারা জ্ঞাণ জিলা সভাগ হইত না, এজনা জগদী-শ্বর নাশিকাকে শাঞ্জ সদৃশ রক্ষায় এক প্রকার অপূর্বে আছি দ্বারা নির্মাণ করিরা উহাকে আন্দর্য্য নির্গলন ধরের ন্যায় করিয়। मिशास्त्रन, याञ्च महकाद्भ यथन के यटच কোন প্রকার পদার্থের অণু সকল উপনীত হয়, তথন ভাষা জনায়ানে উহার মধ্য দিয়া গলিত হইয়া আমাদিগের জ্ঞান ভূমিতে উ-পস্থিত হইতে পারে। আগ এহণের জন্য नामात्रस् नर्यमा मुक शका व्यावनाक, च-তরাং নাদিকা কেবল কোমল্লাংস দ্বারা নিশ্মিত হইলেও আমানিধাের কার্যানি-কাছ হইত না, এইজনা নানাতো এক প্রকার অপূর্বর ধাতু দেখিতে পা**ও**য়া বার। **छेरा मा माश्रमत साम्र व्यापन मा प्राप्ति**त ন্যায় কঠিন, উহার প্রকৃতি অতি চসংকার। কলতঃ আমানিগের শরীর মধ্যে যে অঞ্চতে स्व अकःत कतित्र। त्रहमां, त्रकाशिक्षाः क्षान्य प्र-নিউ ঘটিতে না পারে, প্রমেশ্র নেশ্রিককে ायरे अन्त्र क्रिजारे कृत्य स्विभावस्य (

त्व थात्व मारत्वत्र महामान स्ट्रेजातः ल क्रता माश्म नियादस्त अवेश एक क्रता करिय আৰখক হইয়াছে, সে খালে অভিই ৰো-জনা করিয়াছেন, ও বে ছলে এতছুত্র ধাতু দারা কার্যা লিক্ক হওয়া কঠিন বইয়া-চে, দে ছলে আবার মূতন ধাতুর ছটি করিয়াছেন। নাদিকাতে কতিপয় আশ্রুষ্ মাংসপেশী আছে, আমরা তদারা আ-বশ্যক মত নাসারন্ধুকে সংকুচিত ও শৈ-থিলা করিতে পারি। আমরা এককাবে আত্রেয় বস্তুর সমধিক **অণ্গ্রহণ করিতে** পা-রিব বশিয়া জগদীখর নাসারস্থের অঞ-ভাগকে প্রশস্ত করিয়া দিয়াছেন এবং পর-মাণু সকল সংহত হইরা সতেকে এক্র-ক্ষে প্রবিষ্ট হইবার জন্য উল্লিখিত রক্ষের মুল স্থানকে তিনি স্থীর্ণ করিয়াছেন।

এই প্রকার সহস্র সহস্র অনির্বাচনীর কৌশল প্রভাবে আমরা নানাবিধ ভ্রাণ স্কর্থ সম্ভোগ করি এবং অপরাপর অনংখ্য ঞ্র-কার উপকার প্রাপ্ত হই। ভাগেজ্যির যে আমানিগকে কড প্রকার সুখ প্রদান করে এবং আমাদিগের কত উপকার সাধনক-त्त, তाहा कि कहिय। आमत्रा वमस्र कात्म যথন কোন স্থরম্য উপবনে প্রবেশ করিরা মলিকা মাথবিকা যুবিকা প্রভৃতি কুগন্ধ কুন্তমের আজ্ঞাণ প্রাপ্ত হই, অথবা ঋতু বিশেষে যথন কোন মনোহর সরোবর তীরে উপনীত হইয়া প্রফুল শতদলের আনন্দ-কর সৌরভ অন্মুভব করি, তথন কি আর আমাদের স্থাধের সীমা থাকে? প্রবাহিত পবন হিলোলে অফস্মাৎ কোন দুরবন্ধী কুস্থন লতিকার সৌরভ ভার প্রাঞ্জ হইয়া কোন্ব্যক্তি না আনন্দ্লাগরে ক্স হয় এবং কোন মুচ "হা কথানীল ! ভোমান কি पत्रा " थरे मधुमन वाका উक्छान मा करत? व्यामामिरशत जारने जिल्ला कृषि नावन कता उचार्यत क्ष भगवंहे देव क्ष अकात कार्या अधुकान करत, जाराज निर्वत सहस्रे কঠিব। বেশ ৰামু কিছি তুক্ত আৰু পক क्यू व रश्यम् अञ्चलि गामस्य क्षेत्र रहेत्रा न महत्रकार्यन्त्र। बाह्र। शक्त प्रकार वेश्शक्ति करह 

আমাদিগের আণ পথে আনিয়া দেয়। জগদীশ্বর ধেমন আমাদিগকে স্থকৌশলময়
আনেক্সিয় প্রদান করিয়াছেন, সেই অপ
ভাষার স্থা সাধনের জন্য তিনি স্তন্ত্র বাহু পদার্থকে নিযুক্ত রাখিয়াছেন।

नामिका राभा माना ममग्र माना अवात स्रुशक शनार्थ अहन कतिता स्थामानिशेदक सूधी करत, रमहे क्षेत्र जातक मगत्र प्राप्तक প্রকার ভূপান্তমন দূষিত পদার্থ হইতে স-ভর্ক করিয়। আমাদিদের প্রাণ রক্ষা করি-ब्राधातक। ज्ञातक द्वारन ज्ञातक क्षकात পদার্থ বিশ্বত হইয়া ভাতি স্থানন নাপে উ-জিতে থাকে এবং তাহা মনুষ্য শরীরে প্র-বিষ্ট হুইয়া বিস্তর অণিক সাধন করে, কিন্তু জগদীশর আমাদিগাকে উক্ত প্রকার বিপদ হইতে নিস্তার করিবার জন্য আশ্চর্য্য ড্রা-नंगरिक अनान कतिशाद्यन; कान अकात বিষ ভুলা বিক্লান্ত বন্ধ বায়ু সহকারে আমান निरंगत रमरं अधिक करेगात शुर्व्वरे जाय-রা ভাছার গদ্ধ ছারা সতক হই, এবং মা-হাতে ঐ অপকারী বস্তু আমাদিগের কোন অনিউ সাধন করিতে না পারে, এমন উ-পায় অবৃশয়ন করি। আণেল্রিয় ছারা যে ম-মুখ্য জাতির কত উপকার জন্মে তাহা নি-র্দেশ করা কঠিন। এক জন গ্রন্থকার উল্লেখ করিয়াছেন যে নিথে৷ জাতিরা গল্প দারা স্বজাতীয় ও বিজ্ঞতীয় লোককে চিনি-ভে পারে \*। অনেক অজ্ ব্যক্তি চকুর্বিহী-ন হইরাও আণ শক্তির প্রভাবে হুম্বর কার্য্য নিকাই করে। এক জন অভা কেবল গল ছারা বিচিত্র প্রকার বজের বণ বলিতে **পারিত†। ভ্রাণেক্রিয় কোন কোন সম**য় রবেজিনেরও দাহায় করে। যে দমস্ত অ-পকারী দ্রব্য আমাদিগের উদরস্থ হইলে শরীরের পক্ষে হানি হইতে পারে, তাহা मुभम्द्रथा अविके शहेवात शृद्धके जात-ব্রিষ্ট খালা পরিত্যক্ত হয়। প্রায় অপ-'কারী সাম্প্রীর আপেতেই ডাহা আহার ক্রিতে অক্লুচি জন্মে এবং যে সকল সামগ্রী **জোজন** করিলে শরীর স্বস্থ থাকিতে পারে,

প্রার তাহার আধ গ্রহণ করিলেই খাইতে हेका रहा। यनित मधुरा क्रांडि वानक অত্যাচার করিয়া জ্রাণেক্রিয়ের উক্ত উপ-কার লাভে বঞ্চিত হইয়াছে, কিন্ধু শবিক্লত পশুর বধো **অনেক পশু জাতি জাণ** শক্তির অত্যনে হাঁদ স্থীর খাদ্যাখাদ্য বাছিয়া লয়। ा बहुत य जना यथाना, (म ब्रह्म क्षांस छ।-হার গল পাইলেই জানিতে পারে। প্রশন্ত প্রান্তর মধ্যে গো মাহ্বাদিকে **কেনল জাণ** षाना नरस अवग्र डिस्टिम्ब मया श्रेटि আপন আপ্ত খালা ভূবালি বাছিয়া খা-हेटड (पदा यहा। भिष्ट् दाखानि माप्ता-भी गण्डा रङ पुत इहेट जाशन थाना প্রাণীর থক্স পার এবং সেই বাক্স <del>সরুত্র</del> ক্রিনা শর্কাল। স্থাকারে করে। কোন কোন জন্তর ছোণ শব্দি এত তার যে তাহারা উহা ৰাড়া অচিত্তনীয় কাৰ্যা সকল সমাধা করে। কুলুৰ ছাতি কেবল এক গন্ধ মাত্র অলুভৰ কৰিয়া লোকারণা মগর নধোও স্বীয় প্রভার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করে এবং কোন কারণে পথ নিস্মৃত হইলে গঞ্জ অ-ন্তুত্ব ডারা স্থায় বাসস্থানে উপস্থিত হুইতে পারে \*। উট্ট জাতি প্রায় এক ধোজন পথ হইতে জলের গন্ধ প্রাপ্ত হইরা তদভিমুপে ক্রত বেগে চলিতে ধাকে। আপেনিয়া অ নেকানেক জীব জন্তুর প্রাণ ধারণের প্রধান অবলয়ন। তাহারা জ্রাপে ক্রিয় ছারা অনেক কার্য্য সম্পান করে।

প্রবিদ্যাপরায়ণ পশুতের। প্রীক্ষা হারা হির করিয়াজেন, বে পরমেপর ভূচর কলচর ও খেচর একুতি সকল প্রকার জীব জন্তকেই ভ্রাণেন্ডিয় প্রদান করিয়াজেন। মথ-ক্যাদি অল্ জন্তরও বিলক্ষণ আদ শক্তি আ-তে, মথয়াগণুল জলাসমে কোন গল্প ত্রবং নিংকেপ করিলে সেই স্থানে অনেক প্রকার মথক্ত আগমন করে। মথক্ত জাতিকে কোন কোন গল্প প্রিয় ও কোন কোন গল্প অপ্রিয় বোধ করিতে দেখা যায়। যাহার। বিদ্রুল হারা মথক্ত ধারণ করে, তাহার। জ-লেতে মথক্ত প্রিয় কোন প্রকার গল্প নিক্ষেপ করিয়া মথক্ত আকর্ষণ করে। হিন্ত এবং

<sup>·</sup> Gold Sinith's natural history Vol. Lst.

<sup>†</sup> Aberosouthe's mental philosophy.

Roget's animal and regetable physiology Vol. 11.

ন্ধনাভির গল্পে মংগ্রু জাতি অধিক আরু ক হন্দী: ভেক এবং জলগোধিকার আ-বৈশিল্পী অভি আশ্চর্যাস্থ্রে উৎপন্ন হর। উহারী যত দিন জলে বাদ করে, ওত দিন আগেশিন্তি বর্জিত থাকে। অনন্দর হলেতে বাদ করিতে আরু করিলেই তাহারা অ-নেক ব্যর প্রাণ পাইতে আরুর করে। অনেক কীটের অভিশয় প্রথার ঘ্রাণ শক্তি দেখিতে পাওরা হয়ে। হ্বর দাহেব ব্যক্ত করিরাছেন, যে মর্ মঞ্চিকা প্রভৃতি অনেক কীট ভাহাদিগের ক্ষুত্র শুর্জি আজা-ণের অনুভব করে; প্রস্তুপ্তের নিকট কোন কট গল্প উপভিত করিলে ঐ সকল কীট অভিশ্যু কাতরভার চিক্ত প্রকাশ করে।

যাতা কাইক পৃথিনী মধ্যে জগনীশর যে সকল জীব গ্রন্থকৈ আত্মাদন ও আত্মাদশন্তি প্রচান করিয়াছেন, ভ্রান্যে দানুষাক আত্মাদ প্রথ ভোগে করে। সনুষা জনের প্রকার মগল প্রশার সৌরভ প্রাপ্ত করিয়া স্থানী কলাতে এবং বিভিন্ন প্রকার উপাদের করা ভ্রন্থা করিছা আনে নিত কইতেছে। দেশ বিশোনে নর্মা জাতি উক্ত ইন্দ্রির দার জারা মন্পন উগ্রন্থা প্রাপ্ত ইন্দ্রির স্থাপন উগ্রন্থা প্রাপ্ত ইন্দ্রির স্থাপন কর্মান প্রাপ্ত ইন্দ্রির স্থাপন কর্মান প্রাপ্ত ইন্দ্রির স্থাপন কর্মান প্রাপ্ত হালান বিষয়ক স্থাপর ক্রান্ত ক্রেক্ত মভ্রা উচিত। স্বিত্র প্রবিক ক্রত ক্রেক্ত মভ্রা উচিত।

# অধর্ম।

মন্তব্য বর্ম পদনী পরিভাগে করিয়া
অধ্যের অনুগত হইলে যে তাহাকে অশেষ
একার ত্রুপ ভালী হইতে হয়, এবং তাহার
অনংখা প্রকার অনিট ঘটে, তাহা প্রায়
সকলেই স্থাকার করিয়া থাকে, এবং ধর্মতভূনিং মহামতি পাণ্ডত গণ তাহা নানা প্রকার
র যুক্তি ও তক করা প্রতিপন্ন করিয়া গিনাকেন। যাহার বুদ্ধি রক্তি এককালে অট্রিভার হল্যা না যায়, সেই স্থীকার করে,
যে অবংশ সেবা রায়া মন্তব্যার অনংখ্য
প্রকার ব্লিক্টি ভিল কোন ক্রেপ্ট কর্পন
\* Roget's unimal stud vegetable physiology Vol. II.

ইউ জ্বে না। কিন্তু অধনকৈ প্রিষ্ট্র ই-ইতে যে সমন্ত গরলময় কল উৎপদ্ধ হর, ভ্রাথো চুইটি কল ছারা মানবজাতির ভ্র-কর অনর্থ উদ্ভাবিত হয়। ঐ চুইটি বিষময় কল মানবজাতির মহন্তের পথে এককালে কন্টক প্রদান করে এবং ভালাদিগের নিডা নিগতনের কারণ হয়।

প্রথমতঃ কোন স্থানে সমূবা শরীরে জ-ধর্ম প্রবিফ হইলে জনমে ঐ অধর্ম তাহার ধর্মা চক্ষুকে নট করিতে চেফ। করে এবং তাহাকে অন্ধের ম্যায় আপন সঙ্গের সঙ্গী করিয়া স্থীয় অভিপ্রেড পথে লইয়াযায়। ভাচাকে আর ধর্মপথের স্থরাশি ও অ-বর্দাবজার ছংখ সমুছ দেখিতে দেয় না। তাহাকে স্থীর অনির্ব্বচনীয় মোহিনী বিদায়ে নোহিত করিয়া কেবল আপনার আজ্ঞা-বছ্করিয়ারাখে। কোন শত্রেমন কোন রাজ্য অধিকার করিয়া তথাকার সমস্ত দল বল আপন বশীভূত করে, অধর্মাও সেইৰপ মনুষা মন অধিকার করিয়া ক্রমে তাহার সকল সহায় ও সমস্ত সম্পদ আপনার অংগী-ন করিয়া ফে**লে। ধার্মিক লোকের বু**দ্ধি বুজি এভৃতি যে দকল মানদিক রুভি ধ-খের অনুকৃল হইয়া কার্যা করে এবং ধর্মে-র শীর্ষার জনা চেকী পার,অধার্মিক লো-কের সেই সমস্ত বুদ্ধি বৃদ্ধি অধর্মের পো-াক হইয়া কার্যা সাধন করিতে থাকে এবং অবর্জার উন্নতির জন্মই যত্ন করে। ইহা আমরা প্রত্যক্ষ দেখিতেছি, যে মনুষ্য ব-খন কোন মোছ বশতঃ প্রথমতঃ অধন্মের रमना कतिरा छेमा उ रय, उरकारम **ारा**त অন্তরন্থিত ধর্মা প্রবৃত্তি ভাষাকে পুনঃ-পুনঃ निरवध करत, जनः ये निवात्र व्यवस्तिन क-রিয়া অধর্মের ধেবা করিতে ভাহাকৈ বি-শেষ আয়াস করিতে হয়। সে ব্যক্তি কখনই সহজে অধ্বাপরায়ণ হট্টে পারে না, তা-हात मरनामरथा अभन्तासूत्रक निक्रके अवृष्टि-র সহিত উৎকৃষ্ট ধর্ম প্রকৃষ্টির বিজাতীয় যুদ্ধ উপস্থিত হয় এবং নে ব্যক্তি ৰমিও कर्णाकर करनात व्यवसान्छान करत কিন্তু তজন্য তাহার আছা প্রসাণ কুজ र्अग्राटण विकाशीय ब्रामि केर्राविक रहा।

কিন্তু অধর্মের কি অন্তুত শক্তি! वाक्ति वृष्टि थर्ट्यात निरवध ना स्थनिका वातत्रा-র আপনার অভিলবিত অধর্মের সেবা করে, ভাষা হইলে তাহার অন্তরত্ব ধর্ম প্রবৃত্তি ক্রমে ক্ষ্রীণা ও মলিনা হইয়া যার, এবং তা-হার অপরাপর সকল মনো হৃতিও ক্রমে গিয়া অধর্গের অনুগত হইতে থাকে। সৈ অধর্ণা-গ্রিতে যত আছতি প্রদান করে, ততই তা হার তেজ হৃদ্ধি হয়। তাহা আর কোন अकारत है निक्तान ना इस्त्रा उन्तम उहात পুর্বাস্থিত জ্ঞান ধর্মাদি ছবভি রভু সকল ভক্ষীভূত করে। ভাহার স্বভাবের এত পরি-वर्डन इस, त्यं त्म शुदर्श त्य कुळिस। यसू-ঠান করিতে মহা শল্পিত হইত, তথন সা-হস পূর্বক তাহা সাধন করে, বা পাপে লিপ্ত হইলে প্রথমতঃ তাহার অস্ট্রব আত্ম গ্রানি উপস্থিত হইত, পরে ভক্ষনা আর তাহার কিছুমাত্র **মকীক্ষেত্রভ জলো**না। সে অবলীলাক্রমে পাপ কর্ম অনুষ্ঠান করে এবং অ**লেশে অধর্মা ক্ষেত্রে বিচরণ করে**। নে ব্যক্তি ক্রমে ক্রমে ধর্মের মূর্ত্তি এক কালে বিশ্বত হয়, এবং তাহার মানসন্থিত দ্রবল ধর্মামুচর সকল অধর্ম প্রভাবে পরা-ভুত হ্ইয়া শঙ্কিতভাবে কাল্যাপন করে, তাহারা আর তথন কিছুমত্তে বল প্রকাশ ক-রিতে পারে না। এ প্রকার মন্তব্যের মনেতে সময়ে সময়ে নানা প্রকার অধর্মানুগত কুতর্ক সকল আসিয়া উদর হয় এবং তাহা-রা চুর্বেল ধর্মান্তুচর দিগকে উপেকা ও উ-পহাদ করে। তথ্য উহার মনে হয়, যে "হায়!'আমি এত দিন বে ধর্মৰূপ ভ্রম জালে বন্ধ থাকিয়া নানা জাতীয় স্থপ্তোগে বঞ্চি-ু ড ছিলাম, এক্ষণে মাজিত বুদ্ধি প্রভাবে তাহা হইতে নিছুতি পাইয়াছি, আর আ-मारक अवर्षक धर्म तक्षात्म वक्ष थाकिश वृषां क्षेत्रकाशं कतिएक हहेरव ना।" त्म क-খন জানিতত পারে না, বে অধর্মকপ ভয়রর ব্যাধি জাহাকে আক্রমণ করিয়া স্বন্তরে <u>অন্তরে ভাইনে সমস্ত নৌভাগ্য নটা করিতে-</u> ছে এবং ভাছার ছিব কল্যাণের পথে কণ্ট-क अनाम कद्रिएउद्द । करम जाशास्क महत् হুইতে পরিচ্যুত করিয়া অধোগাদী করি-

তেছে। তৎকালে সৈ ব্যক্তি আপনার বিপদকে সম্পদ ৰলিয়া বত্নপৃত্তীক আলিজন করে এবং আপনার নিতা নিক্তিনের কা রণকে উন্নতির সোপান ভাবিয়া আনদিকত হয়।

व्यथम् (य मनुषा महीतः अत्यमं कतित्रः। ক্রনে তাহার ধর্মজ্ঞানকে নন্ত করিয়া কেলে, লোক সমাজ হইতে ভাহার বিশ্বর উদাহরণ व्याल इर्झा बाह । य मस्या मीर्घकान त्य कृष्णिया असर्थाम करत, करम तारे कृष्णियात সহিত তাহার এমত আলুগতা হয় এবং প্রীতি জন্মে, যে দে ব্যক্তি আর ঐ কুকর্মকে कुरुर्भ रिवास है भटन करत नहा। आहे खर-ঞ্চকেরা প্রবঞ্চনাধ্যে এক প্রকার বুলিয়া কৌ-भाग मत्न करत, भिष्णावाणिता भिष्णप्रतिगटन-ও কার্যোক্ষারের বিশেষ উপায় ভাবিরা थाटक धवः चटनक क्रमांच लाकनी इक मसुषा छुर्वन निरंशत धन मिल्य क्रांटक পুরুষার্থের কার্য্য জানে। যে সকল মন্ত্র-चादक এक मगय शांन क्लांटवत नाना थ-কার নিন্দ। করিতে দেখা যায়, দীর্গকাল পান দোৰে রত থাকাতে ভাহারাই আ वात नमजा छत्त मनाभागतक नित्नीय कर्य বলিয়া প্রতিপন্ন করিতে নানা প্রকার কু তর্কবিস্থার করে। অনেক প্রদার।সঞ্জ লম্পট পুরুষ, গরদার গ্রন করাকে দোষ चूना मरक काथा विलिया (महच। सम्मेल পুরুষ লাম্পটা দোশে লিগু ইইনার পুরের উক্ত ক্রিয়াকে সহস্র প্রকারে নিন্দু করে, भे मार्ग मृगिष्ठ श्लेबाह श्रे छ छ। हाता है আবার পরদার গমনকে প্রকৃতিসিদ্ধ নি-एक स्व कार्या विकास राज्या कतिया बादक । যাহার মুখে এক সম্য অন্যায়াচরণের অ-শেষ প্রকার নিন্দা জাবণ করা যায়, সেই ব্যক্তি আনার দেই কুক্তিয়াকে অনিন্দিত কর্ম বলিরা কীর্তুন করে! এই রূপ যে वाकि भी कान व कान भाग कर्ना निश्व থাকে, অভ্যান দারা ক্রমে সে ঐ পাপক্রি-য়াকে দূৰিত ও মলিন দেখিয়াও নিত্য সহ-বাস হেতু ঐ পাপের মুর্ত্তি তাহার পক্ষে প্রিয় বলিয়া প্রতীয়মান হয় এবং দে তাহান কে নির্দোষ বলিয়া প্রতিপদ করিবার জন্য

নামা প্রকার তর্ক বিস্তার ও বাগাড়বর করি-তে ৰাজে। কিন্তু প্ৰচুতিত্ব লোকের ইহা क्षेत्रका विकास कविशा मधा উচিত य হিরামুন্তান ভারা কি কুকর্মের দোব নফ হর? কি কুকর্মি লোকের ধর্ম প্রবৃত্তি দ্বিন দিনে মলিন ছওয়াতে তাহার নিকট व्यथरणीत (नाय ब्यात (नाय विनित्र) भेगा दत्र ? পাপ भूना प्राप्त लाहक हेश दिस्तवना क-तिया मिथिता व्यवश्र हे कानित्र भावित-ন, যে কেল তুর্মার যুক্ত মলিন পদার্থের कुर्तका (माय नकी ना ट्टेट्ल अ रयमन मीध-কাল সহবাস ভারা আর তাহার তুর্গক অমুভূত হল না, পাগাসক অসাধু পুরুষে-বাও সেই ৰূপ দীৰ্ঘ কাল কোন কুজিয়া অনুস্থান করিয়া আর পরিণানে তাহার माध मिथिट शास ना।

 $\mathcal{H}_{i}^{p}(S)$ 

অথশ্ম রোগ ছইতে মনুষোর যত প্রকারে অনিক উন্তব হয়, তন্মধ্যে এই দোব
অতান্দ্র ভ্রানক , ইহাতে করিরা মনুষোর
এক কালে কল্যাণের পথ ক্লন্দ্র ইয়া যায়
এবং ক্রমাগত অধংগতন হইতে থাকে।
শ্রীশ দেশীয় প্রাচীনাচার্যা আরিস্তোতাল
ব্যক্ত করিয়াছেন, কোন পাপপরায়ণ প্রক্রম্ব যত দিন কুকর্মকে বিগহিত ও অকভবা বলিয়া বিশ্লাস করে, তত দিন
পর্যান্দ্র তাহার পুণা পথে প্রত্যাবর্ত্তন হইবার সন্তাবনা থাকে, কিন্তু যথন সে আর
কুক্রিয়ার দোষ রাশিকে দেখিতে না পার,
তথন আর তাহার পাগ পথ হইতে পুরিভাণ পাইবার উপার মাত্র থাকে না।

দিতীয়তঃ অধর্ম মন্ত্র্যা শরীরে প্রবিষ্ট হইয়া কথন শ্বির ভাবে থাকে না, নিরস্করই আপনার অধিকার বিস্তার করিতে থাকে। কুকর্ম কথন কোন শরীরে একাকী কাল যাপন করে না। যে স্থলে একটি কু-ক্রিয়ার আবির্ভাব হয়। কোন আর পাঁচটি আদিয়া উপস্থিত হয়। কোন মন্ত্র্যা ফোন একটি কুকর্মের বিশেষের অধীন হইয়া কোন একটি কুকর্মের রভ হয়, তথন ডাহার মন মন্ত্রানার কুকর্মে হইতে পৃথকু থাকিতে চেন্টা করে, কিন্তু পরিণামে ঐ কুকর্ম উপলক্ষে মনন্ত্র অধ্যাচারই আ্রিন-

রা তাহাকে আ**ক্রমণ করে। জনেক মনু**-ব্যকে এই ৰূপ প্ৰথমতঃ একটিমাত দোষ হেতু পরিণামে সর্কা প্রকার পাপের আখার इट्रेट्ड (मर्थ) यात्र। পान (माय **अत्नदक**्क লাম্পটা দোবের কারণ হইয়াছে এবং ল-স্পটতা হেতু **অনেকে**র চৌর্য্য দোষ জবি-য়াছে। অনেক ভদ সন্তান প্রথমতঃ আ-মোদপ্রিয় হইয়া মদাপান করিতে আরম্ভ করে, ব্দলন্তর দিনে দিনে ঐ পানা-<u>দক্তির আধিক্য হওয়াতে তাহার কামাদি</u> অপর নিরুক্ট প্রবৃত্তি সকল উত্তেজিত ২ই-য়া উঠে এবং শে ব্যক্তি তথন ভাছাদিগকে নিরোধ করিতে না পারিয়া স্থতরাং চরি-তার্থ করিতেই বাধ্য হয়। যে পরদারাস-ক্তির প্রতি তাহার পূর্বে সাতিশর যুগা ছিল, উভেজিত নিক্লট প্রবৃত্তির নির্যাতন হেতু পরে সেই পাপের শরণাগত হ-ভয়াই তাহাকে প্রিয়েশ্বোধ হয়, এবং তা-ভার পাপাশরা <del>আপন।</del>,হইতে **শিথিল হই**⊹ য়া বায়। এদিকে তাখার **মনোমধ্যে পা**প ইচ্ছু প্রস্তুত হইয়া থাকে, ওদিকে বাহির দ্বতে নানা প্রকার মদ্যপায়ী কুসংস্গী ভাছাকে সর্বল। কুপ্রবৃত্তি প্রদান করে। এই প্রকার নানা কারণে ক্রমে পাপ সাগরে সম্বরণ করিতে তাহার **সাহন রুদ্ধি হয়, এব**ং **শে ব্যক্তি অনায়াদে এক পাপের অন্তুরো**-ধে অন্য পাপকে আলিঞ্চন করে।

যে ব্যক্তি এইৰপ পানাসক্ত ও পর দারাসক্ত হয়, তাহার স্বত্য প্রভৃতি অপর ধর্মই বা কি প্রকারে রক্ষা পাইতে পারে? সেবাক্তি লোক সমাজে স্থীয় সম্ভুম রক্ষা করিবার জন্য অথবা আপনার পাপ ইক্ষা সম্পন্ম করিবার জন্য নার্না সময় নানা প্রকার ছলনা ও চাতুর্য্য করিতে বাধ্য হয় এবং ভিম ভিম অকার অন্ত্যাচার করিতে রত হয়। সে ব্যক্তি কোন সময় আপনার দোব গোপন করিবার জন্য কোন হামে নানা প্রকার হিম্যাবাক্য বিজ্ঞার করে এবং কোন সময় কোন আককে প্রকার মানমে তাহার করিতে অক্তর্যা বাবহার করিতে লভ্ত হয়। বে ভ্রমীয় বাবহার করিতে লভ্ত হয়। বে ভ্রমীয়

ভাত্রে মান বস্তুম কিছুই রকা পায় না, স্থুতরাং আপনা হইতে বতাকে পরিত্যাগ करता धेकरण कर कर नवस्तर भाग পদে আপনার সমস্ত সম্পত্তি অর্পণ করি-য়া এককালে নিস্ব হর এবং প্রভু সদৃশ পাপ इष्हारक क्वथनाम क्वनार्थ गाउ ममछ হইরা আপনার পরিচিত বন্ধু বাজ্বের নি-ফট পূর্ব্ব সন্তুন বিক্রে করিয়া নানা প্রকার প্রতারণা দার, নানা সময় অর্থ সংগ্রহ ক-রিতে আরম্ভ করে। কেহবা অবিলয়েই হতসম্ভন ও হত গৌরব কইয়া কাহার নিক-ট আর কোন কপে অর্থানুকুলা প্রাপ্ত না হইয়া টোর্যার্জি বা দস্মার্জির দাস হইতে স্থীকার করে, এবং বারম্বার চৌর্যাও চা-ভুর্যা রক্তি অমুষ্ঠান করাতে কোন স্থানে ধত হইয়া লোক সমাজে পদ্চাত ওরাজ-দারে দও প্রাপ্ত হর এই কপে কাহ্রেও ২: প্রাণ পর্যান্ত নত্ত হয় , অতএব মমুব্য এক অধর্মে রত হইলে যে তছুপলকে খার খার সকল অধর্ম আদিয়া তাহাকে আক্রমণ করে, এবং ক্রমে ক্রমে তাহার ধন প্রাণ স্থাতি মান সমুম সকলই নকী হর ও তাহার ইহপরলোক সকল স্থাবেরই ,হানি হয়, ভাহাতে কিছু মাত্র সন্দেহ নাই। অংশ বিষয়ে মনুয়াকে নিতান্ত সাবধান হওরা উচিত, কথন্যে কোন্ স্ত্রে মনুবা মনে পাপ বীজ প্রবিষ্ট হইয়া অনুরিত হইতে আরম্ভ করে, তাহা কিছু বলা যায় না। বেমন এক মাত্র পান দেয়ে হেতু শ্রেণীবন্ধ কণে আর আর অনেক দোয উপস্থিত হটুবার কথা উল্লেখ করা গেল, সেই ৰপ অন্যান্য কুজিয়া হেভুও **জ**মে ক্রমে অনায়াদে পানাদি দোবের উৎপত্তি र्ट्ड शादा। হ্রতো কাহারও পান मिष सना शत्रमात्र स्माटयत उद्धव इत अवश কাহারও পরদার দোষ হেতু পান দোবও ব্দে। প্রত্যেক ছুক্তিয়াই প্রত্যেকের প্ররো-চক ও প্ৰবৰ্ত্ত হইতে পারে, অত্এব কু-কর্মের মধ্যে কাহাকেও অধিকার করিতে **দেওরা উচিত নহে।** 

ৰদি কোন সময় কোন কারণে মন অ-ধর্ম পথের পথিক মুইতে ইচ্ছা করে, তবে তৎক্ষণাৎ তাহাকে বন্ত্ৰপুৰ্বক নিবাৰণ কৰা উচিত। প্ৰথম ষংকিঞিৎ আন্তাৰ কৰি তে তুটা কৰিলে পৰিণাদে মহা আনৰ্থের উৎপত্তি হয়। মনেতে একবার পাণাধিকার বিস্তৃত হইলে পুরুবের আর নিতার নাই, পরিণামে পাপ হত্ত হইতে ত্রাণ পাভিয়া অসাধা প্রায় হইয়া উঠে।

----

#### ম্য়নন সিংহত ব্যা**ক্ষসনাজের** প্রথম সার্হসারিক **সভা।**

আহা! অদ্য অমানিধের কি স্থারে দিনঃ জন দিন। বিগত অদা এই সভার शोध मारमत अहे २७८८ फिनरम अहे স্মাজের স্ত্রপাত হয়। খলা এই স-ভার বয়ংক্রম এক বর্ষ উত্তীর্ণ মহয়া মূতন বঁৎসরে প্রবৃত্ত হইল। আমাদের একপ আশাছিল নাযে, এই সর্বান্ডভকর সভা धमा अकामक পदिव ममाज हाती हरेद কিন্তু সত্যের কি বিচিত্র শক্তি, কি অপূর্বৰ মহিমা, জাহার দীমা কে বলিতে পারে। স্থুলোভন বিমল:কাশ কতকণ মেঘাবলীতে আচ্ছন থাকিতে পারে , মনুষ্ধ মোহ নিদ্রা হইতে জাগ্ৰত হইয়া কত কণ অপরিচ্ছন শ্যাার অবস্থান করিতে পারে, প্রবাহিত সমুদ্র তরঞ্জ কতক্ষণ বেল্লাকা বন্ধনে স্থির রাখিতে পারা যায়, অগ্নি কণা তুলা রাশিতে পাতিত হুইলে কতকণ 'প্ৰেক্লিত না হুইয়: থাকিতে পারে। ভদ্রপ মনুষ্যের <del>ব</del>র্ভা বসিদ্ধাপতা ধর্মোর জ্যোতিঃ ক্তমণ খা-, লীক কণ্পিত কুদংআরাদি দারা ভারত थाकिरव ? धनिकिविकासिक्षे এই ময়মন সিংহ্নগরে প্রক্ষালত অগ্নি শিখাবৎ ধর্ম শিখা প্রদীপ্ত হইয়া ধর্মা কিয়ণ উদ্দারণ ক্রিতে লাগিল। হে সভাস্থ সভা গণ! এই সভা ভাসের কারণ কত জন কৃত মতাব-लंबी क्रोग्रा कल अभवान, कल विवान, कल রাগ,কত বিতপ্তা,কত উপসাহ প্রভৃতি কতন্ত্র ভাব ভঞ্চি প্রকাশ না করিয়াছেন, তাহা ব-লিরা **আর কত মনের ছঃখ শের** করিব*ী* কেছ কেছ সংবাদ পত্ৰিকায় স্বীয় গাত্ৰহালা মুদ্রিত করিয়াও তৃপ্ত হয়েন নাই। কেং

ক্ষেত্র স্থানা স্থানে জমণ করিয়া বিপক্ষ দিগের ব্রিয় হইবার বাসনায় কত সিধ্যা কম্পনা,কড বিধ্যা জণ্খনা, কত কত বিষয়ের আলোচনা कित्रिएएम, अवः मडा जदमत जना क-ভর্প মন্ত্রণাই করিয়াছেন, ভ্যাপি " স-उत्पाद क्षाड गाजुडर ' अहे नाहरन ্চ পর্ম কারুণিক মহান পুরুষ! ভোমার ক্লপতেই বিপক্ষ সমূদয়কে বিপক্ই জ্ঞান করি নাই। এডানে জীযুক্ত ঈশানচন্দ্র শর্গা বিধাস ও শীয়ক তিপুরাশক্ষর অঞ্চ মহাশ্যু ভয়কে আমরা ধন্যবাদ না ক-বিয়া থাকিতে গাবিলাম না। হে খোতা ৰগাং ইখালাই এ সভার অবর্তক ও भाषाभक अवर डेडाँदित छेरमाद्वर ध সভা একান পর্যায় ভীবিত আছে। কত জন সভ্য বিপ্রফলণের ভাষে পলায়নপরায়ণ ই-ইস। বছদিবস পথাত সভার অয়পত্তিত ছিলেন ুক্ত জন গোপনে এ সভার প্রতি উৎসাধ্যাত্র দিতেন , কিন্তু দেশস্থ্যনগ-ণের ভয়ে প্রকাশ্য সভার নাম উচ্চারণেও जियु भारत करेट हुन ।

হে সভাস্থাণ ! অধিক কি বলিণ, ব্রাহ্ম বাল্কি এ নগরের কোন ব্যক্তি-কে সম্বোধন করিলে তিনি ঐ শহ্দে চো-রাপরাদ অপ্রকাপ্ত দুধ্য বিকেচনার তৎ-প্রতি রাণালিত • ২ইতেন। হার ! এখন সেদিন কোথায় ? সে কথাই বা কোথায় ? যিনি সর্বাদ্ধি উল্লেখ করিতেন, তিনিই বা কোথায় ?

হে সর্ব্ব সনাতন বিশ্বপালক! তোমার রূপার অধুনা এ সভার বছজন গননাগমন করিতেটেন, এবং কত জন সভ্য হইবার মানস একাশ করিতেছেন, ইহাতেই আ-মাদের পূর্ব বিশ্বাস হইতেছে যে এ সভা ভোমার রূপার চিরস্থারী হইবে! পূর্বের হুইজন মাত্র সভ্য দারা সভারম্ভ হয়, অধুন ন' গশ জন এসভার নভ্য কইয়াছেন। এবং সন্দলেই দুচু উৎসাহ সহকারে সভার কার্যা নির্বাহ করিতেছেন।

र अनम् कारतत छेरम भत्रम कामन !

ভোষার নিকট আমাদের এই প্রার্থনা যে আমাদের প্রীতি প্রবাহ যেন কেবল ভোষারই প্রতি উৎসারিত হুইতে থাকে এবং এ
সভা যেন চিরস্থারিনী হইয়া বজ জনের
উপকারিণী হয়। আমাদের উৎসাহ স্রোত
যেন এই কপই চির প্রবাহিত থাকে
এবং আমাদের মনকে বিশুদ্ধ করিয়া স্কাল শুভকর কার্যােই আমাদিগকে নিযুত রাথে।

ওঁ একমেবান্বিতীয়ং।

#### বিজ্ঞাপন

আমাদিণের কার্যালরে লিথে।গ্রেফি যন্ত্র ও মুজা যন্ত্রে নামা
প্রকার কর্মা হর ও পুস্তকাদি মুদ্রিত করিবার জন্য নামা প্রকার
নুতন ইংরাজী ও বাঙ্গলা অক্ষর
প্রস্তত্র করা হইরাছে। অতএব
সাধারণের প্রতি নিবেদন, ইংরাজী ও বাঙ্গলা পুস্তকাদি মুদ্রিত করিতে বাঁহার প্রয়োজন হয়
এবং লিথোত্রেফিক কোন কার্য্য
যাঁহার আবৃশ্যক হয়, তিনি এথানে প্রেরণ করিলে নিয়মিত
শূল্যে ও নিয়মিত সময়ে জাতি
উত্তম কপে কর্মা প্রাপ্ত হইবেন।

এট এই অস্থাবাধিনী পঞ্জিত। জনিকাতা লগতে বেলিনিকাছিত অস্তাবাধিনী স্থান কাৰ্যালয় কই-তে অতিবাদে অকাশিক হয়। ইয়ার ছলা এক টাজা ১ আবার কবিবার লক্ষ্য ১৯১৮ জনিবতার্থ ১৯১৮

नकाकादन मान श्रेरा जब्दनामिनी नठाव कार्डि नका कार्डि कारन वह नकिया बन क्य दिमा ब्राह्म कार्य हरवह ।



ব্ৰক্ষবাএকনিষ্ম এক্ষালীয়ান্য শ্ৰিক্ষালীয়ান্ত্ৰীয়ণ সৰ্বামপুক্ষণ। তদেবনিত্যং জ্ঞাননমন্ত "দিবং বাতক্ষিত্ৰীয়ণ কৰিব। সংবাহাপিন ক্ষানিয়ক্ষু সন্মাভ্যমৰ্ক্ষবিৎসৰ্কশিক্তিন ক্ষুবন্ধান বিজ্ঞাতিয়াক্ষিণ একস্যত স্থৈতি লোক সম্প্ৰীতিক স তিন্দ্ৰিয় প্ৰীতিক্ষাস্থা ক্ষিমকাৰ্য্যসাধনক তদু পাসকলেব।

## জীবাত্মার সহিত পরমান্সার সমন্ধ।

বেমন চকুর সহিত জ্যোতির সময় আছে, কর্ণের সহিত শব্দের সমন্ধ আছে, এবং নাশিকার সহিত গলের সম্বন্ধ আছে, সেইৰূপ জীৱান্থার সন্থিতও পরসান্ধার वक्षि वश्य मध्य वाहा। नर्वन नक्व लाक कर्जुक अहे अनिकाहनीय स्टब्स नवक অনুভূত হর্মা এবং অবস্থানুসারে অনেকে ইকার সত্ত্বা প্রতীতি করিতে সক্ষম করেন ना; किछ এই असङ् उ मार्च्या नवस विधा-मान बाकार७ हे जामता नेचरतत कानानू-ভব করিতে: সমর্থ হই। : আমরা কোন रखन्ने चन्नभ सर्वत्र महि। सामन् मा कड़ भगार वेंद्रहे अक्रम कानि, मा द्यान ८०७न भ-मार्च्य हे श्रवण बनिएक शाहि; भागता अह-তি সিম্ব দৰ্মান্তুলারে কেবল কভিপর গুণাব-मध्य कतिया बद्धात शतिहत कार्शक के स्वयम ৰূপের সহিত কর্ননোজেরের নিঞ্জি সক্ষান্ত-गान मुना नतार्श्वत सन नवस्तिक अक्र गरन ক্ষিয়া আময়া প্ৰভাক দুখা বস্তম পূৰক নৰা অভ্যুত্ত কাছতে পাছিল বেইৰণ আ-THE RESERVE WATER WATER कार हरेंगा अववस्थात है।वाव MEN PROP TIE THE WIND LAW COLD HE SELECT

ছারা তাহার পৃথক্ সত্তা অমুভব করিতে महर्वण कश्मीश्रदात्र स्वाण मा জানিয়াও ভাঁহার কতিপয় মহং গুণ অব-লম্বন করিয়া ভাঁহার একটি পূথক্ সন্ত্রা প্র-ভীতি করিতে সমর্থ হই। জীবাম্মার স-रिज कश्मीयदत्रत अरे श्रकाद व्यक्तिमात्र অন্তুত সহস্থানিবন্ধ থাকাতেই সনুষ্যলাতি, জগতের কারণ এক মাত্র জগদীপরের অ-ত্তিত্বে দৃঢ়তর বিদাস স্থাপন করিতে সমর্থ হয়। মনুষা ধর্মন জগদীখারের কোন প্র-কার গুণ স্মরণ করে, তখনি সেই গুণের आधात क्रक माज जेश्वत भगार्थत चलिएय-ও প্রতার করে, কেবল গুণমাত্র অনুভব ক-রিয়াই তাহার চিতার পর্যাপ্তি ও বৃদ্ধির তৃত্তি হয় না। যদি গুণের পরিচর প্রাপ্ত হ-हैशा (महे श्रद्धात पाधात बक्रत पांखाइ প্রভায় স্থাপন করা মন্ত্রা জাতির স্থভাব निक्र ना इहेज, उाहा इहेला महत्य व्यकात क्षमान हाता मसुबाटक जेन्द्र उसान व्यक्तान করিতে পারা যাইত না প্রত্যক্ষ, ক্রুমিতি, উপমিতি আদি বে যে প্রকার প্রমাণস্থারা মা-নবজাতি জগদীখরের জ্ঞান লাভ করে,দে ন-মত্ত প্রমাণ ই বার্থ হইজ। মনুব্য গুরু পরুম্পরা खेशरमम् बाताः मकः अभारगरे **स्वतीयर**तत পরিচয় প্রাথ হউক সার স্থভীর বৃদ্ধি পরি-हागम कतिया अरे जन्द अन पानक कार्यात কারণ ৰূপেই ক্রিব্রেক্সব্রিচর লাভ করুক, श्रमा नकी अकार्त्र कार्तीचरतत रक्रम रू

ভিপয় স্থানের পরিচয় মার প্রাপ্ত স্থান, কিন্ত ক্লগদীশ্বরের অনুপম স্কুপের দক্তি তাহার আত্মার এমনি একটি অপুর্বা সময় নিবন 'त्रश्तिरह, त्य जे नगत खन ज्ञानि को क क-हेवाइ मरक मरक है जिल्लाइ मरम जै अने मे-ग्राट्स काशात देशक श्रमार्थत अन्तर्भ स्थान ভে থাকে। ভাতএব জীবাত্মার সহিত পর-माबाज डेज क्षकात मधका मा शाकिता (य মনুবাজাতি কোন ৰূপেই ঈশবের পুণক সত্তা উপলব্ধি করিতে পারিও মা, তাহাতে আর সন্দেহ নাই। আণেক্রিয় বর্জিত ব্যক্তিকে যেমন সহ<del>ত্র</del> প্রকার প্রমাণ ছারা ञ्चलक शुक्त दोन दुकान यात्र ना, मर्नाटनिक्स বিহীন জনকে যেমন কোন প্রকারেই জো-তির জ্ঞান প্রদান করিতে পারা যায় না.সেই ৰূপ মনুষ্যজাতি উলিখিত ৰূপ সমন্ত বিজি ত হুইলেও তাছাকে কোন প্রকারে জগ-দীশবের পৃথক্ সত্ত্বা প্রতীতি করাইতে পার যায় মা। আমরা যেমন শব্দ স্পর্শ ত্রপ রসাদি গুণ দারা জড় পদার্থের পরিচয় পাই, সেইৰূপ ভাটি কাৰ্য্যাদি গুণ দারা জগদীশ্বরের পরিচয় প্রাপ্ত হট, অতএব বাই। বিষয়ের অভিত্র আমাদিগের বেমন প্রত্যক সিদ্ধা জগদীখরের পৃথক্ সন্ত্রাও ভদ্রাপ প্রভার গোচর। আমরা কোম ই<del>প্রি</del>য় বিশেষ দারা জড় পদার্থের জ্ঞান লাভ ক-রিয়া ভাষার অস্তিত্ব স্বীকার করি এবং কোন ইন্দ্রিয় হার৷ জগদীখরের গুণের প-রিচয় পাইয়া ঈশরের পূথক সন্ত্রা উপস্কি করি। এতত্ত্বর পদার্থ আমাদিগের দিক্ট मनजारवरे पासुकुछ रस अवर आयोगिरनद প্রতারের মূলে এক কলেই ছান পার, আম-রা বেমন একের অন্তিত্ব অত্তীকার করিতে जमर्थ इहे मा, त्महेस्त्र भारतात लुक्क महा অসীকার না করিয়াও কাভ থাকিতে পারি না : · 自然學 新教教

বিশ্বীক ও বিশ্ব কারণের ওংগর পরিচর পাইরা যে উছার পূবক্ সন্থা উপ্তারী
করা আমাদিগের প্রতাব নিড; তাহা সক্ষ্ম প প্রকার প্রথাণ বারা কিন্দেশনের প্রতিপ্রর ইইতেছে, কিন্তু তাহার প্রথান বৈ ক্ষম্পুর স্বার আমাদিগের বৃদ্ধি প্রথা ক্ষমের বিশ্ব

विषयः विदेशमा विकास करिता व्यवकं नमन वाद्यक व्यवकार कार्य हरेट रहा। देश नकल व्यक्तात

লোক অগৰী করের এই একার জ্ঞান লাভ করে না, কেছ তাহাকে অনির্মান করেনীর ও অনির্মান বিলানা কারি, কেছ-বা তাহাকে বিশেষ রূপে নির্মান করিছে চেটা পার। কিন্তু তাহার জ্ঞান লাভ বিষয়ে সকল মন্ত্রার ই একটি সামান্য অধিকার আছে; যাত্রানেই অধিকারে উপনীত না হর, তাহারা হল হলা মনে প্রথম করিতে চায়, তাহারা বিভাপ্ত হর।

কোন ব্যন্ত মন্ত্ৰা শ্বকীয় পরিমিত বৃদ্ধি बाता जनमीचरत्रत काम विवयर बायज क-রিতে না পারিয়া জাঁহাকে অনিকাচনীয় ও क्रनिटर्फना वित्रां উद्धार्थ करत । धदश कान সময় ভাঁহাকে প্রতীতি করিয়া ভাঁহার জ শীন ভাব আপন মনে ধারণ করিছে অভি-लायी रहेना काहारक नीमायक कतिरह पारक। कलेंडः यशुराजांकि वैश्वतरक मर्स क्षकारत भूग ७ अमीय बरण मानिवात है व्यधिकाती। मसूरवात महिल छोहात अहे সম্বন্ধ ৰে নে যথম তাঁহাকে ৰে ভাবে অনু-ভব করিবে ভিথনি তাহাতে তাহাকে পূর্ণ দেখিৰে ; মন্ত্ৰা শউবৎসর সন্তরণ করিলে-**ও তীহার কোন ভাকের** পার পাইবে না। ডিনি আনেতে পূর্ণ, শক্তিতে পূর্ণ অর্থাৎ আপনার স্থানীয় ভাবে সর্বদাই পরিপূর্ণ। जामता येथेन कैश्राटक शूर्न कादन खेळाल করি, তৰ্মি আপন ঋষিকারে অনুস্থিতি कतिशा पाकि, जात गर्थन केंग्सारक जानांकि গেরশরিমিত বৃদ্ধি ছারা নীমা বিনিক্ত করিয়া নিৰ্দেশ করিছে যাই, ভগনি খীয় স্বাধিকায় केश काम क्षेत्र । भागता जीकाटक महमटल काशिएड नामि बटके, किन्त पाना काता काम करणके वित्रका क्रांतरण गावि में। ভিত্তি বৈ কিছণ ও কি প্রকার, ভালা সা राहराका ता विकास सारा विद्यान कविएक rate of F many throughts many क्ष्यापि अस्तर कार्य, स्थिति कार्यक्ष किनुसरे CANADAM BUILD IN A

बद्धाः चावका काशास्त्रं त्यारमः चाकत, महोत्र जाजेत्र ७ स्ट्रबंह मृत, मानदम-्र (केन्ट्र, रेटार्गीन माना दारका, वर्गन कार्रजा बहुबद्ध कृषि कार्यन कति, किन्छ है जापि বাকা বারা কি জীহার স্বপের কিছুমাত बिटाईन कर्ता रहा? 'दकाणांत मसूद्यात १-রিমিত প্রেম, শার কোবার তাঁহার অপরি-মিত শানিকচনীয় ভাব! কোপায় জীবের मानद्रास्टि क्ष स्था नग्न, जात द्राशास তাঁহার অপরিবর্জনীয় নিতা শ্বরূপ! কোন শব্দ স্বার্থ উহোর অনিবৈচনীয় ঈশ্বর ভাব বাক্ত হইতে পোরে দা। আমরা পরিমিত লোকে বাস করি, পরিয়িত পদার্থ প্রভাক করি এবং পরিমিত মন ধারণ করি, স্তুতরাং আমরা যথন যে কোন শব্দ উচ্চারণ করি ও যে কোন ভাব কণ্পনা করিঃ তৎ বমুদারই পরিমিত পদার্থের উপযুক্ত হয় এবং স্থতরাং তাহা কদাপি পূর্ণ পদার্থের যোগ্য হইতে भारत ना। जिनि ममुनाव शके भनार्थ हरे-एक व्यवस्था अर्थरण विशिक्ष नर्दन, व्यवस्थ-ও বিলক্ষণ, অতএব তিনি কিন্তপে ইতর भरकत वाठा हहेरवन। यथन काहात काम বিবরই স্ফ পদার্গের সহিত সমান দ্রুতে পারে না, তথন হাট পদার্থ বোধক শিরি-বিত শব্দ বারা উচ্চাকে কি বাণে বুরান याहेरवः भागता द्वरण उभाराजारव केहा-दक नाना भएक छटलक कहिया मरमञ्जू छिखा नाथन कति। जागता मधन छ। हात नितम व्यक्तिशासन क्रिया नाना स्थएकार्यः क्रि, তথ্য উহাকে কুপাময় সংখ্যিকু না বলিয়া कान करणरे काल बाकिएक भाषि मा जबर यथेन के हात का बाद्य का का का निवस्त সাৰক সাধার জাসিজেখাকি, তথ্য ভাঁছা-क्ष (अममन शहस वक् स्वाट जाशमा कहे-क्ष्यां वर्षे । अवेष्ट्रम् व्यवचास्त्राहत् छ।-राज नामान्ति कार्या मध्यपीन कविता केरिया क्षान अकार केमारि समान कहि, क्लाउः विविक्तामहित्यक असक (कान वेगारित है त्याच करका अधिकार के बादक त्यांक करक AND IT SHOULD AND IT SHOW Princer, Mr. Simble Street, Caffe-THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE

শাস্ত করিভেছি, কিন্তু ইয়া ছারা তিনি যে एके नमार्थ किंदूतरे गड भारत, रेहारे माज बुवान रहा, छ।राह्न क्रक्टणत किছूमाज निर्फ শ করা হয় না৷ কলতঃ আমাদিগের মন যখন তাঁহার অস্তুপম সন্ত্রা প্রতীতি করে, তখন দে কেবল ভাতাকে নিত্য ও পূৰ্ণৰূপে প্ৰত্যক্ষ করে, এই ৰিভা ও পূৰ্ণ ভাৰ আ-মাদিগের আত্মা আর কোন পদার্থেই প্রদা-ন করিতে সমর্থ হয় না। মনুবোর সন কে-तन निभारत वारे निश्व उद्ध माज श्रीख र-ইয়াছে এবং এই তত্ত্বেই ইশ্বর উপাধি স-মর্পণ করিয়াছে।

নিত্য ও পূর্ণ পরনেশ্বর গে কিরূপ ও কি প্রকার, তাহা তিনিই জানেন, কিন্তু তাঁহার त्मरे जनिर्द्धमा जमूशम चन्द्रशत महिल জীবালার আর একটি আক্র্যা সহজ দে-থিতে পাওরা যায়, স্থাটি মধ্যে সে সহস্কের ভুলনা দিবার স্থল নাই ৷ সে সম্বন্ধ পিতা, মাতা, ভাতা, বন্ধু প্রভৃতি কাহারও স্বয়ের जुना नट्ट। (व नमग्र गसूरवात क्नज़ाकारण ভাঁচার অনিকাচনীয় স্বশের উদয় হয়, ত-খনি তাহার মন হইতে একটি আক্র্যা ভাবের ধারা উপিত হইতে পাকে। কিন্ত সে যে কিভাব ভাহাও আমরা বাক্য ভারা বাক করিছে পারি না । সে ভাব না ভক্তি বলিয়া গণ্য ছইতে পারে, না গ্রীতি শব্দেরই বাচা **হইতে পারে। আমর। জগদীশরে** যে ভাব সমর্পণ করি, সামান্যতঃ ভাছাকে **জ্ঞান্তিও প্রীতি শব্দে ক**হিয়া থাকি, কিন্ত বিবেচনা করিয়া দেখিলে বিলকণ বোধ 🐲 ীবে পিতা মাতা প্রভৃতি শুরুলনকে ভক্তি করিবার সময় আমাদিগের মন হুইতে **লে ভাৰ উৰ্বিত হ**য়, অথবা আমরা **প্রাণ**য়া-স্পাদ বন্ধ বৰ্গকে যে ভাবে প্ৰীতি করিয়া थाकि, कर्गमैत्रतक कथन म जादर जिल् বা প্রীতি করি না, ঈশবের প্রতি আমাদিপের খন হইতে যে ভাব উপিত হয়, তারা স্পূর্ণ ৰ্জন্ত ভাৰ, তাহার সহিত পাৰিক কোন कादवज्ञ कुलना स्ट्रेटक भारत है। होसा स उस के सामक काराय मालता ता महत्व देव कति, वेपत्र किंक (त है जिसक्तिकीत कार कात रकाम नकारने हे सेवेंड करत है। जन THE REPORT WHEN PERSONS AND THE PROPERTY OF THE PERSONS AND TH

ষ্ঠাতা ক্ইয়া রহিয়াছেব। আমাবিবোর মধ্যো-ুমধ্যে এয় সময় ভাঁহার অমৃত্রয় পুনিসের ु छेबस इत उरक्रगार जागानिका बन हरू-তে এক অনিবাচনীয় ভাবের ধারা উল্বিছ হইতে থাকে, কোন প্ৰতিবন্ধকেই উক্ত ভাবের গতি রুদ্ধ হয় না। বর্ধন কোন পুণ্যবান্ পুরুষের মনোরূপ মার্জিত দর্পণে জনদী-খনের বিশুদা তত্ব প্রতিভাত হয়, তথ্য তাহার অন্তঃকরণকে পার্থিব হর্ষ শোকা-দি কোন ভাবই অধিকার করিতে, পারে না, তথন ভাছার মন এক আক্ষা অমৃত-ময় ভাবে প্লানিত হয়। কিন্ত কগদীশ্ব ব্যতীত অন্য কোন পল্লিমিড প্ৰাৰ্থে গমন করে না, ভাহাতে আর কিছুমাত সন্দেহ नाई। एम एउएम ७ काम एउएम अपनक গোককে অনেক প্রকার অবাস্তব ধর্মের श्रमुशत हरेया नान अकात एक ७ क-লিগত পদার্থকৈ উত্থর জ্ঞানে আরাধনা कतिएड (५था यात्र वर्षे, क्ह बागा ध-কার কণ্পিত দেব দেবীকে স্থার মধ্যাদা अमान करत, (कर् मसूचा विस्थवक मिधन অবতার বোগ করিয়া তাহাকে তাদুশ ভাবে সন্তুম করে এবং কোন কোন বা-ক্তিকে মৃত্তিকাদি জড় পদার্থকেও ইশ্বর ক্ষানে আরাধনা করিতে দেখা যার। কিন্ত मनुवा काहित हेलामि : पद्धान । ए जन হারা জীবাহার ও পরমান্তার প্রকৃতি সিন্ধ मधस्त्रत विक्रमाज अमार्था छेशनिक रहा ना। मसुवाकाणि अभनीभात त जांव अनाम করে. কোন পরিমিত পদার্থে কখনই সে ভাব দিতে সমর্থ হয় না। সে যথন কম্পিত দেব দেবীয় প্রতিমা আদি কোন প্রকার প-রিমিত পদার্থকে ঈশার মধ্যাদা প্রদাস করে, তথন তাহাকে সম্পূৰ্ণ কৰে ঐশীৰ্জি সং ম্পন্ন ও ভাহাতে দেই পূর্ব ও নিত্য**ুক্ত**ৰ-র আবিতার কম্পনা করিয়াই ভদ্যোগ্য ম-ৰ্য্যানা প্ৰদান করিয়া খাকে; সে মতক্ষ্ম প-ইটে সেই পরিমিত পদা**র্থকে তাতার স্বরূপ** অবভাগ স্ফৰ্শন কয়ে, ডভজ্ঞ কলে ল-তেই তাহাকে উপর ভাবেংখারাখনা করি-ए शादा ना। पर्शाए द्वाम स्थाप যাবৎ আপন আরাধা পুরুলিকাতক ক্রমিন काति कड़श्रमार्थ यह श्रीवृत्तिक करते तराई.

**उठकान जनवारे काराट्ट केमाराज गर्ह** स नेन समिटि लादि ना। धनस्य स्वेतः त राक्ति डेक पुत्र निरुद्धक स्थितिक एक-কর্মা,এক দলে স্বিতীয় নিড়া ও পূর্ণ প্রক বের আধার ক্ষম প্রভার করে, তথনি **जाराक रेम्बद्धेत वर्षात्रा अमान रुद्धः म-**তএব বিদক্ষণ প্রতিপাক ছইতেছে, বে মনু-য্যকাতি জগদীখনের শুর্কাশ জিল্প ক্রান্ত অন্য কোন পদার্থে ইন্দর স্ব্যালা প্রদান করিতে পারে না।পৌত্তলিকাশি অমান্তক লোক দিগের পরিমিত পদার্থের উপাসনা ছারা কেবল মনুবোর ভ্রম ও অজ্ঞানই এ-কাশ পায়, তম্বারা জীবাত্মার সহিত পর-মান্তার সমজের কিছুমাত্র অন্যথ। প্রতিপদ চর না। যদি কোন মনুষ্য শুক্তিকা খণ্ডকে রজত জনে বন্ধ পূর্বকে রকা করে, ভাষ্ হইলে তাহার দে মনোগত যত্ন কৰ্ম শুক্তি कारक चार्ट्स मां, तम रच्न ब्रह्माख्य अछिरे **দম্ভব হয়, অভএব সুচু লোকে যথন কোন** পরিমিত পদার্থকে ঐশীশক্তি সম্পন্ন মনে करिता मर्यामा करत, उथम तम मर्यामा तम है ঐশী শক্তিকেই সম্ভবে, ভাষা কদাপি: সে পরিমিত পদার্থকে সম্ভবে না। ইহা নিশ্চয় সত্ত<del>্ৰীৰে জগদীখারের ত্বৰণ ভিন্ন</del> আর কোন পদাৰ্থই <u>সমু</u>ধামন হইতে জীৰত ম য্যাদা আক্**র্বণ করিতে** পারে না। 1973

## गर त्रकिछ नव।



লাহ ব্যক্তিৰ প্ৰস্থা কিবলৈ জাৰাহ ব ইংগৱ কৰা নাম। হেম্পান লোচক বাম ক সংগ্ৰাম কৰিব কৰিব। ইংকেজ । কোচ ব বিহু পোচক ভাউ হ্যাহ্ৰক নামাৰ কামে উৎ ক'ব পাশ্বিয় বাই উঠি ভাউ কিবান কামেন,

(कांत्र टबरेन के कांकाचार कं बाबीर करनर बार्ट्य नक्षां सुनाद्ध क्लान छत्रमा नद्भावत व्यक्ति वा रक् राष्ट्रगाया विगाणत स्थान, कि समूत्र बनाहिए बामनन बेसफ हरेग बादक अवर दर्जाम देनाम दननीय लादक बर्द्य बर्द्ध शक्त गर्राह मृठार्ट कृति एकाकन क-बारेश देश लाकावरण बाबीय वर्णत প্রতি খীর খীর শ্রদ্ধতি প্রীতি প্রকাশ করে-म। किछ এই विवास मिनत अपृष्ठि क्रियेश প্রাচীন স্থানে অতি আশ্রর্যা পদ্ধতি দৈবিতে পাওয়া যায়। পুরাকালে মিনর দেশে কোন পরিবারের মধ্যে কোন বাজির মৃত্যু হইলে তৎ পরিবারস্থ লোকে এ মৃত বাজির দেহ মৃক্ষিক। মধ্যেও সমিবিউ করিত না এবং চিতানলে দশ্ম করিরাও ডম্মীভূত করিত না! তাছারা ঐ মৃত ব্যক্তির চিরক্ষরণের জন্য তাহার শব নম্ট না করিয়া অতি যত্ন পূর্বক রক্ষা করিত, এবং তাহাদিগের কৌশলানু-সারে ঐ বদ্ধ রক্ষিত শব অতি দীর্ঘ কাল পর্যায় সমভাবে থাকিত। মিসর দেশীর পূর্বেকালীন লোকে বে যে প্রকার কৌশলে মুর্জ দেহ রক্ষা করিত, তাহা পরে ব্যক্ত स्टेट उटहा

মিদর দেশে কতক গুলি লেকে ঐ রপ শব রক্ষা করিবার ব্যবসার করিত, মণ্ট্রাপর जकन लाटक डाशानिजेटक छेभगूक लाउन मिन्ना भद महीत तका कतिनात मकल ज्ञानु-ষ্ঠান সম্পন্ন করিয়া লইত। 🔌 বেতনভুক্ रायुनाही स्मादकता अध्ययन अक अकात ल्लिक्स युक्त बाला नाला तक नित्रा लय म-ভাকের বসুষয় ক্ষিক নিগত করিয়া ঐ সভি के जुना जान काना व्यक्तक नेचा जना पात পরিশূর্ণ কারিক। কারকর তারারা এক থকা-त व्यवत मेत्र की के बाद्य वाद्या जेन त्यागरत ह केका नाम द्वारा करिया स्वापि केरतम् नवृत्तक नवार्व वाद्रिक कवित्र (कनिक केवर पत्र बनाव एकत समात्र प्राप्त समात्र वरन (all o stal the stal Ales shills-**रा ०क्ट हारोहर, स्टब्स्टर ७** शन CALLED STORES THE CORRE 

विम जान तिलकन तिल तिलाई कतिया निक। এই नकन अधिहादमें नेन, जाहान मैं नव त्मरह त्मादा माशाहेंग्रा क्रहेमान मण-দিবৰ কাল দোৱাতেই 'রকা করিত। প্ৰতঃ ঐ নিজিট সময় গতীত হইটো পর ভাষারা উক্ত মৃত শরীরকে আর একরার ধৌত করিরা লাক্ষা মূক্ষিত বজ্রে কড়িত ক্রিরা র:পিত। এই দকল ব্যাপার সমাধা **रहेरन** शर भे मृत्र वाक्तित वक्तू वर्टर्भ स्महे শব গুহে লইয়া গিয়া মনুবোর আকারের নারি এক প্রকার কার্টের খোল প্রস্তুত করিয়া তম্মধ্যে তাহা রক্ষা করিত এবং তৎ-गरूपात्र शूनकात्र जात अक कार्क मण्यूष्ट मत्या ज्ञाभन कतिया महा मर्याामा भूक्षक কোন এক গৃহের ভিত্তিতে শংলগ্ন করিয়া রাখির। দিত। মিশর দেশীয় ধরাত্য লোকে-ই এই প্রকার ব্যবহার করিত কিন্তু অসঞ্চ-ত্যাপন্ন লোকে আর এপ্রকার বায়সাথা পঞ্জ-তি অবলম্বন করিতে পারিত না। তাহারা অন্য প্রকার উপায় অব্বয়ন করিয়া আপ্র আ-ৰীয় লোকের মৃত শরীর রক্ষা করিত। ভা-হারা দেবদারু বৃক্ষ নিংস্ত রস ছারা এক প্রকার গন্ধ দ্রব্য প্রস্তুত করিয়া ভাহা কোন যক্ত সহকারে ঐ শব শরীরের অভ্যন্তর ভারে প্রবিষ্ট করিত,এবং উক্ত মৃত কায় পুর্মোক্ত अकारत प्रदेशान मन मितन (माताटक त्राधि-को मिल, अने इत लाहादक लाता हहेरड উত্তোলন করিয়া দেই রল পূর্ণ স্থান সকল মুক্ত করিয়া দিত এবং তৎক্ষণাথ ঐ রস-সহকারে তাহার শ্বীরস্থ অস্ত ও মঞ্জাদি नेमार्थ नकल वाहित हरेन्ना आतिछ। शु-ৰ্বোলিখিত দেবদার প্রস্তুত গল্প রসের তেজে শবের অক্রাদি পরিয়া দ্রবীভূত ছইয়া ৰাকিত এবং তাহা পৰ প্ৰাপ্ত হইলেই এক कारम निम्द्रभविछ हरेब्रा तहिर्जक हरेब्रा আঁমিত। সোরার তেজে ঐ শবের সমুদায় मार्ग ७ कम रहेशा वाहै ७, शतिनाटम क्विक मन्दि वर्णानतम्य रहेश शक्ति अवस् मृत वाजित्र वक् वर्श में अधि वर्षाविभेषे भव नेत्रीय नरेत्र च व दादम त्रका कतिक। यादा-র পতি দাবাদা গোক, ভাষারা<sup>ত</sup> ভার এ প্রসাদির করিছা করিছে লারিত ন

ভাষাদিখের দান রক্ষার কোম সাজ্যার কিছা
না, অভি সংক্ষেপে ও সামান্য কপেই রাজ্যা
হাইত। এই প্রকার ইত্র কাভিয় দান শরী-রের মধ্যে পুনর পুনঃ সভেল রক্ষ প্রক্রিক কার্যা ক্রমে ভাষার অল্লাদি নির্বাচ করা
হাইত, পরে ফিছু কাল শোরাতে রাশির।
সার্যা সম্পান করিরা লাইত।

বে সকল গ্রন্থকার উপরিব্রাক্ত দিশর মেৰের এই শব রক্ষা করিবার পদ্ধতির ক-থা লিপি বন্ধ করিয়া পিরাছেন, ভাঁহাদি-(शत-मध्य जात्मदक्के अधिकात जात्मक क-था विश्वशास्त्र, किश्व तकावति आत जैक अकात गठ मिथिए शास्त्रा वात । यादा **इंडेक, कडिशरा शका अस्टात शराहे फेल** ব্যাপার সম্পন্ন হইড, ইহাই সকলের মত। উলিখিত ত্রপ শব রকার বকল কার্য্য সমা-থা হউলে পর মিসর দেশীর লোকে ঐ শব লইরা এমন এক প্রকার কাঠাখার মধ্যে রক্ষা করিত যে লে কাঠও দীর্ঘ কালে কর হইত না। টেনেরেফি নামক উপদীপেও শব রক্ষা করিবার পক্ষতি দৃষ্ট হইয়াছে। যংকালে উক্ত উপদীপ এন্দেশন দেশীয় লোক কর্ত্তক পরাজিত হয়, তথন এক্সেনীয় लादकता जे बीरभे जारन जारन अस्तर রক্ষিত শব দুটি করিয়া ছিল। ঐ দীপের কতক ভবি ধর্ম বাজক ঐ শব রক্ষার সমত্ত পদ্ধতি অবগত ছিল, কিন্তু তাহারা কাহারও নিকট উহা প্রকাশ করিত না। এতেশনীর लाक कर्ष्ट्र शहामग्र काटन खेळा बीटनत वष्ट्र मरथाक लाक अर्क कारण आगद्याम করে, স্বভরাই এক্লেনীয়েরাও সার উহার किहुरे बदश्य रहेंद्र भारत मारे। टिएनविकि ही शक् त्यारक विमाहक वार्ष राय छाता नव नतीत स्वरोन ना कतिया ছাগ চৰ্দ্দ ভারা জড়িত করিয়া বাবিত, ইন বিশেষ মূপে তাত হওৱা গিয়াক ।

মান্যর একেন্টা এবং গালিলৈগে নামত পশুতের। ব্যক্ত করিরারেক্ট্রেকিন্দ ক উপবাপের লোকেও রুক্ত শার করিন্দ ক্রিক রুক। করিত। উক্ত শার্কিক্ট্রেক্ট্রেকিন্দ নার্কিক্টেরিক্ট্রেক্ট্রেক্ট্রেক্ট্রেকিন্দ শার্কিক্ট্রেক্ট্রেক্ট্রেক্ট্রেক্ট্রেক্ট্রেক্টর

afficación migro familias, la ciara কোন কামের প্রাচাতিক শক্তি অনুনারে ড-: খার সহাজেই মুখ্য শারীর স্বীর্য কাল গর্মান্ত আমিকত সাবে নাইমান মানিতে পারে। বে হানে বাছ সকলে নীয়স খাকে এবং বে স্থান অভিনার কিন প্রধান-রা উক্ত প্রধান रत, उपाय केल देशका मिलीय भवार्य नीर्य কলে বকা করিবার জালা কোন ক্রান্তিম প্র-क्रिया करियातरे भारतक रहा मा; कारनह পর্যে উহা স্বছই সমভাৱৰ বাকিছে পারে। क्षिम ध्रमान कृतिन गरमा भरमा खुनात कलाबदत অনেক প্রাচীন বুকাদি সরস ও স্বাভাবিক অবস্থায় দেখিতে পাঞ্জা যায় । ভুবার मर्पा व्यत्मक कीय करूत नहीत । नीक काल পৰ্যান্ত টাট্কা থাকে। হিন প্ৰধান দেশে বেমন কোন প্ৰকাৰ নিজীব পৰাৰ্থ বছ काम शर्यास विक्रु रहा था, णातक सम्ब স্থাৰ হানেও মৃত জীব অন্তর শরীর সেই ৰূপ বছ দিনে খীঃ প্ৰকৃত অবস্থাকে পরি-ত্যাগ করে না। আফ্রিকাছ বিভীর্ণ মরু ক্ষেত্রের স্থানে স্থানে উক্তপ্ত বালুকা রাশির गत्या चानक मञ्चातित्र कुछ नदीत वेह-কাল পৰাত্ত অভি চল্লানির সহিত বৰ্তমান পাকিতে দেখা যায়। আমূপ কারিয়া মধ্যে মধ্যে के नाम बालुकात अजाबदित आधीन कारणत न्य नकल अधिमय मृष्ट ८मटवन्न मानि वर्ष-मान मित्रिक शांत । असित्वत्र अस पूर्णि-তে কোন মৃত শরীর জ্যোগিত করিলে দীর্ঘ कारते अने वा तथा छति छ दश मा । (बा-वानाम ब्रह्माव वानुका कृतित अकास्टात गरेख नर्दरां शुर्वातः गरे अवन गर्वायः-(राज महिक अंखडी कुछ इसेटक कुन एडेबाट्ट) THE PARTY OF THE PARTY SPE शाहा दकात लाकार्य भीता सके एक हा, नी-COLUMN STATIS MARE SOUTH THEFT CT - TO THE S. WITSTIE WITH PRAIL CAN MAIN AN AM STAIR CALL dishir charles are the contract of the contrac All tradeological descriptions

क्षा कोई, (के बच्चा क्रमण क्षाटक हराओं CONTRACTOR OF THE STATE OF THE कार क्या कडिएक भारतिक। अभिनेत त्यरम ता त्यान समग्र सद्दि नव हका कहितात नक्षि क्षांत्रिक व क्लिन का है एरेश-CE, HINE WINE SETTE ACT PAIN THE मात्र को कहालि अब्दि नेज काण स्टेटकरे ভধান উক্ত শক্ষ্যিত প্রচলিত থাকিবার ও ্ৰেণিল প্ৰচার ইইবার প্ৰমাণ আৰু হওয়া বার। পুরারত্তে লিখিক ছাতে, যে পুরা-कारक भिगन नियानी से छेन्द्रकत शिक्षात्र মৃত্যু হইলে পির, তিনি আপ্রৰ পরিচাকর **७ मांग्रीप्र वर्गातक श्रीप्त शिकु त्मर ब्रक्ना क** ब्रिट्स मार्ट्सम् कविरक्षन् ध्वरः खाराता । छै।-राक साम्मासुनादत्र (न हे सर नहीत ब्रक्ता कतियात अञ्चलित अहस इहेल। हिहारज विषक्ष वाध स्ट्रेटक्ट्य, त्य मिनद्र वाटका অতি পূর্ব কাল হইতেই শব রক্ষা করি-বার পক্তি প্রচলিত আছে। বাহা হউক, অনেকে অনুসান করিয়াছেন, মিদর দেশ निकाड कम्प वीका ना इहेटल क्वाल म सरपात कोनन अकारर उदाकात भूकका-नीम लाव नकन अध नीर्यकान गर्यास क-প্ৰত্যু কৰিছত ভাবে বৰ্ডমান থাকিত ন।। পুরাকালে মিনর ও তানিকটবর্দ্ধী কানের অনেক জোক জিল**ংদশীর** ্বশিক **ंध निविक निर्देश निक्छे थे अकार मध्यक्ति-छ लंब निकार कतिया गर्ल छ। अर्थ धाइल द**-तिए। तरकामवर्षी जिभकाश्मे (मारकंत धहे থাকার নংকার ছিল,যে বছকালের সংরক্ষিত न्त जान नामा क्षेत्र माना अकात उशकाव দৰে া কাষারা বে উহার কত প্রকার স্থা-करी क्षत कर्मानी कवित होशव मध्या लेता केडिन । अक्टबोर छोसाता ये महाहण र देशे माम कारणह देशम स्वता राजहात THE RESIDENCE AND THE , CAN'T निवास कारण स्थाप के विकास कि विकास SECTION AND SECTION AND SECTION ASSESSMENT AND REAL PROPERTY OF THE PERSON OF THE PERSO THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY. THE LITE WHEN THE PARTY W

নাৰে উৰা নৰুন বোলোঁ ছাৰহার করিতে য়াবছা, দিত। উহার প্রতি লোকের करे की पास तिशा उरकाटन काम अबर देशेनि निवानी अध्यक देखनी द्वारक छेरात झकिम वावताध कतिएछ आ-র্ম করিয়াছিল। উহার অভিনয় শরতে একপ পুরাতন ও রফিত শবের ন্যায় ক্লাত্র-ম করিয়া লোকের নিকট বছসূলো বিক্লয় कतिए। रेहिमिमिताम अहे अवश्वा का-লে প্রার ইউরোপে সকল স্থানের লোকেই পতিত হইতেন, কেহই কৃতিম শ্ব সহজে कानिएक शाहिएक मा। अमस्त शाहिएम, मामक अक्कम शिष्ठ अहे विषदा এक स्-गङ्ग गुरुक निश्चित्रा न्यादिक छेङ सम पृत्र क्रिरंगन, छिनि लिखिलन, य मध्रकिङ পুরাতন শব ছারা কোন রোগেরই শাস্তি হয় मा, अपूर्ण छेश क्यान बाझा शाक्यली विकृष হইয়া সন্দায়ি প্রভৃতি নানা প্রকার রোগেরই উৎপত্তি হয়। এই এন্থ প্রচারিত ও লোক न्यादक थास रहेटन अत किटन पिटन नर-রক্ষিত শবের প্রতি জাপুনা হইতেই লো क्त आमत अग्न स्टेट्ड नाशित **এ**वर नहः **শেই উ**হার যথার্থ ও ক্রত্রিম ব্যবসার উঠি-- রা গেল। কেবল বিদর বেশের লোকে উহা কথন কথন কোন লোককে সামান্য সুলো বিজ্ঞা করিতে নাগিল। মৃত ব্যক্তি-র শাস্ত্রীয় কোকে যে শব যত্রপূর্ব আপন শাপন মূহে লইয়া রাখিক, তাহা কদাপি विक्तीण रुअग्रा माजव रहेटल शास्त्र मा। स नम्ड भव कार्वाठ कृतियां जुल्लामाथ व বালুকা আৰুল এ অনিপিট চইয়া বাইত मन रिक्काजा तारे नकन अस्मिक आ <mark>চীন শব শেন্থে</mark>ৰণ কনিয়া লাইয়া ক্ৰেডাদি शहक विकास कति । छेराहा मुख्यित मामा (न अकाह जारन अ ता अकाह कहिया শ্ব প্ৰাপ্ত হইত, তাহা অভি অন্তত। সিং বন দেশের একপ শব বিক্রোরা কোন রি-क्षिके भागान वा नमापि क्षित्व अमृत कतिहा क्यांगंड राग को ध्रम कतिएक कहिएक स्कान दिनीत शादतत प्रक्रिका सुद्रशा अक भहाता। माथ रहेड। ठारात लिकित ए लाहे THE REAL PROPERTY AND A STREET

অবং অবিকল মন্ত্র্যাক্ষার স্থাবি ক্রির মধ্যে প্রাচীন শব সকল ব্রথাবিহিত ক্রেনি নহর কিল আছে এবং ক্রেনি ক্রেনি শব করেল প্রান্তিত ক্রেনি করেল প্রান্তিত এবং ক্রেনি ক্রিনি ক্রিনি ক্রিনি ক্রিনি ক্রেনি ক্রিনি ক্র

একাল পর্যাদ বে দেশে যত প্রকার সংব্রিকের শ্ব দুটা ধইরাছে, তথ্যথা কাঞ্চ राहका गुक्तराहा क्षण आष्ट्या स्ट मुक्ते स्ट-মাছিল। এমত অগত শ্ব কেই কথন দৃষ্ঠি क्षापुरम् आहे। उक्तान क्षाप्त कृषि कर्षण हा-ভিত্ত ক্ষরিতে প্রথমতে উহা প্রাপ্ত হয়, এলব-ও এক প্রামার নিধেম কার্ক ছোগী মধ্যে কিভিত ভিল, উহার কোম অব্ধবই নুটা इत भार । केल भारतह इस शव श्रीश कर्र म-खुल्लाक अकल जुक्के अध्याप (हुल, धार है-হার মহকের কেল ও সাক্ষরতে পর্যাপ্ত সক-লাই বার্থমান চিল, বিশেষ্ডঃ মিশর দেশীয় শানের নাাা উহার উদর হইতে অজ সকল বহিছ ত হয় নাই, ভাষ। যেন শ্লীবিত মগ্ল-त्यात अटकत मात्र के नत्यत छेमत्र मत्या व-ৰ্মান ছিল। উক্ত শবের মহান্ আরুতি ও হম্মাই পরিপাটি পন্ধতি সন্দর্শন করিয়া লোকে উহ' কোন মহৎ লোকের শব আন ক্রিয়া ছিল, কিন্তু **উহা যে কত কালেরও** কোন নিৰ্দ্ধিত ব্যক্তির শাব ভাষার কিছুই (तर इत नाहे। **(कह कह छेहाँदक कीन** ্ব্তিম দুণ্ডির শরীর মনে করিয়া ছিল, ্ত তত্ত্ব এখন **অস্তুত সংর্থিক শ্ব** १कड रूपेन टाउ कर करते माहे. **উहाटक टा**र-থিয়া কেন ছুই এক **দিবদেয়া মুক্ত দৈছ বে**ছে इटेफ़ें हिन जे भरतह खर्क या नेक्स शक अना हिल, अट मीट स्टारमक साहात ही-

আন নক কা নাই । বাহাবা ব নাই তথ্য কৰিব। কৰা কিছা নাৰ বিধানাৰ হিল, । কৰে বিধান নাৰ বিধানাৰ হিল, । কৰে বিধান কৰিব। কৰিব।

### বিজ্ঞানবার্তা। জ্যোতিয

>।-- गिदर्श निवानी (स्नापन नामक জ্যোতিৰ্বিৎ শণ্ডিত উক্ত বিদ্যা मर्जनाम अक सहद विवस निर्देश क রিস্টেন। তিনি কহিরাছেন, যে আনেক জ্যোতির্বিৎ পণ্ডিত চন্দ্র লোকের দুখ্য काशास केस्टिन, क्या ७ वाशू क्या नक-র্শন করিয়া অবধারিত করিয়াছেন, যে চক্র लारक कान श्रकात नीव नाहे। किन्न हक्त लाक कान क्षेत्रक कीव काक नरह. ইহা কেবল উক্ত প্ৰমাণ ভারা কোন ক-পেই নিঃসংশয়ে প্রতিপন্ন করিছে পারা যায় না। আধুনিক পরীক্ষা মারা প্রকাশ পাইয়াছে, যে চন্দ্রের ভারকেন্দ্র উহরে ठिक मधा ভारा नरह, मधा जान हहेरा क्षात বিংশতি কোশ দুরে শমুভুত হইয়াছে, थर्थार प्रत्यतः कृष्टे जात्र नमान नरह, छश्द्र नकल मिल्नमान रहेट्डा अवस उदात छात्र-**ट्रिक्ट किन् मधा कार्य करें कान्या** চলের যে দিক দেখিতে পাই, নৈ দিক্ বেমন উন্নত উহার বিশয়ীত বিক্ কৰ্ম সে क्षा नरह अपनार अपक्रको पिट्का की-क्र विक भवा । क्या । अक अका व क्या व TICE III; SCHIEF TO SEE ME AND AND कश्चि भार्ष कृष्ठ इत्र मा विकास य छ-हांत्र मिशस्त्रक जन उ वात्र भूना हहेत्व, हेहा क्वनहे नस्त्र हत्र मी। छेहात विभन्नी छ छारा वायाणि भशार्थ विकासान थाका नि-छाछ नस्त्र, प्रख्याव छत्त्रत पृथ्य छाशस्त्र बात्र भूना स्मित्रा छला लाकरक धक्वारत खीव भूना स्मित्र हला मान्स्र बर्ल विष्ठात निक्क हहेर्ड भारत मा ।

২।—ইটালি দেশীর কএক জন জােডিব্রিৎ পণ্ডিত এই বর্ষে পৃথিবীর উপর
এক ধুমকেতু পতিত হইবার আশকা করিরাছিলেন, কিন্তু এক্ষণে তাঁহাদিগের সে
আশকার সময় অতীত হওয়াতে বােধ হইতেছে, বে ভূমণ্ডল তাঁহাদিগের বিশক্ষিত চূর্ঘটনা হইতে বক্ষা পাইয়াছে। উজ্
আশকা মমুলক হইলে মে পৃথিবীর কি
পর্যান্ত অন্থ উদ্ভাবিত হইত, তাহা মনে
ক্রিলে ক্থকলপ হয়া।

#### পদার্থ বিদ্যা।

১।— কাচ পাত্রে লিপি ও বর্ণাদি অকিত করিবার এক প্রকার উপার প্রকাশ
পাইরাছে। ছই গগু কাচকে নাইট্রিক
এপিড নামক পদার্থে ভুবাইয়া রেসনের
বস্ত্রে বারা মুছিয়া বিলক্ষণ বুপে শুদ্ধ করিতে হয় এবং ঐ উভয় কাচ গগুয়ে মাধা
কোন প্রকার লিপি রাবিয়া ভাছাদিগকে
টানের পাতে মোড়ক করিতে হয়। অনভর কাচের আবরণ খুলিয়া লিপি বাহির
করিবার পর সেই কাচে খাস প্রদান করিলে ভাহার গাত্রে ঐ লিপির সমুদার বর্ণ
স্থাক্ট বাজ হইয়া উঠে। পণ্ডিত গণ
ভির করিয়াছেন, যে বৈক্যাতিক শক্তি ভান
রাই উলিভিড ব্যাপার সম্পান হয় ‡।

१ — ইং। অনেকেই অবগত আছেল, বে চূর্ণ বার। অপকারী বাস্পের দোব
নত হয়। কিন্তু এফণে অসার বারা উজ্জ্ লোব নত ইংবারও পদ্ধতি প্রকাশ পাইরাছে।

\* Chamber's journal for January 1857.

৩।— পদার্থবিৎ প্রস্তিতের। ইতি
পুর্বে ছির করিয়াছিলেন, বে যে সমরে বামুতে ওকন নামক পদার্থের ভাগ অংশ হর.
তংকালে ওলাউঠা প্রভৃতি রোগের প্রাত্তভাব হইয়া থাকে। একণে উক্ত মত আরভু দুচ্তর রূপে অব্যারিত হইতেছে। পেরিস নগরের বিদ্যালয়ে এক ব্যক্তি জ্ঞাপন
করিয়াছেন, যে জলের সহিত অক্সি ক্রম
নামক বান্ধা অধিক মিজ্ঞিত ক্রিলে সেই «
জ্বল ছারা ওলাউঠা রোগের নিবারণ হয়।
অক্সিজন ছারা ওলন পদার্থের কার্যা
দর্শে।

৪। এক্ষেণ্ডর এবং ডস্নামক দাদে-বেরা বাক্ত করিয়াছেন, যে পরিশ্রুত বায়ু-তে মাংসাদি আনিষ জব্য বছদিন পর্যান্ত টাট্কা থাকে ।।

৫।— আশ্রুয়া বিষ ভক্ষণ। এক ব্যক্তি একটি পক্ষির মাংস আহার করিয়া বিষ দুষিত ছইয়৷ প্রাণত্যাগ করে। পরে পরীক্ষা দ্বারা বিদিত ছইল, যে সেই পক্ষী কোন বিযাক্ত বস্তু ভক্ষণ করিয়াছিল, কিন্তু আশ্রুয়া এই গে ঐ বিযাক্ত পক্ষীর কোন অনিক্ত না ছইয়৷ পক্ষিত্ব মর্দ্রুষার প্রাণন্ত হলা।

#### রস্থান বিদ্যা।

১।— করাম দেশীয় একজন রসায়ও বিদ্যাবিৎ পণ্ডিত প্রকাশ করিরাছেন,যে স মুদ্র জলেতে কপার ভাগ আছে। সাগর জ লের যদি সমুদার কঢ়াংশকে পূথ্য পূর্বক্ করা যায়, তাহা ভইলে ঐ জল ২ইতে ফি-ঞ্চিৎ কপার ভাগও বাহির হয়।

২। — রসায়ন বিদ্যা দায়ছো এক অপূর্ব্ব তত্ত্ব প্রকাশ পাইয়াছো। ইউরোপের
প্রসিদ্ধ প্রসিদ্ধ রসায়নবিং পণ্ডিতের। পরীক্ষা করিরা প্রথিয়াছেন যে মুখের মধ্য
ভাগ কোন প্রকার রসে আর্র করিয়া লোহিত বর্গ উদ্ধার লৌহ দণ্ড লেহন করিলেও
তদ্ধারা কিহ্বা কিছুমাত্র দেশ্ধ হয় না। ইপদ্উইচ নামক স্থানের এক প্রসিদ্ধা সভা

<sup>†</sup> Literary Gametto 18th May 1857. 1 Chamber's journal for James 1867.

<sup>·</sup> Chamber's journal.

<sup>†</sup> Chamber's journal February 1857.

I English Man.

त्र मर्ट्यादी अंगजन नार्ट्येटक पश्चिमम ত্রৰ কৌটেই ইন্ডমগ্ন করিতে লেখিরা**ছিলেন।** मारहर अथगटः এकि जनभून क्लानीएउ रूष पुरावेश में जब लोटर रखार्थन स्ति-লেন এবং অঙ্গুলি ছারা এছব ধাতু উত্তো-लन करिए। क्लरिन्धुत्र नाम् ४ ५५किंटक 🗯 मार्टेट नाशितन, थे भारत्व कर्माट्स, বে উক্ত প্রকার পদ্ধতি অবলঘন করিয়া অ-মিবৎ দ্রনীশকেতে হস্ত মন্ন করিলেও কিছু माज शांभ रूस मा। अन अर्थवा এटमानिया এতপ্তরের মধ্যে কোন এক পদার্থ ব্যবহা-র করিলেই উক্ত প্রকার কার্য্য নির্ফিসে স **শেষ হইতে পারে। পুর্বাকালের আগ্নি** পরীক্ষাদি যে শক্ল কৃত্তর কার্য্যের কথা केनिएड भाउरा याग भा नकल हुश्माश কৰ্মকে পূৰ্বকালীৰ লোকে অলৌকিক দৈৰ জিলা বলিয়া প্ৰভাৱ ধাইত, তথ সমু-দয়ও যে এ প্রকার প্র:ক্রডিক কাষ্য কারণ স্থান্ত পটিত, তাহার আর কিছুমান্ত সন্দেহ নাই। পুর্বাহালে সেপর নামক পারস্য দে-শীয় প্রচৌন রাজার এক ক্যক্তি সভা পণ্ডিত करना धक जाकरी। जीश शरीका श्रमान क-রিয়া পরে শতিপ্যা স্বধ্যা সালী প্রালাকে দেশ ্রাচলিত এ টান ধর্মো আনয়ন ফাররাভিনেন। জিনি প্রস্তাব করিয়াছিলেন, যে তোমরা আ মার অন্তে অগ্নিবৎ দ্রবা ভাষা প্রদান করে. সামি যদি ভাষাতে আন্ত না হই, তবে ভোষর: আমার বাকা আছ করিয়া সকলেই পৈত্রিক ধর্ম্মে প্রভাবির্ত্তন করিও। প্রজা-রা এই প্রস্তাবে সম্মত হুইয়া তাহার গা**তে** প্রায় নয়শের তথ্য তার ঢালিয়া দিল, কিন্তু 'চন্দার। তাহার কিছু মাত্র অনিউ না হও-রাজে উহারা **নকলেই পুনর্কার পরিভাক্ত** পূর্ব: ধর্ম অবলয়ন করিল। এরপ প্রবাদ प्याट्स, य अक्सा नक्ताराधांत लाहिन वर्ग ेक लोह मुर्च श्रीविके क्रिया क्रानक त्या-কলে বিশায়াপ**ন করিয়াছিলেন। এতজ্ঞির পূ-**ক্ষকালে এদেশে শাঘল পত্নীকা অভৃতি অ-নেক প্রকার অভিপরীকা প্রচলিত বাকিবার বিত্তর জনপ্রতি রহিয়াছে! বাহাহউক धकरा विलक्ष जाना माहेएक्ट, ख बे न-

কল ত্ৰী পৰীকাদি কেবৰ আকৃতিক কাৰ্য্য কাৰণ স্থানেই সম্পন্ন চুইড।

कि अकार आकृष्टिक विसमासुनादत व এডাদুশ আশ্চমী ব্যাপার সম্পন্ন হয়, ভাষা खित करण निर्किते हुत माहि। **क**ह कह অনুমান করিয়াছেন যে কোন উষ্ণ পদার্থে আর্ত্র সংলগ্ন হইলে, যে বালা উঞ্জিত হয়, সেই বাজ্পের সহিত ঐ উভাপ উড়িয়া যাওয়াতেই পুর্বোলিখিত ছবর অধি প-রীক্ষাদি কার্য্য সমাধা হর। কার্কনিক এদিড ও ইধর একত মিজিত করিয়া কোন উক ধাতৃপাত্রাদিতে ব্লক্ষা করিলে ভাষ্ট কিছু মাত্র উত্তপ্ত হয় না, প্রভ্যুতঃ তত্ত্ব-পত্ন বাষ্প দ্বারা উহার অন্তর্ভু সমুদার উত্তাপ উড্ডীন হওয়াতে উহা অভিশয় শীতল হইরা বরকের ন্যায় সংহত হয় এবং ভাহাতে জল প্রদান করিলে দে জলও व्यमनि उ९कनाइ दत्रक रहेश छैटी। किছ দিন হইল দক্ষিণ সমুদ্রের কোন খীপে এক ব্যক্তি অধিবৎ উত্তপ্ত ধাতু পাত্রে জল রাখিয়া বরক প্রস্তুত করাতে লোকে-র নিকট দেববৎ প্রতিপল্ল হইরাছিলেন। धकरन दिलकन बाना घाईरड्राप्ट, ख ब्या-কৃতিক নিয়ম অবললয়ন করিয়া নকল ম-सुवारे छेक क्षकांत्र चार्ल्या कार्या अल्लाव ক্রিতে পারে 📲

তা—বিটপালঙ্ শাকের মূল বারা স্করা প্রস্তুত হইরা থাকে। এক্সণে এ শাক মূল এক প্রকার বস্ত্রেতে নিস্পীচন করিলে এক ঘন্টার মবোত । গেলান রস উৎপন্ন হইতে পারে, ঐ রস পাক করিলে উৎকৃষ্ট শর্করা লবে। ঐ শাকের নিস্পীড়িত মূল সকল্ওবার্থ যার না, উহার বারা গো, মেবানির ভোলন কার্য্য নির্কাহ হয়। ইংলও প্রস্তৃতি স্থানে অনেক কৃষক ঐ শাকের চাস করিতেছে এবং উহা বারা সম্বাধিকা লাক্ষ্য হল সংখ্যক গো, মেবানি শীবিকা লাক্ষ্যক্তেছে । ভূতত্ত্ত্তিয়া।

'স-জামিরিকার জবাগাতী নিউ জনী নামক স্থানে, এক প্রকার মুক্তিকা প্রকা-

<sup>\*</sup> Literary Guzotte 21st March 1867.

<sup>+</sup> Chamber's journal.

শিত হইরাছে, ভাষাতে এলুমিনশ্ নামক ধাতুর ভাগ অধিক মাছে, ব্যবদায়ী লোকে অতি অপ্পদাত পরিক্তম ও অপ্পদাত ব্যর করিরা রখেক এলুমিনশ্প্রাপ্ত হইতেছে। প্রাণী বিদ্যা।

১।— এক জন জমণ কারী ব্যক্ত করি-রাছেন, বে তিনি আফ্রিকা খণ্ডে জমণ ক-রিতে গিয়া দেখিয়াছেন, বে তথাকার কোন কোন প্রান্তরে অস্ট্রিচ নামক পক্ষী ও মৃগ সমুহ ছুই তিন মাস জল পান না করিয়া-ও পাকিতে পারে ।

#### শিংপ বিদ্যা।

> 1— হিপ নামক এক ব্যক্তি পণ্ডিত বার্জি বার্জি বহের এক চমৎকার বস্ত্র প্রস্তুত করিয়াছেন! উক্ত খল্লের বিশেষ গুণ এই যে উহা অনারাদে সর্ব্যক্ত করিয়া লইয়া যাওয়া গায়। বে কোন স্থানে ইউক তাজিত বার্জাবহের তারে উক্ত যক্ত্র সংযোগ করিয়ানিলেই উহা ম্বারা অক্রেশে স্থাদ প্রেরণ ও আনমন করায়াইতে পারে। উক্ত প্রকার যক্ত্র ধারা অনুনক উপকার দশিতিতে

২।— আয়ারলও দেশীয় এক বিদ্যালয়ের অধ্যাপক মানাবর হে লাহেব,সম্প্রতি লাগরের গভীরতা স্থির করিতে প্রবৃত্ত হ্ইয়া দেখিয়াছেন, বে আটলানিক নামক মহাসাগরের কোন কোন স্থানতা সার্দ্ধ তিন কোশেরও অধিক গভীর। দক্ষিণ হিমলাগরের কোন স্থান ৫ কোশেরও অধিক গভীর হইবেক।

া— কাজ রাজা নিবাদী তেওু রূপ নামক এক বাজি প্রদিদ্ধ শিপ্পকার জলমগ্র হইবার এক আক্ষর্যা বন্ধ প্রস্তুত করিয়াছেন, সমুরাদির গভীর জলে মথ হইবার জনা এ-পর্যন্ত বত প্রকার বন্ধ প্রকাশ পাইয়াছে, তথা ও জিমিক বন্ধ সর্বোধ্কেই বলিয়া গণ্য হইরাছে। একশ্বার প্রচলিত জলমা বন্ধ অবলয়ৰ করিয়া লোকে অতি গ্র

ভীর জলে ময় হইতে পারিত না। জল মধ্যে অধিক দূর অবতরণ করিতে হইলে যন্ত্ৰ স্থিত বামুভাৱে লোলের পাড়া বোধ **হট্ড এবং নিখাস রুজ হট্যা প্রথেভাগি** হট্বার সম্ভাবনাও হইড। প্রচলিত বস্ত্র 📺 উদ্ধাংখ্যা লোকে ২৫)২৬ হাত জ-লের দীচে গমন করিতে পারিত। কিন্তু ডেণ্ডরণ সাংধ্রের বস্ত্র সরোমনুদা যত দুর ইচ্ছা, তভদুর প্রাস্থ লেলের **নিমে ম**র্ম হন্ঠতে পারে। এই নম্ম তারেতে নির্দ্ধিত এবং ইছার আকার প্রার বস্তের ছল সদুর্শ। ইহা স্বায়া অবগাহনকারী ব্যক্তির মন্তক্ অবধি কটি পর্যাত্ত আরুত হয় এবং 🔄 হার মধ্যে উপবেদন যোগ্য গ্রার এক মন পরিমিত শীশক্ষয় উৎকুইট আসন আছে. উহাতে ঐ ব্যক্তি স্কর্থেতে বনিতে পারে এবং উহার ভারে ঐ যন্ত্র সম্ভবেদ জল মধে। মগ্ন হয়। বিশেষতঃ ঐ শক্তেতে গটা পার্চা নির্দ্মিত একটি দীর্ঘ নল সংলগ্ন আছে, ঐ মলের মধ্যভাগ জলম্ম ব্যক্তির মুখেতে যুক্ত থাকে এবং চুই আন্তৰ্জালর উপরিভাগে পোত বা ভটম্বিত বেকের হতে থাকে। উক্ত মল ছার। জল মগ্ন বাকি অনায়াদে খাস প্রদাস কার্যা সমাধা করি-তে পারে এবং আবশ্যক হইলে ভট বা বা পোত স্থিত ব্যক্তিকে আপনরে মন্তব্য কথা জানাইতে পাবে। ইংলও গ্রন্ত স্থা-নের প্রসিদ্ধ প্রসিদ্ধ শিশ্প নিপুণ প্রিত গণ এই অভিনয় যায়ের বিস্তর উৎকর্যত वार्था कवितारहम, अवश भकरनहे पुर्वत श-**চলিত যন্ত্র ত্যাপ করিয়া** ইহা বাষহার ক বিতে উদাত হইয়াছেন 🗽

৪)— জুকা রাজ্যে একণে এলুগিনস ধা ভুর ধারা অনেক প্রফার তৈজস প্রস্তুত ভ ইতেছে। উহা কারা পান পাত্র, দবী ও জান্যার তৈজস নির্দ্ধিত হইতেছে। প্রলুমিন্ম নির্দ্ধিত ঐ সকল বাসন দেখিতে রূপার মত্ত পরিক্ষার হইতেছে, অধন রূপা অগেকা ক্ষ্ ক্ষেক্রেও অপশ বারে প্রস্তুত কুইতেছে।।

का-निकेश्वाल नामक अक कन कि

Chamber's journal for January 1807.

<sup>†</sup> Literary Guestie...

<sup>2</sup> Chamber's journal.

<sup>\*</sup> Literary Gazutte January 24th 1857.

<sup>†</sup> Liturary Gazetto.

শকার এক প্রকাশ্ত বাশার মুক্তা করিয়ত প্রবৃদ্ধ ক্রমাছেন। আইকাণীক মহামাগরের উপর দিয়া আমিরিকা হইতে ইউরোপ পর্যান্ত এক তাড়িত বার্তাবহে
তার চালিত হইবেক। নিউএয়াল সাহেব
ঐ তার প্রস্তুত করিতে ত্রতী হইয়

ভারের দৈর্ঘ্য প্রায় ৮০০ আট ক্রোশ হইবেক। এই মহত ব্যাপার সম্পন্ন হইলে সংসারের অনেক উপকার দশিবে।

৬।—লামিরিকায় এক আশ্রুমী দিক্
দর্শন যক্ত প্রস্তুত হইরাছে, ঐ যক্ত ছার।
দিক্ নির্ণন্ধ কাল নিজ্ঞপণ ও অন্যান্য অনেক
প্রকার পরিমাণাদি কার্য্য সম্পন্ন হয়। উক্ত
বন্ধ লারা গ্রহণণের দূরতা পর্যান্ত পরিমাণ
করা যায়। রাজিতে কোন্সমন্ন চল্লোদর্ম হইবেক ও কথন্কোন্গ্রহ দৃশ্য হইবেক, ভাহাও ঐ যক্ত ছারা জানা বাইবে।

৭া—পোরো নামক এক জন সাহেব এক
চমৎকার দূরবীক্ষণ বস্ত্র প্রস্তুত করিয়াছেন।
উক্ত দূরবীক্ষণ একটি সামান্য দৃটি যক্তের
ন্যায় ক্ষ্তু, উহা সঙ্গে লইয়া অনায়াসে
সর্ব্বর যাওয় বায়। বিশেষতঃ উহা ছারা
বন্ধ্ দূরের পদার্থ নিকটত্ব বস্তুর ন্যায় দৃষ্ট
হয়া

#### বিজ্ঞাপন ৷

তত্ত্বোধিনী সভার সভ্য বা সভ্য ভিন্ন আনা ধে কোন ব্যক্তি নাসিক আটজানা করিয়া সভায় প্রদান করিবেন, তাঁহারা নিরুমানুসারে সভার পুত্তকালয় স্থিত পুত্তক স্থাণ পাইতে পারিবেন।

## বিজ্ঞাপন !

আমাদিগের কার্যালয়ে লি-থোতাফিক যন্ত্র ও মুজা যন্তে নানা প্রকার কর্মা হয়, ও পুজ-শাদি মুজিত করিবার জন্য নান। প্রকার নৃতন ইংরাজী ও বাজ লা অকর এন্তর্ভ করা ইয়াছে।
অত্তর্গেলারারণের প্রতি নিবেদন, ইংরাজী ও বাছলা পুন্তকাদি মুজিত করিতে বাঁহার প্ররোজন হয় এবং লিখোতোকিক
কোন কার্য্য বাঁহার আবশ্যক
হয়, তিনি এখানে প্রেরণ করিলো নিরমিত মুলো ও নিরমিত
সময়ে অতি উত্তম কপে কর্ম
প্রাপ্ত হইবেদ।

## বিজ্ঞাপন।

পুস্তক বিক্ৰয় ৷

| বারু শিবচয়ে দেব রুত শিশু   |
|---|
| <b>- 別可用                                   </b>   |
| ताका कृष्णक <b>ता प्राटेश</b> त कीचन ठाविक ··· ॥॰   |
| যট চক্ৰ নিৰপণ প্ৰভৃতি পুনৰ্যা দ্ৰিত ॥ •   |
| শান্তর ভাষ্য আনন্দলিরি টাকা স্থামি টাকা   |
| ও বাঞ্চা অমুবাদ সহিত ভগরদ্যীতার এ   |
| थम प्रभाग   |
| দ্বিতীয় ক্ষধ্যায় ১  |
| তৃতীয় সংগ্রায় : ••• ••• •• ।/•  |
| हर्जुर्थ व्यथात : ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥   |
| পঞ্চম ক্ষ্যার 💮 😁 🗎 👑 💮   |
| यर्थ व्यवात्र   |
| সপ্তম অধ্যায় •••• ••• ••   |
| व्यक्तम् व्यवासः विकास स्थापना । 🚈  |
| मनम अधात का   |
| मनाम क्यांत   |
| क्राक्षण व्यानि के विकास करें   |
| WIND WITH A PARTY AND A PARTY |
| बद्यांक्न व्यथात्र के उत्तर का निर्   |
| LIST TO A CONTROL OF THE SECOND   |
| Pinger at untifffell effaul, effentiel ente   |
| त्यावामीदेवाच्या क्रवंदवीचित्री नामक क्रांत्रीताम केर-  |
| co काविमारम क्रांगानिक इस : वेसास हमा अस है। स  |
| s mine genin. The pass with the same  |

Chamber's journs).



ধ্বক্ষরা এক্ষিদ্ধ একা নী স্থান্য থিক ক্ষমণি জিদিদ সর্জ্ঞান হয়। তাদে ধনি তাং জ্ঞানমমান্ত শিব তথা কিব্যালয়ে একে প্রিটিশণ।
> অবিচাপিদ আনি যান্ত সর্জ্ঞান্য বিশ্বিক শিক্ষর ক্ষুত্র প্রতিমানিতিঃ এক যা এই সংযোগ দিন যাণাপুরিক ইমতি ক শশুক্ত প্রতিভিত্ত স্থাকি কিবলৈ কিবল

## ঈশ্বর জগতের আশ্র।

জগদীশ্বর আমাদিগের আতার। মরা সকলেই ভাঁচার আঞ্চিত। আমাদিগের জানের আজার, প্রাণের আ-ক্ষয়, শক্তির আঞ্চয় এবং ধন মান যশঃ পৌ-কুষ প্রস্তৃতি সকল मन्भामयुक्ते कार्या উচ: নিশ্য সভা যে আমরা তাঁহাকে অব-লয়ন করিয়া জীবন দারণ করিতেছি, কিন্তু আমরায়ে কি কপে তাহার আগ্রয়ে বাদ করিতেছি, এবং কি প্রকারে তাঁহাকে অ-বলন্ত্র কার্য়া জাবন ধার্থ করিতেছি, ইহা সর্বদা আমাদিগের সকলের বৃদ্ধি ছারা সমান ৰূপে অমুভূত হয় না৷ অতএব ইহা বিশেষ ৰূপে বিবেচনা করিয়া দেখা উচিত। এ বিষয় যত অধিক আন্দোলন করা বাদ, তভই আমাদিগের বুদ্ধিতে আ विक केंक्क न स्ट्रेट भारत ।

বন্ধাণ্ডান্তর্গতঃ প্রভাবে পদার্থকেই পরমেশর এক এক প্রকার প্রকৃতি প্রদান করিরাছেন। সকল পদার্থই স্বস্থ প্রকৃতিতে চিরকাল অবস্থিতি করিতেছে, কন্মিন কালে কোন পদার্থ আপন প্রকৃতি পরি ত্যাল করে না। অগ্রির দাহিকা শক্তি, জলের শৈত্য শুণ, চিরদিনই অগ্রিও জলের শইচর হইরা রহিয়াছে, এবং বীজের উংপারিকা শক্তি শ্লেষ্ট্র প্রবৃহ্ন ব্যক্তি চির্ন

দিন উহাদিগের সঙ্গে সঞ্চে চলিয়া আদি-এইরপ যে পদার্থের যে প্রকার প্রকৃতি তাহা চির্দিনই উক্ত পদার্থের নিতা দলী হইরা রহিয়াছে। পণ্ডিতগণ এই বাবতীয় পদার্থের প্রক্লভি সিদ্ধ কা-र्या व्यवनीरक श्राकृष्टिक निष्नम रिलिया উক্ত করেণ। এই প্রাক্তিক নিয়মানুসারে বস্থারা শক্তবতী হইতেছে, বুক্ষণণ কল भानी स्ट्राटाइ, उँक गुत्र शक्त उन्त न्ह-স্থানে অবস্থান করিতেছ, তরাজ্ত সমুদ্র গর্তে নিশ্চল শৈল সমূহের সংগার হইতেছে, নৰ হুণ দিকু মরোবর চইতে জলীয় বাশা দকল উল্বিত হইয়া আকাশে মেবের সগগর করিতেছে, এবং পুনর্কার পেই গেঘ র 😉 নবাস্ত্রপে পরিণত হইরা তৃষ্টির্গে গর, **তলে পতিত হই**তেছে: স্পৌ গ্রাণের প্রকৃতি অনুসারে যে সকল কর্ম্যে সম্পান হইতেছে, ডং সমুদ্রই পারুতিক মিয়ুম সিন্ধা কার্যা, জাতএব াবলক্ষণ প্রতিপন্ন হ'ই-তেছে, যে ধনি কৃষ্কালের স্বন্ধ কৃষ্ট প্ দার্থের প্রকৃতির বৈলক্ষণা হয়। তারা জনলৈ স্টির কিছুমাত্র শোভা থাকেনা, এবং আ-মাদিপের কোন মুখসজ্নতা রকা পায় না। যদি প্রাকৃতিক নিমুদ শৃষ্টলার বিন্তু-মাত্র বিশৃষ্ণা ঘটে, তাহা হইলে পুলি বীতে আর একণকার মত শ্রাদি উৎপন্ন इस्ता. कीव करहा नका

জীবিক: প্রাপ্ত হয় না, এবং কোন প্রকার প্রাকৃতিক কার্যা আর এক্ষণকার ন্যায় স্থানিয়নে সম্পন্ন হর না। তাহা হইলে সাগর শুদ্র হইতে পারে, পর্বত উৎপাটিত হইce भारत, सूर्या **उपना**क्त रहेरा भारत এবং ধরণী শভা হীমাও হইতে পারে। তাহা হইলে যে সংসারে কি ভরকর বিষম বিশ্বর উপস্থিত হর, তাহা বাক্ত করা কঠিন। তাহা इंडेट्स अभरभात निक्य मश्हात स्थात छ-পনীত হয়। অগ্নিখদি স্বীয় নাহিকা শক্তি ত্যাগ করে, জল ধদি আপন সন্তাপ হারিণী गीउन मंकि विशेष इया बायू यनि अवाहिए इहें डि जकम इस এवः वीक गिम जाशन छ-ৎপাদিকা শক্তি হইতে পরিত্যক্ত হয়, তাহা হইলে কি আর কোনকণে এসংদার রক্ষা পাইতে পারে? কিন্তু যথন ইহা প্রতাক দক হইতেছে, যে জগদীখর যে भमार्थक य अकात श्रक्ति श्रमान कति-য়াছেন, তথ তথ পদার্থে সেই সেই প্রকৃতি বিদাসান থাক।তেই ব্রহ্মাণ্ডের সকল কা র্যা শুঝালা রক্ষা পাইতেছে, তথন নিঃসংশ-য়ে প্রতিপর ক্ইতেছে, যে এ বিশ্ব ভাঁহারই শবিদকে আত্মৰ কৰিয়া জীৱিত বহিয়াছে। তিনি যে প্লার্থকে যে প্রকার শক্তি সম্পন্ন করিয়াদেন, মে পদার্থ সেই শক্তি অমুসা-রেই জগংকার্য দম্পন্ন করিতেছে, অত-এব পদার্থ মাত্রের শক্তিকে ভাঁহার শক্তি ভিন্ন আরু কি বলা মাইতে পারে? তাঁ-হারই শক্তিকে আগ্রয় করিয়া চন্দ্র সূর্যা গ্রহ নক্ষত্র ও ধ্মকেতু দকল বিনাব-লগ্নে খুনোতে স্থিত রহিলাছে, তাঁহা-রই প্রভাবে প্রভাকর এতাদৃশ প্রভাব শালী হইয়াছে এবং ঠাহারই শক্তি অব-লম্বন করিয়া রহদাকার গ্রহ সকল যথানি-য়মে অনবরত শুনা পরে পরিভ্রমণ করিতে-(ছ. ত। হারই বলে অভিবাত বলিষ্ঠ হইয়া-্ড, এবং ভাঁহারই ইচ্ছায় উচ্চ শিশ্বর অ-*তে* ভেনী এক স্থানে স্থিত বৃহিয়া**ছে। উ**-শিল্মান্ সাগর তর্জেও তাঁহার বল প্রকাশ গাইতেছে জৰু কটো**র বজু নির্ঘোধেও কে-**বল তাঁহার শক্তি বাক্ত হইতে**ছে। ভাঁ**হার-ই শক্তি প্রভাবে বীল অন্তর্মিত ইইতেছে,

তক্ৰ সকল কলমুখ হুইতেছে এবং বধানিয়মে পৃথিবী শব্দ পূর্ণা হইতেছে। আমরা ভাঁহার मिक **जाकान क**तिना क्यांन वासू क्यांश हहे-তেছি, পদবকে শৰ্মন গভারাত করিতেছি, এবং বাক্য উচ্চারণ করিয়া সনের ভাব গক্ত করিতেছি। **ভাষার মহী**রদী **শক্তি**ই এ বিখের প্রাণ স্বৰূপ, কেবল ভাঁছাব্রই শ-জিকে আ**তা**য় করিয়া **ত্রন্ধাণ্ড এইর**পে বর্জমান রহিরাছে। কুজভম কীট হইতে অতিকার যাতক পর্যান্ত, সামানা দুর্বাদল হইতে উচ্চতর পর্বেত পর্যাস্ত এবং অণু প্র-বাণ রেণু কণা হইতে মহদায়তন সূর্য্য মণ্ডল পর্যান্ত, সকলই ভাঁহার শক্তির আ-গ্রিত। অজ্ঞানী লোকে পদার্থ বিশেষে তাঁহার আবির্ভাব কপেনা করিয়া বৃদ্ধিকে বিজ্ঞান্ত করে, কিন্তু কলতঃ তিনি সকল পদার্থেই সমান ৰূপে আবিভূতি রহিয়াছেন, যথন স্থাবর জঙ্গম কীট প্রজ্ঞাদি সকল প্র पार्थरे जाहात हेन्द्रा अकाम कतिराज्य । তথন পদার্থ মাতেই তিনি সম্পর্ণ প্রকট রহিয়াছেন, আচেতন জভ পদার্থ ভাঁছারই আবিভাবে সচেতন জীবের নায় কার্যা ক জননী যেনৰ স্বীয় সভান কে যত্নপূর্বক ক্রোদ্রেডে রক্ষা করে, বিশ্ব পিতা জগদীশ্বরও দেইৰূপ আমাদিগকে অপেন জোড়েরকা করিয়াছেন, আমরা ভাঁচার নকরণ আত্ময় চ্যুত হইলে নিমে-যার্দ্ধও জীবন ধারণ করিতে পারি না, আ-মরা কেন, এই প্রকাণ্ড ব্রহ্মাণ্ডের এক কণা মাত্রও রক্ষা পায় না। তাঁহার শক্তিই জগ-তের জীবন, ভাঁহার অনুপম জ্ঞানই বিম্বের কারণ এবং তাঁহার করুণাই ইহার नकल (मोन्हर्या । ऋषे शहादर्थत आसर्वाञ् দৈই এক মাত্র অনাদি পুরুষের শক্তিতে পরিপূর্ণ রহিয়াছে, এব্রহ্মাও তাঁহার মহী-রগী ইচ্ছার প্রতিশ্বপ মাত্র। কি দুর্বনা-দলাগ্র স্থিড উজ্জ্বল শিশির বিন্দু, কি উন্নত তরঙ্গ বিনিষ্ট প্রশিশু সমুদ্র জল, কি স্থায় কিরণ বিভাসিত সামান্য রেণু কণা, কি সমুন্নত শিখর শোভিত ফচল প্রোণী, কি स्त्राक्ष कुलम मखिल मानाहत्र भूलो कानन, कि इस सर्वा अशाहि शूर्ग अशीय आकाम मक्षण, कि निकृत विश्राती विश्क कृत्वत मध्-র দক্ষীত, কি উক্ষা ল অগ্রিমালা তুলা বিছা-তের কঠোর इति, नक्षाई त्मई अक मात क्रशनीचदत्र मक्तित आधिष्ठ। नाधु राङि যে সময় কোন প্রকার স্বাভাবিক ঘটনা স-मार्मन करतन उदकारन जिनि जनाया कश-দীশুরের সাক্ষাৎ আবির্ভাব প্রতাক্ষ করিয়া মহানদে পুলকিত হয়েন। জগদীশ্বর বে কেবল এই সমস্ত ৰাহ্য বিধয়েরই আত্ময় এমন নহে, তিনি আমাদিগের আয়ারও আপ্রর আমাদিগের আত্মাও তাঁহাকে আ-শ্রম করিয়া রহিয়াছে। তিনি মনুযা মনে বে প্রকার শক্তি প্রদান করিয়াছেন, সেই শক্তির वाखरबर् मसूरयात ममुनात मानगिक वाभित দম্পন্ন হউতেছে, মনুষ্য যেমন তাঁহার মহিমা প্রভাবে বাস্থাবিষয় হইতে আপনার জীব-নাবলয়ন প্রাপ্ত হইতেছে, সেই প্রকার তা হার প্রদৃত্ত মানসিক শক্তি অবলয়ন করিয়া অসংখ্য প্রকার জ্ঞান কার্যা সম্পন্ন করিতেছে ৷ মন যদি কাণকাল মাত্র তাঁহার প্রদন্ত শক্তি পরিচ্যুত হয়, তাহা হইলে তাহার আরু কি-চুমাত্র ক্ষতা থাকে না; অচেতন জড় পদার্থ হেমন এক মাত্র ভাঁহার শক্তি প্রভাবে নানা প্রকার কার্য্য করিভেছে, সচেতন জী-বাস্থাও দেই প্রকার তাঁহারই করুণা প্র-नामार चकौत्र अद्योजन नाधरम नमर्थ हरे-তেছে। জগদীশর বেমন স্বীয় শক্তি ছারা জ-ড়েতে আবিস্থাত আছেন, সেই প্রকার নমু-দার চেতন পদার্থেও প্রকটিত বহিরাছেন। পূৰ্বভৰ আচাৰ্যোৱা এই ৰূপে তাঁহাকে সমস্ত পদার্থে বিদামান দেখিয়া, তমদি তিউন্ তমলোই স্তরোষ্ণ তমোন বেদ বস্তা তমঃ শরীরং ইত্যাদি,, মহা বাকো তাঁহার অর্চনা করিয়াছেন, কলতঃ তিনি সকল বস্তুতেই সমভাবে প্রকাশ পাইতেচেন **िनि कान** अभार्थ विरम्दित निक्छे छन्न-ख नटहम जरु स्थान शहार्थ रहेर्छ मृत्रु मदर्ग ि डिनि সকল বস্তুতে সমান ৰূপে প্ৰকাশিত রহিয়া-ट्रिन, जामता वर्थनि छै। हाटक पृत मदम कति, তথনি ভাঁহাকে দূরত্ব করিয়া দেখি এবং বর্ণনি তাঁহাকে নিকট ভাবি তথনিই আপ-

নার সমিকটে দেখিতে পাই। তিনি কুপা করিরা আমাদিগকে তাঁহার সকরুণ তেল-ড়ে ভান দিয়া রাখিয়াছেন, আমরা কেবল জমেতে অকা হইয়া আপনাদিগকে ভাঁ হুইতে দুর মনে করি।

## 'দ্কিবিভুন

मर्मन अवन ज्लामी स्य क अक्छि पन নেন্দ্রি ছার। মনুধা বাহা বিবরের হলান লাভ করে, তৎসমুদায় ক্রিন্ত্রের আন্তি **জমে। ব্যক্তি বিশেষ হইতে কথান দৰ্শ-**নেলিয় বিষয়ক ভান্তির উদাহরণ পাওয় যায় এবং কোন সময় ব্যক্তি বিশেষে বিল-কণ প্ৰতি ভ্ৰমণ্ড দুউ হয়। কোন সময় দুখা পদার্থের অবর্ত্তনানেও চক্ষেতে নানা প্র কার ৰূপ দেখিতে পাওয়া যান্ন, কখনবা শব্দ বাভিরেকেও কর্ণেতে ঘণ্টার রবাদির নাায় নান। প্রকার শব্দ শুনা যায় এবং কোন কোন সময় স্পর্শেদ্রিয়ের বাতিক্রম হেত উষ্ণ প-দাৰ্থকৈ শীতল ও হিম ভ্ৰৱাকে উক্ষ বোগ জয়<sup>\*</sup>। এই কপে গ্ৰন যে ইন্দ্ৰিয় দাহ: অবস্তুতে বস্তু বেধি বা এক প্রকার পদাধা কে অন্য প্রদার বোধ হয়, তথনি সেই উ **ভিনের** জান্তি বলা দায়। এই সমস্ত ভা **ন্তির মধ্যে চক্ষু বিষয়ক ভা**ষ্ট্রেই নাম দুক্তি বিক্রম এবং সকল প্রভার জ্ঞানর অংগত मिक अमरे अधिक विकास कर

নাল, সময় নালা কাল এ নলো প্রকার দৃটি বিজ্ঞান উচ্চাতি হয়, কিন্তু ভ্রমান্ত পাণ্ডিত গল বে ক্রক প্রকার ভ্রমান প্রধান দৃটি বিভাগের বিদার উল্লেখ ক্রিয়াছেন, প্র শ্লাতে ভাজাই উজি হন্তেছে।

১ — দার্ক কাল কোন বস্ত্র উপর ব্রিভাবে চক্ষ্র(থিয়া তার। ইইতে নেরোছে।ল-ন পুক্তে অন্য কোন যিলে দুটিপাত করিয়ে নের ক্ষেত্রে এ পূপে দুটি প্লার্থের প্রতি

ত জাজার অভ্যানর সংক্রাক্রিয়াছেন কো এক কর্মজন ক্রাক্রিয়া একা বিহাসসক্রাজিল, বে উপা পদাসকে এ-হার শীতান এবার কটাল করা গাঁচল বন্ধ উঞ্চ জার ক্রাক্রা

ভা প্রকাশ পায়। জ্যোৎ**স্থারাত্রিতে স্থ** বিকক্ষণ অপেনার ছায়ার প্রতি স্থিরভারে চকু রাখিয়া যদি আকাণের দিকে দুটি ক্রা যায়, তাহা হ**ইলে শুনোতে** এক মন্ত্রী-র আকার দেখিতে পাওয়া ধায়। ভা-স্থ্য ভারউইন এ বিষয়ের সনেক আকর্ম্য विमर्भग अनर्भन कतिशास्त्रम । अकृषा छित्र-িতে ভাক্তর একগানি পীতবর্ণের কাগজের উপর নীল মধী ছার: বড় বড় অক্সরে এক-টি শব্দ লিখিয়া দীর্ঘকাল ভাছার প্রতি দৃষ্টি ফরিয়া রহিলেন, অনন্তর চক্ষু সুদ্রিত করি-লেও ঐ লেখাটি পুনর্বার ভাঁহা কর্তৃক পীতবৰ্গে দৃষ্ট হইল এবং তিনি চক্ট্মীলন করিলে পরেও কিন্তু দুরে এক ভিত্তির উপর উক্ত লেখাট গাঁচ বর্ণক্ষরে দেখি-তে পাইলেন, আৰু এক ব্যক্তি এক চিত্ৰময় কমারী ও একটি চিত্রিড লিও বালকের প্রতি নাৰ্থকাল দুটিপাত কবিয়া মতকোভোলন পুরুক্ত অন্যদিকে বেমন নেত্র নিক্ষেপ করি-লেন, অমনি কিয়দ্রে পুর্বের নাও অবি-कत এक्षि कुमातीत क्वारण कक राजक ग्यम्भीन कतिहा दिसाधाशस क्हेटलर । य जादाखद मञ्चम मुख्य हुई मिनिष्ट अधीय ভি হার কের গাথে বিয়াজিত বহিনা। কুঞা-निक लाइड भारत मार्केट्टक निकेटन नि-কেশ কলিয়াছেন, যে ভিনি বামনে**এ মুদ্রিত** रातिश योग किल्लिए यालिक काल प्रियम sকু ফুর্যোর উপর ছিল করিয়া রাখিতেন, काहः इंडोर्स खीहात प्रक्रिय ६क्ट्रांट व्यवस भ कलाहितक अविके ख्याचित्र मुक्त दहेल, रम हे এপ ফোন খেড ক্ষেত্রে তাঁহার বাম চকু পতিত হইলেও তন্তার। এক স্থাবে আ-ভাৱ হারগোকিত হইল। তিনি এই আশ্চর্যা মারা সূম্যা সন্দর্শন করা এমনি আয়ন্ত ও অ-ভাস্ত ক্রিয়াভিলেন। নে তিনি **যথন যে স্থ**েন খনে ক্রেভেন, জগনি সেই **স্থানে স্থ**য়ার ্রাস্থাৰ কেলিছে পাইতেন। **তিনি যথন নি**-প্র মনতঃ লক্ষ্ম শর্ম **করিয়া থাকিতেন,** ব্যব্য ও হার দ্বি প্রে এ ক**্পিড সুর্যা** য়ুদ্ধে আনিয়া উদ্ধ হইত। ভাতার কে-রিরার নামক এক সাজি ক**হিয়াছেন; বৈ** ভাৰে চাৰুদ্দৰ কৰ্ম ব্ৰহতন্ত্ৰের সময় ভিৰি

দিবা ভাগে যে কোন প্রকার থির দর্শন দ শন করিতেন, বল্লনীতে কোন স্বন্ধকার গৃহ মধ্যে সেই সম্প্র কণ ভাঁছার চল্লেতে দুফ হইত

২৷-- কোন কোন প্রকার দৃষ্টি বিভ্রমে क्तिन मर्ने स्वित्वक्त से खास इत, यरनत कि-कृमाज जन करण ना। काम भूमा शास्त्र চক্তে নান। প্রকার বস্তুর আকার দেখিতে পাওয়া যায়, কিন্তু দেই সকল বস্তুতে মনের প্রভাগ হয় না। এস্থাদি মুধোত প্রকার ঘটনার অনেক উদাহরণ প্রাপ্ত হওয়া যায়। এক ব্যক্তি চক্ষু উন্মীলন করিলে আপনার মুখ দেখিতে পাইত। ইহার মধ্যে বিশেষ আশ্চৰ্য্য এই ষে ঐ ৰূপে সে আপ নাকে কখন রুদ্ধ, কখন যুবা ও কখন অভি বালকের ন্যায় **অবলোকন ক**রিত। কেনে কোন সময় এই ব্যক্তি কেবল কভিপয় জী ও পুরুষের মন্তকের আকার দেখিত। ইহার ঘর্থনি ইচ্ছা হইত, তথনি এহ্যক্তি ঐ প্রকার নানাবিধ মায়া মুর্জি আপন দৃষ্টি পথে আনরন করিতে পারিত। একজন রক্ষের এমণি দৃষ্টি বিক্রম ক্ইয়াছিল, যে সে যুখন আহার করিতে বসিত, তথান আ-প্রার চত্রদিকৈ বছসংখ্যক লোক দেখিত।

ভাত্তর ভিউন্ন এক চমৎকার দৃষ্টি বিজ্ঞ-মের কথা উল্লেখ করিয়াছেন। এক অন্ধ স্ত্রীলোক যে সময় পথে গমন করিত, তথন ভাছার ৰোধ ছইত যে একটি প্রাচীনা জী-লোক এক প্রকার রক্তবন্ধ পরিধান পুর্বেক তাহার অত্যে অত্যে চলিতেছে, কিছুঞ্ অক্স ত্রী যে সময় অপেন পুরীমধ্যে কাস করিত ডংকালে ভাহার ঐ প্রকার ভ্রম স্কার-তনা। ইউরোপীয় এক ব্যক্তি **ভদ্রগোরের** এমনি দৃষ্টি ভাষ লালিয়াছিল, যে ডিনি পালি मर्था कान मञ्जूषाहरू मन्मर्गन कतिहा তাহা বথাৰ্থ সন্তুষ্য কি জাহার দৃষ্টি অন हेश हटाए निकात कतिरण शातिरङ्ग मा, क्षेत्रका किनि क्षाप्त मसूर्या मंखरक रूख ছার। স্পর্শ পূর্বকৈ পরীকা করিয়া সংশর দুর করিতেন।

<sup>\*</sup> Abererentie's Mental philosophy.

<sup>+</sup> Abercrombie's Montal philosophy.

্ত ৷— কথন কথন স্বপ্ন হৈছুও বিজ্ঞানের উৎপত্তি হয় ৷ কোন কোন ম-মুধ্যের কাকনিদ্রাব্থ এমনি এক প্রকার নিলা হয়, যে ভাহারা বসিরা দাঁড়াইয়াও পাখে গামন করিতে করিতে নিদ্রা ঘায়। একপ ক্তম্যানি ক্রাকালে তাহারা যে সকল স্বপ্না-वत्नाकन करत, छ० नमुस्तरक चर्त छान न করিয়া ধথার্থ বোধ করে, কারণ তাহার। ঐনিদ্রার অনুভব করিতে পারে না। তাহাদি-গের এমনি জ্ঞান হয় যেন তাহার৷ জাগ্রতই আছে, স্বতরাং ঐ নিজাবস্থার স্বপ্নও তা-হাদিগের নিকট স্বৰূপ বিলয়া প্রভীত ২ও-য়াকিছু অসম্ভব হুইতে পারে না। এক ভদ্রলেকের ভবনে একটি কন্যা থাকিত, ঐকন্যা অকন্মাং এক দিন এক ভয়ন্তর প্রতিরূপ স্বপ্নাবলোকন করিয়া কছিল, যে আমার সন্মাথে এক বিকটাকার স্থৃত দ-গুরুমান রহিয়াছে ৭ অপর এক বাঞ্চি নিদ্রাবস্থায় এক ভয়কর বানর স্বপ্ন দেখিয়া চমংকৃত হুইরা ইতস্তঃ অবলোকন করি-তে করিছে আপন সন্ধোণ স্থা দুট বানরের ন্যায় অবিকল এক মূর্ত্তি দেখিতে পাইল। বাস্তবিক তাহা কিছুই নছে ।।

৪ :-- ধে বিষয় গাঢ় ৰূপে মনেতে তি-ন্তা করা যায়, কোন কোন সময় ভাইতে প্রত্যক্ষর সম্পুরে উদয় হইরা থাকে। ঐ চিন্তিত বিষয়ের প্রতি এমন ভ্রম জন্মায়, যে ভাষাকে কোন মতেই অবাস্তব বলিৱা বোধ হয় না। এক বাক্তির একটি প্রিয় 'বন্ধুর মৃত্যু হইলে পর সে সমস্ত দিন ঐ মৃত বন্ধুর আরুডি প্রকৃতির বিষয় দৃত্তর কংশে চিন্তা করিয়া সন্ধারে পর ভোজন পানাদি সমাপন করিয়া আপনার বাটার সলিকট একটি প্রান্তরে বায়ু সেবন করিতে যাত্রা করিল,কিয়ক্ত্র গমন করিয়া দেখে যে ভা-হার বেই প্রিয়ব্দু তাহার পুরোভাগে অ-নতিপুরে দণ্ডার্মান রহিয়াছে। দে ব্যক্তি चार्यन नच्चारेथ के मृख तक्त्रक न शहरामान मिथिस विकासभित्र हहेल, जनस्त रेवर्याप नवन পূर्वक निर्देशाता मुर्जित निर्देश कित

নেত্র করিয়া জামে তাহার নিকটণ্ড হইয়।
দেখিল, যে সেই জনপেক্ষিত অন্তুত আ
কার শুনোতে লীন হইল "। এক ব্যক্তির
জীবিয়োগ হইলে পর নেস্কান। মনৌমধের
আপন প্রিয়তমার রূপ গুণাদির বিষয় জালাচনা করিত। এক দিবস রজনীতে
সে ব্যক্তি আপন গৃহেতে বসিয়া আছে,
এমত সময় দেখিল নে তাহার সেই মুক্ত
পত্নী গৃহের ক্রাট মুক্ত করিয়া তাহার স্ব্যুথে আসিয়া দগুকমান হইল, এবং তাহাকে আপনার সমস্ত কুশল বুভান্ত অব্যক্ত
করিয়া এক সক্ষে বেড়াইতে অন্তুন্ধার করিল "।

স্থবিখ্যাত ইতিহাস লেখক দার ওয়া লটর এক্ষট ব্যক্ত করিয়াছেন, বে ঞ-शाह साममिक खेशकर्थ। रहेडू अक वाडि কতিপয় সামান্য বস্তুকে মনুষ্য বোধ করি: য়া বিশায়াপম হইয়াছিলেন: প্রশিদ্ধ কাব্যকারের মৃত্যু হইলে পর ডা হার একজন আন্ধীষ অতিশয় শোকার্ত क्ट्रेगाहित्नम। এक मिन तकनीएठ अ শোক মুদ্ধ ব্যক্তি উল্লিখিত মৃত্তক্ৰির ব-চিত কোন একটি প্রস্তাব পাঠ করত 🖟 লেখকের লিপি নৈপুণা, রসাল শব্দ বিনাংস ও অনুপম ভাব মাধুৱী প্রভৃতি নানা প্রক 🤉 **সংখ্য আলোচন৷** করিয়া মুস হইলেন এবং উহার সাপাদ মন্তক দমত অব্যৱ চিন্তা করিনেত ল্যাটালেম: व्यक्तिक (स्त्री अहे ক্রাপ চিন্তা করিয়া ভিনি দ সভক পার্চ 😘 तुष्ट कहेवा भुट्डत वहिक्षमान व तिलाहा जामराम मध्य बंध अकिए राग्य प्राय प्रमास्य है লোন। ঐ গুরুমানে লোনে বেশন স্বাহারক स भागाम मिला भन्म भन्म एक्ट्रानीय श्रीटाउ হুইতে ছিল। এ মস্পট ইন্দ্র কিংগের **হাজাতে ঐ ব্যক্তির বোপ ক্টল,**যে অনতি -দুৱে তাহার শেই মুক্ত ব্যুল স্পায়মান ব हिशारण्या बहे जगत्त्व रत्यात्राह मन्दर्भाद তংগ্র চিত্তের কিছুমার বিকলতা না হ ইয়া মে তৎক্ষণাৎ উহার তথ্যানুস্থানে জংগর হুইল। কিন্তু পরিণামে বিজ্ঞ<sub>া</sub> भर्तीकः कतिष्ठः (मधिन एय के भृष्टकारतः ।

<sup>\*</sup> Chamber's Information for the people.

<sup>7</sup> Abercrombie.

<sup>&</sup>quot; Abererombes.

বনিকাসি ক্তক্তলী সামান্ত পদার্থে তা-হার উক্ত প্রকার মন্ত্রা আম হইরাছিল"।

टकान दकान नगर मानकस्था विरम्बंदः व्यक्तिकृत स्वतम क्रमां पृक्ति वि-ভ্ৰম উপস্থিত হুইয়া পাকে। প্ৰানিদ্ধ জাকার **এগোরি একদা উাহার কোন আত্মীর স্ত্রী-ब्लाटकत भी हात नमान छनिया छन्তावधा-**রণ করণার্থে সমুদ্র পথে যাত্রা করিয়াছি-লেন। ঐ জাবলাকে দেখিয়া প্রভ্যাগমন করি-বার সময় তিনি সমুদ্র পথের কন্ট পরিহার প্রত্যাশার অহিকেণ ঘটিত কিঞ্চিৎ ঔষধ भिर्न श्रुप्तक जाभन निर्मिक जारन गरन করিয়াছিলেন, এমন সমন্ন দেখিলেন, বে ঐ পীড়িতা স্থালোক তাঁহার মেত্র পথে আ-সিয়া উপনীত কইয়াছে। ঐ অবস্থায় তিনি এমন স্থাপ্ত ৰূপে এ প্ৰীলোকের व्याकांत्र व्यवसायम कतिरमम, या जाहात নিকটণ্ড হইটা সাক্ষাতেও দ্বিমি কথন তা-হাকে ও প্রাহ্বার পরিস্তার করিয়া দেখে<del>ন</del> নাই"। সার এক ব্যক্তিও একপ ভাহি-কেণ ঘটিত ঔষধ সেন্ন করিয়া ভৃতি ভ্রমে ত্রাদু দুইয়াছিল। ইতিসধাে বিশেষ এই ধ্ে এ বাড়ি বখন চক্ষ্মিমীলন করিত তথনি ৰনো একার মারামুখ্রি পেথিতে পাইত ক্তি চকু উল্লেখ করিলে ভাগার দৃষ্টি भट्ट सात कि हुए शाकित मा '।

ভা—শারীরিক রোগ, বিশেষতং মন্তিকের প্রীড়া জনাও কোন কোন বাজির দৃষ্টি বিজম কলো। বর্থন মন্তুষ্যের শারীর কোনু রোগে মাজনান্ত পালে, অথবা বে সময় ম-মুখ্য দেহে কোন মুভন রোগ আসিরা উ-পরিত হয়, তৎকালে তাহার মনোমধ্যে যে কোন বিষয় বিশেষ রূপে আগ্রত হর, সেই বিষয় প্রভাজতং তাহার দৃষ্টি পথে প্রতিয়া উপস্থিত হুইরা থাকে। যদিও নকান চকত মন্তুরোজে এই রূপ কার্য্য লারণ স্থান দুর্কী হল না; কিন্তু দৈছিক নোল কেনু মানুলোজ দৃটিল্লম উপস্থিত হ্-ইবার প্রদেশ ভিলাহরণ প্রাপ্ত হওয়া বিয়া-তে। ভাজের এেধ্যারি গ্রাম্ভ করিয়াছেন যে এক লাহিব হলমার রোগ ছিলা। যে ক্ষম ঐ অভিনয় উজ রোগ ক্ষাছিত হট্ড, তৎকালে মে দৈনিত বে একটি আদীনা ত্রীফোক রক্তবত্র পরিধান পূর্বক ভাষার নিকটবর্তিনী হইতেছে এবং ভাষার মন্তরে

षायाज*्कतिद्वरहा देत*ाताकि (वसन এইৰপ ব্যাপাৰ অবলোকৰ করিত জন্দি অচৈতন্য হইয়া পড়িত 🔭 কোন ব্যক্তি উপযুগণরি কিছু দিন দৃটিবিজ্ঞনে ভাত হ-ইড: সে কথন কোন কোন জীবিত মন্ত্ৰ ব্যের মুর্ত্তিও সমদর্শন করিত এবং কথন বা নান প্রকার মৃত মনুষ্যের আকারও দেখিতে পাইত। অনস্থর **স্থাবিত** চিকিং সক্ষেয়া এই রোগের কারণ স্থির করিয়া তাছার কিঞ্ছিৎ রক্ত মোক্ষণ করিয়াদিলে পর অচিরেই ঐ রোগের প্রতীকার হইল\* ! অপর একটি স্ত্রীলোক এক অন্ধকার গৃহ মধ্যে প্রবেশ করিয়া দেখিল, বে নৃত্যুর ক-ম্পিত আকারের মাায় অধিকল এক অস্থি-ময় প্রতিরূপ একটি রাণ হতে করিয়া ঐ গৃহের এক কোণে দ্ঞান্তমান রহিয়াছে. এবং ভারার বিলক্ষণ অনুভব হুইল নে এ **অস্থিম্য বিকট স্থার্ক স্বীয়**্কর্ণত উলভ বাণ করে। ভা**হার বাম পার্ণে এক ভুরু**ভব অসাত করিল। যে র**জনীতে ঐ স্ত্রীলোক** এই প্রকার তুর্ঘটনা সন্দর্শন করিল, সেই রালিতেই ভাহার অভিশর ত্বর হইল এবং ঐ আহত নামদিক বিলক্ষণ ক্ৰীত হইয়া উঠিল। ইহাতে তত্ত্ববিৎ পণ্ডিতেরা এই ছির করিলেন, যে এ ছার ও পাশ্ববেদনা হেতৃই ঐ স্ত্রীলোকের উক্ত প্রকার দৃষ্টিবি 🗠 ত্রম উপত্তিত হইরাছিল। **ঐ ক্রীলোকে**র-শারীরিক রোগ ও মানসিক কম্পানা শক্তি উভর মি তাত হইয়া উক্ত প্রকার দৃক্তির্রম উৎপর হইরাছিল । শারীরিক ও মানদিক রোগে আক্রান্ত হইলে যে ক্রুব্য নানা প্রকার অবাস্তব আকার দেখিতে পায়, গ্ৰন্থাদি হইতে ভাৰার বিষয় প্রমাণ প্রাপ্ত হ-ওয়া যার এবং লোক সমাজ হইতেও তদিব-शक बाद्यक डिमाइबन भावता सार्वेटड भारत । যে সময়ে সাংঘাতিক রোগী **খার** স্বীর **প্রভা**-য়ালুসারে সর্বাদা কল্পিত ক্মাও ব্যদুত্রের

<sup>\*</sup> Aber wousbie.

মূর্ডি ক্রিন্তা করে; ভাষার মধ্যে আছু জনে-কেই আসলকালে বম ও বমদূতের কম্পিত মূর্ডি দেখিতে পার।

৭৷—অন্ডিব্যক্ত চন্দ্ৰালোক ও বাক পূৰ্ণ ৰাষ্ট্ৰ ইত্যাদি ভৌডিক পদাৰ্থ হইতে-ও অনেকের দৃষ্টি বিভাম উপস্থিত হয়। अतुन्तामि क्रम कृता कारन अमस्यकृति अभि क्तितर्भ अप्तरकत्रहे अप्तक मगग्न मसुवा कुम হ্ইয়া থাকে। যে সকল লোকের ভূত প্রেত্রাদি কম্পিত জীবের অস্তিত্বে প্রত্যার आहर, डाइाइ मध्या व्यत्नदक्षे व्यत्नक म-মর শশি শোভিত রজনীতে অরণ্যাদি বিজন স্থানে ভুত সদদর্শন করিয়া ভীত হইয়া থা-কেন, কিন্তু পরিণামে পরীক্ষা দারা প্রকাশ পায় যে কোন বুককক্ষাদি পদার্থ বিশে-বে পভিত জ্যোৎসায় মনুবা ভাম হওয়াতে ভাঁহাদিশের উক্ত প্রকার অমূলক ভয় উ-ংপন হইয়াছিল। হিবট সাহেব বাস্ত ক-রিয়াছেন, বে একদা এক জ্যোৎসা রাত্রি-তে এক দল পোতারোহী লোকে সমুদ্র জনে কোন মৃত মনুবোর মূর্ত্তি সন্ধর্মন ক রিয়া মহাবিশারাপল হইরাছিলেন। **অন্ত**র পরীকা **দারা প্রকাশ পাইল যে চন্দ্রালো**-ক হেডু কোন জল মগ্র পোতের ভগাব-শিকী দারু খণ্ডে তাহাদিগের উক্ত প্রকার ভ্ৰম হইয়াছিল "। এক প্ৰব্ৰের নিকট একদা কোন এক ব্যক্তি খুনা পথে কতক-গুলি শপ্রপাণি দৈনোর মূর্ত্তি সন্দর্শন ক-রিরা চমংকৃত হইরাছিল। পরে অত্থেদণ দারা ব্যক্ত হইল, যে এ পর্বাত সরিহিত স্ব বাষ্প ক্ষেত্রে কতিপয় পুরুষ্যিত বি ভোষী সেনার আকার প্রতিকলিত হওয়া-তে তাহার উক্ত প্রকার ভ্রম ক্রিয়াছিলা। ভিন্ন ভিন্ন সময় এই ৰূপ ভিন্ন ভিন্ন কারণে विजिञ्च अकात मृश्वि विज्ञासत्र छे० शक्ति इत्र, পণ্ডিত দিগের অনুসন্ধান ছার৷ বদিও তৎ मम्बारमन कार्या कात्रव ध्ववधातिष रत नारे, ज्यांनि अञ्चनकान छाता मृति जत्मत य किह उच्च निर्वातिक स्टेग्राट्स, उचातारे नरमारतत **जरनक छ**शकात मन्ति

য়াছে এবং **অনেকের অনেক প্র**কার কুষা। কার দূর হইলছে।

#### মহাভারত।

च्यां ज्ञान

१४ प्रधास--मञ्जूष

বৈশ্ল্পায়ন কছিলেন; হে অন্থ' দক্ষ প্র-জাপতি, বৈবস্থত মনু, ভরত, কুরু, পূরু, व्याक्रमीए यह, ७ त्कोलन अवर खत्र . हे झाँ न-গের ধন্য যশস্তা আগুয়া বংশ-বিস্তার আনি তোমার নিকট কীর্ত্তন করিব। এতদ্বংশী-য় সকলেই মহর্ষিদিগের ন্যায় নহাতেজস্বী ছিলেন। প্রচেতার দশ পুত্র, ভাঁহার। নাধু ও পুণা প্লোক: পূর্বের মহামুভাব বলবান্ দক ল তাঁহাদিগের মুখ বিনির্গত বাঁহন দ্বরো দর্গ্ধ হুইয়াছিল। দেই প্রাচেত্র গণের পুত্ৰ দক্ষ প্ৰজাপতি এবং দক্ষ হইতে अरे अज। नक्त **উर्शन** र्य, ८१ शुक्र्य শ্ৰেষ্ট! এই নিমিডেই তাঁহাকে পিতা নহ বলে। প্রাচেত্স গণের পুত্র দক্ মুনি বীরিণীর গর্ভে আছা ভুলা শংসিত ত্রত সহত্র সন্তান উৎপাদন করেন। নার্ন্দ क्षिति रेम है। महत्त्व नक मन्त्राच शंगदन पास ত্ৰম লাংখ্যক্ষাৰ ৰূপ যোগ্য নৰ্ম অভ্যাস করান। হে জনমেজর! অনভুর এজাতি। স্কুৰ্থ এজাপতি গ্লাশ্টী কলা উং পাদন করির৷ ভালরে দশটা ঘ্রাকে, ভাগেন 📆 কণ্ডপদে, ও সচোইশটা চন্দ্রকে আন্ত করেন : কন্ষ্যাপের ভারেদেশ পারীর মধ্যে প্রধানী স্থিন্ত্রনি উল্লেখনের গারে ঘাদল্প-मिका विश्वास इस , १८८ कें। इंट्रेड बीया মংশান ইন্দ্রামি দেবতা ও বিবস্তান জ**েন**ন विवयात् रुदेष्**७ वर्षायः देवसञ्ज स**ञ्च अहर धारात अगूज यम उरला रून। शैयान् মন্তু হহ'তে ভাজা কভিয়াৰি মানবৰংশ উৎপদ্ম কা, এজনা ভালারা মানব বলিয় अधिक वर्षेशांद्र । जावां महभन गरभा श ছারা সাকে,পাজ গ্রে অভ্যান করিলেল, कैं। हे दि विकार । (तम, तृष्यु, महिबास, मा ভাগ, ইক্ষাকু, কাৰ্ম্য, শৰ্মাতি, ইলা, পুৰত্ बदर नाइसादिक, मजुद्र क्रष्ट मुग श्रेष्ठाच

Abererombie.

<sup>†</sup> Chamber's Information for the people.

কাতিয় পর্মা প্রায়ণ হইলেন। ইছ লোকে মনুর আরও পঞাশটা পুত্র ছিলেন, তাঁছা-ता लहरूल विश्वाह निमक्त इन, हेहा जा-মরা গুনিয়াছি। ইলা **হইতে বিদ্যান্পুর**র-🤫 উৎপদ্ধ হন, কিন্তু ইলা তাঁহার পিতা মাতে উভয় ছিলেন, ইহাও প্রত হইয়া-ছে। সহায়শাঃ পুৰৱবা শ্বং মানৰ হ-ইয়াও সমুদ্রার্ভ ত্রয়োদশ ছীপের ভাষি-প্তিহ্ইয়া **অ্মান্**ব পূৰ্ণে **স্কা**দা আরুত থাকিতেন। তিনি বীর্য্যোশত বিশ্র বর্গের সহিত মুদ্ধ করতং আজুস্ট ত্রোক্ষা দিগেরও রত্ন সকল হরণ করেন। হে রাজন! খনতর এক লেকে হইতে শনৎকুমার আসিয়া উচ্চাকে অন্তদশ যভে দীক্ষিত করেন, কিন্তু তিনি তাইা-র নিকট প্রতিগ্রহ করেন নাই: পরে कुन्क भवित्रशास्त्र अखिमन्त्राटक मना विसर्धे হম। লোভান্থিত নরাধিপ পুকরবার এই कर्म विकास मध्या भर्याच विज्ञ स्ताः निविज्ञे उदानीत महिल संस्कार्थ संशावि जिल গ্ৰিচিত অগ্নি গ্ৰাকলোক কইডে আন্যান लक्षमः हेलात इत शुक्तः आयु भीमान्, य-গাবেল, দুঢ়ালু, বনারু, একং শকায়ু, আর प्रेमिन है। इस क्या प्रकारी भाई आतु बहेरड भएन, द्रका गणा, ताकिका. uia॰ अर्नहरमत कम ३३ हर शृथिकी প্রি' আয়ুর পুত্র সভাপরাক্র ধীমান্ নত্য সংশার সভিত রাজা শাসন করেন ! তিনি পিতৃ, দেবতা, ঋষি, বান্ধান, গঞ্চ ভিক্তা, রাক্ষ**দ, ক্ষ**ত্রিয়, ও বৈশ্<mark>য, সকলকেই</mark> সমান- প্রতিপালন করিতেন। তিনি দস্তা-াগকে শাসন করিয়া ভাহাদিগের ভারা ঋষি-দিগাকৈ কর প্রদান ও গশুজাতির ন্যার তাঁ-লাদিনকে পুটে বহুন করাইতেন। তিনি তেজ, ভগ্না, বিজেম ও বল দারা দেবতাদিগকেও च्यान्त कन्निया अ<mark>यिशंशस्य हेस्सय र</mark>ाज्य াসাহ তেন। তিনি যতি, যরাতি, সংযাতি, মায়াকি অর্থানি এবং ধ্রুব, এই **ছয় থিয়**-ব্রাচি সাধানা উৎপাদন করেন। তাহার মতে। যতি যোগ মুষ্ঠান করতঃ মুনি ৰহয়। ব্ৰেন্দ্ৰ, প্ৰাঞ্জ হল। সভা-প্ৰাক্তম ব্যাতি সাস্লাকে অভিযিত হইলা পুথিবী পালন জ

বহু যজ্ঞ অনুষ্ঠান এবং সর্ক্রনা প্রব্রত হইর। অতান্ত ভক্তির সহিত পিতৃ দেবার্ক্তনা ক রতঃ অপরান্ধিত চিত্তে প্রকাবর্গের প্রতি অমুগ্রহ করিতেন।

হে মহারাজ! দেবরানি ও শব্দিতা উভয়ের গর্ত্তে যথাতির যে সকল সন্তান अटम, उँगहाता **मकत्माई महाधनुका**त उ স্তব সম্পন্ন ছিলেন। তল্পধ্যে দেববানি ইইতে যছ ও তুর্বস্থে, এবং শর্মিষ্ঠার গর্মে ছফ্. অনু ও পুরু উৎপন্ন হন। সেই যয়তি রাজা ক্রমাগত বছকাল ধর্মতঃ প্রজা পালন করতঃ শেষাবস্থায় বিৰূপকারিণী খোরা खता बाता बाकान्ड इहेता शुक्रमिनारक म**ा** যোধন করিয়া কহিলেন। *হে* পুত্রগণ আমি কামচারী হইয়া থৌবন সহকারে যুব-তী গণের সহিত বিহার হারিতে উচ্ছা করি, ভেমির। ভহিষরে সহায়তা কর। শুনিয়া ভাঁছার জোঠপুক্ত দৈবয়ানেয় যত কহিলেন, মহারাজ ৷ আমাদিগের যৌবন ঘার: আপনার কিবলে সহায়তা করিত. তাহা আৰু কৰুন। যথাতি কহিলেন, তুনি আমার জরা এছণ কর, আমি তোমার যে বন লইয়া বিষয় সম্ভোগ করি: আমি দীয় সতা যভঃ করিবার সময়ে উপনা ঋষিত্ শাপে কামার্থ পরিহীন হট্যা 'তদৰ্ধি ডা-পিত আছি, অভএব তোমানিগের মধ্যে এ-কজন আমার শ্রীর লইয়া রাজ্য শাসন ক-রুব, আমি ভাহার অভিনব কলেবর এছণ পূৰ্বকি যুব ক্ইয়াকাম সভোগ করি: যতু শ্রন্থতি চারি জন ভারার **জর**া এহণ করি-লেন না, পরে ভাঁহার কনিষ্ঠ পুক্ত সভা বি-ক্ৰপূঞ্ কহিলেন, ছেরাজন্! আপনি আমার যৌবন সম্পন্ন জড়িন্ব শরীর লইয়া বিচরণ করুন, এবং আমি আপুনার আ-ভ্যায় জরা <u>এহণ পূক্তক রাজ্যে</u> স্মবস্থিতি করি। ইয়া গুনিয়া রাজ বি ব্যাতি ভপোবলে মহাত্র। পূরুকে জরা প্রদান করতঃ পৌরব बरम हाता सोवन आश्र हरेरनन अबर शृक्ष ষমাতি বস্তুঃসহকারে রাজ্য করিতে লাগিলেন। व्यवस्त्र भाव व नम विक्रम नुभरक्षक यथा-ভি অপরাঞ্চিত চিত্তে উভয় পত্নীর নহিত - দীর্ঘকাল বিহার করিয়া বর্ষসহ আছে পুন-

कात देवक ब्रद्धात बरन विश्वातीत निक्य त-मा कृति । मात्रक कृतित्वन । महायूना বৰাতি তথ্য কামছোগে নির্ভিশর তুগ্তি आख वा इहेब्रा मत्न महन अहे श्रीतानिक রাখা আলোচনা করিতে লাগিলেন। কাস্য বস্তুর উপভোগ ছারা কামনা কখন নির্ভ হর না, প্রভূতি ঘৃত প্রাপ্ত বহিন্দ নায়ে জনশঃ বর্দ্ধান হইতে থাকে। বছরত্ন সম্পন্ন ুপুৰিবী, হিরণ্য, পশু ও বনিভাগণ, এ সমু-नाम् এक वास्त्रित ভাগো नस्रतना, हेरा छा-বিয়া শান্তি আতার করিবেক। যুখন গো-কে মনোবাক কর্ম দারা কোন ভূতের উ-क्टिंग क्चन शाशांक्रिन ना करहन, उचनहै जिन उप मण्यम इन । यथन हीन कारी हैहै-তেও ভর না পান, এবং ইহাঁ হইতেও কেছ चीउ मा हैंग्र, खरेर स्थन हैरीत काम कामना वा (बच ना बेंदिक, उसमेह हान उन श्रीक इन। (६ नृन! प्रकामपुश महात्राक वसार्कि हेश आलाइना शूर्यक মন ও বৃদ্ধি ছারা কামনা হাস করিয়া পুন-বার পুরুকে যৌবন দিয়া তাঁহা হইতে জরা এইণ করতঃ তাঁহাকে রাজ্যে অভিবেক্ कतिश करिलन, (ह भूझ ! (ठामाटक नई-शाहे जामि शूलवान्, ज़ीमह जीमात बरन ধর সন্তান, অতএব জোমার সন্তাতর পৌ-त्रव वश्म बीनेशी शांकि इस्ति।

বৈশ্পায়ন কহিলেন, হে নৃপ্তেষ্ঠ ! জনত্তর মহাতপা ঘ্যাতি পুরুকে রাজ্য প্রদান করিয়া ভৃগু তুকে নিয়া ঘোরতর তপশু।
করতঃ দারা ঘয়ের সহিত ঘ্যাকালে জনশনে কানবর্গ প্রাপ্ত হইয়া স্থরে গমন

করিলেন।

## **अयट**काणामना

বে জ্যোতির্বর বিবাকরের উদর দারা
এই কর্মন্তর তমহিনীর আচ্ছাদন হ
ইতে বিশ্বক হইরা প্রকাশিত হর, সেই
সর্ব প্রকাশাক্ষক কর্মের ক্তিহিতি প্রকাশর কর্মা এক অভিতীর ও অচিত্তনীর পুরুবের
সন্ত্র ভগাবলার্থনী ইক্ষা সাত্তে এক সময়ে
এই স্থাবর কর্মা বিশিক্ত বিশ্ব সংসার ভং সম্বন্ধা হইতে উদ্ধাবিত হইয়া সন্তাব প্ৰাপ্ত হইয়াছে, অদ্যাপি তাঁহার মহতী ইক্ডার অধীনে স্থিতি পাইতেছে, এবং দেই ই-**চ্ছার বিরাম হইলে কালেডে** হয়তো সমু-দার পদার্থ নিরুদ্ধি প্রাপ্তি ছার। "মতে জাঁ-হাতেই বিজ্ঞান করিবে। তিনি জ্ঞানেলে অভান্ত, শক্তিতে অনন্ত, স্বীয় করুণ বাবে বিতরণে অবিশ্রাস্ত এবং স্বভাবে পূর্ণ হয়েন। ন্যায় বস্ত্রত ভাঁহারই নিরপেক্ষতার ভিল একনাম বিশেষ, তজাপ তাঁহার প্রেমে স্থ হইয়া পুলকাব্রুপাত করা ও তাঁহার আ क्ठावर् थाकिशा लाकवाका निकार् करादिः ধর্মা বলাবার: মিনিজকাদা চা পিতা, অরদাতা বিধাতা, পাপপুণোর স্থবিচারকর্ত্তা, একাবি পতি রাজা, পরম জ্ঞানদাতা গুরু এবং অ-**ন্তের পরাগতি হয়েন** ; যিনি বিশেষ আমু-**কম্পা প্রকাশ স্থারা আমাদিগকে বুদ্ধিত**প মহাবল, ভাঁহাকে জানিবার সামর্থ: প্র র্য্যন্ত প্রদান করিয়া এ পৃথিবীতে সর্ফো ত্তম প্রধান ও গৌরবান্বিত করিয়াছেন, चामानिरशत कि कर्जवा नरह व मर्स्वा-পায়ে উল্লিখিত মহদু গৌরবকে রক্ষা করিয়া নেই প্রমামাকে সর্বান্তঃকরণের স্হিত নিষ্কাম ভক্তি মত্তে নিয়ত অর্চনা করি: থাঁহার প্রশীদাৎ **জামরা অনেধ্বিধ** অ্যা চিত হুখে হুখী হইয়াছি, কত অভাবনীয বিপদ হইতে উত্তীৰ্ণ হইয়াছি, অসংখ্য **कृष्वितकात्र विवत्सत्रत् स्वाननाञ्, क्**तिसाहि, এবং যাঁহার শরণ প্রভাবে অনিবাম্য ছুট মোহকে পরাস্থুত করিয়া পূরত্ব 😗 ম-**হস্তু প্রকাশ ক**রিয়াছি, ভাঁহার প্রতি মনের স্বাভাবিক কুতজ্ঞতা সীকার পূর্মাক নমস্কার করা কি আমাদিগের অত্যন্ত উচিত নহে? विट्मवरूः यथेन आमामिटशेत यामास म-कल क्यित जाहात व्यवार्थ हेव्हात अवीन, তিনি মনে করিলে আমাদিগকে বর্ত্তমান অবস্থাপেকার অধিকতর ভয়ধর ছুরবস্থায় রাখিতে পারিতেন কিন্তু তাহা না করিয়া বরং আমাদিগের মনে ইহাপেকায় উক্ত-রোজর উৎক্রফতর অবস্থা প্রাপণের দুয় আশা বন্ধ করিয়া দিয়াছেন ; এবং তিনি हेरकारलंद्र व्यक्ट व्यानरक्त छेरमचन्त्र ও প্রত্তের অপার লাভির আলয়; তবন দেই স্কানিয়য় প্রদেশরের প্রতি আয়াচ প্র করা এবং সকল বিধয়ে তাঁহার পরি-পূর্ণ তাল অন্ত লাভি এবং উদারকরণার উপরে প্রভাত জাভিক ভাবে নির্মন্তর করা ওত্পানকদিগের প্রেক স্কানা উচিত। ন্থা, গ্রনেশ্র যে কিছু করিতেছেন ভাষা আমরা কুল বুদ্ধিতে স্মাক্ বোধসমা ক রিতে স্মর্থ না হইলেও তাহা বিশেষ ম-দানাক্রেশেই হইতেছে, অভএব ভিত্তে তাহাতে সম্ভূত্ত থাকা আমানিপের প্রেচ নিতাস বিধেষ।

ঈশ্বর আ্যাদিগের নিতাধন. हिनि काइएव अभिकश्च वश्च नदहन ; ही हात नरिंठ आयानिरेशत, अस्टारक्त वित्रमस्य নিবন্ধ রবিয়াছে, স্বাবাং তাঁলাতে আমা-দিগের সকলেরই সমান অধিকার খাছে। किन्दु, यथम मामामा वन्द्रत आलिन निमिट्ड একারা ইস্থাও যত্ন স্পেক্ষা করে, তথ্য (महे मद्धारभक्ता भत्रम छुर्ज ७ वस श्रुर्गानी অদিকারীর আত্তরিক ইচ্ছা ও বন্ধ বিরহে াক কগন মূলত কইতে পারে? যে নার্ বাকি ভাষাকে প্রাঞ্জ ফট্যাছে,ভাষার ঐশ-८५ ता भीषा काशत ! ता वेशमा मुखी जल्ला। द्वातः शयनोत्र मद्य, जादौ स्नोर्या नीर्या মহত্ত্ব বিবেজ সন্দোৰ দয়া ক্ৰম৷ প্ৰভৃতিতে माउठ भून इत। अङानुभ भेषावास भू-রুষ সেধন অভিমাত্র বায় করিতেও আ-লস্য ও কার্পণ্য পরতন্ত্র হয়েন না। তিনি লানেন যে তাঁচার সমুদার কর্ত্বা কর্মের মধ্যে ভ্রাতৃবর্দের সহিত সেই পরম ধন নম্ভেশে উপভোগ করা সকল হইছে প্রধান কর্ত্তর। কর্ম । পরসেম্বর কেবল এক মাত্র নিভাপদার্থ, তিনি সমুদায় স্ত্রের शतम निधान। आहे निविद्ध श्रुका शूर्क ভাষা বাদিরা ভাষাকে **সংগদে ব্যক্ত করি**-লা লিয়াছেন। বাতবিকও প্রকৃত বিহারে डीहात गाम नः वर्षाद नजा वह वर्गाछ আর কিছুই নাই; তিনি , সভা বিল-वारे एनीत कार्या अहे स्वतं करणा ন্যায় গুকাশ পাইডেছে। জীহার কৌদ-ৰূপ নাই, নতাই তাহার অনুপ্ৰৰূপ, কান

के हाक मान्यमा क्षण, कक्षण, के सह पत्सः रत (गांछ। अवर अहै दिन छरी। विशास ছারা মাত্র। অভব্র ছায়া খ্রুণ কর্ম সংশারকে যে মন্তব্য মোহের বিজমণতী বুদ্ধিতে বিমুগ্ধ হইরা মতা বোধ কর্ম পর-মেশরেতে আত্ম পুনা শালে তাহার কেবল विकृतनामाज नाव क्य, मट्नाइ बाहे। किन्छ বে ব্যক্তি সভা অৰুপু প্রমেশ্বরেভে বি-খাস রাখিয়াছে , প্রীতি এবং আশা স্থাপন করিয়াছে ভাষার সেংবিশান ক-দাচ বঞ্চিত হয় না, জীতি অপাতীকৃত रम ना धार जागां कनम्मा रम না। হে দতাভ্রপ প্রজাপতির প্রিয়তম शुट्छता! अकवात निहीकन कतिया (नव , তোমাদিগের পরমারাধা বিশ্বণিতার পূ-জার্থে স্থময় বসন্থ সময়ে কিৰূপ অ'রো-**बन ५३८७ हि। तथ नगर अ**कृति प्रक्रि-নব মনোহর শোভায় জ্সজিত: হইয়া कानन डेलान मक्तरक नग्न दक्षनकृत শামল প্রভা পটল দারা বিকীর্ণ করিতে-ছে: ভরু গুণালতা প্রভৃতি নবপ্রস্থতীর भारत नवीन एव भूष्ण कल खातावन्छ हहेश নির্মাভাকে বারয়ার প্রণাম করিতেছে, व्यथवा काँहात निर्देशनार्थ केंक्ट कृत्यम क-लापि थात्र कित्राउटह। जाहा ! किना त-मनीस विधियंतानं विद्रांकित कुन्नमकुल विश्व পতির অর্চনা নিমিত্র অবিরত স্থামর নধু-ক্ষরণ ও চমথকার সৌগদ্ধ বহুদ করিতেছে এবং তছুপরি উক্ত মধুপানামক মন্ত মধুকর গণ আপনাদিগের ভাবি শীত কালের বস্তু লন হেতু মকরন্দ সঞ্চয় করিতে নির্ভর বাস্ত রহিয়াছে। অতএব আমাদিনেরও উচিত যে এতদ काएड स्वीवन वनक अकू रहें एउटे जागामी कालबनी इत्रष्ठ रूपेड कारणत जना श्रीष्ठिणिम क्रिकिट किशिन्ट भर्मी प्रकाश मध् नासम्ब कहि । कात्रम छ-धम खना नकता उन्हरे बार्च परेटर. কেবল ধর্ম এক মার জনসার স্থল व्रक्टिय । भारत ! विश्ववद्यव अपि-श्रीरमञ्जू बन्ध राष्ट्रमणी कि चर्नुक रहि-कार्यताल विक् की क्षेत्राहरू। किया जा-क्या प्रकार क्या अभाग क्षेत्रकार्यस्य नगात्र नभी-

রণ চতুরি ইইতে মনোহর সৌরত বিস্তার ৰারা ক্রেরবা আমোদিত করিতেছে। এ राक युवमा कामन निवानी समरथा विश्व क्रम मदनद हर्द्यामदत विख्यत्त्र कर्मात खेल मह-র বর আলাপন ভারা বিশ্বাধিপকে হুদ্র নিঃ-कुछ जानस्मत् गान अवन कता रेटक्टर, जवर ক্তির সহিত বেই আক্টো চিত্রকরের চিত্রকৃত শ্ব শ্ব বিবিধ বর্ণের পতত্র প্রসারণ করিয়া গগন মগুলে আক্রীড়ন করিতেছে। ঐ দেখ ময়র মর্রীগণ মনের প্রকৃত্তায় श्रीत कटनबद्देत नावना काछि कनान नम्न-শনে বিমোহিত হইয়া চমংক্লত ভাবে ভাঁহার য়াজসভার শোভা সম্পাদন করত কি সৌন্দ-গৌর সহিত নৃত্য করিতেছে; এবং নানা রাধ রঞ্জিত রত্নাবলীর ত্যাতি বিনিন্দিত খাভাযুক্ত মনোহর পুচ্ছ বিস্তার করত জাঁ-হার রুত কারিকরী ভাঁহাকেই দর্শন করাই-তেছে। এই প্রকারে বিশ্বরা**জ্যেশ**র ভরুণ বসত কালের স্বরুত অনন্ত মহিমা প্রকাশ ভারা তদীয় প্রেমাসক্ত ধর্মাতা পর্ম ভরানি ঋবিদিগতৈ আমন্তিত করিয়া তাহা দর্শন করাইতেছেন, এবং আপনিও তাহার অ-বিষ্ঠাতীৰূপে বরণীয় হইয়া চরাচারের পুজা গ্রহণ কবিতেছেন। অতএব আ**ইস** আ মরাও সকল সভাতুবর্গ ঐকা হইয়া দেহরাপ মন্দিরে বিশ্বময়কে অধিষ্ঠান করিয়া ভত্তি বিধানে আরাধনা করি। যদিও তিনি বিভু-ৰূপে সর্বত্র বর্তমান রহিয়াছেন, তথাচ হী-রক মুক্তা প্রভৃতি বছমূলা রণ্নজড়িত স্বর্ণের মন্দির অপেকাকৃত স্ভাবাদী সংযতে শ্রিয় नदल अकातान् नाष् राक्तित मानभडीर्थहे ভাঁহার বিরাজ করিবার অতি উত্তম পবিত্র প্রিয়তম স্থান। শত এব চিত্তকেরকে সর-লভার দলিলে প্রফালন পুরং দভ্য ব্যবহার খারা পৰিত্র করত ভছুপরি ধর্মারূপ মন্দির প্রতিষ্ঠা পূর্বাক আন্ধার আসনে সেই বিশ্ব-প্রকাপতিকে আহ্বান করিয়া সকলে সমা-विरयाल निंदा निजा शान ७ भूको कर, व कुष्यं रहेर्द

বে ব্যক্তির সভ্যেতে প্রীতি আছে, প্র-তরাং সভ্যকে জানিতে বংগ্রেই উৎস্থাক্যের সহিত চেক্টা আছে, ভাষার মিখ্যাতে ছুরা- শক্তি থাকেনা এবং সে কপটভাই বেশও ধা রণ করে না। তাঁহার বিশেষ প্রতীতি হই য়াছে যে জনং কর্ডার কৌশল-মভিপ্রায় নিয়মাদি বধাদাধা আবগত হইতে আঞ হাতিশয় প্রকাশ না করিয়া শুদ্ধ উদ্য পুর্কি পরিচ্ছদ শোভা ইতের ইন্দিয় সেবং কৰণ লৌকিক এন্দর্যা চিন্তায় বাস্ত ও উত্থন্ত থাক ইত্যাদি মনুবা ভবের তাংপর্যা হইলে তা मुन लग्न विरन्ध कि न कल मानक ना इहेग्। ভাষা নিরতিশয় অকিপ্রিৎকর হয়। মনুন, জনের কল পশু ছবে প্রত্যাশা কর। সময়ত্ कण्य वरहे, किन्द्र मसुरैयात साता शहरपत কার্য্য হওয়া সাভিশয় বেদের বিষয় অবশ্র **বলিতে হইবে।** ভজাগ জিন্তার ইহাও নিশ্চি -**उ ताथ क्हेगार**क, त्य बञ्चानिरश्रद्ध प्रकार **टकााकिजारा मामाना मीलाटकाटकर सार** ७.-পরিষ্কৃত ও অনতিদূরব্যাপী, এজন্য প্রভারণ स्रायात अला काता यम खेळल ल मा इस्ता তাহা অতি সহজেই ৰার্যার - মোহের বুলী -ভূত হয়। দেই মোহ হইতে সর্বানর্থের মুঃ। স্থার্থ বির্ভা কমিয়া **থাকে**, এবং ওস্থারা ক্রেতে লেভ, অত্যাকাক্ষা, ছলনা, প্রতা রণা, বাপটা, কেম, মাৎসম্মা, ব্রেগর, জিংসা ইত্যাদি শক্রদল উপস্থিত হইয়া মনুযোৱ निकारत कांत्र इत्र धारा सूर्यमञ्ज मण्यात जेमानिक विषयम विषय अञ्चाल पूर्व यहा রণ্যে পরিণত করে। যে ব্যক্তি সভোর পথে विष्ठत्र करत, अ भश्मात श्रेश्वरत्त्र कानियः তায়তে স্বাৰ্থভাৰ ওঞ্চজি ত্যাণ পুৰুষ **আজ্ঞানুবত্তী ভূতো**র নাল প্রভূর ্র ব সাধ্যে শুভংপর্তঃ ভংপর থাকে: মাধ্যি মতা ধর্মে অতলা নিঠা আছে, সে স্থিতরের 🕫 থেই ভ্রমণ করে, ঈশ্বরের জ্ঞানেতেট বিকশিত হয়, ঈশ্রের বলেই বলবান খাকে এবং ঈশ্বরের কর্নগায়ত প্রমেট নিরস্তর আনন্দিত থাকে। ভাষার দুট क्षांत्र इहेब्राह्म, त्य इति ता व्यापना আ্লাকে সমর্পণ করিয়াছে, বাঁহার ম ক্ল শ্বরূপে নিতান্ত নির্ভর করিয়াছে, সেখা-त्म. स्माटहत् थाकाव माहे, कुः त्थत् कम्मन माहे এবংমৃত্যুরও অধিকার নাই , অতএব সে আন किছू छ इ का अधि इत ना। छै। हात क

বল এতাব্যাত প্রার্থনা, হে স্থ প্রকাশি পর মায়ন্।মোহরুত পাপ হইতে রক্ষা করিয়া এবং দুর্ঘতি হইতে বিরত রাখিয়া তোমার সঙ্গা ক্যোভি তারা **আমাদিপের ভান এ**-ণিপ উদ্দীপন কর, তোমার মুখ **প্রভা** बादः अके बस्तानमती 'छागभी निमादक अ-ভাতাকর, ভোমার বলেতে আমাদিগকে বালত কর, এবং তিতিফা ও অব্যবসায় আ-মানিগকে প্রদান কর, যে প্রতিজ্ঞার সহিত ্টামার মহতী আন্তর মনায়ালে বহন ক-রেয়া রেপার নি**ভরে গমন করিতে** भाति, १व । धरे "तिषशूर्व विवस तम र-ইতে মুক্ত করিয়া অবিশ্বত শান্তি রূম পার্নে আহাদিগকে চরিত্র কর, যে আমরা অমৃতের প্রিয়পুত হট্যা ঘটিরাৎ অসুককে লাভ করিছা কুতার্থ হটাত পারি:

#### বিজ্ঞাপন

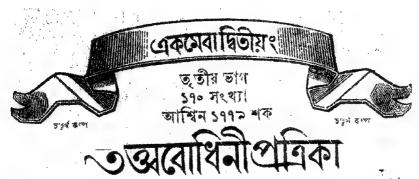
ক্রন্ত ভারের সহিত স্থীকার করিতেটি খে, জিয়ুকা বাস্থু শিষ্ঠন্দ্র দেব মহাশন স্থানীত পাশ্ভপালন ' নামক এভের এক খণ্ড ব্যালায় গান করিয়াছেন।

## বিজ্ঞাপন

| বিজেল পুর         | इक       |       |          | भून  |
|-------------------|----------|-------|----------|------|
| অমরার্থ দীয়ি     | াতি ••   | ••    |          | >    |
| 'भ, गुश्रालग      | ***      | ***   | ****     | , Il |
| নত্তত <b>িধান</b> | *1*      | ***,  | ***      | ٥    |
| 公衛 姿態5月           | न बादमब  | क वनग | i≅       | - He |
| ্বিরাগ্য শত্ত     |          |       |          | 110  |
| सक्तार्थ भूनंहः   | ∰ ১৩ স্ং | খ্যা  | *19      | 10   |
|                   | \$ 8¢    |       | . ***    | . 10 |
| বপ্ত বৈস্কু       | ***      | ***   | •        | . [9 |
| ভত্তুবোধনী        | সভার বং  | জুভা⊹ | 450 - 40 | - 10 |

| राक्ता काराह नरह क राज्यन                      |
|--|
| गरक् ज भारताशकातक                              |
| शमार्थ विमा। 🥱 🚃                               |
| वर्गमानाः 👉 🕶 🥠 👑 🤲                            |
| रेश्त्राकी ভाषात्र काकि अकृष्टि १०             |
| रेश्त्राकी जामात वामनदम्बद्ध १०                |
| বেদাৰিক ডাক্টি ন্ন বিভিক্টেড ্ 120             |
| ব্ৰহাৰগাঁও পুস্তক ৷৷                           |
| পৌত্তলিক প্ৰবোধ ১ 10/0                         |
| বাঙ্গলা ভাষায় কঠোপনিষ্থ ১০০                   |
| রুত্তি সহিত ঐ নাগর অক্ষরে ॥॰                   |
| डाक्रार्थ के ककरत्र №                          |
| 夏节 10/0  |
| आंब्रुड्विमा                                   |
| बहेकिश्नश्वाथाम                                |
| के जानवीध अ                                    |
| ঐ অা <b>ন্ধতন্ত্ব বিদ্যা স</b> হিত ভালনীয়া ১৮ |
| খানাকসা সিকিকসা, 🎰 🐪 🛶                         |
| धविकासने वामात                                 |
| শিশুশৈব্যি                                     |
| কৌতুহ তরঙ্গিনী ১৯/০                            |
| बबनाडी ` >।॰                                   |
| সারাব <b>লি</b> >                              |
| চাহার দরবেশ গং                                 |
| বাহ্বস্তর সহিত মানব প্রকৃতির সমন্ধ বি-         |
| চার প্রথম ভাগ                                  |
| এ দিতীয় ভাগ ১                                 |
| চারুপাঠ প্রথম ও দ্বিতীয় ভাগ ৬০                |
|  |

ৰাজ্য এই ভাষ্কাৰাখিনী পান্তিকা, ক্ষাক্ষাকা নগতে বাড়ানীতভাষিক জন্ধবাধিনী সভাৱ কাৰ্য্যানক কট-তৈ আভিনালে আৰাশিক হয়। — ইয়াই স্থান এক টাকা
ভাষাক প্ৰবিধিন সম্প্ৰ ১৯১৪ কলিয়াভাষ্ট ১৯৫৮



. ও ক্ষমা একলিন মঞ্জাসী লাখ্য একিকলাসী জালিবং সর্জানগুলু । তেলেবনিত্যং জ্ঞানমনতং শিলং আছে লিবং এবং কংলেবাহি হালে সর্জাবাংপিসাকানিক জ্ঞানাৰ সর্জানিক কালিক জ্ঞানিক কালিক কালিক জিলা এক লাভতীস্থাকো পালন বাংগারানিক কালিক কালিক জ ভালিক, প্রীতিক্ষাস্থা বিশেষকালিক অনুপালন কৰে।

# अश्वतत्त्र गरिग।

লোতিঃ অতি অন্ত পদার্প। যদিও আনরা উহার সমস্ত নিগৃচ তত্ত্ব অবগত रुहेट अाति नारे. उथानि निमार्थ दिनात অনুশীলন দারা উহার বিভৃতি ও গতি প্র-ভৃতির বিবয় যে কিছু প্রকাশ পাইয়াতে, उन्हादाई जनमीचात्रत विखत महिमा वाक इट्रेट**्रा** (ब्याजिविमाविक পণ্ডिज्या खित कतिसारहन, ए। स्थािति क्यािकशान পদাৰ্থ হইতে ঘখন তদীয় আলোক নিৰ্গত হয়, তথ্ন উহা অতি সত্ত্র বেগে সরল ভাবে शयन करत, उँहा मार्किश्वित्रल कारले सर्था श्राम विकास दकान याहेट भारत। हेश नकरनहे अञ्चल क्रियारहन, य এकि मायाना दील जिला बादा कछ मूत लया छ चालाकाकम् इत । कल्डः जामदा चाटणा-কের সত্ত্র বৈধ মনেতে ধারণ করিতে পারি না। স্থা হইতে তদীয় আলোক এক ক্রতবেগে ভূমগুলে পতিত হয়, বে পর-মেশর জ্যোড়িতে বিশেষ কৌশল প্রকাশ ना क्रिक करात (बर्ग प्रयक्ष नमस भगार्थ**हे हुन इहेन्ना बाईड, किस कि**या জগদীখনের আশ্রহা মহিমা! তিনি করণা

পূর্বেক জ্যোতির পরমাণু সকলকে এড স্থান করিয়াছেন, যে উহার উলিখিত ৰূপ সত্ত্র গতি ছারা ভূমগুলের কোন প্রকার व्यक्तिके উद्धादिल ना श्रेत्रा विरुप्त कला। १ से উৎপন্ন হয়। উহার সম্বর গতি দার। পৃথিবীস্থ কোন প্রকার কঠিন পদার্থ চু-র্ণ ছওয়া মুরে থাকুক, আমাদিগের চক্তঃ প্রভৃতি কোমল প্রার্থ কিছুমাত্র আইড হয় না। দিবাভাগে অ।নাদিগের চঙের অনবরত সুর্য্যালোক পতিত হয়, কিন্তু জগ দীশ্বরের কৌশল প্রভাবে সামরং অনালান্য ঐ আলোকের অভিত্নীয় সত্তর বেগ্রা রণ করিতে পারি। আলোদের পভ*েত* আ্যাদিগের নেতের কিছুমাত রেণ ৭৮-मा हुरत थाकुक, याभवा अकवात स्थान-তেও পারি না যে অংমাদিগের নেত্র ক্ষেত্রে दकान अकात भागार्थ ज्यान इहेरल्ड । श-রম করুণাকর পরমেশ্বর আলোকের কণঃ দকল সুক্ষা ও বিস্তৃত করাতে ফটির লারও এক মহৎ অনসল নিরাক্ত হইরাছে। ই। অনেকেই প্রতাক করিয়াছেন, বে अकिविन्त्र चारुमी कारह स्म कथकि सूर्याः রশ্যি পতিত হয়, তাহা একতা সংহত হই-লে তদীর তেজে কাষ্ঠাদি দাছবস্ত সকল महत्करे नक्ष इस, किन्छ शृथिवीष नाना १ नार्ष भवार्षित गर्धा निवाकत मध्य मध्य कित्रण कर्गा दर्भण कतिएउएइन, अध्य उन्हात्।

<sup>\*</sup> A drop of tallow expended in the wick of a farthing candle shall send forth rays sufficient to fill a hemisphere of a mile diameter. P. N. Th.

কোন পদার্থই দথা হই তেছে না। হা। জগদার্থকে এ প্রকার স্ক্রেডন সংগ্রিশিই ও স্কানিক বিজ্ ত না করিছে, তাহা হইলে কিরণে কারিছান, তাহা হইলে আমরা স্থা কিরণে কোন তাহা হইলে আমরা স্থা কিরণে কোন কালে চুর্ণ ও জ্মীন্ত হুইলা বাইডাম। যে সমন্ত ভ্রম্কর ব্যাহর ভৌতিক পদার্থ ভারা আমাদিশের অশ্ব প্রকার অনিই ঘটিবার স্থাবনা, গোলারু সক্রম্ম বাবস্থামুলারে ভ্রমার ও গার্যাদিশের অনের বিধ উপকার দশিভেছ।

জ্যোতির পরমার পরস্পর প্রস্পরকে নিক্ষেপ করে, কখনই ফেহ কাহারও সহিত যুক্ত হয় না, স্কতরাং আলোকের কিছুমান স্কুলন্ত মন্তুস্ত হয় ।। জ্যোতির স্থ্যা-ন্থ থাকিলে পৃথিবীর সকল প্রার্থই উহার ভারে প্রদীচিত হইত।

ইহা সকলেরি বিদিত আছে, যে জ্যো-िने कामानियांत नर्गन कार्यात अभान কারণ। পৃথিনীতে আলোক থাকাতেই আ-ন্তা স্বাটা পদার্থ সকল দেখিতে পাই। প্রমেশ্বর জেন্তির স্থিত দশ্রেন্দ্রিয়ের শতি অংশ্যম। সময় নিবন্ধ করিল দিয়া-জেন, িনি ঘদি জগতে লোভির ভটি না করিতেন, তাহা নটনে আমাদিগের দশ্বে-না ২ইলেও ভোগতির কটিনির্থক হইত। যে দর্শন ক্রিয়া আমানিগের জ্ঞানলাভের ও স্থ ভাগের প্রধান হেতু,পৃথিবীতে আলো-কের অভাব হইলে, সেদর্শন ক্রিয়ারও অভাব হইত। পৃথিনী আলোক শুনা **তম**-সাভ্য হইলে যে আনাদিগকে জিপ্**রান্ত** ছু:থভোগ করিতে হইড,ভাছা নয়ন বিহীন यम वाजिरे विनक्ष अवश्र आहर। जा-गता निक्तारका विविज्ञवर्णंत समार्थ मंगर-শ্ন করিয়া নেত্রগ্রন্ধন করিতেছি। আমরা কান সূচারে শক্তাকেতের মনোহর হরিৎ र्व मन्त्रमाँग कविशा स्वी इहेटाहि, क्यन মূতন জনধরের প্রধান স্থানল ধর্ণ অবলো-कन कतिया विष्डत विस्ताप अधारे देवहि, কোন সময় বিতীর্ণ সাগরের নীলোক ল সলিল শোভা সরলোকন করিয়া ভুগু হই एकि, कथन वा विशिविद्यात्री विधित क्ष-कात दिश्वनदेवत आकर्षा भीनार्था निदी-অণ করিয়া সালক্ষাক করিতেছি। লামরা कर्यन **गरतावह नामि अनुसमा हेम्मीवर**तत ীল আভা অবলোকন করিয়া পুলকিত হ-रेटिक जर कथा काक्राइत लाहिल কান্তি নেত্রগোচর করিয়া বিশেষ ভৃপ্তি লাভ করি**তে**ছি, **কিন্ত কেবল এক, জ্যোতিঃ** প্লাৰ্গ প্ৰভাবে এই সমুদায় স্থচার বৰ্ণেত উৎপত্তি হইতেছে এবং আমরা নানা সময় নানা প্রকার নেত্রন্থর লাভ করিতেছি। পুথিবীতে আলোক না থাকিলে যেমন আ মরা কোন পদার্থই দেখিতে পাইতাম ন: সেইকণ আলোক অভাবে কোন একাড বর্ণেরই উৎপত্তি হইত না। সুষ্ট হ **ইতে বে কিরণ পতিত হয়, তাহা সামান**েও এক বর্ণের দেখার, কিন্তু বস্তুতঃ এক ৰণের নছে, ভাহাতে সাতটি ব ভিন্ন প্রকার বর্ণ বিদ্যমান আছে, প্রদার্গ বিদ্যাবিৎ পণ্ডিভেরা এক প্রকার ক্রিফোণ ও ক্রিভূত্ত বিশিষ্ট স্থাকাচ দারা পরীকা ক রিয়া দেখিয়াছেন, যে স্থা করেনে যে করেক প্রকার বর্ণ আছে, তাহা ঐ কাতে পূথক হইয়া পতিত হয়। প্রত্যৈক হয় भगार्थ य य शहरिंड यसुमातः ये सूर्या कि त्रवाष्ट्रकृ द अक अक अकात्र वर्ग हहेरल अक এক প্রকার বর্গ প্রাপ্ত হয়। স্থাতি মধ্যে কীট পত্রস পশু পদ্দী প্রভৃতি **যত প্রকা**র পদার্থ আছে, নকলেই আপন আপন খ-ভানানুসারে আলোক হইছে এক এক প্রকার বর্ণ পাইয়া থাকে, अভ এব বিলক্ষণ প্রতিপন্ন হইতেছে, বে জগদীশার জনতে এক জ্যোতির স্থা করিয়া আমাদিগ-क विच्चि अकेत वर्ष निकर्णन सूर्य স্থী করিয়াছেন। কোন পণ্ডিত ব্যক্ত করিয়াছেন 🕇 , যদি অকবার ছির্চিছে चारवारकत प्रतना रेसभूषा जाविता रहेंचा যার, তাহা হইলে বিমন্ত্রাপর হইতে হর। কাহার সাধ্য যে এক মাত্র জ্যোতিঃ পদার্থ

<sup>\*</sup> Paley's Natural theology.

<sup>†</sup> A friend of Dr. Paley.

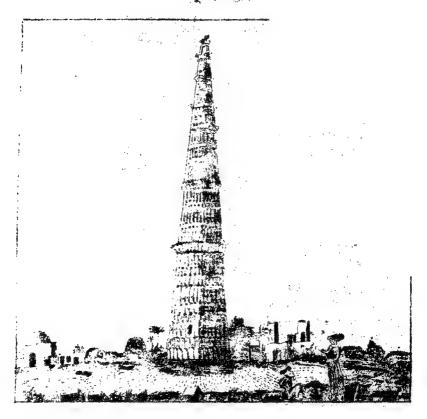
হইতে ভূমঞ্জ হ বাবতীয় বর্ণের উৎপত্তি করিতে পান্ধে। বিশেষতঃ সাতটি পূথক্ পূথক্ বর্ণের বোণে আলোকের উৎপত্তি হইয়াছে, কিন্তু উহার সংযোগ ও মিশুণের ভাৎপর্যা অমুসারে আমর। ক্র্যাদি জ্যোতি লাল্ পদার্থ হইতে চির দিনই নির্মাল পরিছ ত আলোক প্রাপ্ত হইতেছি।

আলোক হেতু বিবিধ প্রকার ফল সঞ্চা-मि आचानवन्त इस धर नाना काठीस পত্র পুজাদির দৌগন্ধি ক্ষমে। জ্যোতি বিহীন স্থানে বীক অনুবিত স্ওয়াই किंत, यहिए कान की गता वीकरक अनु-রিত করিতে পারা যায়। তথাপি তছুৎপন্ন বুক্ষ কি লতা স্বজাতীয় বৰ্ণ প্ৰাঞ্চ না হইয়া নিক্স ও বিবৰ্ণ হয় এবং কোন পুষ্পে কি ফলে উপযুক্ত ৰূপ আলোক না লাগিলে ভাছারা যথা মন্তব সৌরভ ও স্থাদ বিশিষ্ট इयु ना '। प्याधुनिक भनार्थ विना। पाता श्रकान পাইয়াছে,যে কোন প্রকার উদ্ভিদের উৎপ-ত্তি স্থিতি নিমিত্ত ও কল পুষ্প বিশিষ্ট হই-বাব জনা যেমন কিয়ৎ পরিমাণ উদ্ভাপের আবশ্বক হয়,সেই ৰূপ সম্ভবমত আলোকে-রও গ্রেছন হ্টয়া থাকে। আলোক-ভিন্ন কেবল উত্তাপ দারা আয় কোন অ-कात छेक्किमरे छठाक करण करम ना अवश প্ৰায় কোন উদ্ভিবই প্ৰকৃত ৰূপে কুমুমিত ७ कन्यानी इस ना। आत्नाक रामन जशमी-শ্বরের উন্ভিদ রাজ্যের নানা প্রকার কল্যাণ সাধন করিভেছে, সেইনপ আলোক হইতে বছ প্রকার জীব বছবিধ উপকার প্রাপ্ত হ-हेटल्ट्स, पार्टनाकालास्य कीव महीवर करम বিৰণ ও বিশ্বত হইয়া যায়, আলোক मस्याकां जित्र मानाइत औरक ७ छन्त করে। মন্ত্র) বন্ধি দীর্ঘকাল আলোক শূনা অক্ষকার মর স্থানে বাস করে তাহা হইলে कत्म कत्म छाहात औत खत्मक हाम हरा।

শামরা উদ্ভাগ বিশিষ্ট সূর্যা কিরণ হইতে বে উপকার প্রাপ্ত হইতেছি, তাহা বংকেপে কীর্ত্তিন না করিরা কোনমতে কাছ হইতে পারা বারুনা। ইহা সর্বতোভাবে হির হইরাছে, বে ব্রক্ষাণ্ডে উদ্ভাগ না থা- কিলে ব্ৰহ্মাণ্ডফ খল জল যাবতীর পদার্থ পায়াণ পিগুৰৎ একত সংহত ও কঠিন 🗉 ইয়া থাকিত। ্রসভাবের স্তিকা রাশি পাৰাণ সদৃশ কঠিন হইত এবং প্ৰশস্ত প্ৰ শত সমুদ্র সকলও ভুষার ছীপবং পতিত ধাকিত। কি ভূলোক কি জালোক প্রস্কা-ত্তের যত দুর প্রান্ত অবগত হ্ইতে পার: গিয়াছে, তাহার ধরবতই সকল পদার্থের আকর্ষণ শক্তি দুট হইয়াজে, প্রত্যেক প **দার্থ**ই অপেনার নিকটতর ও আপ্নার অপেক্ষা কুদ্রতর পদার্থকে আকর্ষণ তে পারে, স্কুতরাং বিশ্বক্ষেত্রের দর্বত্র কে-বল এক আকর্ষণ শক্তির প্রভাৱে থাকিলে ড-দন্তর্গত বস্তু সকল এক স্থানে আফুই চ ইয়া পাষাণ পিগুৰুৎ হইয়া থাকিত, সন্দেদ নাই। ব্রহ্মাতের বর্তমান অবস্থার জনা अध्याकर्सगी শক্তির কোন প্রতিবিধান কর্ত্তা থাকা নিতার আবস্থাক, আমর: উক্তাপে ঐ আকর্ষণের প্রতি-বিধায়িনী শক্তি দেখিতে পাই, কিন্তু উদ্ভাপ কোন পদার্থকে সংহত ও কাহার সহিত সংযুক্ত हरेट प्रम ना, उँहा नकल कठिन शनार्ख्ह পরমাণু সকল পূথক করিয়া তরলাবস্থায় পরিণ্ড করে এবং তরল পদার্থকে বাজ্প করিয়া থাকে। জগদীখর উত্তাপের স্থাট করাতে আমরা সংসার মধ্যে স্লিল্ডি ভ **तम भगर्थ आध रु**रेता जीवन धात्र करि **তেছি এবং বাষ্পা** স্বারো নানা। প্রকার মহ **কার্যা সম্পন্ন করিতে**ছি। উত্তরে প্রা **আমর। ধার্ডীর ভূপ্তি**ল। ও রুমরেন ভাল পার সম্পন্ন করিয়া আপনাদিগের স্থপ সং थन ७ मरमारतत में नग्रफान कतिर ग्रंक जर উত্তাপ দ্বারা বিবিধ একার ফল শতাগ **সুপ্ত হ্টতেছে।** অতথ্য উত্তাপ বিশি के कुँगा कित्रवाणि वाता जामका त्य मकल দ্বাশি রাশি উগকার প্রাপ্ত হুইতেছি, তাং। বর্ণন করিয়া শেষ কর। অসাধাং যিনি কুপ। कतिया उत्ता ७ मध्य अहे ज्याने मञ्जाकत জ্যোতির কৃষ্টি করিয়াছেন, সেই ল্যোতিয জ্বোতি পরম জ্যোতিকে সক্তজ চিত্ত প্রাণিপাড় করি:

Purgu's Natural Theology.

#### কুতব্যিনার।



## হিন্দু জাতির পূর্বকীর্তি।

ভারতবর্ণীয় প্রাচীন চিক্তু রাজারা যে
সমান অপূর্ক মন্তালিকামরী স্পোভিতা
রাজপুরী, চূর্ল জ্বা পরিধা পরিবেন্টিত তুর্গম
চর্ল, অভ্যুক্ত গগন স্পর্ম প্রায় মহোক্ত ক্তম
গণ নামা বিধ রক্ষ শ্রেণী পোভিত স্বযুর
নামি ব সর্বা শর্ণি, অধ্যা জনম প্রকুলকার
গণেতির বক্ষ বাটি ও প্রেশক দীর্ষিকা প্রেজ্বত অভ্যুত কার্তি প্রকাশ ক্ষরিয়াছিলেন,
কালেতে করিয়া প্রায় ভাষার ক্ষরিকাংশই
বংস ও পুর্গ্রহিয়া গিয়াছে। বিশেষতঃ ভাম
বংবর্ষ বার্যার ব্যন হত্তে প্রতিত হুওয়া-

তে এবং দীর্ব কাল ঘ্রনানীনে রাম করাতে তদীর আচীন হিন্দু রাজানিপ্তার অনাবান্য কীকি চিক্ত সকল বিধিমতে বিভিকত হইরাছে। নির্দির ব্যবন সন্তানেরা জারতবর্ষ অধিকার করিরা বিজ্ঞান বিক্তুল্য নির্দুক্ত
করিবার উল্লেখ্যে কোল বহুত অভ্যাচার
করিতে আর অংশেকা রাবে নাই। হিন্দু
বিচার কলেব বহু সম্পন্ন বিবিধ প্রকার
আন পর্ব এই দকল রালি রাখি করিবা
কর্ম করিরানে, অপুরু আনুন্তা অভ্যানিকা
নকল ভয়াও চুল করিয়া স্যানাং অন্তিরা
হে, বহু ব্যর ও বহু স্টেশ্র উব্ভুক্ত ব্যব

বিত করিরা আপনাদিগের মনোমত মস লিক আকারে পরিণত করিয়াছে। ছর্গ সকল তুর্বত্যাপন্ন করিয়াছে, নগর সকল লুওন ক-রিয়াছে, রাজপথ রুজ করিয়াছে এবং নানা প্রকার দারুমর, পাবাণময়, সৃধার ও চিতাময অপুর্ব্ধ দেব,প্রতিমুর্ত্তি সকল ছিন্ন ভিন্ন ক-রিয়াছে, তথাপি এই সকল অভ্যাচারের পর व्यवनिके य किए हिन्दू कीर्जि वनाशि छ রতবর্ষের স্থানে স্থানে বিদ্যামান আছে, ত খাখ্যেও অনেক উৎক্ষা ভাগ ধাবনিক নামে अ यवन की कि विनया शतिकित इहेगा तकि-शादकः। अदे श्रकादवत मिदतादनदर्ग त्य छ-চতর মনোহর প্রাসাদের প্রতিমূর্ত্তি প্রদ-শিত হইল, উহা বস্তুতঃ হিন্দুকীর্ত্তি, কি জ अकर्ण अरमरण छेह। यवनमिरअंत निर्मिष्ड दिन्स क्षित्र इंडेसिट्। यवटनता छेशटक কুতব্দিন বাদসাহের অয়ভেড বলিয়া প-বিচয় দেয়, এই জনা ইংরাজ জাতি উহা-(क कुछव सिमाञ्ज शिलाञ छिलाश करतन। সম্ভাকার ঐ উন্নত প্রাসাদ দেখিতে অতি অন্তত্ত, লেপ্টনেন্ট ব্রুট সাহেব পরিমাণ ক বিয়া দেখিয়াছেন যে উক্ত প্রাসাদ প্রায় ১৬১ হস্ত উচ্চ, এবং বিলক্ষণ প্রশক্ষ। উহরি উপফীয় বা আধোভাপের পরিধি ৬০ হজের ম্বান নহে এবং উপরিভাগেরও পরিধি প্রার २० इटलत्र अञ्चान हरू दिक् ना 📳 अरे अ-কাও স্তভাকার প্রাসাদের মূল হইতে শি-খার পর্যান্ত সমান গঠন নছে, উহা ক্রমে উৰ্চে সত্ন হইয়া উঠিয়াছে এবং বিভিন্ন প্রকারে নির্দ্ধিত হইয়াছে। ঐ স্তম্ভ দুল হ-ইতে একশত বিংশতি হস্ত উৰ্দ্ধ পৰ্যান্ত ক-সরময় **লোহিড প্রস্তার দার**া নির্দ্ধিত এবং চতুর্দ্ধিকে সপ্তবিংশতি খোদিত রেখায় স্থ-শ্র কপে রচিত, তদুর্ভে শিখ্র দেশ পর্যান্ত উৎক্লফী শ্বেত প্রস্তুর দারা:গো-লাকারে নির্শিত। উপ**ন্টয় হইতে** শি-থ্য দেশ পর্যান্ত তারি স্থানে চারিটি **অদৃত বারাওা আহে। প্রথম বারা**ওা ৬০ **হভের উপর, বিতীয় ৯**৪ হল্তের উপর, पृजीम ३२० स्टब्स अभन धनः P 20 4

বারাপ্তা প্রায় ১৩৫ হস্তের উপর শোভা পা ইতেছে। প্রভোক বারাগুরই চতুর্দ্ধিকে दिल दिक्त करा आहा धदः श्राटाक-তেই অভাগর হইতে গমন করিবার পথ 'গাছে। উলিখিত বারাগা চভুষ্টর প্রাসাদ বহিসিঃস্ত দৃঢ়তর প্রস্তর ঋণ্ডে স্থিত আছে কিন্তু ভাগা স্থাপন করিবার কৌশল অভি করিলে চমংকার ৷ ইল্ছা *(मार्क्त भाषा चार्नाक अक काला वे* কবিরা অনায়াদে ৰারাপ্তার গমন ভক্ততঃ ভ্রমণ করিতে পারে: প্রাসাদের মূল হইতে উৰ্দ্ৰেশ প্ৰয়াত এক উৎকৃষ্ট চক্রাকার আবর্ত্তনশীল শোপান ছাছে, ঐ শোপান দিয়া প্রায় উহার চুড়া প্রাস্ত আ त्वारंग कवा बाब धवर (मानात्मत महरा বায় ও আলোক আদিবার আছে, ঐ পথ দিয়াই বারাপ্তাতে যাইতে পারা যায়। এই ক্তের বহিভাগের চা-রিদিকে আরবিক অক্ষরে যবন কাভির ধর্ম পুস্তক কোরাণের বছতর বচন লিখিত আছে 📲 কলতঃ ইহার বর্তমান অবস্থা সন্দর্শন করিলে সহসা ইহাকে মোসল্মান দিগের কীর্ত্তি বলিয়াই বোধ হয়, কিন্ত ইংলণ্ডীয় এক ব্যক্তি স্থবিচক্ষণ পণ্ডিত বক্তর প্রবল প্রমাণ ও মুক্তি ছার। এই হ। **সাদকে হিম্মুজাতির নির্দ্মিত বলিয়া প্রতি**-পন্ন করিয়াছেন। মিরপেক্ষ বিচার অবলখন করিলে কোন ব্যক্তিই তাঁহার প্রথাবাদি **স্থান্ত করিতে পাবেন** মা, তিনি লৈ স্কুল প্রমাণাদি প্রয়োগ করিয়াছেন, ভাষ্ট প্র **কাতে সংক্রেপে উক্ত হয়তেছে** (

ভারতবর্ষের মুধ্যে মুসলমান জাতি থে সমস্ত অটালিক। ও স্তম্ভাদি নিম্মাণ করি-য়াছে, তাহার কিছুতেই হিম্মুদিগের কেন চিক্ন দেখিতে পাওয়া যায় না,কিন্তুকুত্বমি-নারের স্থানে প্রস্তর রুপের অদ্যা পি অনেক দেবনাগর অক্ষর বিদ্যমান আছে। মুসলমান জাতি হিন্দুদিগকে এত ঘুণা করে এবং হিন্দু জাতির প্রতি উহাদিগের এবত প্রগাদ ঘেষ দেখিতে পাওয়া যায়, বে উ বারা কোন বিশ্বেই ক্লিক্সুদিগের অকুক্রণ

<sup>·</sup> Only wells being enterly

Asiatic research vol. Joh.

ক্রেনা। সভএব উল্লিখিড প্রাসাদ সু-এলমান দিনের নির্মিত হইলে তাহাতে দে-বনাগর ভার্যাৎ সংক্ষ ত অকরে বর্ত্তমান থাকা क्त्र भटउर मझल बरेट भारत ना। य-র্ম মুসলমান দিগের কোন জটালিকা ভ্রম্মাদিতে হিন্দু জাতির **দেবনাগরাদি** ্রজ্ব দেখা যার না, তথন দেবনাগরাক্ষর াক প্রস্তু নির্মিত কুত্রমিনারকে কি প্রকারের সংশয় রহিত হৃ**ইয়া মুদলমান জা**-তির কার্ত্তি বলা ঘাইতে পারে। হয় উপরোক্ত স্তত্ত্ব সর্বারেই সংস্কৃত বর্ণ লিখিত ছিল, পারে তাহার অধিকাংশই ম-্ৰসমানের), উল্লেখন করিয়া কেলিয়া দি-য়াছে, আরু ঘাছা উদ্রোলন করিতে পারে মাই অথবা যে মকল স্থান ভাঙ্গিলে বা ডিঠাইয়া ফেলিলে তুল ওছের হানি হয়,

আমনি পূর্বেলিখিত সংকৃত আকরে লেভ কৃত্য বিরাজে। **সুসল্মানে**রা কুভবনিনারের উপরি ভাগ ভগ্ন করি-প্রমারান্তর ছার। পুনর্নির্মিত করিয়া ত-ছুপরি আরবিক অক্ষর দারা কোরাগের পদ বিন্যায় করিয়াছে,ইছা নিতান্ত অন্তামের क्या नद्द इंशाद ब्रह्मक स्थापे अभाग व्याख ২৩খা বিয়াডে 🔐 একাণে ঐ ভারের বহি-ভানে লোহিত বৰ্ণ প্ৰান্তর দেখা যায় এবং काछर्जाता द्वत वर्ग शाख्त पुत्रके इस , किछ বিশিক বিশিক শিশে নিপুণ ব্যক্তি পরী-কঃ করির। দেখিয়াছেন, যে কুতব্যিনারের বহিষ্ঠাণে যে প্রস্তর আছে, তদপেকা অ-ভার্ডারে বনর বর্ণ প্রান্তর অধিক দৃচ এবং অধিক কাল স্থায়ী। **সভএব বিলক্ষণ** श्रानिम स्टेखिङ ्य चुनलमारमञ्जा वे अञ्चल घरण कीर्सि প্রতিপদ্ধ করণো-াদশে উহার রহিছানের ধঘর বর্ণ প্রস্তের পক্ষা উত্তোলন ক্রিয়া তৎপরিবর্তত লোহিত বৰ্ণ প্ৰস্তাৱ বিনাম্ভ কৰিয়া **ড**-

করিয়াতে। করেণ সকল কালে ও সকল এদশেই এই পদ্ধতি বেখিতে পাওরা বাষ যে লোকে যদি বিভিন্ন প্রকার উপকরণ বারা কোন নট্টানিকাদি বিশ্বাদ করে, তাহা হইলে তথ্যে যে বস্তু দীর্থকাল স্থারী

ব্চল

ररेटव अवर बाहा जिनका हुइ, जवाहाई व-क्किंग निर्माक्षक्रदत धवर उन्तरभक्षा क्रम मीत जेशकप्रगटक है आहर्जाटक विवास करते. कुकाशि क्लान भिण्य कात्रक अहे छेर क्रके প্রকৃতির অন্যথা আহরণ ক্রেন্তে দেখা বার ন**় ভারতবর্ষে খুসনুমান**ু দিগের হত অট্টালিকাদি আহে, তাহাতেও এই পদ্ধতি দুউ হয়। মুসলমানের। বে পুর্বভ্য ছিল্ফু <u> हिटलत व्यवाशांतर कीर्जि नकल व्यवादय</u> পরিচয় দিবার অভিলাবে বঞ্চর হিন্দ্র মঠাদি এই ৰূপে ৰূপান্তরিত ও ভয় করিয়া তত্ত্বপরি আপনাদিনের অভিনত मनकिमानि नामा अकात शहन निर्माण कः রিয়াছে, কেবল কুতবমিনার একমাত্র তা-হার নিদর্শন ছল নহে, ভারতবর্ষের নানা স্থানে তাহার আরও বহুতর নিদর্শন বিদ্যা-मान जाटह। कुमां ह गवन ब्राकाता वातानंभी-র বিস্তর দেবালয় এই ৰূপে নাই ও ৰূপান্ত রিত করিয়া আপনাদিগের ছেম্ব পূর্ণ নিষ্ঠুর স্বভাব প্রকাশ করিয়াছে "। **অত**এব ব্যন্তি-গের বেদ পূর্ণ **ভূব্য ক্ত স্থভান দারা** বি**লক**ণ প্রমাণ কইতেছে,যে উহারা হিন্দু বিপের পু কোলিখিত প্রাচীন ফীর্তিকে বিক্লত করি-য়াই কুতৰমিনার নামে পরিচয় দিয়াছে।

ভিতীরতঃ কুতবমিনারে যে প্রকার ভাবভার ও গঠন দেখা বার হিন্দুস্থান মধ্যে কুত্রাপি আর কোন ঘবন মন্দিরে সে কপ্র দেখিতে পাওয়া বার না। কুতবমিনারের অতি সমিকটে সমস্থানিন বাদসাহের কৃত একটি অপারসমাপ্ত প্রাসাদ আছে, বিজী প্রদেশে এই কপ্র জন ক্রতি আছে, বে সমস্থানিন বাছ কোন ক্রারণ মশ্ভঃ ঐ আনর্ব প্রস্তানর প্রাসাদ সমাপ্ত করিতে পারেন নাই। বাহা হউক ঐ ধবন ভারের সহিত বনি কোন মুক্তিমান লোকে কুজব

• ববসেরা বিশেষকের পূর্যাতার মানিকের অবিকাশ কর কারিয়া দাসজিল বিশানে করে এবং ঐ রূপে বিকাশনকের নঠও নাই করিয়া কুই অস্তাকারে পরিশুক্ত করে। এতাছেম বারাপারির কারিয়া কুই অস্তাকারে পরিশুক্ত করে। এতাছেম বারাপারির কারিয়া করে। করিয়া করে। করিয়া করে। করিয়া কর

মিনারের ভুলনা করিয়া দেখেন, ভাহা চুঠলে আর তিনি ইহাকে হিন্দুকী-র্ত্তি বলিয়া অঙ্গীকার করিতে কণমাত্রও विलब क्रविष्ठ शास्त्रन ना। এত চুক্তর স্ত-ব্ৰের মধ্যে একটিকে বৰন নিৰ্মিত বলিয়া শ্বীকার করিলে অপরকে আর কোনমভেই ব্যন্দিগের কীর্তি বলিতে পার৷ বায় না, ইহাদিগের মধ্যে কৌশল ও আকারাদি कान विषयात्रहे विन्धू माज मानुष्य नाहे। কুতব্যিনার যে সকল উপকরণ ছারা ও যে প্রকার কৌশলে নির্মিত সমস্থলিন সা-হের প্রয়ে তাছার কিছুই দুক্ত হয় না। কুতবমিনারে যে সকল বৃহৎ বৃহৎ প্রস্তর খণ্ড ও বে প্রকার সঞ্জি সংযোজক উপকরণ দেখিতে পাওয়া যায়, উহার নিকটন্ত দিতীয় छाड । न भकात । क ४७ तुरू धाउत ता এक विन्यू छेशकत्व मुक्के हम्रामा व्यवश ... उष्ठ य कश क्ष क्ष क्ष श्रास्त होता নিশ্মিত এবং উহার সক্ষি স্থানে যেমন রাশি রাশি চুর্ণাদি উপকরণ লিপ্ত আছে, কৃতব-मिनादा मिक्प किंडू हे नाहे, बड़े উड़त आ-নাদকে তুলনা করিয়া দেখিলে অক্লেশে সকলেরি প্রতীতি হইতে পারে, যে কুডব-মিনার কোন কপে ব্যন দিগের নির্দ্ধিত নহে। বিশেষতঃ কুত্রবিদারে যে প্রকার আশ্চর্যা কৌশলময় Callalia जात्रजनर्दित भर्षा कान यवन भन्ति त প্রকার শোপান নাই।

তৃতীরতঃ ধবনের। বে কৃতব্যনারকে
বনানে পরিচিত করিবার জনা উহার বহি
ক্রেলার প্রস্তর পরলা উজ্জোলন করিয়া তহ
পরিবর্তে অন্য প্রস্তর বিনাত করিয়া তহ
পরি থারবি অক্ষর নিশিষ্কাহে , তা
হার আরও এক প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়া সিরাহে । উক্ত ভয়ের বহির্ভাগ অহ্যাপি
মুডন প্রায় মহিরাহে এবং বহির্ভাগের লিভি আরি অক্ষর সকলা কিছুমারা অপনীত হয় নাই, কিন্তু অন্তর্ভাগের আকার
অনেক পুরাতন হইয়াছে এবং তত্তত্ত্ব দেবনাগর অক্ষরানিও অনেক অপনীত হইয়া
সিয়াহে, এক্ষরে ইহা বিবেচনা করিয়া
দেখা আবিক্ষর যে ক্রেরে অন্তর্গায় ছই

ভাগ এক কালের নির্মিত ছইলে, অবজ্ঞ অত্যে উদার বহিতাগই বাত রুটি ও বোলা দির ছারা ক্ষর ও জীর্ণ হছত, অস্তর্জ ে বৌলা রুটিআদি কোন উৎপাত উপস্থিত হইবার সম্ভাবনা নাই, স্থাতরাং অস্তর্জা কথনই অত্যে জীর্ণ হইত লা। অত্যান স্থাত্ত ত্বমিনারের বহিতাগে আরবি অস্থার দ্বার কোরাগের বচন সমূহ লিখিত থাছে বিলিয়াই উহাকে কোন ক্রমে নিঃসংশ্যে মুবন কীর্ত্তি বলিতে পারা বায় না।

**कड्रबंजः दकान** शाहीन् विमस्त्रत भाउत সত্য নির্দ্ধারণ স্থলে লাগারণ অনুক্রতি স্বর जहें क्षरत व्यमान दनिक्र शनः इतः मिल्लेः व्यापटम अनामि विवक्तन कनवादि चार .যে পূখ রাজা স্বীয় কন্যার প্রত্যহিক 🐉 र्यामम ও यमुना मर्भन खना वे छेक्र छत था:-नाम निर्माण करवन। त्रीरमन नारम्य स প্রণীত এক গ্রন্থ মধ্যে লিখিয়াছেন, না তিনি নিন্ধীনগরে উক্ত প্রকার জনহাতি শ্র-বণ করিয়া অনেক অনুসক্ষান করাতে তত্ত क महारहेत अकलन क्षत्रान कर्माहादि छैं। হাকে অবগত করিল, বে " অমিরা চিরকা-**ল এইরপ শুনিয়া আরিতেছি, কু**তব্মিনায় कान श्र्वां के हिन्दू ताकात की हि। हैन। **কালে অরুণোদর দর্শন ও হি**ন্দুদির্গের প विज ननी राष्ट्रनात कव सक्तान कता 👊 🚉 नाम अञ्चल इस । " यथन विश्वीद्ध महार्हान अधान कर्याहाती अहास है तथ अवस्तान अभाग अवर्णन कतिन, तथा छए सम्हन्छ। কেও নিভান্ত অমূলক বলিয়া ভাগান্ত কয়৷

शक्ष्मण्डः देव ज्ञारम क्षुण्यस्थात विभागमा जारह. उक् दान त्य पृथ्वकात हिम्छूनिर्णाइ निवास कृषि ६ विस्तृ ताजानिरात ताजवानी हिस्सु, जाहारण जात रकाम सरम्म ह गाहे। थे द्वारम कृष्ट्यमिगा जिल्ल जात थात्र ज्ञान क्षात थ हिस्सुनिर्णत ज्ञान कृष्टि ग्रीमि वृद्ध्यास ज्ञाहि, कृण्यमिगातत एकुर्तिरक्षे आग्र हिस्सुनिर्णत प्रशासानि वितास कृष्टि

<sup>: \*</sup> kamble &o in India by L. C. W. H. She : .

্রপুর্ব্ব লৌহ স্তম্ভ ন্যাহে। : পুরা**কালে 🗨**: জিনালগাৰে ধৰ বাজা লামে এক বাজা ৰাম ফ্রিভেন, ভাঁহার স্থিত **লিডু প্রদে**শীর বাজ্ঞিক ভাতির বিস্তর সংপ্রাম হয়, পরি ে যে দিনি পাছলক দিগকে পরাজয় করিয়া প্রবায় জয় **অনু করণ এ লৌহ ভয়ে মিশ্রাণ** ক্ষরেন। বৈক্ষর ধর্মবেল্ছী কর রাজা যে ালিকনিকের দৌরাশ্বা হইতে স্থীয় রাজা ্ক করেন এবং ভাহাদিগকে বার্যার যাদ্ধে পরাজয় করিয়া ছিলেন, ভাষা তাঁ। ার ক্রত উক্ত সৌহ স্তয়ের উপার সং-ই ও ভাবায় অদ্যাপি লিখিত আছে। । धरे ल्लांक स्टब्रुस অনেক স্থানে গো-लात किन (मथिएक शालका बाह, ७४% है-হার কোন কোন ভান কামানের গোলার ্ডকে ক্ষত ব্ৰীয়াও গিড়াছে, ইয়াতে বি-াকণ বোধ হয়, যে ভাৰতি খ**বনে**হা এই াৰ্ড স্বস্থাকৈও ভয় ও নিংশেষিত কবিবার ্টাটা পাইরাছিল কিন্তু **ইহা সমধিক** দট प भग्यानं अटलग् यांगग्रः हेशास्त्र एक कवि-र पाला नक्षे। अहे ऋतु पृष्टि ७ विन-''দ' ব্যাহ হয়, যে কুতদমিনাত্ত পূ**ৰ্বে হি**-न्यामिरभाव की जिं किया, भारत ध्यम कर्डक ক্রপাছরিত ভইরাছে :

ঘটতং যবনের। কৃতব্দিনারকে কুতব্ দিন বাদসাহের কৃত পলিয়া পরিচয় দের। কিন্তু কুতব্দিন দিল্লীর সিংহাসনে পাঁচ বংসরের অধিক রাজা করেন নাই, তিনি ২০৫ গ্রীকাতে দিল্লীর সিংহাসনে অধিকচ্ হয়েন এবং ২২০ শকে তাঁহার লোকান্তর প্রাতি হর, স্বতরাই এই বাঁত কংকরের মধ্যে তাঁহার বারা কুত্রমিনার সমূপ ভঙ্ক নির্মিত হওরা কোন বাপে সক্ষত হইতে পারে না

#### মহাভারত।

प्यामिशका ।

१७ व्यक्षास नाम नाम में

জনমেলয় কহিলেন, তে তপোধন!
দক্ষ প্রজাপতি হইতে বংশ গণনাম বিনি
দশম হলেন, সেই যথাতি রাজা পরম
ফুল্ভা শুকু তনয়া দেবয়ানীকে কি
প্রকারে লাভ করিয়াছিলেন, আমি তাহা
বিভারিত রূপে শুনিতে রাসনা করি, ও
যয়তি রাজার বংশ সকল আরুপূর্বিক
শুনিতে বাঞা করি, আপনি পৃথক কপে
বণন করন।

देव ने ना अकाश শালী নভবের **পুত্র যবাভি রাভাকে পুর্বে** শুক্র ও রুষপর্ববা **বে ব্রপে** বরণ করিয়াছি লেন, এবং তিনি যেকপে দেবয়ানীকে লাভ করিয়াছিলেন, হে জনমেজয়! ওৎবযুদায় আমি ভোমার নিকট বিস্তারিত ক্রপে বর্ণন করি ৷ পূর্বাকালে এই তালোকা রাজ্য লইয়া একদা দেবতা ও অক্র দিগের পর-স্পর ঘোর সংগ্রামন্তপস্থিত হয়, তৎকালে (मक्लावा कर मा**जार्थ द्रव्यालिक रक्का**-লুঠানে পৌরোহিত্য কর্মে ব্রতীকরেন, এবং অসুরের: শুক্রাচার্য্যকে উক্ত কর্মে বরণ করেন। তথন বুহস্পতি ও তক উভয়েই পরস্পার অত্যন্ত স্পর্কা করিছে লাগিলেন। शदत उँछ पूर्व स्वराता व वक्त देन-वहक वध करतम, अध्यक्तमानी विकासिक ভাৰামিগকে পুৰ্ভীবিচ ক্ষিয়া দেব এবং তাহার।, উবিত হইয়া পুরস্কার এরবজারি গের সহিত পুক্ত করিতে লারভ করে। किस मञ्जातका त्य नक्या त्यकात्व वृद्ध विवास करते, क्षेत्रावशी वृक्तांकि नाव की राविताक श्रेमकीविक कविएक शास्त्र नी, (सहस्कु दीवीबाम अकाशका त विमा कार्बा

Anistic resourch vol. ath.

ত লাকাও বর মধ্যে নামিকাক চোর্বিছ কথা উদ্ধান করিবছে। ে নাম্বানিতা আ নীক্ষানিতার পার ব লামেকারাকাল-নাম্বান্তবারিলে নিজিপিকে প্রচানকীর্কেছ করে। জীন নাম্বান্তবারিলে সকরে নিজেনিকা লাম্বিকার্কিরাল বিভাগিত কর্মিকার্কার

নিবান্তে ক্ষানিসিকাতি লাভিত্ত ক্ষানিষ্ঠ । ১ । টুল্লা তি কলেন বিভাগুলনাথ লনপ্তত পাঁদানিতি লেডাকানাথ। ব কথাতি আছে নিপ্ত লেডাকাৰ্ড লাভিত্ত । ক্ষিত্তি । লাজনেত্ৰ নহৰত লক্ষ্মত্ত ক্ষান্ত তেখানিত্ব নিবাদিনা লাভত বিভাগিকানিকাৰ ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত বিভাগিক।

ওবার্কের হাতুকাজিও ছাচিরটক্ষাবিরকার ক্রিক্টো লাকেল নজগুলে সমুস্টা বৈদ্ধাবির বিষয়ে। ক্রেট্রিকা লাকেল নজগুলে সমুস্টা বিদ্ধাবিক বিষয়ে। ক্রেট্রিকা লাকিলান ক্রেমবর্তাবিকোকুজির ছাকিজ্ঞান্ত।

<sup>&</sup>quot; Excursion in India by a field officer of the

नुनकीविक करवन, इंश्लाकि तारे महीव-की विका काविएकन मा। शदत स्वरंकाता विकासालक के अपने कटा छेकिय रहेता हर-স্পতির সোষ্ঠ পুত্র কচের নিকটে বিয়া कहिलाम, (हे कहा। जूमि ब्यामानिश्तंत अक মহৎ উপকার কর, অমিড তেজনী শুক্রাচা-र्या (व नक्षीवनी विका कारमन, जुमि जाश न-বর হরণ করিয়া আন। আমরা তন্দার। দৈত্য গণকৈ পরাজয় করিলে তুমি আমানিগের अक जानी इहेरत। त्रश्यात निकटि शुक्राक (मथिएक भाईरव, जिनि मानव গণকে রক্ষা করিতেছেন, দেবতা দিগের माहाया करतन ना। कृषि वालक, कृषिह कांहात जाताधनात नमर्व इटेरव । अन्य-वानी त्रहे महाजात कनां, कैशिक्ट जा-বাধনা করিতে ভোমা বাতীত আর কেছই गमर्थ इट्रिना। भील, माक्रिश, माध्या-माठात ও नता, এই तकल तम् अग सात म्बयानी शतिकृषे स्रेलरे जूमि मिन्दत ्म हे विमा आख स्टेरव। अनखत हरू-ন্দাতি সুত কচ তথাস্থ বলিয়া স্বীকার ক-রত দেবতাগণ কর্ত্তক সমাদৃত হইরা রুষ-পর্ম সমীপে গমন করিলেন। হে রাজন্! দেব প্রেরিত কচ সত্ত্র গিরা অন্তরেক্ত বুষপর্বার সমীপে শুক্রকে 🚜 বিয়া কহি-লেন, আনি আঞ্চির্য ক্ষবির পৌজ, সাক্ষাৎ রহস্পতির পুত্র, আমার নাম কচ, আমা-কে শিব্যু রূপে গ্রহণ করুৰ, আমি আপ-नाटक स्टेंक्र श्रीकात्र कतिलान, चापनात नि কটে ব্রহ্মচর্যা আচরণ করিব, আমাকে স-হক্ত বংসর ব্রহ্মচর্য্য আচরণে অনুসতি ক-सन्। 'अक कहिरामन, हर कह! द्वायात নকল হউক, জামি ভোষার আর্থনা এছণ করিলাম, ভোমার পিত। বুহুস্পতি অতি পুজনীয় অভ্যান আমি তোমাকে সমাদর পূৰ্বক ব্ৰহ্মহান্ত উপজেশ করি। বৈশ-न्याज्ञम करिएमक रहे जात्रकः। कह, पृथ পুত্ৰ উপৰা পুঞ্জ কৰ্তৃক আৰুটা বাড় अस्य कतिरेलन, अवर बहुबाक उत्कत नि-प्रतिष्ठ कारण बेमाध्यारक्षत ७ रक्षत्रानीत जा-त्राचमाः केब्रिटेक काशिस्त्रम् । मिछाः मिछा उत्तात पाशका क्रांड इकानीय नामा

ছারা দেববানীর পরিভোব জনাইলেন। হে ভারত! ডিনি পুলা কলাদি প্রদান ও সংখ্যার প্রদর্শন ছারা প্রাপ্ত যৌবনা দেব-**যানীকে সম্ভুক্ত করাতে সেবয়ানীও** গান বাদ্যালাপ দারা নিয়ম ব্রভচারী কচেত্র পরিচার্য্যা করিতে লাগিলেন ৷ এই ৰূপ ত্রত আচরণ করিতে **করিতে পাঁচ** শুড বৎপর অতীত হইল। অনন্তর দানবেরা ইহা বুঝিতে পারিল একদা নিজ্জন ক্রম একাকী আচার্যোর গোরক্ষণ ত্রতে নির্ত্তি कहरक मिर्विश हुक्क्य जिल्ल श्रीक एकव वसकः সঞ্জীবনী বিদ্যারক্ষার নিমিত্তে কো**র্টে** উচ হাকে বধ করিল এবং উচ্চার শরীর খণ্ড **খণ্ড করিয়া বন্য শূগাল কুদ্ধুর** গণকে ভক্ষণ করিতেছিল। হে ভারত! তথন গো সকল অরক্ষিত হইয়া স্বীর নিবেশনে আসিয়া উপ-শ্বিত হইটেল দেবধানী কঢ়বাজীত তাহাদি-গকে দেখিয়া পিতার নিকটে গিয়া কহিলেন, হে তাত ! হে প্রভো ! আপনার অগ্নিহোত্তে আছতি প্ৰদক্ত হুইল এবং সূৰ্য্যও অন্তৰ্গত হইলেন, আর গো সকলও অরক্ষিত হইরা আগমন করিল, এগনও কচকে দেখিতে ছিনা, অতএব নিশ্চই বোধ হইতেছে, তিনি আহত বা মৃত হইয়াছেন: আমি সত্য কহিডেছি, কচ বাতীও কখনই প্রাণ ধারণ করিব না। শুক্র কহিলেন, এখনট্ তিনি মানিবেন, আমি মৃত কচকে জীবিত क्रिन, हैश विनिम्ना मञ्जीवनी विमा श्राटिश করতঃ কচকে আহ্বান করিলেন! আছার कर विमानिद्रण नुभीन कुकुत भागत नहीत করত আসিয়া উপস্থিত হুইলে **দেৰবানী কহিলেন, তোমার** এত বিলয় **क्ष्म इन्ज ? ंका উन्नद्र क**दिल्लन, **रह** जा-বিনি! আমি জাগমন কালে সমিৎ কুশা কভিডারে পরিআন্ত হইরা গোগণের সহি-ত এক বটরুক্ষ ছারা আন্তর করিলাম, এম ভ কালে **অস্থরে**রা আমাকে কেবিয়া জি-জ্ঞাসা করিল, কে ভূমি? আমি কহিল।ম, বুহস্পতির পুজ,আমার নাম কচ। ইহা বলি-ৰামাত্ৰ ভাষারা আমাকে ৰখ করত আমার শরীর খণ্ড খণ্ড করিয়া শৃগাল কুরুর গণ্ডে सक्त कतिएक दिला ऋरंब श्रुट्ट भेमन कतिल। হে ভৱে ! একণে মহাত্মা ভাগৰ কৰ্তৃক বি-ল্যাবলে আচুত হইবামাত্ৰ কোন একারে জীবন প্রাাথি পূৰ্বক তোমার নিকট স্থাগমন কবিলাম।

অনন্তর একদা পুল্পাহরণার্থ কচ দে-বাঘানী কর্ত্ত প্রেরিভ ছইয়া বনে পদন कृत्त्रन, এवং धाक्यूद्रत्रा मिथिया छ। हात्र শরীর চুর্ণ করিরা এককালে সমুদ্র জলে মি-ন<sup>ি</sup>দেখিতে পাইর। পিতার নিকট নিবেদন করেন, শুক্রও বিদ্যা ছারা ভাহবাম ক-রাতে কচ পুনর্বার আগমন পূর্বক দেব-यानीत मिक्टे यथान्य मधन्य ब्रुकाल नि-(बमन करबन । जुजीस्वात अञ्चरतता कठ-কে চুর্ণ করিয়া দক্ষ করত শুক্রাচার্যোর পানীর স্থরায় মিল্লিভ করিয়া দেয় এবং দেবঘানী পুনর্বার পিতার নিকটে গিয়া ক্রেন, পিডঃ! আমি পুস্পাহরণার্থ কচকে প্রেরণ ক্রিয়াছিলাম, কিন্তু এবারও উঁহোর আগমন দেখিতেছিনা, অতএব তিনি মৃত বা আহত মুইয়া থাকিবেন, আমি সভ্য ক-হিতেছি কচ বাতীত জীবন ত্যাগ করিব। শুক্র কহিলেন, হে পুলি ! বুহুম্পতির সন্তান কচ এবার প্রেডগতি প্রাপ্ত ব্ইয়াছেন, **আ**মি বারম্বার বিদ্যাবলে জীবিত করি, আর অ্সু-রেরা পুনর্বার ভাঁছাকে নটা করে, অভএব আর আমি কি করিব। হে দেবঘানি! ভুমি শোক করিও না, তোমার সদুশ ব্যক্তি ম-ব্যোর প্রতি এরপ শোক করে না, বেহেডু उन्मन, हेस महिल प्रत्ला भन, चार्चे वस्त्र. অশ্বিনী কুমার, ও অস্কুর গণ, ইইারা সঞ্চ-শেই তোমার প্রভাবকে সমকার করেন। কা অশকা জীবিত হ্ইয়াছেন বেছেজু জী-বিত হইলেই অমনি অন্তরেরা আদিরাঃপু-नर्वाह छ। इति वध करता । स्मवतानी अवस्थि ार, वृक्षणम **अवित्र**ं श्रवि**में श्रव विश्वासर,** এবং তপোনিধি বৃহস্পতি খাঁহার পিছা, বিনি খবির পুঞা, ও পৌল ভাষার প্রতি क्रमडे के स्थाक श्रुर्तक क्रमान क्रिक् न । टिं उच्चनती, डिनि ड्यापन, क्रेंबर সকল কল্মের পারদশী, সেত্রব আমিও णानाकारत (महे कराइत शहर त्रामन कतित,

হেতাত। কচের হল আমার অভ্যন্ত বির।
বৈশালারন করিলেন, আমন্তর মহর্ষি তাজ
কেববানী কর্তৃক উল্লেখিত ক্ট্রা ক্রোহে
কচকে আমার করতঃ করিলেন, নিশার
অমরেরা আমার প্রতি হেব করিলেহে,রারয়র আমার শিবাকে বিনাল করিতেছে।
বোধ হয় ভয়ানক অমুরেরা বাজ্বণ খুনা
করিবার মানসে আমার প্রতি বাভিনার
করিতেছে। এখনিই এই পাপের অন্ত
হইবে, ব্রক্তিতা জনিত পাপ ইল্লকেও
দল্ল করিতে সমর্থ হয়। ইছা শুনিরা বিদ্যা
ভারা সমাহত কচ গুলুর ভারে জঠর হইতে
অপেল অপে উত্তর প্রদান করিলেন।

বৈশম্পায়ন কহিলেন,স্বীর জঠর হইতে কচের বাক্য আবণ করিয়া শুক্র কহিলেন,ক্রে विथा! कृषि कि श्रकारत कामात केमरत গিয়া অবস্থিতি করিতেছ্ বল। কচ কহি-লেন, তোমার প্রসাদে স্মৃতি আমাকে ক খন পরিত্যাগ করে না, যে যে ঘটনা হইয়: পিরাছে, আমার দকলই স্থরণ হইতেছে, 'লার আমার তপভারও কয় হয় নাই, তা-शाउदे यामि धरे स्मात स्क्रम मह कतिए পারিতেছি : **অস্তরেরা আমাকে ব্য কর**তঃ দক্ষ ও চূর্ণ করিয়া তোমার পানীয় স্থরাতে মিজিত করিলা দিয়াছিল। হে বিপ্র ! আ-পৰি বৰ্তমানে আছুৱী মায়া কি প্ৰকারে বান্ধী নায়াকে অতিক্রম করিতে শুক্র ় কহিলেন,: দেবাঘারি চে বংদে ' খদ্য কি প্রকারে তোমার প্রিয়ক্:-হা সাধন করিব বলা এক্ষণে আমার প্রাণ বিয়োগ ব্যতীত করের প্রাণ রক্ষা হয় না যুখন কচ আমার উদরক মইয়াছেন,তথন আমার কুক্ষি বিদারণ ব্যেতীত কি আকারে জিনি বহিন্দত চইবেন। দেববানী কহিলেন, এ-ক্ষণে অগ্নি ক্ষণ ছুইটি জোক আমাকে দশ্ধ করিতে দার্গিদ , কচের দাশ আর আ भनात वर्ष। करहन विवादन क्यामात क्याम नाई जबर काश्रमात्र अभवारक कि टाकारत है वा अभिने भारत कड़िया अध्यक कहिएलन, (क् बुक्काक भारतक कहा । त्राहक रमवः বালী তেমাকে পরম ভক্ত বলিয়া শীকার কলে প্ৰথম ভূমি নিক মণ প্ৰথম কৰ

करी देख कृषि कामाटक भग धरे मञ्जी-वनी विना पनि कतिए रहेन। खाना ৰাতীত অন্য আর কোন বাজি আনার উ-দর হইতে জীবন প্রাধি পূর্বক বহিগত হইতে পারে না, অভএব ভোষাকে বিদ্যা প্রদান করি। হে তাত! আমার নিকটে বিদ্যা প্ৰাপ্তি পূৰ্বক পুত্ৰভাবে নিক্চান্ত হ-इंबा পরে विशायण आबारक পুনর্জীবিত করিবে, এই ধর্ম প্রতিপালন করিও। বৈ-माणासन कहितान, अनखत कठ विमानिता ক্ষণমাত্রে শুরু কুক্ষি ভেদ করিয়া পৌর্ণমা-দীর **চন্দের নাম নিষ্কান্ত হ**ইয়া পতিত ব্ৰহ্ম তেজোরাশি মৃত শুক্রাচার্যাকে দে-থিয়া দিক্ষ বিদ্যাভারা তাঁহাকে পুনজীবিত कृत्र७ छेठा हेता अधिवासन शूर्वक कहित्सन, ८१ शहरता ! व्यापनात नगात्र विनि त्याजवरत অমৃত শিঞ্চন করেন,ভাঁহাকেই আমি পিতা ও মাতা বলিয়া জানি, অভএব সেই গঞ্জর ক্ত উপকার সার্গ করিয়া কেই যেন তাঁ-হার জোহাচরণ না করে। অনুত্রম স-্তার দাতা, দকল নিধির নিধি, অর্চনীয় ্ৰুক্তে যে প্ৰবিদা ব্যক্তি আদর না করে, সে তুরাত্মা ইছ লোকে অপ্রতিষ্ঠ হ-ইয়া পরত্র পাপ লোকে গমন করে। বৈ-শম্পায়ৰ কহিলেন, শ্বিদান্মহাস্কুভাব শুক্র, স্থাপান দারা বঞ্চিত হইয়া সংজ্ঞানাশ হ-ওরাতে, এবং পূর্বে স্থরাপানে মুদ্ধ ও তৎসহ অভিৰূপ কচকে উদরস্থ করাতে স-ক্রোধে গাত্রোপান করতঃ বিপ্রগণের হিড সাধনেচ্ছার সুরাপান প্রতি সঞ্জাতজোধে करिएनन, अमा अवधि हेर्दलाएक रव कान ব্রাহ্মণ মোহ বশত ছুরাপান করিবে,সে অ ধর্মী, বন্ধহা ও ইহু পরত অতি গহিত হ-हेरव। नर्कालारक ज्यामि এই विश्व धर्म-র সীমা স্থাপন করিলাম, সকল লোক ও माम् बाष्मननम् हेहा ध्यतमः कद्भनः। সহামুভাব তপোনিধি উপনা ইহা বলিয়া रेमन विश्वप्र वृक्ति मासदश्वरक आस्तान कडि-डा करिरलन, जरह दूर्ध मानवनन ! आमात जूना अज़ार महाशा अध्या निक के मही-वनी विका झाल रहे हो आजात निक्छ वान করিবেন, এইলার বালারা ভার্মণ বিরত হইলো দানবের। বিস্ময়াবিই চিত্তে স্থানিবেশ নে গমন করিল এবং কচ পূর্ণ সহজ্ঞ বং দর তং সমীপে ধাকিয়া মথাবঃ অনুক্তা প্রাণ্ডি পূর্বক তিদশালয় গমনে মানস করিবেল।

> হিতৈষিণী সভার বিতীয় দায়ংসরিক

আরস্কালীন প্রতিজ্যোদ।

হে করণা নিধান। ভোষার করুণার কথা কি কহিব। কোখান বা আবেন করিব, कि श्रकारत है वा रमय कतिन। यह निमाल বিশ্ব মধ্যে যে কোন দিকে নেবপাত করি সেই দিকেই তোমার করণার লাজ্জ লামান দেখিতে পাই। আমাদিগের অন্তরে 👫 একবার দৃষ্টিপাত করি ভবে ধর্ম্ম প্রবৃত্তি নামে তোমার করুণার কি এক ष्मशुद्ध डिश्म मर्थन कति, अहे डिश्म-राहि কি মধুর কি ভৃত্তিকর কতইবা স্থিদ কর ; হে পরমায়ান্! এই ধর্ম প্রান্তি ৰূপ তো-মার করুণার উৎস প্রদান পূর্বেক আমা-দিগকে কি পর্যান্ত গোরবশালী করিয়াছ, কতই বা স্থাবের অধিকারী করিয়াছ, এই প্রবৃত্তি চরিতার্থ হেতু আমর। এই হিতৈ বিণী সভা সংখ্যপন ক্রিয়াছি, ইহার **প্রতি যেন আমাদিগের অবিচলিত শ্রন্ধা**ও যত্ন পাকে। হে প্রভো! ভোমার প্রসাদে নানা প্রকার বিশ্ব অভিযোগ যে আমরা পুর্বাক সভার কার্য: এপর্যান্ত সন:খা করিয়া আসিতেছি তক্ষন্য আমরা সর্ভজ করয়ে প্রীতি পূর্বাক নমস্কার করিতেছি, ভূমি তাং: গ্রহণ কর! হে পরমেশ্রে: অদ্য আমর: **ৰে জনা** একত্ৰিত হইবাছি তাহা তোমার **रबर पूर्व अक्**लकत पूत्र मर्नान ना कतिश कि कार्य व्यक्तरमं नमाश कवित, धरु। এক নিমেবের নিমিত্তে তোমার উৎসাহ अनन आंगन्सकत वस्य व्यवद्याकम् न। कति-লে যখন সকল ভমসারত হইয়া যায়-সক-লই নীরস বোধ হয়, তথন তোমাকে হন-महाकारण विज्ञासमान ना . (पश्चिम्रा, कि श्र কারে আমরা অদাকার এই গুরুতর কার্যা অকাতরে প্রকৃত্তিতি সম্পাদন করিব।

হে হানদেখার: তোমার মুখ চন্দ্রিমা সন্দশনি না করিলে ইন কপে আমাদিগের উৎসাহ রুদ্ধি হাইবে, কি কপেই বা আমাদিগের বুদ্ধির স্থিরতা থাকিবেক। অতএব হে
পিতং ' তোমাকে যেন আমরা প্রত্যেক
বাক্যে, প্রত্যেক চিন্তায়, প্রত্যেক নিশাসে,
আমাদিগের অন্তর মধ্যে সাক্ষাইকার করিতে কুলিয়া না যাই, তুমি যে কর্মাত্র বিদ্যানা আছ, তুমি যে এই সভার সভাপতি কপে উপবেশন করিয়াছ, তাই যেন
আমরা কোন মতে বিশ্বত না হই, হে সভাপতে ' এই আমাদিগের প্রার্থনা।

#### मल। जङ्गावीम रहाका।

(र श्रुनप्रशटः । कि व्यकाद्भः (य भा-মাদিনের এই সভার গুরুতর কীর্য্য আ-মরা সমাধা করিক, ভাহা ভাবিয়া অত্যন্ত ব্যাকৃলিত হইয়াছ, বখন বছ আয়াস ও বর বাতীত একটি সামান। কুসংস্কার বি-নক হয়না, তখন জুই চারি বাজির উ-भारत कि अकारत आधानिकात जाजूनन উলেদিদের বাল্যাবস্থায় দৃত্তর বন্ধামূল ন'না বিধ কুসংস্কার ও কুঅভ্যাস পরিভ্যাগ कदिर्दर, कि क्षकारत है वा नीर्घकान क्षर्रामण জনসমাজের বিবিধ প্রকার কুপ্রখা দূরীকৃত रुष्ट्रेटन, दक्तमरनाई दा वक्त विषय्नक व्यात्रस्त्र अक्षानाञ्चकात्र नके इहेरत, **७ मर्गिन** अ-কার জ্ঞান জ্যোতিঃ লোক সমা**লে প্রকাশ** পাইবে, কি ৰূপেইবা রিপুদিগকে লোকে দাম**ঞ্জব্বে প্**রিচালন করিবে। হে পিছে:! আমাদিপের ধনশালী, বিদ্যাবান্ ও ত্রাক্ষধ-त्यां विश्वी आकृतन, वाहामिरशब महाब्रका । ७ সম্পত্তির উপর এ সভার কার্যা সমাধা হ-ইবার ভার বিশেবৰূপে নির্ভর করে, তাঁ-হারা আপনার প্রদক্ত বি**শুদ্ধ সুখ্পদা**রিনী পর্যা প্রাকৃত্তি ও দরা বৃত্তি সাধলে **বেৰণ** বি-মুখ তাহা স্মরণ করিরা জারো বাাকুলিভ रहेट्डिक । (कह विवस सर्कात-मान वर्षात गमल कामरे शक इस्त्रिएक्न, क्रिन् वो क् धी भारताम धारमादम आहुः त्रात कतिरकः

८६म, ८कव ८कर रा साम्राजकान रक्षण कुनः कात भारत वह हरेशा बहुत बालन का-भन **मजीर संस्कृता कर्या साधान लहा है है** है दरेरण्डम्य दिव सहस्र । विकासिटयत **এতজপ अभिकेतन अभरतारवाना उ अवहरू** जात नवा रहेए शह्याचाम भूकक डाहा-हा (यन जानमानिस्त्रज्ञ निर्देशभिति कर्सनः कर्त्य नीख नटक क्रांत्रम, हेकार आधानि-গের একার ইচ্ছা—ইহাই আমাদিলের আ-ন্তরিক **প্রতিধনা। ক্ করুলাকর** প**র্যেশ**া আমরা অদ্য যে সকল বিষয়ের আলোচনা করিলাম ভাষা যেন **আমাদিগের স্মার্ণ** পথ **ক্টতে তিরোহিত না হয়, ভাছাতে যেন** আমাদিপের আন্থাওযদ্ধ থাকে, ভাহাসা-थन जना एवं रिकान क्ष्रांच स्ट्रेरन जोड़ो रचन क्रिश (वीध मा कति ; क्लिस्ट्रे वी क्रिति, ভোগার প্রিয় কার্যা সাধনে যদি ক্লেশ বেং**ধ** করিব, ডবে আর কি কার্যা নাগনে আন-मिन्छ कड़ेव ? (ह क्ष:(फा) । (य' **(कान ज**ब-স্থায় থাকি, প্রতি নিয়ত বেন ধর্ম প্রারুডি নাধনে ডোমার পীৰুষময় প্রীতিরস পান कत्रदेश कामामिटशेव केका बादक, म्यायता যেন এই পরম পরিশুক্ষ পবিত্র আনন্দ উ-भट्डार्टश *रकानम*रू अवटर्ना ना **क्रिः** ह বিশ্বপালক জগৎপতে এই আমাদিগের প্রার্থনা—এই আমাদিগের যাচ্ঞা ়

কালিকাতা ) প্রাবণ ১৭৭৯ শক ) প্রীকানাইলাল পাইন সম্পাদক।

#### বিভ্রাপন

বসভাবান্ত্ৰাদক সমাজের বিজের পুত্ক
এ সভার কার্যালয়ে বিজেরার্থ প্রস্তুত আছে
ভাহার মুলা নিম্নপর্ণ।
বৃহৎকথা—প্রথম জাগ
চত্মকিবারা ও অপুর্কী রাজবল্প
বিবয়ক প্রভাব

क्ष्म कर प्रवृत्यामिती निक्का, उसिकाका नगरव त्यांकोरकांतिक प्रकृतिकाती नकांत्र कीटीता रूपे एक कार्कारक व्यक्तिकाती ने वृत्य कुरा कि विक ्रामित न्यांका



্ত। ব্যঞ্জামদমগ্রন্থানীস্থাম্য শ্রেক্তমাদী ভাদিদংসর্ক্ষমপ্তক্ষণ। তদেশনিত্যং জ্ঞানমনত শিবংশুভ ক্ষমিবেলত নিত্যালিটী। সন্ধান্য শিক্ষাক্ষানিয়ন্ত্র, সাক্ষাপ্রদাক্ষাক্ষান্ত্রন্ত বৃদ্ধানি শ্রেকিন্তি একস্যত ইন্যাবেশিসন্ধান্য ক্রিকিটনি ক্রিকিটি ক্রিকিটনি ক্রিকিটনি ক্রিকিট

## ধর্ম শিক।।

পাঠবেস্থার বালক গণকে যেমন অপরা পর বিষয়ের শিক্ষা প্রদান করা আবিশাক, দেইরপ ধর্ম বিষয়েরও শিক্ষা দেওয়া নি-ভাশ্ত কণ্ডবা। শিক্ষা বাভিরেকে মনুযা কোন বিষয়েরই প্রকৃত জ্ঞান লাভ করিতে পারে 🚣। অনেকের একপ এম আছে, যে মন্ত্রীর ধর্মজ্ঞান নিতান্ত উপদেশ সা-গেক্ষ নতে, উহা প্রায় প্রত্যেকেরি প্রকৃতি ও প্রবৃত্তি অনুসারে আপনা হইতে উৎ-পন্ন হয়,শৈশবাৰস্থায় মন্ত্ৰয়কে অন্যান্য বি-ষয়ক উপদেশ প্রদান না করিলে সে যেমন তাহাতে সম্পৰ্কণ অনভিজ্ঞ থাকে ধৰ্ম বিষয়ে সেৰূপ থাকে না। কিন্তু আমরা প্রত্যক্ষ দেখিতেছি, যে শিক্ষার অভাবে অ म्क विन्यावान् मसूचा छेश्क्रके कारण धरर्भत মর্শ্ম অবগত হইতে পারেন নাই। শিক্ষার যে কি পর্যান্ত শক্তি তাহা বর্ণনের অভীত, मसुरगात अकुछि चालाछन। कविता विध-কণ প্রতীত হয়, বে মমুব্য বালাবস্থায় বে বিষয়ক শিক্ষা লাভ করে, তাহাতেই ভাহার বিশেষ বৃদ্ধতি ক্ষে। ছার অপরাপর জ্ঞান শিকার সহিত বালক গণকে ধর্ম শিক্ষা প্রদান না করিলে যে नक्न विवेध उन्नक्ष्य अनिक्षे उन्न देन, जाहा धेव्रत वाक कता ख्याधा मत्र, जातक अतिक अप्रसाद कार। किंद्र किंद्र अप ग्रा বিভার ক্রমে ব্যক্ত করিয়াছেন'। বিনা উপদেশে মনুষ্য ধর্মন কোন বিষয়ক হল। নই লাভ করিতে পারে না এবং কোন বি-ষয়েই স্থাপান হইতে পারে না, তখন উপদেশ বাতিরেকে যে মানব জালি নি-গুঢ় ধর্ম তিত্ত্বে মর্মাবধারণে দক্ষম হইবে ভাহার সম্ভাবনা কি? মনেকের নিক্চ হইতে এ প্রকার আপত্তি প্রবণ করে যায় যে. পাঠাবস্থায় বালক ধর্মন অন্যান্য প্র কার জ্ঞান শিক্ষা করে তংকালে ভাহাকে পরমার্থ তিত্ত্বের উপদেশ করিলে ভাহা তে ন কার্য্যেরই হয় না, কিন্তু ইহা স্থাপান প্রক ধর্ম উপদেশ করিতে গারিলে ভাহা বিশেষ ফল্যায়ক হইয়া ধারেন।

পঠদ্দশার বালকের মন ঘণন নানা প্র কার উপদেশ ও শিক্ষা দ্বারা নানা বিষয়ে সংকারাপন্ন ছইতে মার্য্য করে, শিক্ষা গণ্যদি ওংকালে কোন সময় নিদ্ধিক করিয়া তাছাদিগকে প্রমার্থ জ্ঞানের উপ-দেশ করেন, তাহা ছইলে সেই দকল ধর্মো পদেশ তাছাদিগের হৃদয়ে বন্ধমূল ছক্ত্যা বদে এবং তাছা বালকহৃদয়ে এমন দ্রুণিভূত ছইয়া যায়, যে ক্মিন্ কালে সে মন্দু উ পদিষ্ট ধর্মাতন্ত্ব তাছাদিগের মন ছইতে অ

<sup>\*</sup> Dick. Abererombes, Morn. &:

প্রনীত হয় না এবং তাহা ক্রমে অত্যন্ত ইইয়া বিশেষ বিক্রমণালী হইতে থাকে। ঐ
সকল ধর্ম শাসন তাহাদিগের মনে বিনা
আয়াগে স্বতই উদয় হয় এবং তাহারা জনায়াগে ঐ সমস্ত ধর্মা প্রতিপালন জনিত
ক্রে স্থা হইতে পারে।

বালক গণকে যেমন অশেব প্রকার বি-জান শান্তের শিক্ষা প্রদান করা আবশুক, সেই ৰূপ ভংগম্ভিলাহারে বিজ্ঞানবান্ অ-নাদি প্রান্থেরও ভরান প্রদান করা উচিত। বিদ্যালনিই বালকগণ যে সময় জ্যোতি-বিরুদ্ধা শিক্ষা করতে স্থায়ী, চক্র, এই, নক্ষ-ক্রাদি আকাশস্থ অগণ্য পদার্থের স্থিতি গতি ও শারুতির বিষয় অবগত হইতে আরম্ভ করে, শিক্ষকগণ দদি সেই সময় তাহা-भिश्तक अभक्त भहान अमार्थंत स्रुक्ति कर्डा এবং উল্লেখ্যের স্থিতি গতি ও আরুতির বিধান কভা অধনীশহের পরিচয় আদান করেন, তাহা হইলে বালক গণ অনায়াসে স্থানেৰ জ্ঞান শক্তি ও কৰণার বি**ষয় জ্ঞাত এইটে সমর্থ হয়। জেনভিব্রিদা। শিক্ষা** করণ কালে ছ'ত্র লগ বর্থন জানিতে পারে ा अने अदा ७ जुन एवा मधुपान कीव अक রুক্ষ, প্রবৃত্ত নদ, নদী, হদ, সমুদ্র ও বায় বাষ্পাদির সভিত অনবরত পুনা পথে জ-মণ করিয়া তিমশত প্রথবটি দিন ছয় খণ্টায় একবার স্থাকে প্রদক্ষিণ করিতেছে এবং সূৰ্য্য হ'তে প্ৰায় নয় কোটি পঞ্চাশৎ লক্ষ ক্রোশ দুরে থাকিয়। ঐ স্থর্যোর আলোক ও উত্তাপ প্রাপ্ত হুইতেছে, স্থ্য পৃথিবীকে অহ্নিশ আক্ষণ করিতেছে অথচ পুথি <u>ই স্বীর অনিবৈচনীয় শক্তি সহকারে স্থায়</u> হইতে সতত্ই দুরে স্থিতি করি**তেছে**, এবং যে সময় বালক গণ জ্যোতিখের অ-না'না ভাত্র সকল অবগত হয়, শিক্ষক যদি দেই সময় তাহাদিগবেদ বিশেষ **রূপে অব**-গত করেন যে ক্রম্যা হইতে পৃথিবী যত-দুরে ফিভি করিয়া যে নিয়মে ভা**হাকে প্র**-দক্ষিণ করিতেছে এবং স্থার পৃথিবীকে যে নিয়মে আকর্ষণ করিতেছেও যে পরিমা-ণে আলোক ও উত্তাপ প্রদান করিতেছে. ভাহার কিঞ্ছিলাত্র বাতিক্রম ঘটিলে স্থাটির

সংহার দশা উপস্থিত হয়, ক্ষিত্র জগদীখরের করুণা প্রসাধাৎ তাহা কব্রিদ্কালে ঘটিতে পারে না, তাহা হইলে ছাতের সনে সহজেই অগদীশরের করুণার উদর হয় এবং শত ই মন হইতে ঈশবের প্রতি ভতির ধারা উ-থিত হইতে থাকে। শারীর বিধান ও শা-ব্ৰীর স্থান বিদ্যা **শিক্ষার সময় ছাত্রকৈ কে**-বল শরীবের কৌশল মাত্র উপদেশ না ক-রিয়া তথ্যমুদায় কৌশলের কর্ত্তা জগদী-খারের জ্ঞান শক্তি ও করুণার পরিচয় প্রদান ক্রিলে অবশ্বই ছাত্রের মনে ঈশবের মহান ভাৰ সকল আবিভূত হইতে থাকে। কোন भिक्तक यथन ऋके भार्रार्थत मः स्थान वि-যোগ ও তাহাদিগের পরস্পর সম্বন্ধ নাদ্রভ ও বৈলক্ষণ্যাদি বিষয়ক তত্ত্ব প্রদর্শন করিয়া ভাত্র গণকে রসায়ন বিদ্যার জ্ঞান প্রদান করেন, তংকালে শদি তিনি রসায়ন বিদ্যা সম্ভাষ্টির উল্লিখিত প্রকার নিয়মাদি জনিত কল্যাণের প্রসঞ্জ করিয়া পরমেশ্বরের গুণ গান করেন, তাহা হইলে তৎক্ষণাৎ ছাত্র-निर्तात क्रम्राम छे०कृष्ट शहरार्थ तम मक्षा-রিত হইতে আরম্ভ করে। এই 🚁পে 🙉 ত্যেক পদার্থের তত্ত্ব অবগত হইষীর সময় বালক গণ যদি এ পদার্থের স্থান্ট কর্ত্ত। ও कोশलের কারণ জগদীশবের জ্ঞান শক্তির উপদেশ পায়, ভাহা হইলে ভাহারা অনা-য়াদে ঈশরের প্রেম রাজ্যে প্রবেশ করিতে সমর্থ হয় একং অভ্যাস দ্বারা ক্রমে তাহা-দিগের পরমার্থ র**সে অধিকার জন্মে**।

আমাদিগের মনের এই ৰূপ ধর্মা, যে
আমরা যদি উপযুগপরি কোন ছাই বিষদ্ধ
শ্রেবণ দর্শন বা স্পর্শ করি, তাহা ছইলে
পুনর্বার ঐ প্রুত দৃষ্ট বা স্পৃষ্ট বিষরের
মধ্যে একের প্রত্যক্ষ ছারা অপর বিষয়ও
আপনা ছইতে মনো মধ্যে উদয় হয়। আমরা প্রত্যেক শীত ঋতুতে ক্রমাণত যে সকল পূপা শোভা সন্দর্শন বা কলের রস
আভাদন করি, শীতকাল উপস্থিত ছইলে
ঐ কল পুপাদি শুতই আমাদিগের মনে
আবিয়া উদয় হয়, অথবা অন্য কোন সময়
ঐ পুলা কি কল প্রত্যক্ষ করিলেও শীতকাশের স্বারেক শাব সামে

অমের৷ যদি ক্রমাগত কোন সমুব্যের কোন चान विस्मय वा अवस् विस्मय मन्मर्भन कति, जाहा इहेटल थे वाक्तिक स्था कान স্থানে কি অন্য কোন অবস্থায় পুনর্বার ममार्गन कतिला छ छहात शूर्य हान ७ शू-व्यावन्द्रा व्यामानिरशत मत्म व्यानिया छन्य হইতে থাকে, অধবা পুরেরাক্ত স্কান বি-শেষ ও অবস্থা বিশেষ প্রত্যক্ষ করিলেও उरक्षा थे मनुषातक आत्र इस, अभितः একবার যদি কোন সাগর তীরে কোন दाक्तिक मन्दर्भन कति, डाठा वर्षेण श्रून-खात के वाक्रित नम्मर्गन बाता व्यामामिरणत দাগর তীর স্মরণ হয়, অথবা আমরা পুন-ব্যার কোন সময় সেই সমুদ্র তীরে উপ-নীত হইলে, ঐ মনুষ্যকেও স্মরণ করি অর্থাণ অব্যবহিত পূর্ব্বাপর কোন ছুই বি-ষয় একবার আমাদিগের মনে অভাত হ-ইয়া গেলে ভয়াধ্যে এক বিষয়ের প্রভাক দ্বারা বিষয়াস্তরেরও স্থারণ হওয়া আমাদি-থের স্থভার। অতথ্য বিদ্যা শিক্ষার অ-বস্থার যে সকল পদার্থ ডম্ব অবগত হইতে इग्र, हाज शनरक स्मारे मकल उन्न विमयक জ্ঞান উপদেশ করিবার সময় জ্ঞানবান আ-চাৰ্য। যদি ঐ প্ৰত্যেক পদাৰ্থ তত্ত্ব উপলক্ষ করিয়া ছাত্রদিগকে জগদীশ্বরের জ্ঞান শক্তি ও করুণার শিক্ষা প্রদান করেন, ভাষা হই-লে তাহাদিগের এমনি একটি অপূর্বে অভাা-শ জবিয়া যায়, যে তাহারা যে সময় জোা-তিব রমায়ন প্রভৃতি কোন প্রকার বিজ্ঞান শান্ত্রের সমালোচন। করে তথনি তদস্তর্গত পদার্থ তত্ত্বের মধ্যে জগদীশ্বরের অপার ক-ৰুণা অনস্ক শক্তিও অগীম জ্ঞান প্ৰত্যক্ষ ক-রিয়া তাঁহার প্রতি ভক্তিও কৃতজ্ঞতা রদে আর্দ্র। জগদীখরের করণা প্রতাক না করিয়া ভাহারা ব্রহ্মাণ্ডান্তর্গত কোন কৌশ-লেরই আলোচনা করিতে পারে না। মনু-বা অভাবের দাস, যে বিষয় অভাবে करत , তाहात्र है बनीकुछ हत , अन्तान राजिद्धादक मानव कार्न विचाहाट है निक् হইতে পারে না। অভাস ভারা **স**তি इश्मीया विषय समाया रहेता छटे अवर क-हिन विवश्च अवक रहा, सक्षात्मत्र त्व कछ-

দুর পর্যাত্ত শক্তি তাহা বলিয়া শেব করা যায় না। অভাগোভাবে মনুবেরে থারতি প্রয়ন্ত প্রছন পাকে এবং অভ্যাস প্রভাবে মানব এক সময় প্রকৃতিকে অতিক্রম করি তেও সমর্থ হয়। মনুখা বালাবিভা হইতে। যদি ক্রনাগত ধর্মা শিক্ষা প্রাপ্ত হয় এবং ধ-র্মালোচনা অভাগে করে, তলে ভ্টুলে ভাল হার ধর্মোতে যদেশ অস্কা ও অনুরাধ করে অনভ্যাদে ও ঘশিকায় কখনই ভাদৃশ শ্ৰদ্ধ: ও অফুরাগ উৎপন্ন হইতে পারে না। বি-শেষতঃ বালক ফ্ৰণ রদাল ১০পিওবং; বালাবিস্থার উপদেশ সকল মনেতে যেনন গাঢ় রূপে অক্সিত হয়, যৌবনাদির শিক্ষা কর্মন সেকপ হয় না, বাল্য সংক্ষার কেনে करमङ् मन इङ्ख्य नीख्य भूत इस ना, मसुयः বালক কালে ধে সকল বিষয় শিক্ষা করে এবং যে সমস্ত উপদেশ প্রাপ্ত হয়, তাহা মনো মধ্যে এমন বছং মূল হইয়া বদে, যে প্রাপ্ত বয়দে ভাহা সহস্র প্রকার উপায় ছারাও উন্লিত করা সহজ হয় না। অত-এব বলাবিস্থায় মনুযাকে অপরাপর জ্ঞান শিক্ষা প্রদান করিবার সময় অংশে অংশে ধর্মোপদেশ করা যে নিভান্ত কর্ত্তরা তাহ তে অরে সম্দেদ নাই। জ্ঞান শিক্ষার সভে বালক গণকে ক্রামে ক্রমে ধর্ম্ম শিক্ষা প্রদান করিলে যে কি প্রায় উপকার দর্শে, তাহা বর্ণনের অতীত :

কহা যথাপ বটে যে প্রধান স্থায় হালন গণ থকার নিপুচ হাত্ব সকল স্থাক ক্রেপ্রের নিপুচ হাত্ব সকল স্থাক ক্রেপ্রের গনা করিতে পালে না, কিন্তু অংশ বয়ক যুবা দিগকে বিভিড বিগানে ধর্মো। পদেশ করিলে, ভাহা ক্রদাপি বিকল হা না। শিকাবস্থায় বালকের মনে অনানা জ্ঞানের বীল বেমন অম্পে অম্পে বপন করিতে হয়, ধর্ম বীজও সেইকপ ক্রমেতে বপন করিলে তাহা অব্যাই অস্কুরিত হয়, কি জ্ঞান কি ধর্ম এক কালে কোন বিষয়েরই শিথর দেশে আরেছে করিতে পারা বায় না, সকলেরই শোপান আছে, যতু পুরুক্ত তাহা অব্যাহন না করিলে মনুবা ক্ খনই কোন বিষয়ের চুড়াক্ত হইতে সংখ্যার না। আচার্যা ক্রি, শিবাকে এক

কালে গশ্যের নিগ্রু তত্ত্ব সকল উপদেশ না করিয়া ক্রমে ক্রমে তাহার মনে ধর্মের ভাব প্রতিউ করেন, তাহা হইলে শিষা ক-খন তাহা এচাও ধারণ করিতে অক্স হর ন', শক্তির অতীত হইলেই তাহা লোকের অসাধা হয়। বালক যদি স্থীয় ধীশক্তির প-রিমাণাকুষায়ী বর্লোপদেশ প্রাপ্ত হয়, তাহা ছইলে ভাবশাই ভাষা অধিকার করিতে পারে। ধর্ম দখন শিক্ষণায় বিষয়, তথন যে खेहात चात्रराष्ट्रत कल ना**रे धमन** कथनरे ह-ইতে পারে না: অতএক ঐ আরম্ভ ভলে ধর্ম শিক্ষার সূত্রপাত করিলে অবশুই ভাহা স্থাসিক হইয়া উঠে। কেবল ধর্ম কেন? বিহিত বিধানে শিকা প্রদান করিতে না পা-विटल (कान दिवत है भकत इस ना। निकात দেয়েই অনেক সময় অনেক স্থলে ধর্মো-পদেশ বিফল হয়। ধর্ম অতি মধুর পদার্থ, কিন্তু কেবল ধর্মের নাম ভাবণে লোকে কখন ধ্যোর মন্ম অবগত হইতে পারে না; কোন ব্যক্তিকে উহার তাৎপর্যাবগত করা-টতে হুটলে বিশেষ করিয়া **উহার** পরিচ্য দেবয়া উচিত। জগদীশবকে ভক্তি করা উচিত, পিলা মালাকে প্রদান করা কর্তব্য ও শর্বাদা বলার সভা গ্রহায়ন করিয়া কার্য। করা বিংবর, ইডাাদি খুল উপদেশ ছারা যদিও লা ধর্মেতে মতি হয়, কিন্তু ভাহার খাশকৈ অনুষায়ী শ্রীতি ও कें। शामक **केंगा**तत थन कीर्डन. পিতা মাভার ক্ষেছ বর্ণন ও ন্যায় স-োর ৩৭ ব্যাখ্যা করিলে অবশাই ধর্মেতে অ:ত। হয়। যে ব্যক্তি সহক্রবার **ঈশ্বরের** নাম শ্রুবণ ক্রিলে ভাঁহাতে ভক্তি করিতে র্ভাহয় না, সেই ব্যক্তির নিকট একবার বলি বিশেষ কবিয়া প্রমেশবের মহিমা কৈওঁন করা যায় তাহ। হ**ইলে তৎক্ষণাৎ তা**-যার মনে ভঞ্জি রুসের সঞ্চা**র হইতে থাকে**: সলেভ নাই। অতএব শিক্ষক গণকৈ সৰ্বাদা এইবাপ সাব্ধান হইয়া **ধর্মোপ্রদেশ করা** উচিত যে, উপদিস্ট ব্যক্তি ঠাছার উপদেশ বোধগমা করিতে পারিয়া ভাহার ফল লাভে यदिकारी स्ट्रेट नगर्थ रहा थ

TOPEN STATE OF THE CONTRACT OF THE SECOND STATE OF THE SECOND STAT

#### আত্মোৎকর বিধান।

হে জীব! জার কেন? মানব নামের যথার্থ গৌরব বিস্মৃত হইয়া আর কৃতকাল अनदशन भग्रत भग्नान ७ छः स्थ समिनी ব্বেজ্য পিশাটীর, কুহক নিজার আক্ষম থা-किरत? वाशन डेमाइ चक्प ७ शहीयमी প্রকৃতির প্রতি অব্যেকা করিয়া আর ক তকাল বালা লীলায় প্রণয় বন্ধন করিবে। একবার স্থির চিত্তে চিস্থা করিয়া দেখ, বিশ্ব পিতা প্রমেশ্ব তোমাকে কিৰপ গুরুত্র ভার বহনে সমর্থ করিয়া এই ধরাধামের নিবাসী করিয়াছেন। জ্ঞান নয়**নে** নিরীক্ষণ করিলে অবশ্রুই দেখিতে পাইবে, এই বি-শাল জগভীতলৈ এমন মন্তবা নাই, বাহার চিত্তকেতে মহত্তের বীজ নিহিত হয় নাই ও উত্তরে ভর উৎকর্ষ লাভে कात नारे। अममाध्वनिनी कुप वृक्ति हात! আমরা নতুষাকে কল বলিয়া মনে করি वर्षे, किन्नु लाइ। नरह : विरवहना कविश দেখিলে, যে কোন অবস্থায় পতিত হউকন: কেন্মথ্য মাত্রই মহত্র লাভের অধিকারী! যে কোন দেশে উৎপন্ন ও যেরূপ ছউকনা (कम, महाबा व्यवश्राहे समुद्रवात समुहित छै-দার হুরূপ পাইবে সন্দেহ কি? বিবিধ আড়েম্ব বিষয়ে আমর। প্রস্পুর বিস্তর বিভিন্ন ৰূপে প্রভীয়মান হই বটে. কিন্ত সামাদিগের প্রকৃতিগত তেকােম্য প্রভাপুঞ্জে সমুদার প্রভেদই বিলীন হইয়া যায়। বুদ্ধি, বিবেক, প্রীতি, তত্ত্বজিজ্ঞাসা, শোভানুভাবকতা, অনুচিকীর্ঘা, নির্দ্দিৎসা প্রভৃতি বছবিধ মনোরতি সমুদায় আমা-দিগের যথার্থ গৌরব বিধায়িনী সাধারণ সম্পত্তি। আমরা চির-প্রথিত অতি বিগ-হিত ভ্রমবশতঃ সাধারণ কোন বস্তুর প্রতি যেরপ অবজ্ঞা প্রদর্শন করিয়া থাকি এই সমস্ত মহামূল্য সম্পত্তির প্রতিও সেই রূপ করি. কিন্তু বাছ পদার্ঘের ন্যায় স্বাহ্মগত ৰাধারণ বস্তু সকলও বস্ধিক সুলাবান্। শিল্প বিষয়া সম্ভ অংশ্য বিষ চিচ্ছ র-क्षम उपकार बाडी धनी बारवा जानव न-कल चारलाक्षमंत्र क विकित सर्भ विकर 

বিকাশী অভাকর যেরপ অলোক সমুত আলোক মালা সহকারে প্রতিদিন সম্প্র নভোমগুল উদ্ধানিত করিয়া থাকেন, এবং কি সরিৎসাগরে, কি ভূখরকন্দরে, কি ष्यामानिरशंत मन्दित नर्सव हे नम्डारन বিতরণ করেন, ভাষার সহিত ভুলনা করি-লে ঐ সমস্ত ষ্ণুত্তিম আলোক অবশ্ৰই প্ৰ-ভাষীন বোধ হইবে সন্দেহ নাই। সেই ৰূপ কিয়ৎ সংখ্যক লোকে যে কোন অসা-ধারণ ক্ষমতা সম্পন্ন হত্ত্যার লোক সমাকে প্রাসিদ্ধি ও খ্যাতি লাভ করেন, প্রভা বি-বেক প্রভৃতি মনুষা জাতির সাধারণচিত্ত রুত্তি সমুদারের সহিত তুলনা করিয়া দে-বিলে তাহাও নিঃসদেহ অতি সামানা বোধ হর। অধিক কি , মনুযোর সাধারণ প্রক্ল-তির সহিত কোন পার্থিব বস্তর ভুলনা ক-রাই অনুচিত; থেছেতু উহার সাদৃত্র ধা-রণ করে এমন পদার্থই অপ্রসিকা। "চিন্তা বা কণ্পনাতেও তালা আবিভূতি হইবার নছে। মানব প্রকৃতি সাক্ষাৎ ঐশী শক্তির প্রতিকৃতি। বিনি আয়ার বিশুদ্ধ ঐশী শক্তি সমুদের অধিকারে সমর্থ হইয়াছেন, তিনিই মহা পুরুষ। যে কোন স্থানে অবস্থিতি ক-রুননা কেন, তিনিই সার্থক জন্মা—তিনিই ধনা। ভাঁচাকে চীবরমাত্র পরিধানই প্রদান কর, বা ভুগার্ট নির্মিত কারাগারেই নিরুজ কর, অথবা লৌহ শৃঙ্গলৈ সংযত করিয়া দা-সর্ত্তিতেই নিযুক্ত করিয়া রাখ, ছুতেই তাঁহার মহত্ত্বের অপলাপে সমর্থ **ষ্ট্বেনা। ডিনি গৃহ হইতে বহিষ্ঠুত হ**-रेटन परमाकी शतम शूक्य छ।हाटक यशीत शनिज ७ वटन ज्ञान मान कतिरवन। कान नम्क महानगत्रीय ताबतरक विश्वन ঐশর্যের আড়মর বিস্তার করিতে না পা-

রিলেও ছিনি পৰিত্র চিন্তা, অক্লতিম স্নেহ

ও স্নিশ্ল ব্রামুন্তান দারা যেরপ নহা-

মুজাবতা ও মাস্বার অঞ্চন্ত্র শোভা সম্বতি

বিস্তার করিতে খাকেন ভাষা আর কুত্রা-

শি শহতত এই বার নহে। বিচিত্র পাধাণ

दिइंडिज, ब्रमुनाबनि निक्स मिंडिज, लक्क नक

क्षेत्रम्। कृषा ब्रह्मा छ।काज महात्वाश्यमत

প্ৰাংশ ও কুট হইবে মা। স্থানৰ প্ৰকৃতির

त्व माधात्रण मञ्चित, अञ्चल कार्याः है। উল্লেখ করা গেল; কিন্তু ব্যক্তি বিশেষে উহা মার্জিত ও বর্জিত হইলে গে ক্ডদুর মহত্ব ও গৌংবের প্রস্থৃতি হইরা **বাকে** তিষিধনো মনোনিবেশ করিলে তাকবারে বিকায় রকো নিমগ্র হইতে হয়। তাহা বি-भित পर्या: (लाहन। कांत्रेयाः प्रि**श्रंक** व्यवसाहे ইহা প্রতীত হইতে পারে যে, চিত্তের উৎ-कर्च माधन विषया कुछ। शि विस्था नाहे। কি উচ্চ.কি নীচ,কি উত্তম,কি অধম ; জীব मित्र नर्क व्यकात राष्ट्री है नमजारव छेहा न ম্পন্ন হওয়া সন্তৰ: বথাৰ্ম নীয়ান্ৰাজি স্পাত্রই দুক হইতে পারেন। কোন্ছ-বস্থাবিশেষে যে মহত্ত্বের প্রচুর উৎপত্তি হইয়া থাকে তাহা নির্দেশ কর। নহজ নংহ। বল বা বিদ্যাতেই কিছু মন্তুষ্যের ম্পার্থ মহত্ব প্রকাশ পার না। বাহ্যিক প্রভূতা কি ক্তিবা**ছলে**টেডই যে উহা বিদ্যমান খা-क् अमन अस्ट । त्वाक नमात्व महद्व স্থচক কোন কার্য্য করিতে না পারিলেও কি क्टि मश्राचा विवस श्रा हरेट शास्त्र मा ? পৃথিবী মধ্যে আকর সন্ত অপরিশোধিত রত্ন নিচয়ের ন্যায় যে কভ কত বরিষ্ঠ ফ হীয়ান্ ব্যক্তি প্রভাগুনা থাকার মপরিজ্ঞাত হইরা রহিয়াছেন তংহা কে বলিতে পারে ? ৰস্তুতঃ **স্বভাবের সমৃদ্ধি** ও গৌরব কেবল আত্মার পবিত্র শক্তির উপরেই সপ্রণিবাণে নির্ভর করে। বিশুদ্ধ ভাবনা, স্থবিমল कींडि, अ धन्ध्र मीडि इन्छ न गुमाल है महत्य्व মহনীর নিকেতন। অনুসন্থান করিলে ছী-বনের অতিহীনাবস্থাতেও তাহা চুপ্রাপা হয় না। একার সচরাচর প্রভাক করা যা। ইতে পারে, যে ব্যক্তি বন্ধনশীল পরিবারের ভরণ পোষণ নিকাহ জনা বিত্রত হওয়ায় यदमामाना (कान वावमास व्यवस्थ-ঞিৎ দিনপাত করিয়া থাকে নেও এক জন

বিদ্যাবান্ অপেকাও সমধিক পরি-কার ৰূপে বস্তু তত্ত্ব একণে সমর্থ হয়, অ-ধিকতর তীক্ষ্ণা সক্ষারে সদস্থিবেচনা করিতে পারে এবং অতি ছুব্দ ব্যাপারে ও অধিক প্রভূত্তপন্নতিত্ব প্রদর্শন করিতে স-মর্থ হয়। বে ব্যক্তি প্রিক্তাতে সমুবার ভূষ-

গুজ মধ্যে পবিভ্ৰমণ করিয়া অন্দেষ দেশবা-দী মানব গণের বীতি নীতি চরিত্রাদি দর্শ-নে মহতী অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছেন এবং িল ভিল্ল প্রদেশের ভিল্ল ভিল্ল ব্যবহার দকল সংকলন পূৰ্ব্বক লোক সমাৰে বিলক্ষণ প্রতিপল্ল চইয়াছেন,মানৰ প্রকৃতি পরিজ্ঞান বিয়য়ে ভাছার অপেক্ষাও পটুতর অনুভব প্রকাশ করিতে পারে এবং সমধিক বিজ্ঞ-তা সংকারে লোকের বিভিন্ন চরিত্র ও স-দসৎ অভিপার বোধ গমা করিজে সমর্থ হয় এমন বিস্তর লোক দু**ই হইতে পারে**। চিন্তা শক্তিই যে বৃদ্ধিবৃদ্ধি বিবয়ক মহজের এক মাত্র পরিমাপিকা ভাকাতে আর সন্দে-হমতে নাই। সেই ৰূপ ধর্ম প্রবৃত্তি নিব্সান যে মহনু, বাহা মনুবাস্থের সারংশ ও চরম উদ্দেশ্য, যাহা প্রম প্রমার্থ লাভের দে-দীপামান প্রমাণ স্কুপ, তাহার পরিমাণে ৭ ংকলল বিশুদ্ধ স্বভাবই কারণ। সংসার মধ্যে ভিটিই সাধু পুরুষ তিনিই যথার্থ ম-হল লাভে সমর্থ ইইয়াছেন, থিনি অপরি-বর্তনীয় সংকল্প সহকারে শুদ্ধ সংগক্ষ भाव जनवामन कतिसा यान्यकीयन नासमादर्भ বিচরণ পুরেক কালহরণ করেন, যিনি অসম শ্র্ম বিভার পুরংশর বাহ্যিক ও সাভারিক রিপুরগোর গরশম্ চিত্তরপ্পন প্রলোভন সকল ভূদুর পরাঘত করিয়া থাকেন, যিনি জীবনের ভারনিবছ অভিমাত্র দুর্বাই ইই-লেও হাই:ও অবিচলিত চিত্তে বহন করিতে পারেন, যিনি নিয়তি প্রদর্শিত ভীষণ বিভী-বিকা ও করাল ভ্রাকুটী ভ্রিমাতেও নিতাস্ত নিছন এবং গুরুত্ব বাত্যাপাতেও একান্ত রহেন, वाहात প্রশাস্থ ভাবে নিশ্চিম্ব সতেঃ, ধর্মো ও ঈশ্বরে স্থানিকল বিশ্বাস ও আত্মাৰ্পণ কথনই অপনীত হইবার নহে! লোক সমক্ষে মহা আড়মর করিয়া মহত্র राक्षक करकेता लक्ष्य अन्माम क्रिक्टि कि सहकु तरज ? खेबक शमक वेश्वविद्याली লোক সকল যে সমস্ত কীৰ্ত্তিকর জিলা ক-लाश होत्, गर्रहाई बहाचा दिनहा विकास হয়েন, ভদ্ভির মহন্ত লাভের কি আর উপা-त माहे? युक्ति ७ विद्यदक्त नाहारया আছুরিক ছার্কাছ রিপুরর্মের যে একার বুলী

করণ তাহাই মহত্ত্বে মধার্থ লক্ষ্ণ। ছ-নাতি ও ধর্মা প্রবৃত্তি সমুদারের সমুর্ময় প-तामार्थ यमुक्तिदात ७ जानासून्जर्मन স্বাভাবিক ছুর্দ্ধর বাসনার যে উল্ছেদ সাধন **ए। हाई महां जुड़ श्वार्थ निक्रम। नात्र ७** পর্নোর **অমুরোধে, চিরদেবিত ক্ররের** প্রম আশা নিবন্ধন অভিমাত প্রেমান্দাদ वञ्च नकरणते । एक दे विनर्कन छाहा है মহত্ত্বের যথার্থ লক্ষণ। নিতান্ত হতাশ, এ-কান্তক্লিউ, লোক সমাজে অবধীরিত ও প-রিভাক্ত হইলেও ধর্মোর অনুষ্ঠানে যে কি-ছুতেই পরাভ্রুথ না হওয়া, প্রত্যুত হৃদর-ধামে সাস্থনা, নিরুছেগ, জাশা, ও আনন্দের আবাহন কর। তাহাই মহত্তের যগার্থ লক্ষণ। এরুপ মহত্ব কি বাহিরে প্রকটিত হইবার বিবয়। একপ মহত্ত কি পদ বা ঐশ্বর্যোর অংপকারাথে। কদাচ নহে। কি বিদা-বানুকি অনক্ষর, কি বিখাতে কি সংরুত, कि धनो कि मतिज अञानुभ मश्च नाएक সকলেরই অধিকার আছে। উদুশ মহ-ত্ত্বের সহিত বাহা আড়য়বের কিছুমাত সম্ভৱ নাই। এই বর্ডমান কালে কোন বিশুদ্ধ চরিত মহাস্থার হৃদর রাজ্যে যে কি অনিকাচনীর মহান সংকশ্প সকল সংক লিত হইতেছে, কি অনিকেঞ গরিষ্ঠ শৌ ৰ্যাজনিত সমুজ্জল ক। হাজাত নিষ্পন হই-তেছে মহতী উদারতা বশতঃ কত কত প্রীতি ভালন বিষয় স্কলও বিস্তিজ্ত হই তেছে, তাহা কে জানিতে পারে! আমরা স্থপ্নেও তাহার কিছুমাত্র অমুভব করিতে পারি না। অভএব পদম্মাদা বা ধনস-न्थानि थाकिटनहें स महाने नारकत अभि कात हत् हेश कमाह मञ्जाबिक महिश् बत्र বিবেচনা করিয়া দেখিলে মধ্যবিত্ত লোকদি-भारत मध्या है अधिकाश्टम । केलिकि मेन्ट्युत উৎপত্তি হওয়া সম্ভৱ। ধূৰবাক্ অংশেকা गाथातन द्रणाक त्थानी बद्धारे त्य क्य कड वीर्यावाम वाक्ति भनागाना भूक्तकोत नर-কারে অকাডরে ও অক্স হিতে ভূবিবেছ 福本年 2四月 日本 中東 神天空 神子(日本 井市), व्यक्तभारे कक्ता । अ विश्वक नवी श्रवासन वर्षे 有一种中国中央 (京美 明祖) 有事情的 等情遇 集化等

ন, ভাষা কাহারও সবিদিত নাই। অতএব ৰখন কাই দেখা যাইতেছে, যে মধাবিত্ত লোকদিপেরই নহত্ত পাইবার অধিক ন-ভারনা, তখন ভাদৃশ অসুলা রত্ত্ব লাভ বি বরে কি কাণমাত্রও অবহেলা করা উচিত ?

হে মানববর্গ! র্থা আমোদ প্রমোদে নিরস্কর নিময় হইয়া মথার্থ অর্থা সাধনে কেন পরাও মুখ হও। ছির চিত্তে একবার প্রণিধান করিয়া দেখ, মহত্ত্ব লাভ করিতে আমাদের অনোর উপাসনা আবস্থাক হয় না। তাছা আপনাদিগেরই বিলক্ষণ আরতে রহিয়াছে। আদ্মার উৎকর্ষ সাধনই মহত্ত্ব লাভের এক প্রধান কারণ। অতএব যে উপায় দারা তাছা সম্পন্ন হইতে পারে সর্বা প্রহত্তে প্রথমে তাছার সক্ষান করাই বিধেষা।

## अश्वदत्रत्र यश्या।

बाबाजबादणार्वान् वामधाकाणजीकाः ममाजाः।

পৃথিনীস্থ যাবতীর জীব জন্তকে জগদীর যথোপযুক্ত বৃদ্ধুপ প্রয়োজন বিদান করিয়া
নিত্যকাল প্রতিপালন করিতেছেন। তিনি
নীয় সন্তান গণকে পরম স্থথে রক্ষা করিবার
নিমিত্ত স্থল বিশেষে করুলা বিশেষ প্রকাশ
করিয়া আপনার সকরুণ স্বভাবের মাহায়া
প্রকাশ করেন। জীবের কল্যাণ সাধনার্থে
তিনি এক এক স্থলে এপ্রকার অস্কুত করুণা
প্রকাশ করিয়াছেন, যে তাহা স্মরণ হইলে
শরীর লোমাঞ্চিত ছইয়া উঠে।

মুনেক সমীপে লাপলও নামক স্থানবাসী মনুষ্য দিনের জীবন ধারণ ও জীবিকা
নির্বাহের বুলান্ত অবগত ক্ইলে, বোধ
করি নিতার মুদ্ধার ক্লানেও জগনীমরের দলা মুর্কিকতী ক্ইরা বিরাক্ত করিতে
থাকে। উক্ত স্থানের যে প্রকার অবস্থা তাহাতে বে দেখান কোন প্রকারে মনুষোর
বাস ঘোরা ক্লানে পারে ইফা সহসা কামারও মনে উদ্ধান ক্লানে পারে না। মুনেক
ক্লীপ্রতী লাপ্লও প্রভৃতি কতিপার স্থান
ম্বার এবং বিরাক্তি প্রেণী ঘারা পরি

ভূমি পরিদেবিত∤ ঐ সকল স্থানে মধ্যে **মধ্যে এত প্রভূত ভূবার প**তিত হইয়া রা-শীকৃত হইয়া থাকে যে প্রুচণ্ড গ্রীম কানের স্থোজিপেও তাহা দ্বীভূত হয় না ! বি-শেষতঃ অন্যান্য দেশাপেকা উক্ত স্থানে আর যে এক যোর ভয়ানক অবস্থা উপ-বিত চইয়া থাকে, ডাহা স্মরণ হইলে চি তের বিষম বৈকলা উপস্থিত হয়। লাপ লণ্ডের কোন কোন স্থানে ঋতু বিশেষে গ্রায় তিন মাস স্থার্যার উদয় হয় না এবং ঋতু বিশেবে দিবাকর উপযুপেরি তিন মাস স্থ कीय कित्रन दर्यन कतिएउ थारकः। जान শ**ণ্ড স্বভাৰত হিম** প্ৰধান স্বাম, বিশেষতঃ শীতকালে তথায় ক্রমাগত তিন মাস ভূ-**বোঁটাৰ না হওয়াতে যে পৰ্য্যন্ত হিমা**ধিকা হয় ভাছা কিঞিৎ মনোখোগ করিলেই অ নায়ালে নকলেরই অমুভব হইতে পাবে: জ্রমণকারি ব্যক্তিরা বর্ণন করিয়াছেন শীত কালে কোন কোন সময় লাপলতে এমনি হিমের প্রাবল। হয় যে তত্ত্বসমুদর নদীর ৰূল সংহত হইয়া যায় এবং কুত্ৰচিৎ তুষা-রবং কঠিন হইয়াও উঠে। श्रद्धत यात রুক থাকিলেও তম্বান্থিত স্বাদি তরল शनार्थ नकन क्रिया यात्र अतर यनि कः व কালের জন্য দার মুক্ত রাখা যায়, তাহা হ ইলে গৃহ মধ্যন্তিত ৰাষ্প পৰ্যান্ত তুৰ্বে ৰূপে পরিণত হইতে আরম্ভ করে। **অন্যান্য স্থানে যেমন বিবিধ প্রকার ভো**জন स्थाभा कन मञ्चामि कत्य छेङ द्वारन त প্রকার জন্মে না : তথাপি আর আর ঋতুতে ষদিও কিছু উৎপন্ন হয় শীত কালে আৰু কিছুই উৎপাদিত হয় না। কিন্তু জগদী-শ্বরের কি মাশ্চর্যা করুণা, এই স্থানকেও তিনি শ্বকীয় সত্মপম কৌশলে মনুযোর বংচ **নোগ্য করিরাছেন, লাপলগুস্থ লোকে <u>স্</u>বীর** निवान कृमित्क यर्श नमृत्र वर्गन करतः। তাহারা জগদীশ্বর প্রসাদাং স্বভ্রেক সকর কালে আপনাদিগের সমুদর প্রয়োজনীয় ব্যাপার সম্পন্ন করিয়া সন্তোষ পুর্বেক কাল इत्भ करता।

<sup>\*</sup> Ree's Cyclopectia Fol. 20 ps. 1. † The natives believe this country to be all terrestrial paradise. Encyclopedia Britanica F Fi

্লাপলত্তের বে প্রকার অবস্থা জালাতে जनाना नमग्रारशका नीडकार्टन इं उद्धन् लाटकत प्रथिक क्षत्रका इहेवात मञ्जारना. কিন্তু ক্রপ্রনিধান বিশ্বশিতা তত্ত্বস্থ লোকের দুঃথ প্রিমারের জন্য এমনি সক্ষা উপায় বিধান করিলা রাখিলাছেন, বে ভদবলঘনে লাগলগুৱাৰী লোকে অফ্লেশে সমস্ত শীত ঋতু সংগন করে। ীতিকালে যেমন উক্ত স্থানে দীৰ্থকাল স্থায়ে উদয় হয় না. ভেমনি আৰ এক প্ৰকাৰ বিশেষ আলোক দাবা তথাকার অনেক অন্ধকার দূর ও লোকের কর্মা নিবেছে ছইয়া থাকে। যে বিশেষ আ-লোক ছারা লাপলগুৰাদী লোকে স্বর্হাহীন শীতকালে আপনাদিণের দাংদারিক সকল কার্যা সম্পন্ন করে,পৃথিনীর কেন্দ্র ভিন্ন আর কুত্রাপি উক্ত প্রকার আলোক দেখিতে পা-ওয়া যায় ল', ইহাতে বিলক্ষণ প্রতীতি হ केंटलाइ, य किट्नुत निक्षेवर्जी शास ही-ধকাল ভাষোর বিরহ হয় এই নিমিত্ত জ-পশীধর তথায় আলোক বিশেষের স্বর্তি ক-विशा वाशिशादक्य। अयो विवक काटल ल.-পলগুলাগী লোকে শুনা ছইতে যে আলোক श्रीश्र हर, जाकात नाम उम्रोहीन फेक्टा । ये উলিলিন উল্লেখ্য এবং কি কারণে বে উহার উৎপত্তি হয়, তাহা আন্তাপি কোন পণ্ডিত ই নিঃসংশ্রে স্থির করিতে পারেম নাই, কিন্তু উক্ত অন্তত আলোক দারা লাপলতীয় লোকে অক্লেশে कालमा क्रिशंद मकल कर्ष मिर्स्वाङ करता। ঐ আলোক দার৷ লাপলগু বাসী লোকে সক্তে গভায়াত করিতে পারে, অক্লেশে गुलक्षामिकार्या जन्त्रज्ञ कट्त, अदर नम् नमी ও সাগার আলে মহস্তাদি ধারণ করিতেও সমর্থ হর, উহা ছারা উহারা ব্রান ভোকন প্ৰস্থা উপ্ৰেমাদি গৃহ কাৰ্যা সমস্তও আং-

নান্নান্ধ করে। ইই অক্রান্ত আমানিদেগের বিবেচনা করিয়া বেখা উল্লিখ্য বে কোন্ত কর্ণামর পুরুষ কাপলও বালী জ্যোত্রের স্থাই হরণের জন্য এমন আকর্মা উল্নিটান উক্রার হাটি করিয়াছেন প্রকার ইছার হান বিশেষে পূন্য পরি হুইরাছে? জগনীশার যদি স্থামের স্থানিত স্থানে উদীচীন উক্রার হাটি না করিতেন, তাহা হইলে লাপলও বাসীলোকে কি প্রকারে জীবন ধারণ করিত?

नाशनए७ এक ट्यकात मृत्र करवा, वे मृत्र হইতে লাগলগুস্থ লোকে যে সকল উপ-কার প্রাপ্ত হয়, ভাছার প্রতি মনোনিবেশ कतित्व (वाध इस त्य. अन्नभी धत्र त्कवल উক্ত जान रात्री मनुष्य शर्वत्र द्वःश हुत्र क-রিবার উদ্দেশেই তথার এ প্রকার পশুর করিয়াছেন। একেড হিমপ্রধান লাপলও দেশে স্ভাবতই ভোজন যোগঃ ফল মুলানির ভাগ অপ্পই জন্মায়, তাছাতে আবার শীড়কালে কিছুমাত উৎপদ্ম হয় 🕮 শীত ঋতুতে,লাপলগু বাসী লোকে কেবল উল্লিখিত মুগ অবলয়ন করিয়াই জীবন ধা-রণ করিয়া থাকে। ঐ সময় ভাষারা কে বল উচার তথ্য পান ও মাংস ভক্ষণ করি-য়া প্রাণরক্ষা করে; অপর কোন দ্রব্য থাই তে পার না। শীতকালে বে তাহার। কে-বল উক্ত পশু ছারা আপনাদিণের ভোজন কাৰ্য্য নিৰ্বাহ করে এমত নতে, উহা ৰার্য তাহাদিগের আরও বিস্তর উপকার **দর্শে**। ঐ মুগের চর্মা ভারা ভাষারা উৎকট শীত নিবারকামুখায়ী গাতাবরণ প্রস্তুত কলিয়া অজে ধারণ করে, উহার চর্মপাছকা নির্মাণ করিয়া অক্লেশে তুর্বস্তারক স্থানের উপর দিরা দর্বাত্র গভান্নাত করে এবং উক্ত পশ্ৰকে তত্ত্বৰ এক প্ৰকাৰ শক্ট বিশেৰে (बाजना कतिज्ञा जनात्रादेश कुवान महान्यान অভিক্রম করিয়া এক দিবুদের মধ্যে বছ-एत भर्गा छ अयन कतिहाउ नेमर्च रहा। ज्याप-काड़ी त्यादक रमभिन्नादकन, स्व नीक्रकारण माभवात द्वरम् दव क्षकाद्व क्रियापिका एत. ভাষাতে ভাৰু লোকে উলিবিড মূদ চৰ্ক

<sup>া</sup>লান কোন পাতিত ও উদ্নাকে ইন্মুডিজ ন্যাপার লিলা কালিপন এনিবালেন টালারা করেন, যে মধন বে চানে বাবু প্রস্ন কন, তৎকালে সেই স্থানে এ প্রস্কাবন্দি ক্ষুত্র নগত দিয়া বিশ্বালাকে ক্ষুত্রিত হওগাতে উক্ত আ-কাল উদ্দান উৎপত্তি হয়। স্বীত নালেই লাগালত দেশে এ উদ্দান উৎকাশ পাথ কারণ নীত অনুত্রত তর্মস্থা লার কালেকান্ত্রত প্রস্কাবন। উক্ত পাতিকোর বিশ্বাৎপত্তি ক্র কালেকান্ত্রত প্রস্কাবন। উক্ত পাতিকোর বিশ্বাৎপত্তিক স্থানিকানিকার কালেকান্ত্রতান্ত্র বেশাইনাকোন ভাষাক্র স্থানিকানিকার

कार्य बालाका गर्म महिला क्यानगर उरे कीत्रक क्रका क क्रिटिंड गांदत मा। जे मुन हनी चकारकर असम कुम ७ लामगत ए छेहा ব্যবহার ক্রিলৈ লাগলগুৰ লোকের আর কোন কেৰ্বাহৰ না, শীত প্ৰধান স্থানে विरमय अभकाती। उक मृश कर्य निर्मिट পাছুকরি এমনি ৩৭ বে তাহা পরেতে ধা-तन कतिया नामन्य बानी लाटक धक पि-त्मत्र माधा ७० त्कांन १० भमनाभम केत्रि-তে পারে 🔭 ঐ মৃগ চর্ম্ম নির্মিত পাছকার লোমের দিক বহির্ভাগে থাকাতে পাছকা-ধারী বাজির পদতলে কিছুমাত্র হিম প্র-বেশ করিতে পারে না, স্থভরাং ভাহা ধা-রণ করিয়া অফ্লেন জুবার ময় স্থান ভ্রমণ িকর। যায়। কোন ভার পূর্ণ শকটে ঐ ভুগ ध्यांजना कतिता छेश अनातारम श्रक्तकत ভারের সহিত ঐ শক্ট লইয়া প্রতিদিন আরুশত কোশ পর্যান্ত বাইতে পারে। উক্ত মৃগের এমনি আশ্চর্য্য শক্তি যে কঠিন তুবারমর হিমারত স্থানে বছ দুর গমন করিতে কিছুমাত প্রাপ্ত হয় না। লাপলঞ্ দেশীয় লোকে ঐ মূগ যে:জিড শকটে ভ-ত্রস্থ নানাবিধ পণা জবা পরিপূর্ণ করিয়া নরওরে প্রভৃতি দুরদূর স্থানে বাণিজ্য ক-রিতে বার। জগদীশবের কি চমৎকার ম হিমা তিনি হিমারত লাপলও দেলে এমনি আশ্র্যা পশুর সৃষ্টি করিয়াছেন বে, তন্ত্রা-রা তথাকার লোকের জীবন ধারণ ও উল্ল তি বৰ্মনোপযুক্ত সকল কাৰ্যা সম্পন্ন হয়। नागन ए एमरने छेक अकात मृत्र मा शाकि-লে কোনমতে তথাকার লোকের জীবন ধা-त्रण रहेज मा अवर छेङ श्रकात मृत जिल्ल-ও তথাকার আর কোন পশু থাকিতে পা-রিত না। শীত প্রধান লাপলও দেশে বাস कतिएक स्टेरव विकास अभिनेश्व छेल मृ-গের সমুদার গাতেএমনি স্কুল চর্গা ও অবিরল নোম সারা সাত্ত করিরাছেন বে তথ্য দিয়া ঐ শত শরীরে কিছুমাত্র হিম প্রবেশ করিতে পারে না। বিশেষতঃ আরও আ-শ্বরের বিষয় এই যে শীতকালের প্রার-(इ के त्राक्त काळावाम वक्त कमनः

\* Encyclopedia Britanica Fel. IX

वृक्ति स्ट्रेट्ट थाटक । खेळ शरूत चाहादतत জনা শীতকালে লাগলপ্তের ত্বার ক্ষেত্রে এক প্রকার শৈবাল উৎপন্ন হয়, মুগগণ ভ-খন কেবল ঐ শৈবলে ভক্ষণ করিয়া ভীবন ধারণ করিয়া থাকে এবং **তন্ত্**রে স্থানন্ত ৰূপে ভাহাদিগের শহীর রক্ষা হয। সে শৈবাল ভক্ষণ করিয়া মূগা কুল জীবন ধারণ করে, উক্ত শৈবাল দ্বারা লাপলও বার্মী লোকেরও বিস্তর উপকার দর্শে। ঐ শৈ বাল তাহাদিগের শীত নিবারণের কার্য্য শ্বন করে এবং অনেক প্রকার ঔষ্বেও नार्थ। हा अवसीन! कुमि सन उउए उ কাল ভেদে কত প্রকার বস্তু রচনা করিয়া কভ প্রকার করণাই প্রকাশ করিয়াছে। ভূমি শীত প্রধান স্থানে তথাকার উপযুক্ত বি-यत रुष्टि कतिया अक्षेत्र महिमादक महीतान् করিয়াছ এবং উক্ত দেশের আবস্থক মত নমন্ত প্রক্রোজন বিধান করিরা তত্রস্থ প্র-স্বাপুঞ্জ পালন করিভেছ। ভোমার করুণার বিবয় আমরা কভারীর্তন করিব, তোমার অপার মহিমা সাগরে মন নিম্মা ভ্রীলে তাহার **আ**র উত্থান শক্তি খাকে না 🕫

~\*\*\*

## ত্রিপুর। ব্রাহ্মসমাজের তৃতীয় নাধংসরিক সভা।

আদ্য এই তিপুরা এক্ষেদ্যান্তের সূতীয় দাৰ্থনরিক সভা, ইবা আমানের অভীব আহলাদের বাপার, অভএব হে রাজাগণ বৈ বিশ্ব বিনাশন মহিমান্ত এই সূব্ কর ব্যাপারে প্রস্তুত্ব হইভেছি, তাঁহার মাহিমা প্রতিপাদক কতিপায় বিষয় উল্লেখ করিয়া আনরা তাঁহাকে মমকার করি।

এই লগতীতলৈ স্কুল, স্কুল, কুল,
বৃহৎ চেতনাচেতন যথন বে বিষয়ে আ
নরা দৃষ্টিকোপ করি, গাহাতেই জগনিরন্তার অদীস জ্ঞান, প্রাভূত দরা এবং আ
চিন্তা শক্তি সক্ষণি করিয়া থাকি।
এক বন্ধর সহিত বৃদ্ধর মিশ্রিত হইলে
বে তত্ত্বে বন্ধ আ দ্বাকণ গুণ পরিহার

कतिता सूजन खनामि धात्रण करता. देश न-करणहे थात ब्याफ चाह्न । इतिहा हुई मः स्यार्भ स्य भावेत वर्ग अवः मीत शिक नहर्देवारण एवं हतिय वर्ग आहेग करते, रेश अपनारक है अठाक कतियाद्दन, किन्त कि व्यान्तर्या जननीयतत छाने छ निकः! নিশ্র ক্রেরে ভাগের তারতম্যান্ত্রশারে তত্তং বোগধীন নিশাল সামগ্রীর অতি বিচিন্ন বিপরীত গুণ সমুদ্ধব হয়। ব্দিজন ও নৈত্ত্বৰ নামক বাষ্প বিশেষের मानाजित्तक मः स्थान विधान बाता शक বিধ জাবোর উৎপত্তি হয়। ওলাখ্যে নাইত্রিক্ এসিড, নৈত্রস এসিড, নাইত্রিক অফসাইড নামক পদার্থ তায় অতি প্রথার প্রাণ নাশক শ্রণ ধারণ করে অর্থাং উহা জিহ্বাস্পার্শ মাৰ পঞ্জ পাইতে হয় কিন্তু তাহারই আবার প্রকার ভেদ অর্থাৎ সামানা বায়ু হারা আমাদের জীবন জিয়া সমাধা হয়, ম্যাতীত আমরা এক মুজ্**রত প্রাণ্ধার**ণ कतिहरू भातिना। भ्रमादर्थन नशर्याकन छन भावा समयत्र आण्डरी। आलोकिक बााशा-त मन्त्रानिष्ट रहा, जाहा चात्रण कतिरस মন আরে দেই অগাধ ভানে সমুদ্র পরমে-শ্রের জনে ক্রিয়ার ইয়কা করিতে না পারিলা মরাক ও एक इहेबा थाटक। मल-কিউরিক এলিড অর্থাৎ ভারক ও এগনিয়া মিশ্রিত হুইলে ভাহাতে কিঞ্জিং চুণ খ্রক্ষেপ করিলে উলিখিত এমনিয়া হইতে জাবক বি-যুক্ত হইয়া চুর্ণের সহিত সংশ্লিফী হয় এবং নেই সংযুক্ত জব্যে সোডা নামক লবণ বি-ान निरक्षण कतिरम के जावक आवात p-ণকে পরিত্যাগ করিয়া পুথক হয়, তাহাতে धुनतात (धारेश नामक कात विस्मय थ-ক্ষিপ্ত হটলে সোডা হইতে জাৰক পুনৰ্ব্বি-জ্ব হয়, তথ্যে আবার ট্রনসিয়া যোগ ফাণ্ডল পরে উচা পোটাস **হইতে স্বতর** ंय अतः পরিশেষে বারাইট **মৃত্তিক। नः-**""जन कतित्व द्वेनिता **एटेएड पृथक ए-**উয়া উক্ত মৃতিকার সহিত মিলিভ হুইয়া धारकै। अञ्चाल तमात्रम विमा महस्तीत्र स्थात धक्ति विषयत्वत विवतन मा अतिका काछ থাকিতে পারিলাম মা। স্ববিধানি প্রিতা-

এগণ্য লিবিগ ক্ষেত্ৰাৰৰ বুধাৰাণ কৰিয়াছেৰ, নেবেল উন্নাট নাৰক উদ্ভিশ বিশেষৰ পৰা প্ৰাত্যকালে আৰু মধ্যাকে বিশাস এবং বজনীবোগে ডিক্সমাস হয়।

বহুতর মনুব্রের এক্রির সংক্রার বা-কিতে পারে কেন্দ্র দেলেই মেনাছ ম-বিত হইরা থাকে, কিন্তু সক্ষিণ সামেরি-কার অন্তর্গত পেরাদেশে বালেন্ নামে এক স্থান আছে তথায় কোন কালেই রুট্টিপাড হয় না; ভত্ৰতা লোকে রুটি বাভিরেকে कि अकारत जीवन शातन करत है। চিন্তা করিলে মনে আপাততঃ সংশয় উপস্থিত হয়, কিন্তু বিশ্ব বিধান কর্ত্তা ক क्रगानिधान शहरमश्रदत्व व्यशाद विषय चार्र कहिता चाष्ठाकद्राण मत्मह क ट 🕶 १ इस्म शाहा । यिनि मर्व्यकी दवह भाए ও স্থানতা এবং যাঁহার অনুকল্পায় খড়ি-স্থাৰ কীটাণু পৰ্যান্ত যথোপযুক্ত ৰূপে ন-मुन्य व्यत्सङ्गीय ७ स्थम नामधी व्यास হইডেছে, তিনি যে ভাহাদিগকে এতা मुन शृक्ष्ण्य विवास वित्राुष्ठ स्ट्रेट्स हैश কদাপি বস্তব নহে। তথায় বেমন কোন সময়ে বিশ্বমাত্রও বারি পতন হয় না,ভেমন শীত ঋতুতে এৰপ ঘোরতর কুজ্বাটিকা স-মুৎপদ হয়,যে তক্ষারা অতি অনুর্বারা ভূমিও कनवर्णी स्केटण शास्त्र अवर शरशत श्रीन পर्याष्ठ कर्मन इहेश गात्र। एक विक्रिक मार्कि জনাদিকারণ পরমান্ত্র ভাষার ভ্রবগাঞ্ অদীম মহিমা সাগরের পার আমি কি প্রকারে পাইব। এক রজনীতে কি ভাহা বর্ণন कता यात्र ? मसूषा यनि शृथियीत समकात वर्जमान शाटक अवः शावकीन व्यविद्यास কেবল ভোমারই গুণ কীর্ত্তন করে, ভথাপি সে ভোমার মহিমা সমুদ্রের এক বিদ্যুরও चन्छ कतिए गक्रम स्य ना। एक मीनव-(का! यामात धार्यना अहे त यामि प्र-पिरु किया चण्लकालहे कीविछ शांकि स्वत তোমার নিয়ম প্রতিপালন করিরা স্থাক্ত কিরা তোমার গুণ গাস করিছে করিছে प्यामात तर भक्त रहे अदर तारे क्यांतक नमस्त्र स्वन क्लाबादक अतुन्त्रीहरू ।

**छ अक्टमवाविकीयर** 

## মহাভারত। আদিপুর্ব

१९ अधास-नहराना ।

दिवालात्रम करिलन, नमाव्याज वृक्ष एक कर्क बहेबद्ध असुका करहेश विम्मावादन शमदमामाञ्च रक्ट्राल (नवतानी कहितान, (र অঞ্জিরা ঋষির পৌত্র করা ভূমি একংণ সুচরিত্র,সৌজন্য,বিদ্যা,তপক্তা ও শমদমাদি-ভে বিভূষিত, এবং মহায়শা অঙ্গির। ঋষি যেমন আমার পিতার মানা, তক্রপ তোমার ণিতা রহস্পতিও আমার মান্যও পূজা, **মতএব হে তপোধন! আমি বাছা** বলি তাছা প্রণিধান পূর্বেক আবণ কর। নিয়-মোপেত ব্রতাচরণ কালে আমি ভোমার অনেক পরিচর্ঘা করিয়াছি, এক্ষণে ভূমি थागादक जनना সমার্ভবিদ্য স্কুতরাং করিবার যোগা, অতএব যথাবিধানে মস্ত্র-পুত করতঃ আমার পাণি এহণ কর। কল কহিলেন, হে অনবদ্যাঙ্গি! তোমার পিতা শুক্রাচার্ব বেশন আমার যান্য ও পুঙ্গা,ভূমি-ও আমার তদ্ধপ পুকনীয়া,হে ভদ্রে! ভূমি মহাত্ম। ভার্গবের প্রাণ হইতেও প্রিয়তমা। কন্যা, স্তরাং গুরুপুত্রী বলিয়া ভূমি আ-মার সর্বাদ। পূজনীয়া। বেমন ভোমার পিতা শুক্রাচার্য্য আমার গুরু ও মান্যংহে দেবরানী! ভূমিও তদ্ধপ, অভএব আমার প্রতি একপ वाका धारताक्षका नरह। मिवतानी कहिलान, হে দিকোন্তম! তুমি আমার পিতার গুরু-পুলের পুত্র,অতএব তুমি আমারও পূজা ও माना। ए कर्ष ! वंथन अस्ट्रांत्रा (जामारक পুনঃপুন হনন করিয়াছিল,সেই অবধি তো-মার প্রতি আমার বেকিরপ প্রীতি ক্রিয়া-ছে তাহা স্বরণ কর। ভোমার প্রতি আ-মার যেকপ ভব্তি তাহা লৌহার্দ বা অসু-রাগ ছারা ভবক্ত ভোষার স্বন্ধুতব হইরাছে। অতএব হে ধর্মক। পরুম ভক্তিমতী বেজামি भागात्क পরিভ্যাধ করিওনা। कुछ कहि-त्व तर केच उद्भा **धरे मनि**रहांचा वि-वट्ड भागारक विरहात कहि थना, रक् छटण। पूर्वि मानात शह हरेटल धरूउत, गड-4र पातार अंग अगर छत्। त तिचा-नाकी। त बेकामर्वा इकेटक जूबि कर-

পল হইয়াছ, আমি উল্লেই জঠবে বাস করিয়াছিলাম, অতএব ধর্মত ভূমি আমার ভাগিনী, অতএব আমার প্রতি এবল গঢ়িত কথা কহিওনা। হে ভদ্ৰে! এও কাল ভো মার নিকট স্থান্থে বাস করিলাম এবং এখন ও কোন অস্থা নাই, একণে অনুমতি দেও গমন করি এবং আশীর্কাদ কর, বেন পথে কোন অনঙ্গল ঘটনা না হয়। কথাপ্রসংগ্র ধর্মাবিরোধে আমাকে স্মরণ করিও এবং অপ্রমন্ত চিত্তে নিয়ত শুরুর সারাধনা ক-রিও। দেবয়ানী কহিলেন, ছে কচ! ধর্ম কামার্থে আমাকর্ত্তক বাতিত হইয়াও বদি ভূমি আমাকে প্রভ্যাখ্যান কর, তাহা হই-লে তোমার অ্ধীত বিদ্যা কথন সফল: ই-ইবেনা। কচ কহিলেন, আমি তোমাকে কেবল শুরুপুত্রী বলিয়া প্রত্যাখ্যান করি-ভেছি, দোৰ দৃষ্টিতে নহে এবং গুৰুও আ-মাকে এ বিষয়ে অনুজ্ঞা করেন নাই,অতএ-ব রুখা কৈন আমাকে অভিসম্পাত করিলে। হে দেবয়ানী! আমি তোমাকে আর্ঘ ধর্ম কহিলাম, তথাপি তুমি অভিসম্পাত করি-লে, আমি শাপের যোগ্য পাত্র নহি, অত এব তোমার যে শাপ ইহা ধর্মত নহে, কে-বল কাম জন্য মাত্র। অতএব তুমি বাহ कामना कतिराज्य छाड़ा विकल इहेरव, अवि পুঞা কথন ডোমার পাণি এছণ করিবেন না, কিছ ভুমি যে আমাকে অভিসম্পাত করি (ल—वामात विमा विकल स्ट्रेंदि, उंग्हें इ-**উक, किन्छ जामि स्हिटक** अश्वत कहा हैन. मकल १६८४ । देव मान्या ग्रन कहिरत्वन, रमवशानी कराइ अधि बाँछम স্পাত করিলে, কচও দেবয়ানীর প্রতি এই **ৰূপ অভিসম্পাত ক**রিয়া সত্তরে ত্রিদশাল-(य श्रयाम कर्तित्वन । उथन हेत्सामि प्रिय-গণ সমাগত কচকে দেখিয়া রহস্পতির স-मटक छ। हाटक कहिए । ना शिरायम । ८ र कि ! ভূমি যে আমাদিগের পরমান্ত্র ছক্তর হিত শাধন করিয়াছ,ইহাতে তোমার এবশঃ চির স্থায়ী হইবে এবং ভূমি স্থাম।দিগের এক-ু क्षन जल्मी दहेदन।

# বিশেষ সভার প্রস্তাব ব

ভত্তবোধিনী পত্রিকা প্রচারিত ইওয়াতে এতদেশীয় লোকদিগের যে নামা ক্সকতর উপকার লাভ চর্য়াছে, ইহা বোধ বিশিষ্ঠ वाक्तिभारताहे चीकातः कतिसा शारकम। আদ্যোপান্ত অনুধানন করিয়া দেখিলে এীযুত বারু অক্ষয়কুমার দল্ত এই তল্ববো ধিনী পত্রিকা স্থাটির এক জন প্রথান উদ্যো-গী এবং এই মহোপকারিনী পত্রিকার অ-সাধারণ শীরুক্ষি লাভের অন্তিতীয় কারণ ব-লিরা বোধ হইবে। তাঁহারই যত্তে ও পরি-অমে তত্ত্তবোধিনী পত্রিকা সর্ব্রেএরপ আদর ভাজন ও সর্বাসাধারণের এনপ উপকার সা-ধন হইয়া উঠিয়াছে ৷ বস্ততঃ তিনি অননাম-নাও অনন্যকর্মা হইয়া কেবল তত্ত্বোধি-নী পত্তিকার শ্রীরূদ্ধি সম্পাদনেই নিয়ত নিবি ষ্ট চিড়া ছিলেন। তিনি এই পত্রিকার শ্রী-কুজি দাধনে কুত্ৰকংশ হ্ইয়া অবিলান্ত অতাৎকট পরিভাম ঘারা শরার পাত করি-য়াছেন, বলিলে বোধ হয়, **অ**ভ্যক্তি **দোৰে** দুৰ্বিত হইডে হয় না। তিনি যে অতি বিষম শিরেরেরাগে আক্রান্ত হইয়া দীর্ঘ-কাল অশেষ ক্লেশ ভোগ করিভেছেন, ভাহা কেবল ঐ অভ্যুৎকট মান্দিক পরিশ্রমের পরিণাম, তাহার সন্দেহ নাই। অতএব যিনি ভত্রবোধিনী পত্রিকার নিমিক্ত শরীরপাত ক্রিয়াছেন, সেই সংহাদয়কে সহজ্ঞ সাধ্বাদ প্রদান করা ও ভাঁহার এতি তথোচিত ক্ল-ভক্ততা প্রদর্শন করা অত্যাবস্থাক, না করি-লে তত্তবোধিনী সভার সভাদিগের কর্তব্যা-নুষ্ঠানের ব্যতিক্রম হয়।

ধার্কাল ছুরস্ত রোগে আক্রান্ত থাকাতে অক্ষরকুমার বাবুর আরের সক্ষোচ, ব্যরের বাহুল্য এবং ত্রিবন্ধ-ন আশেষ ক্লেশ ঘটিবার উপক্রম হইরা উঠিয়াছে। এ সময় কিছু মর্থ সাহায্য করিতে পারিলে প্রকৃতকপে কৃতজ্ঞতা প্র-দর্শন করা হয়, এই বিবেচনায় গত আবেশ মাসের ভাদশ দিবশীয় বিশেষ সভায়

জীযুত বার কাদাইলাল ডাইক জ্ঞাব করেন, যে তত্ত্বোধিনী কথা হুইছে কিছুকালের করা আছা। তল্পুনারে অহা সমাগত
সভ্যেরা নির্জারিত করিলেন, অকরকুমার
বাবু বত দিন পর্যন্তি সমাক্ত হুছ ও সজ্জ্ঞান করা আছা। পুনরার পরিক্রম কর না হন,
তত দিন তিনি সভা হুইছে আনমানী লাহিন নাস অবধি পঞ্চবিংশতি মুদ্রা মানিক
রতি পাইবেন। আর ইহাও নির্জারিত
হুইস বে এই প্রতিজ্ঞার প্রতিলিপি মক্ষরকুমার বাবুর নিকট প্রেরিত হয় এবং সর্বাসাধারণের গোচরার্থে তত্ত্বোধিনী প্রিকাতেও অবিক্রম মুক্রিত হয়।

#### বিজ্ঞাপন।

ভত্ববাধিনী সভার সভা বা সভা ভিন্ন অন্য বে কোন ব্যক্তি মাসিক॥ আনা করির। সভার প্রদান করিবেন, উঁ। হার। নি গ্রমান্ত্রসাল্লে সভার পুত্তকালগ ছিভ পুত্তক ঋণ পাইতে পারিবেন।

#### বিজ্ঞাপন

বঙ্গভাবার্বাদক সমাজ হইছে-প্রকাশিত পুস্তক এ সভার কার্য্যালয়ে বিক্রার্থি প্রস্তুত আছে, তাহার মূল্য নির্পণ।
রহৎকথা—প্রথম ভাগ ... ।
চক্মকিবারা ও অপুর্বা রাজবল্প
বিষয়ক প্রভাব ... ।
চিন্দেশীর বুকরুল প্রকী বিষয়ক প্রভাব /

क्ष्य वर्षे कहरवासियों लिक्का, क्षित्रकाका नुबद्ध वाकोभेरकासिक कहरदासियों नहीं कार्यक्रात्मत वर्षे-एक व्यक्तिस्य व्यक्तिक वर्षः — वेश्वतं क्षेत्रं वर्षे शैक्षः > कार्यिक श्राक्षणांत्र सामेन (১৯)३ व्यक्तिकाच्या वेश्वस



ন্ত্ৰজ্ঞবাতকমিদমগ্ৰহ্মানীয়ান্ত হৈছিকানী উদিবং শৰ্কানত জম। তানেৰশিতাং জ্ঞানমন্ত শিশং ছাত্ৰজ্ঞানবৰণ নকমে শিক্ষীয়া সৰ্জ্ঞানিসন্ত সংস্থান্ত সংস্থান্ত সম্প্ৰান্ত কৰিছে সৰ্কানিজন জ্ঞান্ত কৰিছিল এক সংস্কৃতি আলিক বিশ্বনিক নিজনিক জ্ঞানিজনিক জ্ঞানিক জ্ঞানিজনিক জ্ঞানিক জ্ঞ

## ধার্মিকের ভূখ দৃঃখ।

যে সমস্ত পৰিত্ৰচিত্ত মহাত্মারা স্বৰ্ধদা ধর্ম পদনীতে পরিজ্ঞমণ করেন, তাঁহাদিনের ইন্তির সংয়ম ও অংশর প্রকার বিষয় তথ বিষর্জন সক্ষমি করিয়া আপাততঃ তাঁহা-मिश्रक फुल्पलाओं निवास है छाड़ीजि हा। हें हो मण्डा पढ़ी, या इस है धर्मात्र है जिसकी न कतिएक इंशेटन अस्तक भगा अस्तक श्रकाद কুপ্রবৃত্তির সহিত লংগ্রাম করিয়া অনেক প্রকার সুংগভোগ কবিছে হয় এবং পাল-প্ররোচক বছবিধ বিষয় ভোগও পরিতারে করিতে হয়। অকিঞ্ছিবর স্তথ ভোগের শালসায় কেবল প্রবৃত্তি শ্রেটে ভাসনান र्टेल क्यम धर्माकात छेननी ह इन्जा मान् হয় না। স্ত্রাং প্রবৃত্তি নিরোধ চেতুস-रुष्करे वर्ष श्रद्वाराग ल्यारकत नवस्य नवस्य कट्छेत छेश्शक्ति इख्या भग्रद।

কিন্ত ইহা বিবেচনা করিলা দেখা উচিত, যে ধর্মপালন হেতু থার্মিক হাজি ইন্দ্রিস সংযমাদি অনুষ্ঠান করিয়া যেনন কিলিছ কট সম করেন, দেই ৰূপ অনবরত দর্মা সেবা দারা কোন অনিকচনীয় অলোকিক মধে মুখী হলেন কি না, বিবেচনা করিলে বিলক্ষণ প্রতীতি হয় যে ধর্ম প্রায়ণ লোকে যে অনিকচনীয় অপুর্বা মুখ ভোগ করেন, বিষয় মুখ ভাষার নিকট মুখ বলিয়াই গণা ইইতে পারে না। যে বাজি প্রকৃত ৰূপে

বামের অনুগত হয়, গালার খুছি, যুক্তি য প্রান্তি সমুদায় কলিয়েন্কালে ধর্মনে ৬৪ জ্ঞান করিয়া গমন করি না, সাহার প্রিত্র-চিত্রকোর ধর্মাধানের জিত কব, বার্কার উন্নত मञ्जू वर्षात्रण पुत्रुगंत स्थापित थारक, स्थ माध् श्रुताम अर्धाक्षण प्रशासन्, व्यद्वाद्दन कः तियः कदम् अधने शिधातत स्मामन व्यवनाका खेलनी इ इन्ट्रेंग्ड मभर्ग इष्ठ अन्द मर्काना श्रीष्ठ मनरक रम हे जनाव दियम मन्द्रेज मन क-शिक्ष अधिएक शाहब, भिन्ने धानामाना मधाया বাকি বে প্রফার অচিন্তনীয় দাশিক্য সূথ तम जानापन करत, जाशात म'त्र देवगांतक কোন সুবেরট ভূলনা হট্টার পারে মাত্ মেট পুলালে প্রিন ব্যান্থৰ ছাত্ৰিল इक्त्रण ऋगेम्य १ स्, जिल्ला प्राप्तवात् । १ ह भुष्ठ सूर्य शहर अमृतिया अवलिख संस्ट्रह খাকে জনত হ' ১৭৫৫ ও নেতেম আকার আমলদ ভরুকে উল্লিভ না

ইছ, নগান নাট, সে ধর্ম পরায়ণ লোভ কেন্দ্র নাইল সভবেদী সাধ্যে তিক সংগ্রেদ অনিকার কটিছে নারে না। নিজেন্দ্র উপা-দের জন্মন করা, অসুর্বি সাজায় সাজিত ভরা, উন্নত অটাভিকাম নাস করা, সপুর্বি প্রক্রেদ প্রনাক্ষা, অসংখ্যা দাস দাসী ধারা সেবিভ হওয়া থকা জীবি কোকের নক্ষে স্থান্তি হয় না, দিও ভজ্জনা প্রক্রত থার্কিক ব্যক্তির কিছুনাত্র প্রথের অভাব থাকে না। যে

ধর্মা পরায়ণ সাধু লোকের মনো ভূমি পাপ কন্টক দ্বার! বিদ্ধানা হয়, যে ব্যক্তির শহঃ-করণ প্ৰাক্ষা জুলিছ বারিতে খাকে এবং যে পুৰাশীল পুরুষ নিয়ত পর্যান্তর করিয়া জগদীশ্বরের প্রেম শী দূর পান জনিত অনিকাচনীয় স্কংখ স্থবী হর, সেই মহা পুরুষ দিবসের অফীম ভাগে শাস্ট্র ভোজন করিয়া **যাদুশ তৃংপ্ত ল**াভ করেন, ধশাহীন রাজ রাজেখন চবরা চোরা শেক পেয় চাতুৰিবৰ উপাদের অন্দাদন ফ্রিয়াও ভালার সহস্রাংশের একাংশ স্তর্থ . ভোগ করিতে সমর্থ হয় না। বে ধর্মানি লাগু ব্যক্তি পরম পরাৎপর পরমেশ্বরের িটিভ রূপ অমূলা ম্থিনয় ছার ভাগন কণ্ঠ বেল্ছে ভারত্ করে, যথপামান্য নিরায়র ছারা ভাষার যাড়াশ শোনে তথা ধর্মা হীৰ বাে াক্র শত শত স্থানিস্কার ছার - কি ভাষার এক ক্ৰামাত্ৰ কোভা ক্ৰাডে পাৱে ? সে মশ্লেদ্বে প্ৰিত্ৰ পূক্ষ সভতঃ শাৰির নিং কেজনে কাজ ক পৰা করেবেদ কাজি ৰামানা গ্ৰহালীর সাখ্যে দেখা ক্রিয়া দে কুর্বা প্রাপ্ত হয় ডিংকটাভিত হল কিনি বর্জি রেজ মে-নিবরে সংম্যানিয়াও যে অসাস্থানিত মেটুর্কা স্থাৰ স্থান্ত্ৰ সন্ধান ফালিছে পাটে ঘা। যা শ্বিকের ১৫ সংখ্যা হে সন্ধানহয়ে মতুব্যার ছুণ্নের মচুবা সম্প্রেমন ভাত সুপ্রর, ভাষ্য ৰক্ষতভু ভোগী মাধু লোগেই আৰু গস্ত আছে, দীন ভারাগন ধর্মানীল ব্যক্তি কোন क्षार्डंड मर्ड चीत घरमामामा छ-দরান্ন বিভাগ করিরা যে অনিবৈদ্ধীয় স্থাপে क्षभी हत्यम् यभ ध्यत्रयभ मानादा अकी द्यादक সহস্র সংক্র লোককে দুর্গত দ্বা ভোজন খ্যাইলাও সে তথ আখাদন করিতে সম-र्भ इत मा । कक्षात्रः यथार्थ धर्मासूतानी वाजि কিপ্ৰ সম্পূৰ্ণ উভৱ অবস্থাতেই সমভাব ও প্রধান্তনিভ থাতিয়া এক অনির্বাচনীয় স্থা इहाण कलार । भणानीय चाक्कि पर्वा मंग्य-পেত উল্লেখনৰং নিচলিত চি**ভ হয় না এবং** বিপাদেও মুহ্মান হয় ন।। প্রমানী ও আন-বিং∽ৌ महत्रा य विषय मरनत दिन्धुमाळ স্পানে উগাউ ও বিচলিত চিত্ত হাইয়া অৰ্থেৰ প্রকারে আপনার অকল্যাণ উৎপাদন করে,

বথার্থ ধর্মপরায়ণের মন ভাষার প্রচুর শ্রীনান দারাও আন্দোলিত হয় না। বে ব্যক্তি সম্পাদর শিখার দেশে অধিকার হইলেও আপনাকে উক্ত মনে করে না এবং স্তরাং পত্রন আক্রাও কথন শক্তি হয় না। যে ব্যক্তি ধবার্থ কপে ধর্মের মর্মা আবগত হইতে পারিয়াছে, সে ব্যক্তি জানে যে "চক্রবৎ পরিস্কৃতিত ছংখানিচ স্থানিচ" অতএব সে অভ্যানী বিষয় সম্পদকে সংখ্যা নরিয়া ক্রমে ক্রমে নিত্য সম্পদ্ধ উপাজান ব্রিয়ে ক্রমে ক্রমে নিত্য সম্পদ্ধ উপাজান ব্রিয়ে প্রাক্রম

दिनास धर्माधीत वाङ्गि अल्लामानाष्ट्रहेटला তদীয় আত্রয় দারা কেবল স্থীয় কুপ্রবৃত্তি সকল চরিত।র্থ করিয়া আপনার অনেষ প্রকার অক্যাণ উৎপাদন হরে, নানা একার শারীরিক অত্যাচার করিয়া নানা ক্রেশ ভোগ করে এবং অসংখ্য **প্রকার জ**-रक्षाहर्काम कतिया आशादक विकारीत शानि নিশিউ করে, ভাগার **সেই ক্ষণিক সম্পদ** নিভা বিগদের কারণ হল, এবং অস্থায়ী मामाना प्रथ कत्य हिन्द्राही शाह हु: ब छ-ংগন করিতে থাকে। কিন্তু ধর্মানীল বাক্তি মাপদ প্রাপ্তা ইইলো কদাপি এপ্রকার দুঃধ ভোগ करतम मा, जिमि मण्यामत् भाषारया আপনার নাধুইছে। সকল সম্পল করিয়া ্হ পর কংলের হুখে।<গল করেন, তিনি জানেন বে কুপাময় কগদীশ্বর নির্ধনের উ-भारतत खना धनीरक अर्थ धनान कतिहार छन्। फुर्वत एवत अस्थात कामा यशिए छेत यश क्षमान করিয়াছেন এবং অজ্ঞানির উপদেশের নি-মিত জ্ঞানবান্কে জ্ঞান দান করিয়াছেন। এই জানিয়া তিনি স্বকীয় স**ল্পদ স্বারা** কেবল অন্যের চুঞ্ছ মোচন করেন এবং সহপ্রে অর্থ করে করিয়া সংসারের **অসংখ্য** উপকার সাধন করেন, ভাঁছার সম্পদ্ ভারা काहात् कियम् कारण विशव हम् मा । क्रवर्ग (यमन वक्ष मूला भनित्र महिष्ठ काष्ट्रिष्ठ হইলে সুরাগ রঞ্জি হয়, ডিনিও লেইৰপ : त्रीम मल्लामरक वर्षायुक्त कविहा चानू स त्ना-ভার শোভিত করেন। বিশেষতঃ বে ধর্ম তত্ত্বিৎ সাধু সমুষ্য বিশাপিতা ও বিশানিয়া छ। अक्नाक आहि शुक्रवर्ष, बानद्वत्र प्रकृत मन्मारमञ्ज कांत्रन कारनन, वाहात घटन ५ र क्ष मृह्क अजात विनामान बादक, व এক্ষাত্র ঈশ্বরের করণা ভিন্ন আমরা কি कृषात अबः कि जुकात कम, कि शतिथार नत बजा, कि निवादमत इन, हेजापि कान थ-কার জীবনাবলয়নই প্রাপ্ত হইতাম না,তিনি সম্পদ লাভ করিলে উহোর মন হইতে যে এক আশ্চর্য্য ক্রডজ্ঞতার ধারা উল্থিত হয়, ভদ্মারা তাঁহার অন্তঃকরণ সর্বাদাই এক च्याक्त श्री चानस्त्रत्म अविक वात्सः। जिनि श्वकीत मण्यम द्याश कता कशनीश्वदात नि কট কুতজ্ঞতা প্রকাশ করিয়া যাদৃশ স্থা क्क्यी हरमन मश्मात मध्या म ख्राचेत दुलगा निवात इत पृथे इत मा, शत् ह (कान शित বাক্তির নিকট হটতে কোন স্থ লাভ ক-রিলে প্রীতি রদে মিপ্রিত হইয়া যেমন সে মুখ দিগুণীভূত হয়, সেই রূপ তিনি স্বীণ প্রিয়তম পর্মেখরকে আপন সম্পদ প্রন-কানিরা শত সহত্র গুণে হুবী হরেন। এই कर्म धर्मानील नाष्ट्रि मन्यमाक्ष्म इंडेरन ख দক্ষ অনিবাচনীয় অপৌকিক স্থু ভোগ করেন, ধর্মিবিহীন বাজিক কল্মিন্কালেও সে সমস্ত তুল ভ স্থাবের রসাস্থাদন করিতে পারে মা ।

ধর্মনীল ব্যক্তি যেমন আপন সম্পদকে অপুর্বে ধর্মারনে অভিধিক্ত করিয়া তজ্জ্ব-নিত সুধকে দিখানীভূত করেন, সেই ৰূপ ধর্ম রূপ মহাসহায় অবলয়ন করিয়া বিপ-দকেও অতিক্রম করিয়া খাকেন। তর্ক্তিত সাগর মধ্যে নিশ্চল শৈল যেমন স্থির ভাবে উন্ত মন্তক হুইয়া অবস্থিতি করে, নেই ৰূপ নিকল চিক্ত সাধুরাও সংসারের বিপদ তরঙ্গ মধ্যে স্থিরভাবে কাল ক্ষেপ করেন। সংসার মধ্যে রোগ, শোক, জরা, মৃত্যু, ছুংখ, দরিক্রতা নিয়তই বিচরণ করিতেছে. बदः भर्यात्रं क्रांस मकल मसुवारक है आश्र रहेरण्डा किस धर्म विशेष वाजि विशव-वाख इटेटन बाजून का ठत इस, वर्मणील वा-कि कथनहें देशकाल हदान ना, जिनि द्या-পার্জিত ধর্ম ৰূপ দুঢ়তর চর্ম বারা সাংসা-রিক বিপদ যাণ সকল নিবারণ করেন,তিনি भी बाब तिरहान- इहेरच शतिहाउँ दहे-

য়া দীনাবস্থায় পরিণত হয়েন, তথাপি ভাঁ-**হার অমুলা মানসিক শাস্তি অন্ত**রিত **হয়** না এবং ভাঁছার ভানভাষ্ট ও মান হানিছ-ইলেও তিনি অধৈষ্যা ও আকুলিভ চিক্ত क्रांत्रन ना, जिनि त्मकारण या व्यवकांत्र भ-তিত হউন ভাগতেই তিনি শ্বীয় উপাৰ্জিভ ধর্মা ভরের আলোচনা করিয়া ভৃগ্ন থাকেন এবং তাহাতেই প্রাণ প্রিয়তম পরম পুরু-লের প্রেমবারি পাল করিয়া পুলকিন্ত 🕏 য়েন। উছেরে সামুখন ফুপারী হইয়াকে: বল সামানা বৈধানিক স্থখ ভোগের প্রজ্ঞান माग्न वाज वात्क मा ६११ चन्द्र माज्य अकी-ভূত হুইয়াও মোহমনে উল্লুভুইয়া আৰু লীক মান্যশাও প্রতিষ্ঠা গৌরবের পশ্চা-ভাষী হয়না, ঠা∌ার বলিড় মন বিলে-েণর দৃত্**শৃত্বল ভিন্ন করি**য়। সংকীর্ণ ভাব পরিত্যাপ করে একং অপুরে উদারভাব গা-রণ করিয়া স্থীর প্রাশন্তা প্রকাশ করে, স্থ ভরাং সামানা বৈঘয়িক স্লুখের বিরহ জুনাও তিনি কাতর হয়েন না এবং সাংসাবিক মান যদ ও প্রতিষ্ঠাদির ভঙ্গা হৈতৃও জাঁহার স্থ ভাসের সভাবনা হয় না।,ভিনি কারা-রুণ হইলেও ওপায় একাদী নিস্তুত থাকিয়া নিকিমে ঈপরেতে চিত্ত সম্বান করিয়া স্থী হয়েন, এবং কোন অবিচার বশতঃ निस्तापन मध थाथ हरेल ५ ही ११ ही ११।-কর গমন পূর্বেক ভাছাকে স্বায় পিতৃরাস্থা পৈতৃক ভূমি জ্ঞান করিরা চিন্তুকে এশান্ত রাখো, তিনি বালি মূতুর লামে গাঁচত হ-ইবার উপাক্রান্ত হয়েন, তথ্যও ভাষ্ত্রেক মকলানর মহেশরের নিরমান্ত্রত কাত্য क्रामिता व्यविष्या इत्तम मा। त्य अर्थानीज মশ্বে একমত্রে অনাধি পুরুষকে আপে-नात विभएपत तक् अ मण्यापत मधा अक्रम সক্তর্ণন করে: সে কি আর কোন বিপদ-কে বিপদ জ্ঞান করে? নাকোন চুঃধ্রে ष्ट्राविक १४ ? जानस्यर खन्नाना विद्यान न वि-ভেডি কুত্ৰ্দন" সভএৰ আন্ত্ৰিত কাৰ্য্য कातन स्टब वह रहेशा यकि इन्सेनील वा-ক্তিকে কথন কোন প্রকার বিপদে পতিত स्वेट का. ख्यालि जिनि कादाट धर्मावदी-न त्वादकत गात यदेशक अवाह इत्सन

না। স্থাপ যেমন অগ্নিতে দক্ষ হইলে মলিন না হুইলা আরও উজ্জুল হয়, ধর্মানীল লোকেও দেই কশ বিপদ্ধাপ অগ্নিতে পতিত চইপে সুনা না হুইলা সীয় এভা প্রকাপ, করিতে পাকেন।

करूना निधान कशनी वत धर्यालगाहर म-माञ्चामित्रात कता य मकत अधिक्रिक्तीय ন্ত্ৰ নিক্ষি করিয়া রাখিয়াছেন,তাহা আর কাষারও ভোগ করিবার **সম্ভাবনা নাই।** তৈনি বিশ্বকেত্রে যে চিত্তাকর্মণী ফোহিনী শোভা বিভার করিয়া রাশিয়াছেন তদ্প-নে সকলেরি মন মোহিত ছয় এবং 'সক-लित्रे क्षित्र प्रथत मक्षात रुत: ममु-লত শিখর শোভিত নিকল প*র্বার শো*নী, নীলোজ্ল দলিল পূর্ণ গ্রেমারিত সমূত্র স-कज, भा दीमार छमी छेब ड मारा विशिष्ट डक्न-পুণ নিবিড় কামন এবং মনোহর হরিভবর্ণ শেতিত সুত্ৰশন্ত শন্ত কোল সক্ষণাৰ ক-िटन करिन्त मर्गमा आक्वारमत जिल्हा হয় ? ব্যাতিক কোনিল কুলের মধুর গান, বন্যাতি ভূগদলের উল্লামভাবে নিশ্স্থিকা-বোর মানাবের মূতি এবং সঞ্চাস্মাগচেত চাড়েদশন অভিনৰ মল্ছ মাকুচের মুরুম্পণ-শ এবং ড্ৰিফাল দিন বি জলের লান পান অভুতি অর্জিম ন্তব কোলে কাইর মা আনন্দ গ্ৰেম ? কিন্তু ইত্যাদি স্থানির শোভা সন্দ্ৰীন ও অকুলিম অংশ্ৰম্ম সুধা ভোগ হার। ধর্মাত্রা মমুষা যে একার আনন্দ লাভ करतन, जाहा व्यशत वास्क्रित क्षमयक्रम हरे-বারও উপার নাই। ধর্ম প্রায়ণ মহায়া। বাজি যে সময় কোন সমুদ্র তটে দগুর-মান হটার' ভদীয় আশেচায়া আশেস্ত ভাব নি-ব্ৰিক্ষণ করত তাহার রচনা **কর্তা ক্রপদী**-শ্বরের অন্তান শক্তির বিষয় **জালোচনা ক**-রেন, ভংকালে তাঁহার **ছানয় মধ্যে যে আ**-তিরনীয় আনন্দলহরী সংগারিত হাইতে থানে, আদার সহিত কি কোন **স্তথের**ই ভুলনা স্ট্রের পারে? তি**নি ধর্মন আডেংকা-**কোপিত লোভিত ভ্ৰণ ত্ৰা **অনুপম ভ্**-র্ঘাম ডল মধ্যে জগত প্রসমিতার পরম সৌ मर्था व्यवस्थाकम कतिमा श्रुमक मूर्व इरम्मः धवर रभन जनग्रासनाक धार्मस्मातिनी विडा-

ৰবীর স্থাতিক ছায়াতকে গ্রহন করিয়ে সন্দর্শন করিয়া বিশ্বপিতা অধিল বাথের অমৃত গুণ গান করিতে থাকেন, ভিনি ৰ थन स्टूबन विरुक्तनेपटक रमरे वि**रम्बरत**ह মহিমা কীর্ত্তন করিছে আবণ করিয়া তা-হার সহিত একডান হইয়া ভগদীপরের মহিমা ঘোষণা করেন। তিনি যথন বন্য পশু বর্গকে স্থাস্থ শাবকের প্রতি স্থান্তা-বিক বাংসন্য ভাব ব্যক্ত করিতে সন্দর্শন कतिशः विश्वतिद्व कन्नगा नन्नुराज्ञरू भनरक निम्ना कातन अबर यथेन जिनि क्षाजाक पू-র্বাদেশে, প্রভ্যেক তরু মূলে, প্রত্যেক কুমুম ক্ষেত্রে,প্রত্যের স্থাদ্য কলে,প্রত্যেক বায়ুর हिल्लारन अवर श्राट्यक नेनी करन मिहे म-নাতন পুরুষের অপরিমেয় অগাধ মহিমা প্রভাক করিয়া পরিতৃপ্ত হয়েন, তৎকালে जीशत क्षमत भन्दित त्य **अनुम् जानम** উৎস উৎসারিত হইতে থাকে, তাহা কি অপন্ন বান্তি দ্বানা কোন মপেই অনুভূত হুইতে পারে? ধর্মজীবি সাধু পুরুষ ভিন্ন আর কোন ব্যক্তিই সে অন্তুপম আকর্ষা প্রখাভোগে অধিকারী **হইতে পারে** না ধর্মাত্ম ব্যক্তি সাংসারিক বাহা বস্তু সকল হুইতে যেমন উক্ত প্রকার অনিকটেনীয় **সুখ** ্রাপ্ত ২০, সেই নগ স্বীয় অন্তঃকরণ মধ্যেও এক অস্তুত আন<del>সৰ উপভোগ করেন। য</del>-পন কোন উত্তর অন্তঃকরণ একত্র সংমিলিত হয়, যখন এক মনের সহিত **অন্য মনের**, शिलन हरा, यश्रेन छूटे वाक्तित्र शृथक् इन्द्र প্রেম রবে জবীভূত হইয়া মিজিত হইয়া যার, যথন চূই মনে বিজেছদের বেশেমাক না থাকে তৎকালে যে কি **অপূর্ক স্থরের** সঞ্জে হয়, ভাছা কে ব**ৰ্ণন করিয়া শেষ ক**-রিতে পারে? তংকালে ছুই দেছে এক প্রাণ ববতি করে, ছুই মনে এক ভাবের छेमस इस अदर छूडे मूर्यः अक् शकात वाका নিৰ্গত ক্ইতে থাকে। যে ভাগাবান বাজি এই আশ্চর্য্য ক্রম সংক্রম স্কুথের অমৃতা-ज्यान लाड कतिशाटक, त्य वाकि जनकर অনুগত হইয়াছে, যে এমুখের নিকট পা-र्वित यात्र कान सूर्यहे सूच दनिया भग रहेटज शास्त्र हा, भारे खहाकुता स्म छ छ-

ean जिक्के अना सूथ नीतम (बाय रहा। कि बहुका यकि मसूरवात नहिङ हिछ विनिम्स क्रिमा अकामृन अभूत छथ नाउ कतिराज भारत, रम यनि युगामराजासत-হিত অন্তঃকরণের বহিত আপন অন্তঃ-ক্রুণ মিলিভ করিয়া এমন আশ্চর্য্য আনন্দ লাভ করিতে সমর্থ হয়, তবে ঈশ্বর প্রাণ ধর্মারা ব্যক্তি যে একমাত্র প্রীতির আকর ও অবিতীয় কুথের সাগর জগদীবরে মন প্রাণ সমর্পণ করিয়া কি পর্যান্ত অকৌকিক यानत्म यानिमक रम, छारा दक विनाउ शाद्ध ? धर्मात्रा मिटशब्र, अरे व्यनिकानीत মুখই সকল স্থাধের দার এই ঐীতিরস সং-ভোগই সমন্ত ভোগের প্রধান। স্বিদ্ধর ভক্ত ধর্মনীল বাজি বংকালে আপনার নিভূত জ্বয় মন্দিরে সেই দ্রোধার ও স-কলের সার সর্কেশ্রকে প্রতিষ্ঠিত করিয়া ঠাছাতে স্বীয় আন্ধা সমিবিট করে এবং ভাঁহাতে আপনার দর্বন্থ সমর্পণ করে, ত-ৎকালে বে নেই অসামান্য তাগ্যধর ব্যক্তি कि अनिर्यपनीय चर्तीय स्ट्रांथ स्थी रय, ভাষা কি কোৰ ৰূপে বাক্যেতে বলিয়া শেষ করা যায়,তৎকালে নে ব্যক্তি দেই অমৃতা-नम श्रुक्रास्त्र (अम स्था भान कत्र शृथिवीत र्म (भाक नकनरे विच्छ रस এবং मःभा-রের দকল ভার ভুলিতে থাকে, তথন ক্রমে **ष्टाहात वाका**ंक्रेश्च इस्न, (नवा निश्वन इस्न. -क्षेत्र दिश्व इस अवेर शांज न्यामा तहिल इस ७-९काटन त्म इंड् लाटक शांकियां हे लाका खत व्यक्ति इस जवर उद्यम (म काटम जाननाटक ७ বিশ্বত হইরা যায়।

## আত্মোৎকর বিধান।

कि कि केशा बाजा आखाज छेरदर्व तीयन वरेट शादन, जर तमुगादन अरव-यर अरुक केटल अरुम आखारकर्य दि-भारनत केश कि के बाल जरून कि ना, जा-लोज नखान केश आवश्यक आखारकर्य दियाल के नेकि काला कि अरुवादन करिता क्लिकिट अरुवादन करिता क्लिकिट अरुवादन करिता गाउन केशा काला कर्यादन करिता करिता काला करिता स्कित कर्या कर्यादन करिता करिता

बात शखन इरेबाट्स, खटस्ख् अवस्य अवश विश्वाम वक्त बूल ना इट्टेंग क्षर्यावकारतत কেবল বক্তা মাত্র সার হয়, শ্রোতারও কোন বিশেষ কল দর্শেনা। অভএব উল क्षम हे चटश्रत नगर व्यतीक भनार्थ नरह। यात्रासुमञ्जासिनी ও আञ्चरणाधिनी नात्म य ছুইটি অদাধারণ শক্তিভার। মনুব্যের আকা শোভিত হইয়াছে, তাহা বিশেষ বি-निष्ठ थाकिला चार्याथ्कर्य विधान मस्व কিনা, এমন সন্দেহই উপস্থিত হইতে পারে না। কুপানিধান বিশেশর আমাদি-গকে এৰপ ক্ষমতা প্ৰদান করিয়াছেন, যে षामता इक्शयुनात जुक्न विवस्त्रहे हिन्द পরিচালন করিতে সমর্থ হই। আমাদি-रभन्न भरतन भक्ति विषया कथन भरनानित्वभ করিলৈ আমরা অবায়াসেই উহার বাবতীয় অতীত অমুষ্ঠান সমুদায় প্রত্যক্ষ এবং বর্ত্ত यान तरकण्ण नकन्छ नडकंडा भूकंक ध-তাবেক্ষণ করিতে পারি। উহার অশেষ বিধ বৃত্তি ক্ষমিত যে সমস্ত অন্তুত কাৰ্য্য-জাত নিষ্পন্ন হইতে পারে, কি কি উপা দের কলভোগে উহার অধিকার আছে এবং কত প্রকার কউট বা উহার সম্ভকরা স-ন্তব, তৎসমুদায়ও বিলক্ষণ অবগত হইতে পারি। এইকপে আমর। আপনাদিগের যথাৰ্থ প্ৰকৃতি কিৰপ, কি উদ্দেশেই বা আ মরা তাদৃশ প্রকৃতি দম্পন্ন হইয়াছি, তা-हात खानवारक नमर्थ हरे। अञ्चल हेशल উলেখ করা আবশাক, আমাদিগের বর্জ মান অবস্থা যে ৰূপ কেবল তাহাই আমরা বুঝিতে পারি, এমন নহে, উত্তরকালে কি ৰূপ অবস্থাপ্তা হইতে পারিব, ভাহাও विनक्षभ अञ्चलक किंदि नमर्थ हरे। वि-শ্ববিধাতা আমাদিগের হৃদয় ভূমিতে ধে অনির্দেশ্র বর্দ্ধিকুতার বীক্ষবপন করিয়া দিয়াছেন, ভাহাও নিরীক্ষণ করিতে পারি **এবং मसूरा कृत्यत हत्रम উत्मिश्च य शूर्व**छ। তাহাও দৃষ্টি করিতে সক্ষম হই। পশুগণ व्यापका वामना त्र ७७ खार्क र-रगाहि, উक्तन आधारवाधिनी अक्रिके छा-ব্রিকারণ। সামরা অবিমল বুজি ভার। **अभव जनविष्ट्रण विवद्य जनाप्राटम दे** 

প্রবেশ করিতে পারি: স্বাভাবিক সংক্ষার সম্পাল্ল প্রাণ্ডিবের ভাষাতে কিছুমাত্র আধি-কার নাই। কিন্তু উক্ত শক্তির অসম্ভাব इन्हेटल प्यारकादकर्ष विधारमञ्जूषात धान-জিট্ খাকে না ) . কি করি**লে অপিনার** ম-कत रश, यनि तमरे छ्लानहै मा धाकिन, करन ভয়াভর চেফাই কেন হইবে। আজোৎ-कर्क माध्यम धार्माम्यतं मण्यावं सामाजा আছে, ইহা স্পাট প্রতীতি হইলৈও উহার অনুষ্ঠান যে এত অপ্প দেখা যার ভাহার কারণ আর কিছুই নতে, কেবল জালামু-मद्यारन अनुताध मा थाका। 'मिरिक्स अ-ভিনিবেশ পুৰ্বেক্ অক্স প্ৰকৃতি পৰ্য্যালোচন করে এমন লোক অতি বিরল। যদি ময়ু-যোৱা কথন ভাহাদিগের অভ্নয়ার প্রতি नुषि निः किश करत, छोड़ा इहेरन धकेंगे। শ**ুনি ভিমিনাইত অগাধ অখতে বাতী**ত তথার আর কিছুই দেখিতে পারনা। এই ৰূণে অধিক সংখ্যক লোকে প্ৰায়ই স্বাস্থ্য-র সহিত কথন পরিচয় না করিয়া জীবিত पारक १२१ मणाकारल (तर विमक्क न करत !

কিন্দ আমাদিখের আছাত্ত বিবরে অভিনিবেশ ও অনুসকানের কমতা আছে, र निवाहे या चाचात छे ६ वर्ग माध्य कहा म-মুব এমন নছে ইছা অপেকা অধিক গুরুতর षाद्र अकृषा स्रमायात्र मामार्था सामानि-গের অধিকার আছে। যাহ। ছারা আমরা হিত চিত্তা, কর্ত্তব্য বিবেচনা ও আত্মশোধন করিতে পারি, তাহাই দেই অন্তুপম শক্তি। আমরা ঈশ্র প্রদত্ত যত প্রকার প্রসাদ লাভ করিয়াছি, এইটা সর্বাপেকা যেমন গৌ-রবাবহ তেমনি ভয়নর। যেতেওু আপনার শুভাশুভ বিষয়ে মনুখাজাতি যে আপনিই দায়ী হইয়াছে, উক্ত শক্তিই তাহার মূল। আনরায়ে সমস্ত মানসিক শক্তি সমূহে অধিকারী চইরাছি, তৎপ্রুদারকে আমরা ইচ্ছানুসারে চালিত ও উত্তেজিত করিতে-ও সমর্থ হই। আমাদিগের ছুজার রিপু-বর্ণের কুটিলগভি ও মলিন অভিসন্ধি নক-लात था उ एक गारधान इ दारि व निमान-रमत काग्रख कमन नरक, जाकानिगरक नानिज क वनकर कतिवातक कमेडा जाटकी जा-

यामित्रत तृषि इति ७ मनी तात्री सहसा-त त्य अवदर्शालक देशका विनी करेटल शादत. তাহাই কেবল আমরা স্বানিতে পারি এমন नटर कियु वाराहक उनस्केल इंड्या नेखर তাদুৰ উপায় বকলও নিয়োগ করিতে পারি। এতন্তির আমানিবার ইক্তান্ত-শারে চিতার প্রবাহ ক্রমবা পরিবর্তিত করা কোন নিশয়ের **দর্শ্মগ্রহ করিবার অভিলাব** হইলে ভাহাতে বুজিচালন করা, পূর্বভা-বের প্রতি কির দৃষ্টি রাথিয়া বাহাতে ভাহা यहिद्रा था श इंश्रेश यात्र, मर्क धायटपु छा-হার চেক্টা করা ইত্যাদি বছবিধ ব্যাপারে-র উপরেও আমাদিগের আধিগত্য **আছে**। **এই**केश **भाषामा**धिनी मेक्टिरे मानव शक्त-তির প্রকৃত উদার্ঘা বিধারিনী অমূল্য সম্প-ভি ৷ এসম্পত্তির অধিকার সত্ত্বে আমা-मंत्र कात कि इत्र है अभिवृत्ति नाहे, अकरन আমরা যে কোন স্থানে যে অবস্থায় অব-স্থিত হই না কেন, এই সম্পাত্তির শুভকর नाशास्या स्य व्यवचार कथन ना कथन छैर-ক্লুফ্ট ভাগাভোগে সমর্থ হইতে পারিব, তা-हाटल जात **मः ग**ञ्ज कि ? वदश विटवहनः করিলে জীবন পথের নিম্নতম প্রদেশ হই-তে প্রস্থিত হইয়া পরিশেষে উহার পূর্ণতা ৰূপ প্রাকান্ত প্রাপ্ত হওয়াই আরও অধিক স্থের বিষয়, অতএব বে কোন বিষয়ের আবিষ্কার করা মনুবোর নিভাস্ত আৰম্ভক বোধ হয়, তশ্বধো আপন প্রকৃতি নিহিত **উक्ত आहारगारिनी गक्तिहै अवधिक भरवय-**ণার বিষয় এবং সর্বভাষত্তে অত্যে তাহারই व्याविकत्। विद्यम् । এই পরিদুর্ভমান ভৌ-তিক জগতের উপর যে কডদূর শক্তি প্র-कारणत উদ্দেশে याग्य वृक्तित एकि रहे-য়াছে, অজ্ঞান ডিৰিরাক্ত্র অসভালোকেরা তাহার যেমন কিছুই অমুভব করিছে পা-रतना, त्मरेकल जाकरणाविती: मस्मित्रक एव কিপৰ্যান্ত বিস্তৃতি, ছুৰ্তাপ্যক্ৰাৰ প্ৰায় কাৰ্য-तक जारा विकास विकास रहा ना । इक्समान বাছ প্রফুডির উপরে আমারিনের বর্ত প্র-कार मामना बाटर, केक मांकई दर नवी-CHAIN SERVICE WAS MINE

শক্তি প্রভাবে নহন্ত ছুত প্রপক্তের ঘারতীর বাাপার নকল নাশ্যম হুইতেছে, ভারা অ-পেকাও যে উরাতে শুরুতর এশী শক্তির আনিকার আহে, তাহা হুপ্নেও কথন মনে করিমা। ইং কি মুক্প আক্রেপের বিষয় যে করুল সহীয়লী শক্তিও আমাদিগের নিভ্ত মানস মন্দিরে চিরকাল অন্মুভ্ত ও অব্যবহৃত হুইয়াই প্রস্থে রহিয়াছে! কলতঃ আন্ধোধকর্ষ সাধন যে সম্ভব এশ-ক্রিই তাহার নিদানভূত হুইয়া আমাদিগের প্রকৃতি পাশে উহাকে শুরুতর কর্জব্য কর্ম কপে নিশক করিয়াছে।

এই রূপে আত্মেৎকর্ষ বিধান বৈ সর্ক ৰাইসন্তৰ ইহা এক প্ৰকার প্ৰতিপদ্ধ ইইল। এইফণে তাহার স্বরণ নির্দ্ধেশ প্রবৃত্ত হওয়া शाहेटलट्ट, असुधातम कहिता (मर्थिटन मा-মান্যাকারে ইহার মর্মগ্র করাও বড় कठिन साभात नरह। त्सान वृक्त है इंडेक बा कहाई इंडिक व्यथना यन है अक्टेक, त्कान **बन्दुत उर्देश माधन** चात्र दिक्के नटह, ८%-বল উহার বর্জন করা মাল। বর্জনেরও **চরম ফল বিভৃতি। খা**গর গ্রাণ রুত্তি অ-র্থাথ বিজ্ঞ হইবার শামর্থা কাছে, তারাই উৎক্ষিত ছইতে পারে। অভএন যে কোন ভাগাবান বাজি দক্ষ প্রবত্তে অংপ-নাকে স্থান্দশী সমীক্ষকারী সাহসী বরিষ্ঠ ও পর্ম স্থান্ত জন করিবার আশয়ে যাব-कींग्र महीग्रेमी मंक्ति ७ छेरकूके मत्नाइडि সমুসাম উত্তেজিত করিতে চেফা করেন. তিনিই সাজোৎকর্ম বিধানের প্রকৃত অ-रुडान कहिना बाटकन।

লোকের ভিন্নভিন্ন প্রবৃত্তি ও ক্ষমতামুগারে উক্তর্জাপ উৎকর্য বিধানেরও বছবিধ
ভেন্ন হইলা থাকে, কিন্তু আপাততঃএ সমস্ত
ভেন্নের বছল প্রতীয়লান হইলেও পরল্পরা সরক্রে নকলেই পরল্পর দৃঢ়তর নিবজ ও নমরেও হইলাই বজিত হয়। একমাত্র প্রমন্ন প্রার্থ বে আলা, বিজ্ঞান শাত্রবেড।
শতিত্রীক ক্ষেত্রার বিভিন্ন ক্ষমতামুলাক্র ক্রিক ক্ষ্মতামুলাক্র ক্রিক ক্ষ্মতার বিভিন্ন ক্ষমতামুলাক্র ক্রিক ক্ষ্মতার বিভিন্ন ক্ষমতামুলাক্র ক্রিক ক্ষ্মতার বিভিন্ন ক্ষমতার

नेमान, त्राहेकश स्वविष्ठात निष्णम भारताय-क्ष विवाह अमाना निर्मात अकृषि भेड न-মুদায় শক্তিই পরস্পার সমঞ্জনীভূত ও এক-তান হইরা বিশ্বিত হইতে থাকে। কৌন हृत्कत वर्कन मद्दर छेशह भाषा धामाधा প্রভৃতি প্রত্যেক অংশেরই বেমন রূপি হয়, বিবেচনা করিয়া দেখিলে ইহাও সেইকপ ভত্তৰ আলোহতৰ বিধানের বছবিধ भावा जाटक, बरे रूथा छुटिएनरे एक के मग-স্ত শাখা গরস্পার স্বাহস্থ ও ভিন্ন ভিন্ন প্রাক্রিয়া বিশিক এবং প্রত্যেকেরই ভিন্ন ভিন্ন উপায় আবিশ্বক করে, এরপ নিবেচন। করা উচিত মহে। উলিখিত বিষয়ের সম্পূর্ণকূপে জা-९भर्ता अह इहेटल शास्त्र, अहे जामारहा है উক্ত শাখা সমুদায়ের স্বতন্ত্ররূপে বিবেচনা করা বিধেয়া। অতএব এফ্ণে তাহারই বিস্তারিত বিবরণে প্রবৃত্ত হওয়া মাইতেছে।

**अथम इः धर्मा अङ्ख्यि ।** विषयुक्त छेषकर्म । অপর শাখা সকল অপেকা এইটাই विक लोकरवज्ञ ज्यान्याम। मसुरा वर्धन আভনিবিক চিত্তে আপনার অন্তরাগার প্রতি দৃষ্টিপাত করেন, তথন তাঁই।র যাব-ভীয় মনোরজি সমুদায় চুই শ্রেণীতে বিভ-ক্ত রহিরা**ছে দেখিতে প**ন। তথকা**লে** দে বিষয়ের মর্মাগ্রহ করিতেও ভাঁহার স্পৃহাজনো তিনি দেখেন ভোগভুফা, অজন স্পৃহা, বুভুকা, প্রতিবিধিৎদা, জি-ঘাংদা প্রভৃতি যাবতীয় নিকৃষ্ট বৃত্তিগুলী **ভুজা ভাঁছাতে**ই আসভাও প্যাৰ্ণিভ বৃ**ই**-য়াছে এবং মর্পতোভাবে কেবল ভারেরই উপকার, ছুটি ও মান সাধনেই সমুৎস্থক রহিয়াছে৷ কিন্তু যথন তিনি অপর শ্রেণী-টার প্রতি ফৃষ্টি করেন, তথন দেখিতে পান ভদন্ত সকল হৃতি গুলিই পক্ষাত খুন্য छ निध्यार्थ। कि चति कि मिज्र नकरनब्रहे হিতসাধনে তাহারা সমভাবে তৎপর রহি-शारह। आभीवदर्गत यथार्थ आहे तकार्ष ও স্থানাধনে নতত অমুরক্ত ও আছাবিত कतिबात निविद्ध उद्दित शुमक्ष्युमः काश्रादक প্রবৃত্তি দিতে পাকে। তাহার প্রতি তাহা-ता त्य अन् छत्रच्य कात नमर्गन करत. गर्व क्षरपुष्ठ काहा वस्त्र क्षतिएक भाताने मनुस्तान

কর্ম এবং পরম কলা।বের বিষয়। স্বীয় স্থাধ-াাধীও সার্থ বিয়োধী হইকেও যাহাতে তিনি माप्त परमाणिक्ये शतिष्ठे कर्खवा कर्या मकुल অপ্রতিহত চিত্তে সম্পন্ন করিতে পারেন, ভাল্রে: একবাকা হইয়া কেবল ভাল্তেই র্ভাষাকে দীক্ষিত করিতে থাকে। কিঞ্ছিৎ অসুপাবন করিয়া দেখি**লে অবশুই ই**হা াতীত হইতে পারে, যে উক্ত প্রবৃত্তি ব-্ক ভি মনুষাই অপ্রসিদ্ধ। ভূতধালী বস্তু-ফ্রা স্ববংশহা হইলেও ভাদুশা নরাকৃতি भिशाह ध्वकृति गुक्तिरक कथनहे तहन क-রিপে পারেন না। কোন বাজি যত লখু-চেতা ও নীচাশয় হউক না কেন, স্বার্থপরতা পাশে যত নিৰদ্ধ থাকুক না কেন, ভাছার নীর্য মান্স ক্লেড্রে অবস্থাই কখন না কথন স্থার্থ প্রতিপক্ষে যে একটি উদারভাবের 🛶 বিশুদ্ধ ধর্মান্যুমে।দিত কর্ত্তব্য ভাবের জ্ঞা-বিভাবে হইয়া থাকে, ডাহা সে কথনই আ-স্বীকার করিতে পারেনা। তাহার চিক্ত-*জুজাল* নির্ভর কুটিল গামী হইয়া **আ**র্থ শাধনে সমুৎস্কুক থাকিলেও তাহার জ্পয়া-কংশে ওপক্ষপাত খুনা বিচার ও নাধারণ মুস্পান্ত বিষ্ঠানে মৃত্ত অবহিত থাকা মৃত্যু-নোর সংবদা কর্তব্য " এই বলিয়া যে এক-টি মরুরধনি উঠারিত হইতে, থাকে, তাহা-্ত আরু সংশয় নাই। মানব প্রকৃতি স-मिकानी এই राभ निःश्वार्थ वृजि पि रक सामता क-খন সন্ধিৎ কথন স্থাতি কথন বা ধর্ম প্রবৃত্তি বলিয়া উক্ত করিয়া থাকি। আমাদিগের যত প্রকার শ্রেষ্ঠ শক্তির অধিকার স্মাছে, ঐ টীট সর্বোপরি এবং **সর্বাত্যে ঐটীর উৎ**-कर्घ माधन कता है आवश्रक, खुदहु छहात्र উংকর্মের উপরে**ই অপর সকলের প্রক্লউ** অংবির্জাব নির্ভর করে। নি**র্মাণ বিবেক** অংশকা কাম কোপাদি নিকু**ট বৃত্তি** দঁ কল সমধিক প্রবল হইয়া **আমাদিগের** ফেল্ড মন্দিরে উক্ত**তর কলকল শব্দ উত্থা**ন পিল করিতে পারে, সভা বটে, কিন্তু বিল বেকের জ্বাসিজ্ঞ নিঃশ্বন সমিধানে ভা-रामिरशह (सङ्गमस दूथा निनाम ऋपृत প∹ वाहरू इन्हा यात्र, न**्नक् भारे। उरात**्र खनीय अकारवड़ क्षकां वन्द्रवा व **रहेरतं** व

जाराता यथन ऋणिन चाचन विषय कारख চরিতার্থ হইরা মহা আক্ষালন করে, তথ-নও উহার তীত্রতর ভংশন ও গভীর ভ-রকর গর্জন ভারা **অবক্টাই সমূ**চিত ইইয়া थारक। উक्रकान चार्च मनामिनी ७ नतार्च বিদিনী বৃত্তি ব্যের পরস্পার সামঞ্জ ব্যা-পার অংশেকা আছা জানের জার কোন অংশই অধিক শুরুতর বলিয়া প্রভীয়মান হয় না। অতএব সাধাামুসারে উক্ত রুদ্ধি ৰয়ের পূর্বাটীর দমনও অপরটীর বর্জন লা-थन भूविक इन्हानरम विदिक्त बाटकत छ-ধিষ্ঠাপন করাই আজোৎকর্ষ বিধানের সা-রাংশ। ধর্ম প্রবৃত্তি নিয়ামক এই মহতী শক্তিদীর প্রতিপোষণ বিষয়ে আমরা ঐ-কান্তিক চিত্তে যত্ন করিলে উহার যে ক-তদুর উল্ভি হইতে পারে, তাহার ইযভা-করা ছুঃসাধ্য। বস্থাগর্ক্তে এবস্থিধ বছত্ত মহীয়ান্ ব্যক্তির উৎপত্তি হইয়াছিল যে তা-হাদিগকে নায় পথ ও সত্য পাদপের আশুর হইতে পরিভ্রম্ভ করিতে কোন শক্তিই শক্ত হয় নাই এবং ভাঁহারা সর্বাত্মক বিচার ও বিশ্বব্যাপিনী প্রীতিৰূপ প্রাক্কৃতিক নিয়মের উল্লেখন করা অংশকা করাল কুতাকের ভীষণ মূর্ত্তিও অধিক ভয়ন্তরী বোধ করেন नाहे।

## দেহের সহিত আত্মার সমস্ত্র।

জীরাত্মা হতনিন পর্যান্ত এই শরীর ৰপ পিঞ্জর মধ্যে বাস করে, ততদিন দেকের ল-হিত তাহার এক আশ্চর্যা ক্ষমির্কানীর স্ন হল্প দেখিতে পাওয়া বার। শরীরে কোন রোগের উৎপত্তি হইলে তৎক্ষণাৎ মনের বিজাতীর রেশ হইতে থাকে, এবং মন কোন বিষয়ে কিন্তু রা প্রানি বিশিক্ষ হই লেও শরীর শীর্ণ ও শীর্থ হইতে আহর্ত করে। দেহাত্মার এই বশ প্রকৃতি নিজ্ সম্বন্ধ হল্প প্রচ্ছাত্ম মহাস্থান্ত বিশিক্ষ আছে, কিন্তু এক এক সম্বন্ধ ক্ষমিন অন্ নারীরিক রোগ হিশেশে মনের একন অন্ নিজ হল্প এবং কোন ক্ষ্মিন ক্ষমিনিক শীর্ষা, জন্য শরীর প্রকৃত্তি বিশ্ব ক্ষমিন ক্যমিন ক্ষমিন ক্ আলোচনা করিলে বিষয় বিশয় উপস্থিত হয় এবং তাহা কোন মূপে প্রত্যক্ষ না ক বিলে প্রত্যয় করা কঠিন হইয়া উঠে।

शीपात अथम खेटबटकटच्छे मन निटलक इहेटक बादक। नजीत मध्या खतानि दकान श्रकात द्वांश श्रद्धम क्रिट्न बन्दक धका-গ্র ৬ বংষত করিয়া কোন গাঢ় বিষয়ে অভিনিবেশ করা কোন ৰূপেই সহজ হয় না, তৎকালে কোন গুরুতর বিষয়ের বি-চার করা কিয়া কোন তর্কের মীমাংসা করা নিভান্ত কঠিন হইয়া উঠে। অনন্তর রোগ यक सामी ७ वनवर इट्या नवीतरक वि-কৃত করে, মন তভই বিকিপ্ত ও বিচ্ছিন হইতে থাকে, রোগ সহকারে জানে মনো-বৃত্তি সকল শুক্ত হইয়া ভ্ৰম প্ৰমাদ জনিতে शास्क धवः व्यवस्थाय नाम् कान नार्कत भक्ति शर्या छ जूख इत्र । উत्रामानि मानजिक রোগে যেমন কোন কোন ব্যক্তি নার মানসোদিত বিবর সকল পোচর यथार्थ दिवदश्रत नाम अञास यश এবং তদনুসারে নানা প্রকার অসংলগ প্রকাপ বাকা উচ্চারণ করে,সেই রূপ শারী-রিক রোগেও স্থানেক ব্যক্তি অপ্রত্যক চিস্তিত বিষয়কে প্রত্যক্ষবং প্রভায় করে এবং নানা প্রকার প্রলাপও কহিয়া থাকে। খ্রাদি শারীরিক রোগে কাছার কাছারও মন এমন বিকৃত হয় যে ভাহারা নরন মুদ্রিত করিয়াও মানস পথে নানা প্রকার ভয়কর কম্পিত মুর্ভি শদর্শন করিয়া চमकिछ इहेन्ना छैठि अवश क्ष्म कि मा-পন পাশ্বভূ পিতা লাতা প্রভৃতি বন্ধু বর্গ-क विक्रोकांत मन्तर्भम करू ही श्कात क्रिंडि शास्त्र।

তাজার এবরক্ষী ব্যক্ত করিয়াছেন, বে একজন রোগী রোগ মুক্ত হইবার পর যাক্ত করিল বে ভাছার পীড়িতাবস্থার দে-যাক্তি বে সমন্ত বিষয় আবণ, দর্শন ও স্পা-দ্নিাদি করিয়াছিল, ভল্পো কিছুই তাহার শরণ নাই, ভিন্ত তৎকালে দে ব্যক্তি যে নক্ষ বিষয় ভিন্তা পথে দর্শন করিয়া হিল ছৎসম্ভাৱ শরণ রহিয়াছে चरत्रक मात्र विटलेंब कत्रिक्ष बर्गन कत्रिल।

কোন কোন শারীরিক রোগে বছক।-শের বিশ্বত বিষয়ও আঁসিয়া শ্বৃতি পথে **উ**नग्र रग्न। (य नंक्लं विष्यु कान बां(श) रे সহজাবস্থায় স্থারণ হয় না, কোন কোন সো-গোপলকে তাহা অনারামে মনে হয়। এ-কটি বালক চতুর্থ বর্ষ ব্যঃক্রেমের সমর ম-खटक यायाज भाश हरेश यह जना हरे ब्राह्मि। अन्छत् वद्धाःत अञ्च विकित्नानि দারা আরোগা লাভ করিলে, তাহার ঐ **विकिश्यामित विवस किष्ट्रे पातः। हिलमा,** সকলই বিশ্বত হইয়াছিল। পরে পঞ্চদশ বর্ষ বয়সের সময় একবার, জ্বাগ্রাত হুইয়া **প্রকাপে তাহার মাতাকে ঐ ম**ওক:গাতাদি সমস্ত পুৰ্ব হুক্তান্ত অবগত করিল। যেৰূপে আহত হইয়াছিল, যে ব্যক্তি চিকিৎসা করিয়াছিল এবং চিকিৎসকের যে প্রকার विश्वा हिल, उरम्मानसहै अविकल वर्ग করিল"। জরমেন দেশীয় একটি স্ত্রীলোক দীর্ঘকাল ইংলগু দেশে বাস করিয়া আপ্-নার দেশ ভাষা পরিত্যাগ পুরুক ইংল-ণ্ডীয় ভাষায় কৰোপকথন করিত কিন্ত একবার পীড়ার সময় সে অন্নরত জর-নেন ভাষা কহিতে লাগিল। ভাক্তার প্রি-हार्ड राक्त कतिहारहर, अकृषि श्वीत्नाक शी. ড়িত হইয়া ক্রমাগত এক বিজাতীয় মূতন ভাষা কহিতে লাগিল,পরে অন্তুসন্ধান ছারা প্রকশি পাইল, যে তাহার বালাবস্থায় সে ওএকেন কেশে কোন এক ধনির গুটে कर्णां भनत्क मीर्यकान वान कतिहा शुद्धाः জিখিত ভাষা শিকা কার্যাছিল, কিন্তু ত ৎপরে বহুকাল অনভ্যান বশতঃ তাহা স্-মাক ৰূপে বিশ্বত হইয়া গিয়াছিল, পুনকার এই রোগে তাহার উহা মরেণ হইল🖫 🕆 পীজিতাবহার যে সমস্ত বিষয় স্মৃতি পথে আসিয়া সমাগত হয় আরোগ্য লাভ করিলে **डाहा ममस्टर महन बाह्य मा, बाह्यहरू** তাহা পুনব্বার ভুলিয়া ধায়, অতএব বি-লকণ প্রকাশ পাইতেছে বেশারীরিক রোগ জন্য চিত্তবুজির বিশেষ ব্যতিক্র ঘটিয়া **के अ थका व गाणाव उर्शक रहा।** 

Abstraction a Mentel perhapphy.

শালিরীক রোগের সময় যেমন কোম কোন नाजित शुक्क दिन्ध ए विनय आमिस अर्तना-কড় হচ, সেই সপ উহার কমা অনেকের কুতি শভিত্র ব্যভিক্রমণ্ড ইট্রো কোন ও-্ত্ত প্ৰবেশ আক্ৰান্ত ইংলৈ অনেক লোক ্ত্র,ভাক ও মত্র শিক্ষিত বিষয়ও ক্লিয়া াল। উইলিস নামক একজন পণ্ডিত নাড়ে সহাসে যে কোন এক বাজি এক জ দুল্য আৰু ভাইতে আহোগা লাভ করিয়া এফল পারণ হীন কাইয়াছিল পে ভারার েগ্রে প্রয়া আরোগা পাওয়া ইত্যাদি কিছু মাল মনে পড়িত মং, অনেভার ছুই মৰে ারে জাগে জামে ভারার উক্ত বিশ্বতি লোব দ্রকটন: তাজার প্রিয়াড উল্লেখ করেন লে আহিরিকা ডেপীর একটি ছা**ত ওক্ষার** স্বাহানীতে মুক্ত হইয়া পুৰ্বাশিক্ষিত বিষয় नगुराह अधन भगुरम प्रियो नियादिण, বে সংখ্যা বিশ্যুবিদর্গত আর **উহার স্বর্গ** हर्न्ड मा, कम एवं एवं शुमर्का**त स्थानीजि** বিধারের করিছে, থেটিন ভাষার ব্যাকর-बाहि विकास के ब्रिटेट अंद्रांड के हैंथे। fur বেংচাভিএ৮ চ জুডন পাঠের হয়াৰ পাংশের আতি মৃত্যুগ্র মাণসংহথার করাতে ্লান্ডের ত্রান্ত্র প্রাকৃতিকিট **সম্বা**র ফিলা প্রায়ণ ছাইলো (ফোল কামর শালীরিন রোগে জলাবছিত পূর্ম বিষয় স-ক্ষান সাহত্ত পাততে, কিন্তু ভৰ্মুবেৰর বিষয়ভ শ্ভিলিছতে আগজাত হলে। একজন ভাল-লোক আশ্ব হইতে পতিত ক্রয়াতে শুকু-ভন্ন ৰূপে আহত হয়েন এবং কোন চিকিৎ-দ্ৰ হাৰ্ড্ৰক বিক্লিং উপশ্ৰ পাইলে উছো-(क लाशनात महोत्वत नमक ভाव वित्नव করিয়া অবগত করেন, এবং আপনার চি-কিৎসার থানেক উপায় নির্দেশ করিয়া দেন, অন্যন্ন ভুষ্য কণে আরোদা লাভ বারলে পর তাঁহার একজন বন্ধু তাঁহাকে शृहर करोह या है तात या खाना किते किति श उँ। इ.त मदल बाहा कतिल, धेरताशीत छर-নের স্মিকটে আসিয়া তাহার বন্ধু জাইটেক মতর্ক করিল, যে তুমি এক**বা বাদিতে** তোমার স্ত্রী পুত্রের সাক্ষাতে প্রকাশ ক বিভিন্ন ভাৰার্রী শ্রমণ করিয়া কেবল খন্দৰ্ক ভীত ও উৎক্ষিত হইছে। রোগী তা-হার জী পুরের নাম অবশ করিয়া বিশায়া-পদ হইল, ডাইার বে জ্রী পুত্র আছে, এম-ন কিছুই স্বর্ণ **হইল না \*। ডাক্তর** গ্রে-গরি বাক্ত **করিয়াছেন, যে কোন জীলো**-কের শারীরিক **অন্তব্তা হইয়া এক আন্চর্যা** বিশ্বতির উৎপ**ত্তি ভইন্নাছিল, দে যে জ**-ব্যের নাম মনে করিতে পারিত মা, শে দ্রব্যের অক্টার প্রকার অনায়ানে তাহার মনে হইত। এক ব্যক্তি একদা **অপশা**র রোগে ভাকান্ত ইইয়া শৃতিভ্রমে জ্রান্ত হ-ইয়াহিল, সে আপনার বন্ধ বান্ধবে সকলে-র আফুতি প্রকৃতি মনে করিতে পারিত, কিন্তু কাহার ও নাম করিতে সমর্থ হইত না। সে ধখন কোন লোকের নিকট অন্য কোন লোকের বিষয় পরিচয় দিত, তৎ-কালে ভাষ্টকে ঐ পরিচেয় ব্যক্তির নিকট লইয়া বাইভ, কাহারো কাহারো অমতও বিশ্বতি ঘটে, যে কর্ণেডে নাম প্রবণ করিলে जाश व्यवग कंतिए मगर्थ रख मा. किन्हु वे বিষয় লিখিয়া দিলে, তৎক্ষণাৎ তাহার মনে হয়। এক ব্যক্তির এই প্রকার আক্ষর্যা ভ্রম জ্মিলে পর বে এক থানি কাগজের উপর আপ্লার সমস্ত আবস্তক স্তব্যের নাম লিপিবজ করিয়া সক্ষুধে রাথিয়া সমু-माश कार्य। निम्<del>शामन कति</del>छ। अ वास्ति-কে কোন বিশয় বুঝাইবার আৰক্ষক হ-ইলে, ঐ লিবিভ পত্রে দেই দ্রব্য দেখাইয়া भिटंड रहेडे: अकड़म खनीडिव**र्धन क्या**-টীৰ পীড়িত **হইলে পর ভাহার এমপ স্মৃতি** শক্তির অন্যথা হইয়া**ছিল**া : লে**ংখাপন** লাতীয় ভাষা ভূলিয়া গিয়াছিল। কিন্তু गर्दमा (कुक्क) अत्रायन ७ हेर्डे किक छा-যায় নিজ্ঞিত করিয়া ক্রেয়াপাক্রক করিত। त्य अधि रेम्भवातक्षित्र औ महत्त्व छावा শিকা করিয়াছিল। বিক্তে বছকাল আর करात काम **अपूर्णियम**े बाह्य आहे, किन्द भागीतिक स्वार्थ करिया मध्यावृद्धि विक्रक स्वतारक क्यांकित कावा क्या ब्येश निक-कामामा नामक एरेम । अरे अनक नवन

ভাব আপথে কোন দ্রব্যাদি কর করি-তে বাইত, তথকালে বিক্রেভাকে স্থীর প্র-রোজনীয় সকল দ্রবা অসুলি ধারা দেখা ইয়া দিত। যান বাহনে ভোন বন্ধু বাজ্ঞা-বের নিকট বাইতে হইলে সে ব্যক্তি যান ব্যৱক ও র্থচালককে ইঞ্চিত করিয়া তা-হাও দেখাইত, কোন দ্রব্যা কোন ব্যক্তি কি কোন বিষয়েরই নাম মনে করিয়া বলিতে পারিতনা।

শারীরিক রোগ হেড় কোন কোন ব্যক্তি **क**िशत निर्फिक कालत घटेना मात पू লিয়া যায়, কিন্তু তাহার পূর্বাপরের সমস্ত विषयुष्टे नातम शास्त्र। अक कम शानित একবার রোগগ্রস্ত হুইয়া চারিবংশরের শ-মুলায় রুক্তান্ত বিস্ফুত হইনাছিল, কিন্তু ত-ংপুরেরর এবং পরের সমত বিষয়ই ভাগার অনস্থর ভাগ্র রোগ শাকি শারণ ছিল। হইলে পর ক্রমে ক্রমে পুনর্বার ঐ চারিক ংসরের ঘটনাদি ভাহার স্মরণ হইতে লা-িল। শুকুতর আশকাতেও অনেকের স্থ তির লোপ হয়। ছট্লাও প্রদেশের মধ্যে একদা এক নির্জার বিলান ভাসিয়া পড়া ट्ट रक कारकत थान नक इस, के विशव कारन निकांत मस्या अविधि दीलाय छिप-স্থিত ছিল, এবং মে উত্ত বিপদ কইতে নিঝিমে উত্তীৰ্ণও হইয়াছিল, কিন্তু ভণাণি ঐ বিপদ দর্শনে তাহার হৃদরে এমন শক। क बिन्नाकिन, त्व (न একেবারে व्ये छुईछेमा ए ভাহার পূর্বে কিয়ৎ ক'লের র্ভাভ সকল বিশৃষ্ঠ হইয়া গেল। আর এক জন স্ত্রীলোক শারীব্রিক পীড়ার আক্রান্ত হইয়া দশ বৎ-गत्तत मञ्चनात्र घडेना विश्वष्ठ इरेक्षाहिन। তন্ত্রবিশ্রণান্তিত গণ এই প্রকার অসামানা বিশারণের এই কারণ ছির করিয়াছেন, যে मञ्द्रशिक्ने भेटन अक्षा विषय मेमान करण च-किত इस मा, बाइएड सटनम नमधिक पा-जिनित्व इम्र जोहा है मरनट वस मूल इ-বীয়া বলে। আলু বাহার প্রতি তাদুশ মনঃ-শংৰোগ না হয়, তাহা চিত্তকৈতে ৰড় ছ-শর বংগ অভিত হর না। স্বতরাং শারীরিক त्वास क्या त्य नगर ठिख इक्षित्र राजिकन MF, IN HAM AIRTIGHT PART WART W.

নোভূমি হইতে অপনীত না ইইয়া বাছা মনেতে সামান্য ৰূপে অকিত হয় তাছাই অপনীত ছইয়া বায়। পণ্ডিতগণ পূর্ব্বেক্তি বাজিনিগের অবভামুসফান করিয়াও এবিবরের
পোষক প্রমাণ প্রাপ্ত ছইয়াছেন। যে সময়
উল্লিগের মনের অবভা উত্তম ছিল, এবং
যে সকল বিশ্বের প্রতি উহার। গাঢ় কর্পে
মনংসংখাগ করিয়াছিল, তৎসমুদায় উল্লিগের স্থতিপ্র ইইন্ডে গ্রুরিত হয় নাইত।
নিগের স্থতি প্র ইইন্ডে গ্রুরিত হয় নাইত।

এই বাপ নানা কারণ দারা দেহের স-হিত আছার অপূর্ণ অনিকত্নীয় সম্প্র **अडीयमान र्या । यहका ७ शहश मरनर्**ड হর্ষ শোক রাগ ভয় প্রভৃতি বে কোন ভা त्वत्र कार्विकाय हत्र, मृश्चमान प्रास्त्र छे পর ভাহার সম্পূর্ণ চিত্র প্রকাশ পার। ম-নেতে ক্রোধের সঞ্চার হইলে শরীরের শোণিত উফ হইয়া নাসা কর্ণ চকুরাদি অ-নেক অজ লেছিত বৰ্ণ হয় এবং মনোম-ধ্যে দ্রুতথ শোকের সঞ্গর হইলেও নয়ন হ-ইতে অনবরত অক্ষপাত হইতে থাকে। প্ৰায় মানসিক **প্ৰত্যেক ভাবই জ**ড় দেহে ताङ इरेग्न। थाटक। चटनक विष्ठकन लाहिक মনুষ্যের মুখাবলোকন করিয়াই মনেগেজ ভাব বলিতে পারেন। ইহার ভুল্য আন-শ্রুগোর বিষয় আর কি আছে: 'মচিন্ডা শক্তি সম্পন্ন জগদীশ্বর চৈতন্যাত্মক আ খারে সহিত জড়মর দেহের কি চমৎকার **স্থক্ত নিবন্ধ ক্রিয়া দিয়াছেন। ভাঁছা**র প্রতিষ্ঠিত এই অচিত্রনীয় অন্তুত সহত্য স্থির চিত্তে চিত্তা করিলে বিজ্ঞা সাগরে निम्म इंडेटड इम्र। एकि म्(४) ष्ट श्रकात मधक्त विमामान चार्राष्ट्र, उरार्पा प्रशासात সহজ্ব অতি ক্ষুত। এই দেই রূপ গুলিময় পিপ্তার মধ্যে যাবং চেতনাত্মক আত্মা বাস ক্রিবে, জাবএই উণ্র মহিত জড় বেহের खेळा<sup>.</sup> तहहा विकामान थाकिटव। **(व विक्रि**ज শক্তি সম্পন্ন বিশ্বকারণ ক্রড় দেছের সহিত অঞ্জ ভারার উক্ত প্রকার আভিন্য मक्का निवस क्रिया मित्रार्ह्म, मिटे ज्ञास कानवान, भनानि शुक्रवदक श्रीष शुक्रक मनकात करि

Aberceomose

#### বিজ্ঞান বার্তা। জ্যোতিষ

১।---বর্ত্তমান ইংরাজি শকে লিপজিক। মামক ভাবে পণ্ডিতবর এরেফ সাহেব এক দ্মকেডু আবিষ্ত করেন, গত ২৬ মার্চ नितरम (यम मारहरे निख्यकि नामक द्यान হইতে ঐ ধুমকেতুকে সন্দর্শন করিয়াছি লেন। বেন সাহেব কহিয়াছেন, যে উক্ত ধমকেত দেখিতে অতিলয় উচ্চল, পরি-তাল, নকত পুঞ্জের ন্যায় উহার দীপ্তি"।

া—বত্তমান ইংরাজি শকের ১১ আem निवास भावति ७८७व मारहर छेहे-নিবিগোসিদ নামক স্থান হইতে এক আ-শ্চর্য উজ্জ্ব উল্লেখ্য পিও সন্দর্শন করিয়া-তেন। উক্ত সাহেব বে সময় উ পিণ্ডটি সন্দর্শন করেন, তৎকালে আকাশ প্রধানিকিং অপ্রিম্বার ৬ ধুমাইন চিল, ক্তিয় ঐ ক্রাকাপিপের ক্যোতিঃ প্রভাবে র-कर्ने (८७ के जान निवस्त्र नाम चालाक अस्य इतेला अं डेन्काशिखंडि भूगा इटेट গশিংমাভিমুখে পতিত হয় এবং দৰ্শকের চলে উহা পূৰ্ণচক্তের নায়ে প্রকাশ পরে। উহা দুভলে প্তিত দুইতে ন। হইতেই নিঃশক্ষে শুনোতে তিরোহিত হয়। উচা অদুক হইলে পরও কিয়ৎকাল সুনোতে এক প্রকার আলোক দৃষ্ট হইরাছিল, অন-স্থুর ক্রমে ক্রমে উহার আর কোন চিহ্নই इहिल ना"।

## शमार्थ विमा।

্য-বর্তমান গ্রীফান্দের জুলাই মানে অমিরিকার অনুঃপাতি ডাটস মাউথ নাম-ক স্থানে যাদুশ শীতাধিকা হইয়াছিল, চ-ভবিংশতি বর্ষের মধ্যে উক্ত স্থানে লে প্র-কার হিমের প্রবলত। হয় নাই। 🖷 স্থানের श्रीमक विमानता श्राणिवश्मतारे मंग्र कड़-র শীত উফভার বিষয় লিখিত খাকে, ঐ निकिक निणि भरीका बाह्रा अमान सरेगार्ड,

२ -- (स्टार्नित छेरे । नाट्य बाक क-রিয়াছেন, বেশ্বনি লবণ মিঞ্জিত সমুদ্র জল वामकामम खंदबत मधानिया निर्माणक रहेश পড়ে, তাহা হইলে উহার লবণাক্ত দোব দুর হয়। জল বে সমর বালুভূমির নধা-দিয়া নিঃস্ত হইতে থাকে, তৎকালেই উ-হার লবণের ভাগ বালুকাতে মিনিয়া বায়! উক্ত প্রকার পরিজ্ঞত স্থলের যে কেবল ল-বণেরই ভাগ অন্তরিত হয়, এমত নহে উ হাতে খার আর্থে সকল পদার্থ মিজিত খাকে, বালুকাপরি ক্রমণ দারা ভাষাও পৃথ-क इंडेश बाह्य"।

त्य २८ वदमदत्तत्र मत्था चात्र खेळा चारम अ

अकात भी छ आवना एत नारे ।

রসায়ন বিদা।

্, -এদেশীয় অনেক লোক বাস্পালো-क ममार्गन कतिहा छम्दरू रहेता हन. কিন্ত ইউরোপ থ**ণ্ডের স্থানে স্থানে** বিদ্লাৎ আলোকও এক্ষণে দীপালোকের ন্যায় ব্যব-হৃত হৃইতে আরম্ভ হৃইতেছে, সম্প্রতি পে রিস নগরে বিছাৎ আলোকের এক গরী-ক্ষা হওয়াতে ভত্ৰতা পণ্ডিত বৰ্গ ও অনেক ভদ্ৰলোক দেখিয়াছেন, যে ৰাষ্পালোক অ-পেক্ষা বিষ্ণাৎ আলোক অনেক পরিকার ও व्यत्नक उक्क म। अहे बहु आशास्त्रत রচনাকর্তারা এক প্রেসিক্ক অটালিকাতে চারিটি বিছাৎ দীপ সংযুক্ত করিয়া দেখা-हेतारहम, या जेक्टण मक्क हे जतकत वि-छू श्रमिदक मामाना भी भवर वावहात कता যার ।

#### বিজ্ঞাপন।

তত্ত্বোধিনী সভার সভা বা বভা ভিন্ন অন্য যে কোন ব্যক্তি মাসিক ॥ আনা করিয়া সভায় প্রদান করিবেন, ভাঁহারা নিয়মানুসারে সভার পুতক্তার স্থিত পু-ন্তক ঋণ পাইতে শারিবেন।

a वह छक्दवंदिनी श्रीविका, कलिकाका नगरत বোড়ানীকোভিড ভড়বোবিনী নভার কার্যালয় ঘই-८७ क्षाक्रियारम क्षेत्राचिक इस - देशह मूना कर हैकि ১ অগ্রেছারণ রবিধার সত্ত্ব ক্রিন কলিগতাক্ষ্য জনক

\*Amiricanjournal.

<sup>\*</sup>Amiricanjournal.

দভাঞাবেশ মাৰ হটতে ভত্তবাহিলী নভায় আতি নভা এটি মানে এই প্ৰতিভাৱ এই বিৰ বিৰ বিৰ



ন্ত কৰা একমিনমঞ্জা শীদ্ধা নাওকিকমালী ডিনিখং শৰ্কামক্ষক। তিদেবনি এং জ্ঞাননমন্ত ংশিবং ব্যক্ত দ্বির্বয়ব্যেব ক্ষেণাধিতীকং সর্ক্ষ ব্যাপিদর্কা বিয়ন্ত স্বক্ষা প্রথম ক্ষিতি সক্ষ্য বিশ্ব ক্ষিতি হিছিল একস্য তেন্দ্রে পাসন্য পার্থ ক্রিকটোইক ক্ষত ভ্রত বি তিন্দ্র প্রতিক্ষাস্থা বিশ্বকার্য স্থাপন ক্ষত ভূপাসন্দ্রে ।

#### ব্রান্ধসমাজের বক্তৃত।।

ভ্ৰমান্ত্ৰক দে নুপশ্যন্তি ধীরাজেয়াং ক্তৰং শাৰ্কং নেতব্ৰোং ।

ধীহ'বা উভোকে নিকটন্ত বলিয়া জানেন, ভাঁহাদিগেরই নিভা দুখ হয়, অন্য বাজিরা দেমুখ লাভ করিছে পারে না।

হে মানবগণ ! দেই সবেলগরের—দেই দকাধিপতির গুণ কীর্ত্তন করিয়া মানব জন্ম मार्थक कतः; এই আলোকমন্ত ममास মন্দিরে কেবল তাঁহারি মহিমা সন্দর্শন ও তাঁহারই সহবাদ জনিত বিশুদ্ধ আনন্দ -**লড্রোগ কর। সেই প্রণরাম্পদ পরম পি**-তার নিক্টবন্ধী থাকা আমাদিগের কি পর্যান্ত প্রার্থণীয়, তাহা বলিবার নহে। তিনি আমাদিপের প্রীতিভাজন পরম বন্ধু। সেই প্রিয় বন্ধু আমাদিগের সকলের অন্তরেও বাহিরে স্থিতি করিতেছেন, ইহা একবার ক্ষক্তিভাবেজ্ঞান চক্ষু দারা প্রতীতি করিতে পারিলেই ভাঁহার সহিত সহবাস করা যায়। আপুনাকে নিতান্ত অননাগতি ও পরাৎপর পুরুষ পিতাকে আপুনার অভিতীয় সহায় ও করুণামর আঞ্চর জ্ঞান করিয়া এবং প विक अन्यक्तार्व के शिराटक नर्सना अञ्चलवर रक्षीभागान किथा।, उँ।शांख अविविध প্রীক্তি প্রকাশ করাই তাঁহার সহিত সহবাস। কীটার সাহত এই ৰপ সহবাস করাই আ-पामिद्रश्रेत छ। पास्त्र माधन बादा अहे

প্রম উদ্দেশ্ম সিদ্ধ হইতে পারে, তাহাই আমাদের কর্ত্বা। ভাঁহাকে প্রীতি ও তাঁহার প্রিয়কার্যা সাধন এ উদ্দেশ্ত সম্পাদনের একমাত্র উপায়ন অন্যান্য বিষয়ের ন্যায় প্রীতি ও অন্ধাও অভ্যাদ সাপেক, কিন্তু কি আক্ষেপের বিষয় ! বিদা, শিষ্পকক্ষ, विषय कार्या, अमञ्चलाय (य अञान-मा**र**शक ইছা সকলেই স্থাকার করেন, অথচ প্রীতি ও আন্ধাও যে ক্রমে ক্রমে অভ্যাদ করিতে **इय़, हेहा व्याप्तरक दित्यक्या करत्र मा।** যেমন চালনা না করিলে, শরীর সবল হয় না, এবং বুদ্ধিও পরিবৃদ্ধিত ইয় না, সেই ৰূপ গ্ৰীতিও ডক্তিও চালনা না করিলে वर्षामाना एस ना। महीरहरू र्य अक हालना না করা যায়, তাহা যেমন ক্রমে ক্রমে ছুর্মল इंडेंग्रा चाइत्य, त्यरे युष्ट भावतंत्र स दृष्टि প্রিচালিত না হল তাহাও ক্রমণঃ নিস্তেজ ইইতে থাকে। ফলতঃ অপারমহিমার্ণর, স-की श्वनालत, मकल मञ्जालाम, भ्रतादश्र श्व-মেশবের প্রতি গ্রীতি ও অদ্ধা করিতে অন্ত্যাস করা এখন কঠিন কর্মাইবা কি ? তাঁহার बनय छन, अभीम महिमा ७ बार्मय कुनला-ভিপ্রার পর্যালোচনা করিলে, কাছার পায়াণ मध्यम्पदम् श्रीिक त्राप्ततः मध्यात् मी इस्

আমরা মথন বে দিকে নেত্র পাত করি,তথ-নুষ্ঠ নেই দিকে ভাষার মতি প্রপাচ অনিকা-নীয় কনে এবংমপার কুদার্যাওকারণা স্থাবণে

কোটি কোটি নিদর্শন দেখিতে পাই। আমরা कीर्ति कृगल अलुवा नित्तत्र त्व मकन अब्द कार्या भर्गारमाज्या कतिया मुक्त करके था-লংসা করিয়া থাকি,বিশ্বকৃষ্মা বিশ্বাধিপতির ्दिश्व कार्यात कुलनात रम नमुनात किहू है নহে: অতি হুক্স স্থানবৰ্ণ দুৰ্বাদল অব্ধি के का नील को नान मधन पर्यास मनस বস্তুই সেই মহামহিমাণ্ব মহেশরের অপা-র মধিমা প্রচার করিতেছে। অসীম প্রায় প্রশন্ত মহাদাগর, অভানত বনাকীর্ণ গিরি-প্রস্তু, শতপদ-বিশিষ্ট সহস্তু-শার্থ বটরুক্ষ, धदः मिवाकट्यम डिमग्रास कारणम् आकर्य। সৌন্দর্যা,ও স্থবাকর পূর্ণ চন্দ্রের পরমরম্বীর যনিবলৈ বি শোভা এ সমুদার মনলোকন ও সারণ করিলে কাতার অভঃকরণ পর্মে-খবের প্রেম নীরে নিমগ্ননা হয় ? তিনি यामामिशत ज्ञानत् अमान कतिशा कञ জ্ঞানই প্রদর্শন করিয়াছেন ক্রিকার স্বেহ বৃত্তি ও বিশ্বন্ধ কারুণা শ্বভাব স্থাটি করি-য় কত স্বেহ ও কত কর্মাই প্রকাশ ক-বিয়াছেন! অংমাদিগকৈ ন্যায় অন্যায় নি-রূপণে সমর্থ করিয়া কি আন্চর্যা অপক্ষপা-তিতা অণ্ট প্রচার করিয়াছেন! চক্ত এক এক নিমেশে ভাঁছার কত মহিমাই প্রভাক্ষ করিতেছে ' আমাদের প্রতিবারের নি-শাস্ত্রিয়া ভাষার কত খেচই প্রকাশ ক-রিভেছে! প্রাণ স্থমণ সমীরণের এক এক হিলোল উটাহার কত করুণাই প্রদর্শন ক ব্রিভেছে! আমরা যে স্থানে যে পদার্থ অ-বলোকন করি, ভাষাই ভাঁছার করণার্দে অভিষ্ক্ত দেখি, যে স্থানে গমন করি, (महे चार्यके काहारक क्षात्राक्षवर मिनी-পামান দেখিতে পাই। যদি প**র্বত শিথরে** ভারোহণ করি, সেখানেও তিনি বিদামান, যদি গভীর পহবরে প্রবেশ করি, সেখানেও তিনি বিরাজ্যান, মহাসাগরকে সম্প্রতি করিয়া তদীয় তটেই দণ্ডারমান হই, স্বার নদী তীরস্থ প্রশন্ত শাথ রুক্ষ ছায়াতেই বা শয়াদ থাকি, দৰ্মতাই তিনি রাজত্ব করিকে-ছেন। তাঁহার জ্ঞানময় নেত্র সন্ধারকেও **ब्याण्डित नाम सर्गन सहिद्युद्ध , कैस्ट्राज्ञ** পক্ষে তামৰী নিশার নিবিত অক্সকার ও

মধ্যাত্ব কালের পরিষ্কৃত দিবালোক উত্তরই তুলা। এই অবণ্ড একাণ্ডের প্রচার পরিষয় প্রদান করিতেছে। এই রূপ দৃটি সহকারে ক্লব্লণাকর পরমেশ্বরের অনুপম গুণ সমুদার অহরহ পর্যালোচনা করিলে তাঁহার প্রতি আকা ভক্তি ও প্রীতি আপনা হইতেই প্রকৃতিক হইতে বৃদ্ধের। তথন তাঁহার গুণ কীর্তন করিয়া বেষল বিশ্বর স্থপ সম্ভোগ করা যায়, এমন আর কিছুতেই হয় না। তথন ভাঁহার প্রীতি তাঁহার প্রস্কৃতা ও তাঁহার সহবাস লাভই সকল কর্মের উদ্দেশ্য হইয়া থাকে। যে বিষয়ের সহিত তাঁহার কংক্রব নাই, তাহাতে আর পরিতোধ ক্রেবানা।

অন্তঃকরণকে পরিশুর না করিলে প্রম পরিশুদ্ধ পরমেখারের সহবাদ লাভে সমর্থ হওয়া যায় না। অপরাধী **প্রজা** যে**মন** রা জার সহিত সাক্ষাৎ করিতে শক্ষিত হয়, নৈই ৰূপ পাপাসজ ব্যক্তি তাঁহাকে হৃদ-য়স্ত করিতে ভীত ও অসমর্থ হয়। অভএব অভ্তেরণকে প্রমেশবের প্রেম্বাণে রঞ্জিত করিতে হইলে তাহার পাপরপ ধলিকণা मकल श्रकालन करा कर्लंबा श्रिय साम्ब প্রিয় কর্যা ও ঠাছার প্রিয় বন্ধর প্রতি গ্রীতি না করিলে তাঁহার প্রতি বথার্থ শ্রীতি প্র-কাশ পায় না : অতএৰ বিশ্ব পতির অশিল বিখের প্রতি প্রীতি প্রকাশ পুর্বাক সর্বাদী-বের শুভটিভা করা বিধেয়। সমুদয় একা-গুই ভাঁহার প্রীতি ভাজন, সকল জীবই তাঁহাক স্নেহাস্পদ, অতএব তিনি যেমন নিরপেক্ষ ভাবে সকলের প্রতি সমান দৃষ্টি तार्थिया विश्व तारकात वावषा कतियारहरू. উঁহোর সাধক দিগেরও সেই ৰূপ ভাঁহার चाळावर रहेता मंद्राभात्रावात एकामुक्रीन করা কর্ত্তবা, "তিনি আমাদিগের স্থপ্ত ন-দীর প্রস্তবর্ণ।" তিনি আমাদের সৌভাগা তক্র একমাত্র মূল স্বৰূপ। নদী কি কথন श्राज्यक प्रदेश प्रवाह प्रदेश श्राहित रहे-एक भारत , मा हुक कमाणि श्रंम हहें एक वि-क्रित बहेता विकिष्ठ स्टेटफ शादत ? क्रफ. वन जिन नक्य औरवह छूद हारनार्द बाउँछी ह चाका काहात कहिया हाचित्रात्कन, अञ्चलकरे

शालन कर्ता के हैं वर्ग। मानव क्या नार्थिक করিবার আর উপীরাত্র নাই। তাঁচার ম-ক্লেল্য নিয়ম সমুদ্র হাতিপলেনে যত সমর্থ হটবে, তত**ই নিশাল আনন্দ অনুভূত** হ-ইয়া তাঁহার করণাময় বিশুক্ষ স্বৰূপে দুচ্ তর বিসাস ক্সােিবে, এবং ততই তাঁলার প বিজ প্রেমে নয় হইয়া তাঁহার সহবাসের উপযুক্ত হইবে। বাঁহাদের ধর্মে অনুরক্তি ও পরম্পিতা **পরমেশ্বরের প্রতি প্রী**তি উপ-স্থিত হয় নাই, তাঁহারা যে এফেবারেই এই পর্ম প্রার্থনীয় অবস্থা প্রাপ্ত চুইবেন ইক্ কোন মতেই সভাব নহে। কুদক পরিত্যাগ. সংখু সঞ্জ অবলয়ন, পরমেশ্বর বিষয়ক ও ধর্মা বিষয়ক উপদেশ শাবণ ও তংপ্রতিপাদকঃ গ্রন্থ স্বধ্যর্ম, অহর্ড উলোর প্রতি প্রীতি अकान ଓ डाँगात थित कार्या मन्यापन है। ভাগে সাধন যত্র পূর্যোক অভাগে করা উা-<del>ঃদের পফে অবপ্ত কত্তব্য। যে সকল রু</del>ত্তি চালনা করিতে অভ্যাস করিবে, তাহাই अन्न इहेर्द। खंडाम ना करिएन, भतौत्र अ সবল হয় না, বুদ্ধিও প্রেপর হয় না, বর্মাও উন্ত হয় না। কু**লোকের সংসর্গ** করিয়া াল মন ভুক্ত থাকে, অদ্যাপি ভাঁচার অবশ্চিত্ত পাপ পিশাচের হল হইতে মুক্ত হয় নাই এবং জনান ও খৰ্মা অন্যাপি উল হার অন্তঃকরণ অধিকার করিছে সমর্থ হয় নাই ও উচ্চার অপরিশুদ্ধ অভঃকরণ কদা-পি পরমু পরিশুক্ষ পরমেশ্বরের বিশুক্ষ সিং-रामन रहेवांत উপयुक्त रहानाहै। किस्र टेव्हा ना शांकिरंग छैलरमण धानरन कि १-ইবে? যে বালকের বিদ্যা লাভে অনুরাগ নাই, সে বেমন কদাপি স্থশিকিত ছইতে পারে না, দেই ৰূপ যাহার অধর্মে বিরক্তি া ধর্মে অনুর্তি হয় নাই, সে কদাপি ধর্ম ৰূপ মহারত্ব লাভ করিতে সমর্থ হয় না। যাঁহার ধর্ম লাভের ইচ্ছা জিমরাছে ভাঁহার সার কি অবশিষ্ট আছে? তিনি আপনার व्यनिदाशी हेक्डा दतन छिषयग्रक छैपरमन অবণ, আৰু অধ্যয়ন ও সাধুসক করিতে যত্র-বান্হন এবং তত্বারা ক্রমে ক্রেকার্যা रदेख परिकन, किन्छ यारात रेन्हा नारे, <sup>®</sup> रिति क्षेत्र बोक्कामत बस्कृषि कुना।

তিনি প্ৰিত্ৰ সমাজে উপ্ৰিক্ট ছইয়াও নি *ৰ্ফাৰ বনবাদী সদৃশ* এবং ৰাল্লয়ার উপ*ডে*শ वाका व्यवशकतियाक विश्व जुना। कनः একেবারেই বে সকলের একান্ত অন্তর্ভাগ জন্মে,ভালা নতে, যেমন বালক গণ কিছু দিন व्ययाधन कतिएड कतिएड विमा तरमत साम এছণে সমর্গ হয়, সেট কাপ শ্লানেকে পুনঃ পুনঃ পর্যেশ্র বিষয়ক উপদেশ আবেণ ক-রিভে করিন্তেও পরম প্রীতি ভাজন পর মেপরের ঐৌতিরস পানে ঋনুরক্ত হটতে পার্রেন: অতিএব বরেয়ার সাধ্যক্ষ করা, এবং যে স্থলে পরাৎপর প্রমেশধের প্রসঞ্ ও শুণ কীর্ত্তন হয়, সে স্থলে সারদং গমন করা সকলোর পক্ষেই আবশ্যক। এক এক রোগের নানা ঔষধ আছে, কাছার কোন্ অবস্থায় কোন্ঔষধ ছারা আরেগো লাভ কইবে, কে বজিতে পারে ? পুনঃ শুনং গ রমার্থ প্রদক্ষ প্রবণ করিতে করিতে কোন নাকেনি সাধুলাকা জনস্ক্রম হট্যাপ্র-মেশ্বরের প্রতি গ্রীতি সঞ্চারিত করিতে পারে। তথ্য তাঁহার তাণ কীর্তন জাসং অনুরাগ করে, তাঁহাকেই এক মাত্র আভাষ জানিয়া নিউয় জনতা উছোর প্রদর্শিত পুণঃ পথ অনলয়নে উৎসাহ রুদ্ধি হয়, এবং 🦫 হার সহবাস লাভের বাসনা উদয় হটায়া অন্তঃকরণকে তদন্ত্রপ পবিত্র রাখিতে যাং আমাদিবের উপদেন জান 🙄 এই পরম পরিশুদ্ধ ব্রাহ্মদ্যাজ, ইলা 🧽 **क्षकात रामनः ७ উ**ंमा अंग्लेश *इंड्*नित প্রধান ভান: আন্তঃ **电影作品** সমাগত হুইয়া ধ্রমেজলাকর প্রমেশ রের আরোধনা করিয়া ক্লডার্থ হই, এবং कमारके कल कल धना नाहिन्द ध মুরাগ ও প্রীতি স্পার হইতে থাকে। এই मकल कला। भारमार्थक अहे ममाक अहे স্তানে সংস্থাপিত হইয়াছে। এবং এই ৰূপ ममाक मकल ज्ञाक्य अञ्चल करेगारकः এই সকল শুভ লক্ষণ সন্দর্শন করিয়া আ মাদের অস্বকরণ আশা ও ভরসায় পূর্ব **ইতেছে এবং উৎসাহে ক্ষীত হই**য়া উঠি-তেছে।

হে পরমান্ধন্! এন্ন ওও ছিন কড

দিনে উপস্থিত ছইবে, যে তথান আমাদের দেশ এই ৰূপ পুণ্য-মানে পরিপুর্ণ ছইবেক। আমাদের আত্মীর স্বজন, বন্ধু, বান্ধার, প্র-তিবাসি দকলে আমাদের সহিত সন্মিনিত ছইয়া তোমার আরাখনার প্রবৃত্ত ও অন্ধ্রু-রক্ত ছইবে, এবং এদেশের দকল ভাগে স-কল নগরে, সকল প্রামেন বর্ষেণু বর্ষের, মানে মানে, সপ্তাহে সপ্তাহে, দিবসে দিবসে তো-মার অপার মহিমা বর্ণিত ও তোমার অ-রুপম গুণানুকীর্ত্তন কীর্তিত ছইবে। হে প্রমান্ধন্থ এমন শুভদিন কত দিনে উপস্থি-ত হইবে।

ওঁ একমেবাদিতীয়ং।

## বিজ্ঞানশাস্ত্র।

বিজ্ঞান শান্তের আলোচনা অতীব স্থানারক। কোথার বা আপাতরম্য প্রভান্ত ইন্দ্রির সূথ! আর কোথার বা স্কাক্স বিশ্ব কৌশলের অভিজ্ঞান ক্সনিত বিশুদ্ধ আনোকের শোভা! এবং কোথার বা বিজ্ঞান স্থানের কোনার বা বিজ্ঞান স্থানের কোনার বা বিজ্ঞান স্থানের কিছু ক্সনাক্ কপে অবধারণ করা মানব বৃদ্ধির অভীত বটে, কিন্তু ইহা কি আমাদের নিতান্ত সৌভাগোর বিষয় নহে যে পৃথিবী পিঞ্জরে বদ্ধ থাকিরাও আমরা চন্দ্র, স্থা, গ্রহ্ম ক্সন্তে ইশরের অভাশ্বা আনন্ত কৌশল প্রভাক্ষ ক্সরিয়া ভাগার ভাগ কীন্তিন ক্সিডেছি।

এই স্বভাব কেতে আমরা কতই অদ্বুত বাপোর প্রতাক্ষ করিতেছি। একটি
একটি কারণ হইতে কতবিধ কার্যা উৎপন্ন হইতেছে। যে শক্তি, চন্দ্র, স্থ্যা, গ্রহ.
নক্ষরকে নির্দ্ধিত স্থানে নিরোজিত রাথিয়াছে, পেই শক্তির প্রভাবেই প্রশন্ত নদী,
গভীর সমুদ্ধাও মহোচ্চ পর্বাও স্থ স্থারণ করিয়া অশেষ শোক্ষা বিভার করিতৈছে। তাহারই প্রভাবে সমুদ্ধ উক্ত নিত ও
নদী ব্যোতস্থতী হইতেছে, তাহারাই প্রভাবে স্থাত করি।

প্ত ভূমিকে শীতুল ক্রিভৈছে, খিখির বিদ্ধু প্রত্যেক পুশা ও প্রস্তাক বুক্ষ পরকে শিক্ত করিছেছে, এবং ডুয়ার, সমূহ পর্বা-তোপরি রাশি রাশি পাতিত হইয়া নদ নদী উৎপাদন করিভেছে। কেবল এক জলই ৰূপান্তর হইয়া কত প্রকার কার্যা স-ম্পাদন করে। এই **জল জমিয়া হিম্**শিলা জ্বে, সেই হিমশিলাকে কিঞ্ছিৎ উ-ত্তপ্ত করিলে পুনর্কার ভাহা কল ব্রুপে প-রিণত হয়, এই জলকে অনেক দিন অ-নারত রাখিলে আপনা হইতেই ক্রমে ক্রমে অদুভা হইয়া যায়, উহাকে অধিক উত্তপ্ত করিলে বাষ্প ৰূপে উপিত হয়, সেই বাষ্প একত হইলে যন মেঘমালা, ভীষণ ব্জ্বাদি ও বিদ্যালতা স্বারা আকাশকে চমকিত করে. সেই বাজাকে শীতল করিলে পুনর্কার. উহাজল হইয়া পতিত হয়। এই স্থলে এক বস্তুর কত প্রকার পরিবর্ত্তন হুইল! এক খণ্ড গালা উত্তম ৰূপে ঘৰ্ষিত হইলে উহা অনেক লঘু বস্তু আকর্ষণ করে, এবং অন্ধকারে কোন বিভাবের গাত্র ঘর্ষণ ক-রিলে ভাহার গাত্র হইতে আয়ে ক্ষুলিক **७९**भन्न हत्। कि**स्तु हेशांकि जा**रूया नरह , যে পদার্থ বিস্থাতের কারণ এবং তাড়িত বার্তাবহের আয়ুল, ভাহাই উক্ত ছুই বি-यायुत् छेश्शामक ?

উদ্ভিদ রাজ্য কি বিস্তীর্ণ ! ইহাতে স্থান কম্পে পঞ্চাশৎ সহজ্ঞ প্রকার রুক্ষ বর্তমান আছে, তাহাদের আকার,প্রকার, কল, পত্র, পূপা, গল্ধ—তাহাদের ঔষধীয় গুণ ও রু-দ্বির নিম্ম সকলই বিভিন্ন প্রকার। কিন্তু পদার্থবিৎ প্রথিতেরা সে সকলও দ্বির করিয়াছেন !

আবার ইহাকি আশ্রুয় নহে বে আমরা প্রায় ৪০ নন বাছুভার অক্তমে বহন করিয়া জীবিত আছি? ব্যেহেতু আয়ানের শরীরের অক্তারের বংকিকিং বাছু স্থানীর
ভিত্তি আশক্তা অবে অনারাকে বেই তা
রের প্রতিবিধান করিতেছে? এই বাছু
ভার শ্রুতীত আয়ানের এই হতেই স্থানশা উল্লিছ বইত এবং বছুলা পূর্বই গুভিত্তাৎ ক্রুতা বাইতা এই বাছুলানালে

ভাৰত কাৰ্য্য সন্ধানা করিতেছে, বৃক্ষ ছিত্রের ভিতর প্রবেশ করিয়া ভাছাকে নবীন পত্র, প্রথম করিয়া ভাছাকে নবীন পত্র, প্রথম করিয়াই উপযুক্ত করিতেছে, এবং কি সমুব্য কি পশু, পক্ষী, কীট, পড্জ, কি রুক্ষ, লডা, পল্লবাদি সকলকেই জীবন দান করিতেছে। জল যন্ত্র হইতে জলোৎকেপণ ও বাজ্গীয় বানের বায়ুভেদী ও তরক্সভেদী গমনকিয়া অবধি মক্ষিকাদির চলন কার্য্য পর্যন্তে সকলই বায়ুর ভারবন্ত্র ভারা সম্প্রা হইয়া থাকে। ঐ ভারবন্ত্র ভারা সক্ষা হইয়া থাকে। ঐ ভারবন্ত্র ভারা ক্রি সমুব্রের জল বাজা করে পরিণত হইতে পারে না এবং উহাতেই স্থামির জলবিন্দ্র মিন্ডিত বায়ু হিলোল দারা পরিপ্রান্ত জন গণের প্রান্তি দুর হয়।

আবার যদি নিতার অসংলগ্ন ও পরস্পা-র বিপরীত পদার্থ সমূহে অসম্ভবনীর অত্যা-শ্চহ্য সমস্ত্র নিৰূপণ করা যায়, ভাকা হইলে আর এক মূতন আনন্দ কেত্রে উপনী 🕏 💤 ইতে হর। ইহা সহজেই কে মনে করিতে পারে,যে এক অত্যুক্ত হীরক খণ্ড ও এব খান রুক্ষবর্ণ অঞ্চার একই পদার্থ। খেত কোন স্বতন্ত্র বর্ণ মহে, ছরিৎ পীতানি বর্ণ এ-क्क इहेश शक्तवर्ग छेर शामन करत, वहे रहतू কাচ বিশেবে স্থর্ন্যের শুভ্রময় কিরণ হই-তে রক্ত, নীন, পাতাদি বর্ণের প্রতাক্ষ হয় : ষে করেণে অমি প্রজ্লিত হয় সেই কার-(नहें लोशिक्टि मित्रिंग प्राप्ति, व्यवस्थाने कात्रत्वे ताजिकारण डिक्टिंग भनार्थत त्कि হয়। চেত্নাবান্পদার্থের নারে রক্ষাদিও নিম্মাস প্রশ্বাস বহন করে, কিন্তু তাহাদের নিশাস্ত্রিয়া রাজে ও দিবসে সমান নছে। যে বায়ু জ্বলম্ভ অনলের ভিতর অবস্থিতি করে, তাছাই আমাদিগকে ব্যোমধানে আকাশ পৰে লইয়া যায়,যে রক্ষ পত্র ভূমিতে পতিত र्देश (बाध इस अक्किवादत नके श्रेरव;णाश বাস্কু বিশেষে পরিণত হইরা পুনর্কার রক্ষ निजामित्रं वृक्षि विषयः नाहाया कदत्। व णात्रविहीन अप्रांश भनार्थ छेखाटभतःकात्रन, **जांका है** र खन्न निर्माहर्यत् ७ स्नीजन बाह् প্রকালের কারণ এবং তাহা সমুদ্য বস্তুর পর-মাই কি কিন্তু ক্ষরে। তাহা পৃথিবীর তাবৎ नक्षक गरिक क्षित्र बारक ७ सूचा हरेटड थ-

ত্যেক সান্ধবিশলে প্রায় বৃথি শক্ষ জোল পর্যান্ত গমন করে, ভালার অসদ্ভাব লাইলে পৃথিবীর ভাবৎ বস্তু পারাণপিগুরৎ কটিন হুইরা অকর্ষণা হুইরা যাইত। এই সমস্ক বিষয়ের জ্ঞান অপেকা মন্ত্রমা সদৃশ জীবের আর অবিক কি এ।বঁনিয় হুইতে পারে । এই প্রকার জ্ঞান শিক্ষার জ্ঞানক্ষেপণ অপেকা আর নির্দেশ আমোদ কি আছে । বিশ্বপতির বিশ্বরচনার জাহার প্রমান্ত্রত হোশল প্রভাক করিয়া জ্ঞানবান্বাজ্ঞি বে চমৎকার নম্বলিত আমন্দরশ পান করেন, মপর ব্যক্তি ভাছা স্বল্পের কপ্রের। ক্রিরতে পারে না।

স্বভাবের উদার মূর্ত্তি অনলোকন করি: **ल मकरण**तसे सन फेमात कात पात्र करत এবং **অপার শান্তি অ**নু**ভব করে।** রুখ্নসতি গ্রহ কি চমৎকার : এই প্রহের কারতন স **থিবী অপেক্ষা প্রা**গ্রহণ গুল ক্ষাণ্ড, একা ভুল সহজ্ঞ বংসর পূর্ব্ব হউতে একণ পদান্ত পুৰি বীতে যত জাঁব জন্ম বাস কার্যা ভারিতেওে। উক্ত এহ ভাহার এক কালে শভ গুণ জীব কন্তর নিবাস ভূমি হইতে পারে। এই এহ এক বন্টার মধ্যে চতুর্দ্দশ সংস্তা ক্রেশে ক রিয়া আপুনার অকোপরি ক্রত বেগে ঘূর্ণি ত হর এবং জনত আকাশে পৃথিৱী অপেকা রহৎ রুহৎ চারিটি চন্দ্রের সঞ্চিত তভোগিক **(बर्ग मक्ष्रुंग करत्। यक्ति खडे अक् मा**पाना এহের গতিকিয়া ও আয়তন ভালোচনা ক রিবার সময় আমাদের মনে এভাদুলী 🕃 **দার মূর্ত্তি** চিত্রিত **হ**য়, তবে **হু**যোর বিবয় অনুবাৰন করিলে ভাল্ আমাদের খুদ্ **मटन भारत कहा छु: जाया इक्ट्रेंट , जटन्ह**क নাই। কিন্তু সূর্যোর সহিত উহার ভুলনা করিলে উহাকে অভান্ত ক্ষুত্র বোধ হয়। **স**-মন্ত এত্বের একত্রীভূত একটি লোক মণ্ডল অপেকায় স্থারি প্রায় ৬০০ গুণ বুছৎ স্কুতরং রহস্পতির ন্যায় সহস্ত প্রস্কৃ ও পৃথিবীভুলা লকাধিক লোক মণ্ডল সূ र्षात मर्पा धनासारम ध्वाकिक कतिहर পারে। স্থা মুবুর্ত কালের মধ্যে কত क्क मृतवर्षी अर् ७. छेन्यर् नट्न चकीत त्रश्चिकानः विकीर्ग कतित्रा चाटलाक थ-

मान कतिएउटम्। किछ समनीपदममध्ये विणाल विश्वतारका कि वे वक्षि बाक पूर्वा আলোক প্রভা বিভার করিভেছে 🖟 এমত কত কত সূৰ্য্য আৰু ল'পথে বিচরণ ক বিয়া অনস্ত স্থান মধ্যে আপন আপন ভোতি বিভয়ণ করিয়া খাকে ৷ প্রভোক नकत এक अविधि सूर्या। सामारमञ्ज अहे মূর্বের নায়ে তাহারাও স্বকীয় স্ব্যোতিতে প্রকাশ পার। এই স্থা অপেকা তাহার। অপে তেজন্মী ও অ**শ্স বিস্তৃত নহে ৷ `আ**-নরা শুদ্ধ চক্ষে প্রতি রক্ষনীতে সহস্রাধিক এই প্রকার সূর্যা মণ্ডল অবলোকন করি এবং দুরবীক্ষণ যন্ত্র সহকারে এমন কোটি সূর্যা প্রতাক্ষ হয়। কিন্তু আবার যে সকল লোক মণ্ডল আমাদের চকুও দুরবীকণ যান্ত্রের অংগাচর ভাষার সংখ্যা হয়তো অগ-্নীর। অতএব বদি সমস্ত সৌর জগ**ং**ও একবারে বিনকী হইরা যায়, তবে ঈশবের রাজের এক ধলিকণার লোপ হইল বলি-তে হইবে। কিন্তু ঈশ্বরের কি আশ্চর্য্য কৌ-শল! তিনি যে কৌশল দ্বারা তাঁহার অপুর্ব্ব গন্ত গুলিকে নিয়ন্ত্ৰিত করিয়াছেন, ভাহার কণমাত্র ব্রতিক্রম হইলে সমুদ্য় সৃষ্টি প্রণা-ীর বিশ্বসা হইয়া যায়। সুর্যোর আকর্ষণ শক্তি হইতে চুতে হইলে পুথিবী আ**পন** স্থান ভ্ৰফী হয় এবং স্থায়া যে আকৰ্ষণ স্বারা নিয়মিত পথে ভ্রমণ করে, তাহার কিঞিৎ-মাত্র ব্যতিক্রম হইলে সূর্য্য অংকীয় পথ প-রিত্যাগ করিরা অন্য কোন অনিদিক পর্ব जरलयन करता। सूर्या अहे नश मनाअस হুইলে বে গ্রহণণ ভাহার আকর্ষণ ছারা मृत् वक्कारन वक्क च्यारह, ও यथाविशास्त्र পति-গালিত ক্টতেছে, ভাহাদের গতিকিয়াদির বিশুপালতা ঘটিয়া উঠে এবং এই ৰূপে কুর্যা, চন্দ্র, এহে, নক্ষত্র পরস্পর হয়তো এব্ৰপ সংঘটন ছারা চুৰ্ব হইয়া যায়, শক্ত-এব ঈশবের নিয়মের কণামাত্র ব্যতিজ্ঞান হ-ইলে এতাদুশ ভয়কর ব্যাপার উৎপদ্ হয়। কিন্তু কভ কোটি কোটি বংসর অভীত হইয়াছে, তথাপি তাহার কিঞ্চিত্মাত্রও বা-जिक्स पढ़ि बाहे, देशांक केंद्रावस किय-रीयमी मुक्ति धकाम शाहरवाह

ংগান আনরা এই ক্র পৃথিনীয় কি একটি সমুদ্র , একটি পর্জাত, একটি বৃক্ষ পদ্ধ, একটি কুল তৃণের কিবল কল্পূর্ণ রূপে বৃদ্ধিতে পারিনা, তথন সমত ক্ষতির কৌশল আমরা কিরণে মনে ধারণ করিতে লখর্ণ হইব? আনরা যে পৃথিনীর ন্যায় অন্যান্য ছ্যানাকের স্থভাব পর্যাবেক্ষণ করিছে সাইস করি, ইহাই আমাদের স্পর্জার বিষয়।

কিন্তু এই বিন্তীর্ণ ভূমগুলের সহিত যদি সমস্ত হাটির ভুললা করা বায়, তবে ইহা এক বালুক। রেণু হইতেও স্থান বোধ হইবে। কোন ব্যক্তি একটি এই হইতে **এই পৃথিবী অবলোকন করিলে, ই**হাকে এক কৃত্র বিন্দুর ন্যায় দৃষ্টি করিবে এবং তদপেক্ষা অধিক দুরস্থিত লোক হইতে हेहाज विक्यु विमर्गं अध्यक्ष स्ट्रेंब ना। वकिष वह शृथिनी चरभका १७৫ छन ब्रहर এবং উহা বে এফ অঙ্গুরীয়ক ছারা পরিবে-বিতি রহিরাছে তাহা এত রহৎ যে পৃথিবী रहेरक हक्त लाक न्लार्भ कतिरव भारत। আর একটি গ্রহণ্ড এত বুহৎ যে এই পৃথিবীর ন্যায় ১৪১৪টা পৃথিবী একতা করিলে তাহার তলা হয়। সমস্ত প্ৰহের একত্রীভূত একটি লোক মণ্ডল অপেক্ষা স্বয়ং স্থৰ্যা প্ৰায় ৬০০ গুণ ও পৃথিবী অপেকা ১১লক গুণ রুহৎ।

এই সকল গ্রন্থ ও উপগ্রহের গতি-ক্রিয়াই বাকি চমৎকার। শুক্র আছে এক ঘন্টার মধ্যে ৩৪০০০ ক্লোপা ও বুৰ আহ এক বিপক্ষের মধ্যে ৭৭৫ জোল করিয়া জা-কাশ সার্গে বিচরণ করে। শনি আপন ज्यश्रीतक जुळे हरसात महिन > चन्हात महबा २२००० ट्याम जमन करत, श्रूमदककु विद्रमध स्टर्यात निक्छेवर्खी रहेट्य रे व्योप्त नक याकन १४ जिल्हाम करता साबारमत ऋर्या সর্বাস্থ্যতে প্রতি ঘণ্টার ৭৫০০ বোজন উজীর্ণ হত্যা শ্রীর পথে জমণ করে । এই ক্রেশ काहि काहि काक मधन ः काहि सम्बद्धिः कुर्तात एकुक्तिक व्यवनमानः स्वरण विकास করত সমাসেই নিজিক-লাথ আন্তাৰণ করি-IN STREET, MARK THE THE PARTY PROPERTY. wind ran alance, but fo mere

স্বাধের কি অভুন্য শক্তির নিধর্শন জন দর্শন করিভেছে ভাষা ব্যক্ত করা দুরে খা-কুক অর্ভব করাও খনতব ।৪

## পাপকর্মে মানব প্রক্কৃতির কি কি অনিষ্ট হইতে পারে তাহার সংক্ষেপ বিবরণ ৷

় " পাপং কুৰ্ম্বন্ পাপকীৰ্ত্তিঃ পাপমেৰা-শুতে কলং " এই শব্দ করেকটি আপা-ততঃ ভন্নরর বোধ হর বটে, কিন্ধ অনুধা-বন করিয়া দেখিলে ইছাতে জ্ঞানের মধুর মৰ্ভি বিলক্ষণ কৃতি পাইতেছে। যে কোন কর্ম মঙ্গল সংকল্প জগদীশ্বরের অভিপ্রায় বিরুদ্ধ বলিয়া ভির করা বায়, তাহাই পাপ শব্দ উক্ত হইয়া থাকে। স্বতরাং পাপা-চরণ করা শুদ্ধ ঈশ্বরের প্রতিপক্ষ হওয়া-মাত্র। আমাদিপের প্রত্যেক নিশাসে বে অচিন্তা মহিম পরম পুরুষের অপার করু-ণার পরিচয় পাওয়া যাইতেছে, ভাঁছার अमंखिए कार्या (व अक्ष कन छेर्श्म হঠবে তাহাতে আর সংশয় কি। যাহাত্রে ८ । इ तर्लम् स्टल्ड साम आइव स्तिट्ड ना इस. एष्टियरत मानधान कड़ारे खेळ ब-চনের উদ্দেশ্য। পাপকারী বাক্তি আপনার প্রতি-আপনার মহীরদী প্রকৃতির প্রতি ও স্বকীয় বিশুদ্ধ আত্মার প্রতি যে কি কি প্র-গাঢ় অনিষ্ঠ উৎপাদন করে, প্রস্তাবিত বিষ-য়াভুসারে এক্ষণে ভাছারই বিবেচনা করা विद्धवा

একের পাপাচরণ ছারা বে অনোর
প্রভৃত জনিউ ছটিতে পারে, ডাহা নির্দেশ
করা ঘাছুলামাত্র। অনোর প্রতি হত প্রকার
অত্যাচার গভাবিত হইতে পারে, পাসীদিগের ছারা ডাহার অলুটানের ছার কিছুমাত্র অব্যাচিত হাকে মা া যে কর্মা কোন
ক্রমাত্র পর্যাচিত হাকে মা া যে কর্মা কোন
ক্রমাত্র অব্যাচিত হাকে
পারে মা, কার্মান অর্শীলনে বে ব্যক্তি অবলীলাক্রমে প্রস্তুত্ব হুইরা বাকে, সে কি
না ক্রমাত্র পারে । একা কি যে যে কার্মা
বালাক্রমাত্র বিশ্বার বিশ্বার বিশ্বার

भाभीकिटनेस समाधा बटर । भाभटक नामा-किक क्याग भूटका वेकि विश्वतिकी भक्ति বলিলেও হয়। উর্ণনাভির ম্যার উহা বেখানে राबादन विषय करत, तारे तारे इरलारे ফুংখজাল বিভার করিতে থাকে। সমুদার বিশ্বকে ছঃখ সলিলে প্লাবিভ করিরাও উ-হার উ্প্রিহয় রা। ভূমগুল মধ্যে যে ক্লড কত লোক**কে প্ৰ**ত্যহ **পাপজনিত অশেষ** ছঃখ ভোগ করিতে হয়, তাহা কে **বলিতে** পারে ? কত কত গৃহত্বের ভবনে যে কোঁ-ধের ভীষণ মুর্ক্তি সঞ্চারিত হইতেছে, স্বার্থ-পরতার প্রবল প্রভুত্ব প্রবৃটিত হইতেছে, অহরারের ভয়ন্ধর কলহ উপিত হুইতেছে: তাহার সংখ্যা **করা ছ**ংসাধ্য। কোন স্থানে বিশাস যাতকতা পিশাচী অগণ্য ক্লেশ ক-**ন্টকাকীণ আপন জঘন্য সর্গি বিভ্**ত ক-রিতেছে: কো**ৰ**ায় বা হিংসা রাশ্বনীর করাজ দর্শন ছারা কোন নির্দ্ধেত কছবের মর্ম বিদারিত হইতেছে, কোনু কলে উদ্ধ তরিপু বর্গের প্রতাপ দাবানলে অপর প্রাণী পুঞ্জের স্থাকানন দগ্ধ করিতেছে। क्लियात्र वा जानमूनज्यात चाक्रके है-<u>চ্চিয় কুরঙ্গ সকল আত্মীয় গণেরও আত্ম</u> প্রসাদ কবলিত করিতেছে। এই কপে কি আন্ধীয় নকু বান্ধব, কি অপর প্রাণী স-मृर, नकल्या हे 'अभीड़िए ও विमीर्ग क्रमण नक्त जे बहु । शांश क्ष शिकारहत मुग-পৎ শাক্ষী ও বশীভূত হইয়া আসিতেছে।

কিন্তু পাপশীল মানব সকল আপ্রানিপের আচরিত ফ্রমণ কর্মের কল প্রাপ্
ছংসহ বস্ত্রণ। সমূহ আপ্রানার যেমন সহা ক্রে, তৎসমূদার বত ভ্রানক ও ক্রেমহর
র হউক না কেন, অন্যের সম্প্রে মারছাই অকিলিংকের বোধ হইবে,নম্মেন্থনাই।
প্রায় সকল বিষয়েই অধর্মা নিবন্ধন যে
বিষময় কল উৎপন্ন হইনা থাকে, অমুষ্ঠাভার সহিত ভাহার বত ঘনিষ্ঠতা হয়, তভাই
বিষমভন্ন ইয়া উঠে। ক্রোন ব্যক্তির ছ্রস্থিলকা নিমিক্ত ছাহার বন্ধু বাক্র্য দিগকে
বত করা গাইকে ক্রোনার্ম্য আন্রান্ধ
স্থাইকে ক্রানার্ম্য বিশ্বর

लहेट इस, रक्षु वाक्षव नगरक कार्यात তত লইতে হয় না। সেই ৰপ বে আপন ভূদ্ভরে প্রতিক্র আপনি বেমন ভোগ করে , অন্য কাহাকেও আর লেৰপ করিতে হয় না: বে আপন অন্তর**ছ** উদার বি-त्रारूत स्थानिक छेशावन नकत छेझकान পুরুক অমানব্বং ষদৃচ্ছাচারে প্রবৃত্ত হইয়া তাহার প্রশক্ত প্রকৃতি, সমুজ্জুল গৌরব ও প্রভাপুত্র একবারে নিষ্পুত বা নির্মাণ ক-রিয়া কেলে এবং হৃদয়ভাত চির্দঞ্জীবনী আশালভার এককালে সমূলে উন্ধূলন ক-রিয়া দের। অন্যের প্রতি কি ইহার অ-পেক্ষা অধিকতর অপকার সম্ভবিতে পারে? কদাচ নতে। ছুরাচার পামরেরা আপেন গ-রীয়দী প্রকৃতির বিরুদ্ধে উদৃশ তম্মাচ্ছন **उत्रक**त ७ भाकावर गाभारत अहा रहे-য়া থাকে যে ভাহার কিছুমাত্র অ্মুভর ক-রিতে পারিলে তাহারা আপনারাই কম্পিড ও রোদন প্রায়ণ হয়, নন্দেহ নাই :

কোন কোন ছুরিতকারী এমন কথা স্ফালেও সলিতে পারে, যে ত্তকর্মে রত হই-য়া তাদার। আপনাদিগেরই অধিক হানি করিয়াছে। কিন্তু ইহাতেই কি ভাহাদি-গের আত্র: ভৃতি লাভ করিতে পারে? ইছা কি কথন কিংস্থার্থ নায়ে পর্তার কার্য্য বলিয়া গণা হইতে পারে? অনেক দুঃ-শীল মনুষ্য গণের উদৃশ সারল্যভাব প্রকাশ পার রটে, যে তাহাদিখের পাপাচরণে অ-ন্যের কোন অনিষ্ট না হইয়া গুল্ধ আপ-নাদিগকেই তদীয় প্রতিকল ভোগ করিতে হইয়াচে, এবং তাহারা একপ মনে করিয়াও কিছু সাৰুনা পায়ঃ কিন্তু এৰূপ স্মনুত্ব দারা কি আরও দৃঢ় প্রতীতি হয় না যে ঈ-मृग मत्रम खंडाय कमूच विकादत वि**हर** ₹-ওয়াও সম্ধিক শোচনীয় বিষয়? ইহাও ফি বোধ গমা হয় না <u>শে স্নোর</u>্কোন অপকার সংঘটন না হইলেও ওল্ল আপন অপাপবিদ্ধ বিমল আদ্বাকে কলুবিত করা-मिहे वियम मायात्र, नर्जाथा व्यक्तिकते छ निजान विश्व विश्व कर्य रे शहकि जर শকারী তর্ভ নথের সামার প্রতি সাচ Go at admired sciences from the

(क्न कहारे अक्षांविक विवटतत मुना छ।-ৎপর্যা। পাণী লোককে এক একার ব ভাব বিরুদ্ধ অন্ত অন্ত ৰশিয়াই দ্বির করা উচিত। যে ব্যক্তি স্থাপন প্রকৃতি রাজ্যের यजुह अनीत नित्रम नकत भरनीताकस्य य-नरइनम कतिज्ञां चूकि दक्षि वदः धर्म थ-वृच्चित উপদিষ্ট উৎকৃষ্ট क्लाानगई स्था-ধুর শাসন সমুদায় অসক চিত চিত্তে ও নি-ক্রে অতিবর্ত্তন করিয়া নিক্ল**ফ র্ডি** নি-করের কিন্ধর হইতে ও জঘণ্য ভোগ লা লসাকুণ্ডে আত্ম বিসর্জ্বন করিতে পারে। ভাহাকে একটা সম্বাভাবিক নরাকৃতি জন্ত না বলিয়া আর কোন্শব্দে উক্ত করিব। হা ' বে বাজি পাপরণ অস্থরের কুহক জালে এৰূপ আছেল হুইয়া পড়ে, বে সর্বসাফী স্পয়েশ বিশ্বাধিপের সংস্থাপিত সমৃদ্ধ ধর্ম-আজান রাজেটর নিয়মবর্জীনা হইয়া প্রভাত অশেষ প্রকারে তাহার ভূয়ো ভূয়ো বিজ্ঞো-হাচরণে অবিকলিত হৃদয়ে প্রবৃত্ত হয় ও প দে পদে আপন প্রকৃতির বিরুদ্ধ ব্যবহারে প্রণয় বন্ধন করে, ভালকে আর কি বলিয়া मसूषा (धानी मर्या शना कता बास? উজ-ৰূপ যদৃজ্যানত অত্যাচার ও নির্ম লভ্বন প্রায় সচরাচর প্রত্যক করা যায়। এই সমস্তই মহাপাপ ৰলিয়া গণ্য হইতে পারে: তদ্ধপ প্রতিজ্ঞা সহকারে ধর্মনীতি স্থত্র সক-লের খণ্ডন করিতে চেফা করা অথবা হা-**শ্মিক বর্গের প্রতি উপহাস করা অতি ভর**ঙ্গর দোষ ও নিঃসন্দেহ পাপাদার চিক্ল,বরঞ ত-ৎসমুদায়ের সহিত তুলনা করিলে অজ্ঞান তি-মিরাকৃত ফুর্বল প্রকৃতি সম্পন্ন মানব গণের কাৰ্যাগত বে কিছু দোৰ দৃষ্ট হয়,ৰে সকল-द्य विरम्भ प्रकृष वना गात्र ना । **উत्ति**थिङ পাপ গ্রহৃত্তি আমাধিগের প্রাক্তরিক সৌ-नगरं। ७ व्यक्त रही जाहा अनुविधी सरीस्त्री প্রকৃতির বিষাতক এক শকার বাংখাতিক রোগ প্রতিষ্ঠে । হয়। । বুকার । স্থারুপ্র রুম रहेटम का का वा बा अक्रवाति अरखाक माः शहे रवम्य करम करम किला के होता ११-Series was all a grant years wine आश्च क्रेनात्र कीत्रवासुनकादन अवुक स्ट्रेल অবক্সই অইকা তীকার করিতে হয়, 'যে উ-कात आक्रिक धर्म मनुरदेश दकान विकास रिकाकनाः जिथाशाहे উहारक वेवश आञ्चक ও বিনক্ট করিয়াছে। তথাপি হুকা কপে বিবেচনা করিয়া দেখিলে নিশ্য এতীতি হইবে উহার সেৰপ ক্রীক্রট হওয়া প্রকৃতি সিদ্ধ নহে। যদি কথন কোন বিশাল শি<sup>লপ</sup> যন্ত্রের সমুদর কৌশল সহসা কোন বি-রোধী কারণের ব্যবধানে বিকল হইরা যায়, ভাছা ছইলে যে শক্তি বিশেষ সহকারে ঐ যন্ত্রের কার্য্য নির্ম্বাহ হইত তাহার গতি রোধ হওয়াতে উহাকে এক কালে বিশ্বী করিয়া কেলে,সভা বটে, কিন্তু সেৰূপে বি-নষ্ট ছওয়া কি উহার স্বভাবসিদ্ধ ধ্যা? विशृत्रका इरेश विकल शांकरव विश्वाहे কি উহার নির্মাণ হইয়াছিল, এৰূপ কথ-नहे नरह। त्महे क्म, काम त्कामा नि-क्रफेद्रिक नकल मनुरग्रद अভादनिक र-ইলেও সমুচিত শাসন বিরহে বধন উদ্দাম হইয়া উঠে, তখন অস্বাভাবিক মুর্ত্তি ধারণ করিয়া ধর্মা প্রবৃত্তি বজ্ঞের যাবভীয় কৌশল मक्स धक काल विमुख्य । विनष्टे कतिया কেলে। কিন্তু ভাহা হইলেও উক্ত উৎ-শৃষ্ণলিত ধর্ম যজের যে প্রতীকারের সম্ভা-वन। नार, रेरा निजाय क्षजाक विक्रम कथा।

च्यान्य क्रिके क्रिकेश मार्कात चार्छ, বে পাপকর্ম ও তলিবন্ধন ফুংখ ভোগ করা मसुर्वात अभावाधीम। वास्तविक कीव গ্ৰেকৃতি দুকীতে ইছা অপেকা অধিক স্থা-ভাবিক বলিয়া স্থার কিছুই প্রতীয়মান হয় ना वर्षे ; क्खि विस्तृतना कतित्व कहे थ-চলিত ব্রদ্ধুল সংস্কারই আমাদিগের সর্বা-नादम्या विश्वान । এই व्यक्षाउम नर्यानवामी ভরকর সিক্ষান্তই মনুষ্ঠ জাতির ধর্ম রাজ্য বি**লারনের সুলীভূত** কারণ। বাছ পদার্থ नमुमारमूत्र कार्या कात्रन अनानी नर्यारणा-চনে সংখারের ক্রমণঃ মঞ্চলোল্লভি হইবে रिनिष्टा रि अकृष्टि जानम धनविनी जानात नारिकार रक्ष के काम अरूप गिका छ है छा-शारक विकास विदाय जासरह विदेश द-THE OF THE CONTRACTOR

অধির সংশাদ ছইলে তদীয় যলিনত্ব তি-রোহিত ছইলা বিমল জ্যোতিতে বিকাশ পার, তদ্ধপ ভত্তভানাগ্রিক্সারা মানব প্র-কৃতি যাবতীয় কলুবরালা বিনকী করিয়া অপূর্বে ধর্ম জ্যোতিতে সমুক্ষ্মণ ইয় এবং পাপের হত্ত হইতে বিমৃক্ত হইয়া অমৃতান্দদ লহরীতে অভিবিক্ত হয়।

## আত্মোৎকর বিধান।

দিতীয়তঃ ধর্মতন্ত্র নিবন্ধন উৎকর্ম। ঘামরা আপনাদিগের প্রতি দৃষ্টি করিলে এবয়িধ অশেষ শক্তি সমুহের নিদর্শন পাই, যে তদ্ধারা আমরা চিরপরিবর্ত্তনশীল এই দৃশ্বমান বিশ্বের সহিত দুঢ়তর সম্বন্ধ হইয়া ৰাম্পদাৰ্থ সমুদায়ের প্ৰতাক্ষ করিবার নিমিক্ত আমাদিবোর দর্শন জাবণা-कि कार्रिक मक्न शहर तिशाह धदः যাহাতে সেই সমস্ত পদার্থ আমাদিগের বৈষয়িক সুখ শাধনের হেতৃ হহতে পারে. ভাৰার উপায় স্বরূপ হস্ত পদাদি কর্মেন্দ্রিয় ও বিবিধ মনোকৃত্তি সমুদায়ও বিদামান আছে। এতক্তিন আমাদিগের জারও যে अविष्ठि व्यथ्कातिनी गिक्ति चाह्य, एमा काल ব্যাপী বে নকল বস্তু আমর৷ 🖣শ্বা 🕾 তাক্ষ করি কেবল তৎসমুদায়েই উচার প্ৰয়বসান হয় না৷ উহা পাৰিব প্লাথ **সমুদা**য় অতিবর্ত্তন করিয়া পরিশেষে জনা-দি অনন্ত কারণের অনুসন্ধানে প্রধাবিত হয়। ষতক্ষণ সেই সর্বাধিজ্ঞানসয় চির-স্থন চিদায়ার সংস্রবনা পার সে পর্যান্ত উঁহা আর কিছুতেই নিরস্ত হইবার নহে। चामानिरभत (महे स्थामश्री नुडिपैरिक আমরা ধর্মতত্ত্বাস্কাবিনী বলিয়া উক্ত করি। মানবীয় ভাবা ছারা উহার মাহাত্ম ও গৌ-রবের অতিমাত্র বর্ণনাতেও অত্যক্তি হট-बात धनकि पादक ना, अहे महीत्रमी मक्टि প্রভাবে ভীবাদ্ধা এই দৃশ্বসয় ভূত প্রাপঞ্চেয় অতীত সেই পরম পুরুষের সহিত সহ্যাসে-त्र वोगाण धोख र्त्र धहे चालाक नका-विश्वी नवानशीयमी नविश्वत महाक छटवार WAS ALCOHOLD BANK WAS LAST AND THE

मसूरपात स्कृमात मानरम व्यक्तिकाना व ক স্বৰূপের প্ৰক্লুত জ্ঞান অভুরিত ও কু-রিত হইতে আরম্ভ করে এবং নিরম্ভর <del>ড</del>-জিবারি সেক সহকারে জামে জামে জাম পাইতে থাকে, তাহা হ**ইলে মামৰ প্রকৃতির** া কি অনিৰ্বাচনীয় অপূৰ্ব্ব ভাষ হইয়া উঠে, তার্। বুদ্ধি ভারা ধারণ করা **তুংসাধ্য। ঈ**-মরের আজ্ঞাবহু থাকিয়া সমাহিত চিত্তে তাঁহার উপাসনায় প্রবৃত্ত হওয়া এবং চরমে তাঁহার স্বরপের অনুরূপ হইবার আন্ কর। অপেকা আমাদিনের অধিক উদার্ঘ্য পরন পুরুষার্গের বিষয় আর কি হইতে পারে? ইহাই আমাদিগের স্বভাবজাত বর্ষি-পরম উপাদের ফল। নীতি ফতা ভরুর প্রবৃত্তির সহিত ধর্মতেত্বোভাবিনী বৃত্তির অতি নিকট সময়ক। ইহারা উভয়ই নি-স্বার্থ ভারাপ্র এবং প্র<del>ক্ষার সমবেত হই</del>-য়াই বৃদ্ধি পায়। ধর্ম তল্তই নীতি প্রবিভার আমূল ও প্রাণ স্বরূপ। এই ধর্মাতকু দ্বারা দ্বীক্ষিত ভ্রত্যা আমর: জ্ঞাননেতা সহকারে জনদীক্ষরের অপক্ষপাত বিচার ও সর্বাময়ী প্রতিভাগ অংলোকন করিয়া শ্রহা ও স মাধান পুর্বেক তাহার উপাসনা করি এবং বিবেক স্থানিপ কৰ্ণ ভার। পূৰ্ণ স্থৰূপের অন্ত্র-কণ হট্বার জন্য ঐশী অমুড্ডা আবেণ ক-রিয়া থাকি? যেকেড় ইহাই অবিকল্পিড প্ররুত ধর্মের সার মর্ম ও মুখ্য তাৎপর্যা। তৃতীয়তঃ বৃদ্ধিনৃত্তি ঘটত উৎকর্ষ।

কল্যানের নিদান। তরুণ স্থাতেই বলি

ভূতীয়তঃ বৃদ্ধিবৃত্তি ঘটিত উৎকর্ষ।
আমর আত্ম শক্তি সমূহের গবেবণার প্ররত হইলে অথ্যে বৃদ্ধিবৃত্তির আবিষ্কার না
করির আর অন্যদিকে দৃটি করিতে পারি
না যে মহতী শক্তি ভারা আমাদিকৈর
অন্তব্, বিতর্ক ও বিচার প্রভৃতি মামদিক
কিন্যা নির্বাহ হর এবং ঘাহার শেরকর সাহান্যে সভার সন্ধান ও প্রাপ্তি হইরা থাকে,
তাহাকেই বৃদ্ধি বৃত্তি বলে। এ বৃত্তির অত্মেল করিতে আমাদিসকে আর অধিক
আয়াস পাইতে হর মা। অনুব্রের অপর
শক্তি বকল অক্সান বুদ্ধি বন প্রধান বল
এবং সম্পাদ্ধিক স্থিতিবিক্তির স্থান। বিশ্

यपुरान् १७ अहे बनिया पुत्र एकाम बास्ति-क छेशररन (मध्या यात्र, जाना क्रीका ल প্রথমতঃ বোধ শ্রিদা উহত্রবিধান ও জাল নৈপুণাদি শিক্ষা করাই সেই উপদেশের মুখ্য উদ্দেশ্য বলিয়া ছিব্ন করে, সল্পেছ-সাই। এমন कि " मिका <sup>27</sup>ं **এह**ें **भग्नी श्राह्मा**न कतिता लादक धात्रहे गरम करते तृषि व-ত্তির পরিচালন ও মর্জন করাই উহার অর্থ এই ৰূপ শিকাদান সিমিডই স্থানে স্থানে विमालय नकन नःशाभिष्ठ रहेयाहरू अवर अ সকল পাঠাগার হইতে ৰালক বৃদ্দের নীতি প্রবৃত্তির উত্তেজন ও ধর্মতত্ত্বের অমুশীলন বিসর্জিত হওয়াতে সে সমুদয় উচিত মত-रेखे कत नावक रव नारे, व्यथत नाशाहर। बुम्बित यामृण च्यामत ७ भोतव कत्रिल शास्क সেই কপ করাই উচিত বটে; কিছ ধর্ম প্রবৃত্তি অপেকা উহাকে অধিকতর পূজার্হ মনে করা কখনই লায়ামূগত ও যুক্তি স-ন্মত হইতে পারে না। ধর্মা প্রবৃত্তির সহিত জ্ঞানোলতির ছ্রপনেয় সম্বন্ধ রহিয়াছে। আমর। বস্তবিচার পূর্বকে সৎপক্ষ অবলয়ন করিয়া ধর্মা প্রবৃদ্ধি সমূত বছবিধ বিশুদ্ধ কার্বা নিজ্ঞান করতঃ মুমুর্ব্য মামের উপযুক্ত হইব এবং ডলিবন্ধন চিত্ত বিকাশও আশ্ব প্রসাদাদি কলেব পবিত্র স্থুখ সন্তোগে সমর্থ হইতে পারিব এই উদ্দেশেই করণানিধান বিশ্বপিত। আমাদিগের চিক্ত নিলমে বুদ্ধির অধিষ্ঠাপন করিয়াছেন। স্থতরাং ধর্মা ঞ-বজির উন্নতি নিমিজই বুদ্ধিবৃত্তির উৎকর্ম বিধান আবস্থাক হইয়াছে। অভএব যদি क्लाम धकावान् वास्त्रित वृक्तिविषत्रक छे दर्भ সাধন ত্রতে ত্রতী হইবার বাসনা থাকে, অত্যেই তাঁহার ধর্মানুষ্ঠাৰ ব্রুণ সংকশ্প कहा नर्वश क्षेत्रतः 🖖 😘 🐃 भागाप्रन বা অভ্যানেই কিছু মান্দ শক্তির পূ-ণ্ডা:প্রাপ্তি হয় না। নিংখ্যর্তা অবলয়ন করা সর্বোপদ্ধি আবঞ্চক ; বেন্ডেডু ভারাই भटकात काल अबेल कि अपनि विनिर्वा क **्टाब नजात** ७ डिलार्कन क्वारे कृति-व THE HALF BOOK IS MIN THE YEAR TARRESTANCE OF THE PARTY OF THE PARTY

ভের প্রভি:দৃষ্টি রাখা কথনই উচিত নহে। উহা আমাদিগকে বেখানে লইয়া যায় অ-अक्रिक्क अनुगिरिक त्मरे भारमरे शमन করা কর্ত্ব্য। তাহা আমাদিনের বে কোন ভার্থের প্রতিরোধ করুক, তঃসহ যাতনা লার্ক বা বিশেষ ক্ষতি কর হউক; কি কোন অভ্যাচার জনিত উপদ্রবই ঘটুক, किছু তেই मझु हिल इंख्या कर्खवा नरह। धहे শ্বপ অধাবসায় ও দৃঢ়তাই, সতোর প্রতি প্ৰকৃত নিশ্বাৰ্থ প্ৰীতি। ইহা ব্যতিরেকে স্বাভাবিক স্থান্ধরন্তি সকল বাতিকাসা ও কুমার্ম ধাবিনী হয় ও মনের উজ্জ্ প্রতিভাও প্রভা পূনা ছইয়া যায়। অধিক কি, সত্যের প্রতি প্রীতি শুন্য হ**ইলে, মান**ব প্রকৃতির যে সুমধুর উদারভাব তাহা এক-কালে কলভিতে ও গরলম্য হট্যাউঠে। সতোর প্রতিহতাদর হওয়ার কত কত প-ণ্ডিডাভিমানী তান্ধিকৈরা যে লোকের কি পর্যান্ত অনিটোংপাদন করে, তাহা বর্ণিত ভইবার নহে। ঐ সকল পামরেরা শুদ্ধ 'অনোর প্রতিই প্রতারণা করে, এমন নহে; বিবেচনা করিয়া দেখিলে আপুনারাও প্রতা-রিভ হয় এবং পরিশেষে আপন নির্মিত রুখা বিভণ্ডাজালে আপনারাই আবন্ধ হই-য়া পঢ়ে। কত কত অসামান্যধীশক্তি সম্প-্ম লোকেও যে অগাধ ভাস্কি কৃপে নিময় हरेग्राहिन, भनार्थ ও विकास भाज घरिट পুরারত মধ্যে তাহার ভূরি ভূরি প্রামাণিক দুক্তান্ত রহিয়াছে। প্রকাশ্তরে **এৰপ প্ৰমাণ সকলও দৃতি**করা যায়, যে ঘং-শামানা মান্সিক শক্তি সম্পন্ন কত কত ব্যক্তি শুক্ষ সত্য ও স্বজাতীয় জীববর্গের প্র-তি নিংস্বার্থ প্রতিপ্রতন্ত্রতা জন্য ক্রমেক্র মে লোকসমাজে অভুজ প্রতিপত্তি ওমাহাত্মা লাভ করিয়া পিলাছেল। বস্থা মধ্যে যে ৰমন্ত অসীম্বীশোষ্টা সম্পন্ন বছল শুভ विश्वाती व्यथानिक ७ श्रुत्वानरमनकश्रम स्र स िकाषीम शुरक इत्मन रूपन क्रान-ৰীৰ রোপণ ও সম্বন পূর্বক তাহাদিগকে नद्भव द्वबद्ध तक्षिष्ठ कवित्र। भारता धना मानगणा मा अ विकासितीय स्टेश तरियादस्य,

কর্ম হইরাছিল, বাঁহারা কোন প্রাফুতিক विटबंग आधाराभानी मा इड्रेटन उक्त मदन শ্বভাব, পক্ষপাত শ্বা, বিশ্বংথ চিত্ত ও বা-বজ্জীবন সভাপরায়ণ থাকার ভাদুশ বিশুদ্ধ ষশোভাজন হইয়া ছিলেন। ছিতি স্থা-পক গুণোপেত কোন প্ৰাকৃতিক বয়নে বল পূর্বক আকুঞ্চিত করিয়া পরে ছাড়িয় দিলে তাহা ষেমন আপন স্বভারাভুসারে পুনরায় পুর্বাবস্থায় অবস্থিত স্থা, সেই-রপ্মনুষোর প্রশস্ত চিন্তাশক্তি যথন স্থার্থ পরতা ভার হ্ইতে অবকাশ পায়, তথ্ উহার্থা প্রাশস্থালাভ করে। বর্থন সনুষ্ विद्वक रेगटनत निथताक हरेग्रा विज्ञान-লোচনে বিচিত্র বিশ্ব যন্তের যাবভীয় নি-শ্বাণ কৌশল অনলোকন করেন এবং সাম: কিক আচার পদতি ও সমুদার জীব প্র-জ্বির পর্যালোচনে তৎপর হরেন, তথন জা-ছার অস্তঃকরণ স্বতই স্বার্থ পরতঃ পরি**হা**র পূর্বাক প্রসারিত হইতে আরম্ভ করিয়া এক-কালে সৰ্ববাপী হইয়া উঠে। অতএৰ নীতি প্রবৃদ্ধি ও ধর্ষাতব্যোদ্যাবিনী কৃত্তির প্রকৃত উলতি হইলেই বুজিভূমি সমাক্টকারা ও সমূচিত ফলশালিনী হয়। বুদ্ধি রুক্তি নি-বন্ধন উৎকর্ষের সহিত ধর্মা প্রবৃত্তি বিষ য়িনী উন্নতির যে অতি নিকট সম্প্র, ত্রি য**ে প্রায় কেছ্ছ মনোনিবেশ করে** নার্ক **অনেকেই পূর্বেদীর অ**ন্তর্ক্তাবে অপর্দীকে একেবারে বিসজ্জন করে, এট নিমিত্রই এবিষয় এত বাছলা কপে অংকেলন কর बाहरङङ्ग काटनत कृष्टिकश्चि करम লোকের যে কি বিপরীত বুদ্ধি ইইয়াছে, তাহা বোধ গমা করাই স্কৃতিন। প্রায় সকলেই ধর্মাক্তনে অপেজা বৈধয়িক কার্যা নৈপুণা ও বোদ শক্তিবই অধিক প্রাধান্য ও বিশেষ আৰম্ভাকত। মনে করে। বিদ্যাভ্যাস করাই শিক্ষার প্রধান অঞ্জ ব-লিরা ছির হইয়াছে; স্ত্রাং তদ্মু-माद्र मकरण अक्रुं कन्।। बननी धर्मानी ह শিকা ও তত্ত্তান দীকাকে জলাঞ্লি দিয়া एक विश्वणित जेशांक तिरे नपुरस्क बरेटल्ड दिनाय देनेन्त्रा त्व नुद्रमन्यनीत SIRILE ALME TO ? . THE MANY WITH দহতে পরিভ্রম্ভ ছইলে উছা দেবসূচি পরিহার পূর্বক বে ভয়কর বৈভ্যাকারে পরিণত হর ভাহাতেও সন্দেহ নাজ নাইঃ

चानक्षे भारत कात दुष्पि निसंत्रक উৎকৰ বিধান আৰু কিছুই নহে,গুক্ত সাং-সাধিক বিবিধ ভারের অভিজ্ঞান্তরা মারা অভিজ্ঞতা লাভ করাও কিছু জাপ আবিষ্ঠ-ক নহে, কিন্তু কেবল উহাতেই বুলি বুলি বিষয়ক উৎকর্ষের পর্য্যবর্শান ছওয়া কদান मञ्जाविक नरहा वि मकल श्रेमार्थंद्र विठा-রে ও তত্ত্ব নিরূ**পণে আমাদিগের** অধিকার এ।ছে,তৎসমুদারে আমর। বেপর্যন্ত ইচ্ছা-নুসারে বুজি পরিচালন করিতে না পারিব, गर्शांक मनरक मश्ये । वृक्तिवाता श्रृक्ता-গুপুষরপে প্রত্যেক ঘটনার কার্যা কা-য়ও নিৰুপৰে সমৰ্থ এবং বৰ্ডমান ঘটনা नुरके ভবিষ্যাদ ঘটনা **ছির করণে সক্ষম** না বইৰ এবং যেপৰ্য্য**ন্ত ধৰ্ম তত্ত্বের স্থধা**-দিক উগৰেশের অনুমোদিত হ**ই**য়া না চলিব, সে পর্যান্ত বৃদ্ধি বৃদ্ধি ঘটিত উৎক-শের আরু কিডুতেই পুণ্ডা ইইবে না।

# বিজ্ঞান বার্ত। । জ্যোতিব।

১ — অক্স কোর্ড নগর স্থিত মান মদির হইতে একজন জ্যোতিবিৎ পণ্ডিত
৪০ সংখ্যক মূতন গ্রহটাকে সন্দর্শন করিমাছেন। এই অভিনব গ্রহের আকৃতি
ও স্থিতি গতির বিষয় অদ্যাপি কিছুই প্রক্ষেপ্ত গাইশ

> কিয়ৎকাল অতীত হইল ক্এক বাজি জ্যোতির্বিৎ পণ্ডিত স্থা মণ্ডলে ক্ তিপয় চিক সন্দর্শন করিয়া এক মতের জ্ব বদারণ করিয়াছেন। তাঁহায়া দেপিয়াছেন, যে গণনত্ব সৌর বিশ্বর সহিত ভুমণ্ডল তিত তাড়িত পদার্থের অনেক সমুক্ষ কাছে উলিখিত সৌর বিশ্বর ভাস বৃদ্ধি অমুনারে পার্থিব তাড়িত পদার্থেরও হাস বৃদ্ধি ইয়া খার্কে এবং তদনুসারে অন্নীতকে স্বান্তি দির উৎপত্তি ও কীর শ্রীরে ক্সেরা সামুন হইয়া থাকে ত্ৰ- আমীছিকার অভ্নাতি নিউই

য়ৰ্ক প্রেদেশীয় আলবেনী নামকছান নিউই

দী একজন নাজিমতী স্ত্রী উক্ত ছাদেশ প্রাক্ত
মানমন্দির প্রস্ত করণের জনা প্রচুর আর্থ
প্রদান করিবাছেন এবং নিউ লাউথ ওএল্নের মন্তর্গত নিউনি নামক ছানে আর
একটা মান মন্দির প্রস্তুত হইবার উন্যোগ
ইইতেছে

৪৷— ইউরোপে অনেক অপা বৃদ্ধি মন্ত্রা পুনর্কার পৃথিবীতে এক ধৃমকেতু পতন হইবার ভয়ে মহাভীত হইরাছিলেন কিন্তু এরেগন নামক একজন পণ্ডিত বিশেষ বর্ণনা বারা ভাঁছাদিগের উক্ত অস্কুলক ভয় দূর করিয়াছেন প

#### রসায়ন বিদ্যা।

১ — অনেক দৃষিত গোল আলু চক্ষে দেখিলে চিনিডে পারা বায় না, কিন্তু তাহা পাক করিরা ভোজন করিলে পীড়া জামিবার সন্তাবনা, এক্ষণে একজন পণ্ডিড ঐকপ দৃষিত আলুর দোঘ পরীক্ষার এক উপায় প্রকাশ করিয়াছেন। ভিনি দেখিলাছেন যে বিক্লভ আলুর কিয়দংশ ছুদ্দে দিলেই তৎক্ষণাৎ ঐ ছুদ্ধ জমিয়া যায় কিন্তু ভাল আলু দীর্ঘকাল ছুদ্ধে থাকিলেও চন্দ্ৰ নাই হয় নাশ

২। দিবসের মধ্যে সকল অবস্থায়
মন্ত্রের নিশাস সমভাবে প্রবাহিত হয় না,
অবস্থা বিশেষে নিশাস ক্রিরার অনেক ইতর বিশেষ হয় কিন্তু কোন্সময় মন্ত্রের
ক্রিপ্রকার নিশাস নির্গত হয় এবং সে কি
পরিমাণ বায়ু সেবন করে,তাছা ইতি শুর্কে
সমর কপে নিজারিত হয় নাই। সম্ভাতি
ভাজার ইসমিধ নামক একজন পাউত নি
শাসের পরিমাণ ক্রিয়া ক্রিয়া এক চম্মুক্র উপায় করিয়াকেন ক্রিয়া এক চম্মুক্র উপায় করিয়াকেন ক্রিয়া প্রক্রমণ
করে ওপায় করিয়াকেন ক্রিয়া প্রক্রমণ
করে এবং গাড়াকরা বিশ্বাস ত্যায়
করে এবং গাড়াকরা বেডাইকে, শোলার
ভারা উপর নীতে সভায়াত করিলে ও জান্

পণ্ডিত তাহা স্থানর কপে নির্দারিত করিয়া-ছেন। এই বিষর পরীক্ষার ক্ষায় তিনি এক যন্ত্র প্রস্তুত করিয়াছেন এবং উক্ত যন্ত্র ছার। ক্ষাপনার দক্ষ অবস্থার নির্দাসকিয়া প্রীক্ষা করিয়া দেখিয়াছেন। এই স্থন্তের বিস্তারিত বিষরণ পরিণামে প্রকাশপাইবেশ

তা—হলিছক নামক এক প্রকার পৃষ্ণা রক্ষের ছালে উৎক্ষে কারজ প্রস্তুত হই তেছে। এ ছাল হইতে সমধিক আঁস প্রাপ্ত হণ্ডরা বায় এবং তদ্ধারা ববেষ্ট কারজ ই পেন্ন হয়। প্রায় তিন বিঘ! ভূমির হলিছকের ছাল হইতে শতাধিক মন আঁস প্রাপ্ত হণ্ডরা বায়। কেবল যে উক্ত বক্ষের ছালতেই কারজ জন্মায় এনন নহে, উহার মূলের সাঁস ঘারাও কারজ প্রস্তুত হয়। মূল সমুদায়কে পেষিত করিলে পর তন্মধা হইতে এক প্রকার শক্ত নির্গত হয় এবং এ শক্ত ঘারা উৎক্রই কারজ জন্মায়।

# ভূতত্ত্ব বিদ্যা।

>।--পণ্ডিতবর ইমন্স সাহেব কেরো-লিনা নামক স্থানের মৃত্তিক। অভ্যন্তর হই-তে প্রাচীন কালের এক অন্তুত পশুর দত্ত প্রাপ্ত হন। ঐ দত্ত ব্যক্ত বিবাণের নাায় রহৎ এবং শুনা গর্ম †।

২া—দক্ষিণ **আমিরিকার অন্তঃ**পাতী কু-ইটো নামক স্থানে এক ভয়ন্ধর ভশা বৃত্তি হইয়া গিয়াছে। প্রভূত ভন্ম রাশি ধারা আ-কাশ মণ্ডল আচ্ছন দেখিয়া প্রথমতঃ অনে-কেই ভূষার বৃষ্টির আশঙ্কা করিয়াছিল,কিন্ত ष्यविलक्ष्य में जानका मृत रहेग। नकाम ह দেখিল যে খুন্য হইতে অনবরত ভন্ম ব্লাশি बॉर्बंड इंडेएंड लाजिन अवर के खना बात्। পৰিক ও অগরাপর সমস্ত লোকের সর্বণ-রীর আছল হইয়া গেল। এই অস্কুত ভত্ম-পাত হারা তুর্ব্য কিরণ পর্যন্ত আক্র হই-अधिन, ध्वर ऐश निमाकारन क्षाप्त भून मन-বরকে আর্ভ করিয়া এক ভয়কর ভাইনী-विकासकीत एकि कतिवादिक। कुरेटमार कून प्रकृतका गण भकी अकृष्ठि नेत्रकरे क्षिक्षावित क्षेत्रा शान, अवश् वसक सक्of there was mile mire

ইল! কুইটো হইতে প্রায় ১৫ পঞ্চদ ক্রেশা অন্তরে কটোপেক্সি নামক এক আয়ের গিরি আছে, নকল লোকেই বিবেচনা করিল, বে প্র আয়ের গিরি জ্ম আছু পাত হেতুই এই ভন্মবৃত্তির উৎপত্তি হইন্যাছে, কিন্তু পরিশেষে অনুসন্ধান ঘারা প্রকাশ পাইল, বে লারাকো নামক অন্য এক অয়ের গিরি হইতে অসক্ষত ভন্মরাশি উপিত হইয়া এই ভয়ন্তর ব্যাপার উৎপাদন করিয়াছে। কলতঃ উক্ত ভন্মপাত জন্য কুইটোত্ব সকল লোকেই ভীত হইয়াছিল, অনেকেই উহাকে দৈব ছুটনা বোধ করিয়া উহার নানা প্রকার শান্তির চেন্টা করিয়াছিল।

#### मिका विमा।

া—সেণ্টগিটিস বর্গ নামক স্থান নিবালী লেকোবি নামক একজন শিশ্প শাস্ত্রজ্ঞ পান্তিত, এক প্রকার অন্তুত তাড়িত বন্ধ্র প্রস্তুত করিরা ভদীর সাহাযো নিবা নামক নদীতে সমুদার আরোহীর সহিত এক থানি ভরণি এক ঘণ্টার মধ্যে সার্দ্ধ ক্রোশের অধিক দূর চালনা করিয়াছেন। জলপথে নৌকাদি পরিচালন বিষয়ে তাড়িত শক্তি পরীক্ষার জন্য কেবল প্রথমতঃ উক্ত বন্ধ্র প্রস্তুত হক্তীয়াছে, উহা ক্রমে আরও অনেক উৎক্রফ ইইবার সম্ভাবনা এবং দিনে দিনে এ বন্ধু ঘত উৎক্রফ ইইবার সম্ভাবনা এবং দিনে দিনে এ বন্ধু ঘত উৎক্রফ ইইবার সম্ভাবনা এবং দিনে দিনে এ বিশ্ব বিভার তেকে সত্ত্বর চলিবে। পরিণামে উক্ত প্রকার যন্ত্র ভার। সংসারের অনেক উপকারের সম্ভাবনা গ্র

২।—এণি উইচ নামক স্থানে ডাড়িড বার্ডাবহের যে তার আছে, ডাহা অধিক কালস্থায়ী ও উৎকৃত্ত কর্মোগ্যোলী করি-বার উদ্বেশে এ তার তারময় না করি-য়া লৌহনির্দ্ধিত করিবার কপেনা ছির হ ইয়াছে। ইহা পরীকা করা হইরাছে যে লৌহের তার অপেকা ভাতের তার বিল-কণ ছারী হইবে এবং ডাহা প্রায় ৩৫ কোলের অভিকৃত্তার প্রায় প্রকর্মাত বক্ষ করিবা করিব লাভাগ্যাত প্রকর্মাত বক্ষ

রিচালিত হয়, তথ্য পোতের গতি কিয়া ও কম্পন জনা তাহাতে দুর্বীক্ষণাদি যন্ত্র ত্রির রাখিয়া কোন কার্যা সাধন করা যায় া। এফণে এক জন শিপ্পকার ঐ প্রকার অবস্থায় অর্থ পোতে দুর্বীক্ষণ স্থির রা-থিবার এক যন্ত্র প্রস্তুত করিয়াছেন,ভাঁহার ঐ বজ্ঞোগরি দুর্বীক্ষণ স্থাপিত **হইলে তাহা** ভার বিন্তুমান্ত্রও কম্পিত ও অস্থির হয় না, ভংলতে যেনন স্থির থাকে, দোচুলামান াোডোপরিও দেই প্রকার নিশ্চল হইয়া থাকে, এবং ভদ্ধার। অনায়াদে মনোরধ নৈদ্ধি করা যায়। ইস্মিথ সাহেন স্বরুত যক্ত সহকারে একদা দুরবীক্ষণ **দারা পো**ত হউতে বহস্পতির চন্দ্রে গ্রহণ সমদর্শন ক-রিয় ছিলেন। তাঁহার উক্ত যন্ত্র দারা না-বিক গণের যথেকী উপকার দশিয়াছে"।

৪০-ভল মধ্যে কোন করা মগ্ন হইলে ভাল উটোলন করিবার এক প্রকার গাশ্চরা বস্ত্র প্রস্তুত হটরাছে, ঐ যন্ত্র বোজনা করিরা আবেরন করিলে পর চদীয় বলে জ্যা মধ্য হইতে বহু মণ পরিমিত ভারী ভারী দেয়া সকল উঠিয়া পড়ে। নদ নদী ও সাগ্রাধির জল হইতে নই দ্রায়া ইন্ধার করিবার একপে যন্ত্র আর ইতিপূর্বে প্রকাশ পায় নাই। উৎক্রই শিশ্পে ব্যবসায়ী পণ্ডিত ভিন্ন অপর লোকে ঐ যন্ত্রের সকল কৌশল ব্যেধগ্যা করিতে সক্ষম বহু, এই নিমিত্র তত্বভাত্ত বিস্তার ক্রমে লিখিত হইলেন। গা

নাতেন, যে তুই ভাগ সর্করণ ও এক ভাগ গটা পালা একত্রিত করিয়া অগ্নি পাক ধারা লোহ পাত্রে দ্রনীভূত করিলে অভি চমথ-কার দরি বন্ধানের উপকরণ প্রস্তুত হয়। ঐ উপকরণ ছারা রেসম পসম খাতু কাঠ কাচ মৃতিকা প্রস্তুরাদি নানা প্রকার দ্বা ঘোড়া বায় এবং উহা দ্বারা যাহা একবার যুক্ত ক-রা যায়, তাহা অভিশর দৃত্ত স্থায়ী হয়। ভেবি সাহেৰ উক্তঃ উপকরণ শারা গুহের দ্বাধ ও অন্যান্য নানা বন্ধর স্থিক সংকোষ

ড়ের মসলা আর প্রার প্রচলিত নাই। উহা

একবার জমিয়া গেলে আর উভাপেও গলে না এবং রুক্টিডেও ক্ষর হয় না। উহা

সকল দেশে ও নকল সমরেতেই সমান ক্রমশার্দ্রী হয়। ঐ উপকরণের সক্ষে টর্পেণ
টাইন অথবা নাপথা যোগ করিলে, উহা
আরও বিশেষ উপকারী হয়"।

ঙা — উল উইচ নামক স্থানে এক শিপালরে লোই ইইতে অতি আদ্রহ্যা পরিমাণে ইসপাত প্রস্তুত ইইতেছে। ঐ শিপ্পালরে লোই দ্বারা ইস্পাত করিতে কিছুমাত্র লোইরে ভাগ বাদ যার না। ষতথানি লোহুততথানিই ইস্পাত ক্রয়ায়া।

# বিধবা বিবাহ।

গত ২৮ অগ্রহায়ণ শ্নিবার রজনীতে একটি বিধৰা কন্যার পাৰিগ্রহণ সম্পন্ন হ-ইয়াছে। এই কনাার পিতা বর্তমান তিনি दमामान ক্রিয়াছেন। যতুনার্থ চট্টোপাধ্যায় বর ৷ লক্ষীপ্রিয়াদেবী কন্যা। বর স্থুশিক্ষিত ও সভংশ্লাভ ব্রঃক্রম আঠার বৎসর। কন্যাটা অতি বালিকা, বয়ঃক্রম আট বৎসর মাত্র। এই বয়দের মধ্যেই তিনি বিবাহ সংক্ষার লাভ ও বৈধব্য যন্ত্রণা ভোগ করি-য়াছেন। অতি শিশুকালেই অর্থাৎ দেড় বং সর বয়সে বিবাহ ও আড়াই বৎসর বয়সে বৈধবা সংঘটন হইয়াছিল। এরপ জপ্প বয়দে বিবাহ হইলে ঐ বিবাহ প্রকৃত বিবা-হ সংক্ষার বলিয়া গণ্য হওয়া উচিত কি না, हेरा मुल्लूर्ग मरन्तर छन । बाहा इसक एन-শাচারামুনারে ঐক্স বিবাহ বিবাহ সংক্ষার वित्रा अभीक्षण रहेमा बाहक अवश् जेमन নাম মাত্র বিবাহের অব্যবহিত পরক্ষণেই বরের মৃত্যু হইলে কন্যাও বিধবা বলিয়া পশ্নিগণিত হইয়া থাকে, স্তরাং ভাষুশী विभवा कनगरकक यावकीयम देवथवा यज्ञना एकार्ग क्रिएक एमा सावस्त्रीयम देवस्ता य-অন্ত্রান কেমল ভর্মর ব্যাপার তাহা ह्यामध्याने प्राप्ति मास्त्रोहे रिनाका चैतार আছেন। অতএব শাস্তামুগারে চলিয়া অবলা জাতিকে চুঃসহ বৈধব্য যন্ত্রণা হইতে মুক্ত করা বুদ্ধিজীবী জীবের বিধেয় কিন। এবিষয়ে অধিক বলা বাছলা মাত্র।

এতদেশীয় লোকেরা চির প্রবঢ় কুন**ু** ক্ষারের নিতাত বলীভূত। পুরুষানুত্ব যাচা চইরা আনিতেছে, তাহা নানা অন-র্থের মূল ও নানা উংপাতের হেতু হইলেও. ভাঁষারা ভােমুক্র ভাল ক্রিয়া তদ্মুদারে চলিয়া থাকেন। এই প্রথা প্রবল ও প্রচ লিত থাকাতে কত প্রকারে কত স্থানিট ঘ টিতেছে তাহার ইয়তা করা ইয়া অহরুতঃ প্রত্যক্ষ ক্রিভেছেন, তথাপি मास्य अञ्चलकात কুদংস্কার লোক দিগের জ্ঞান হয় না। কলতঃ কু সংস্থার মনুব্রের অতি বিশম শক্ত : বিধ-व। विवाह अठनिउ हरेल व এककाल **जारनक जानर्थ निवादग हरे**श! यास , ७। हात সংশয় নাই। কিন্তু বিধৰা বিবাহ বছ-কাল প্রচলিত ছিল না। কতিপয় পুরাপু-क्रम्ट्रस्तः ओ वावकात व्यवनात्रमः कतिया চলেন নাই। স্থুতরাং এক্ষণকার লোকেদিগের চি-खरकरळ करम करम अहे कुनःकात यक्त মূল হইয়া উঠিলাছে যে বিধবা বিবাহ 'মতি অসং কৰ্ম। বিধনা নিবাছ যে বথাৰ্ধ শান্ত্রান্তুগত কর্ম দে বিষয়ে আর সংশয় করা যাইতে পারে না। কিন্তু এতদেশে শাস্ত্র অংপক্ষা দেশাচারের অধিক সন্মান। **স্তরাং শান্ত দমত হ**ইলেও দেশাচার প রিগৃহীত নয়বলির৷ একণ পর্যাভ বিধৰ: বিবাহের ভাদৃশ আদর হইতেছেনা। কিন্তু যখন প্রচলিত হইতে আরম্ভ হইয়াছে তখন रेश कानमाउँ जन हाविक नरह रय अह আয়েক্ষর ব্যবহার জনধিক কাল মধ্যেই প্র-वन रहेश उठिएक।

অনেকে এই আপত্তি করিয়া থাকেন, যদি এই ব্যবহার বথার্থই প্রেয়ক্তর হইবেক, ভাহা হইলে আমাদিনের পূর্বপুরুষেরা ঐ-ব্যবহার অবলয়ন করিয়া চলেন নাই কেন? অবিষয়ে বজবা এই বে এই ব্যবহার সভ্যা জ্যো বংগার ও ক্লিমুগের কিছুকাল পর্যা-ক্রম্মিক ক্লিমুগ্র বি পুরানে ভাহার অসংশয়িত প্রমাণ প্রাপ্ত ছওয়া যায়। তৎ পরে ক্রেক্সে এই বাবহার বহিত হইয়া আসিয়াছে। রহিত হইবার এই এক প্র-ধান কারণ লক্ষিত হইতেছে যে পুর্বে পূর্ব যুগ অপেকা কলিযুগে সহমরণের ও অনুগ মনের প্রথা উ**ভরোভর প্রবল হইরা উঠে**। অনেক অথবা প্রায় **সকল বিধবাই স্বামীর** সঞ্জি অলফিতায় কিয়া বিদেশ**স্থ স্থানীর** মৃত্যু স∵বাদ শুনিয়া **স্বতন্ত্র চিতার আরো**-হণ করির। জীবনধাতা সমাপণ করিতেন। স্ত্রাণ একণকার ন্যায় পূর্বের বিধ্বার সং-খ্যা এত অপিক ছিল না এবং সকলকে স্ব স্ব কনট ভগিনী পুত্রবধ্প্রভৃতির ছংসহ নৈধন। ৰন্ত্ৰণ। ভোগ এবং **`বৈধৰা নিবন্ধন** পরিবার মধ্যে নানা **অন্থ সংঘটন অব**-লোকন করিতে হইত না। যদি বিধবার भःथाः, देवधवा **रञ्जनः ट्यान ও देवध**वा নিবস্ত্রন অনর্থ সংঘটনের মাত্রা অণপ হইল, তাহা হইলে আর বিধবা বিবাহের তাদুশী আৰশ্যকতারহিল না। বোধ হয়, <u>ছেতু বশতই ক্রমে বিধৰা বিবাহের</u> অপ্রচলিত হইয়া আসিয়াছিল। কিন্তু এক্ষ-ণে রাজ শাসনে সহমরণ ওজানুগমনের প্রথা রম্ভিত হইয়াগিয়াছে, স্কুতরাং বিধবার সং **খ্যাও অতান্ত অ**ধিক হইয়া **উ**ঠিয়াছে এক তরিবন্ধন অনুষ্ঠ সংঘটনের প্রিমাণ্ড উ ভরেভির অদন্তব রুদ্ধি প্রাপ্ত ইইতেছে: অতএর, যে কারণের অসম্ভাবে কিন্যা বি-रारश्त अर्थ। ऋञ्चन्निए श्हेश जामिताहिन, ৰখন ঐ কারণবিলকণ প্রবল হুইয়াউঠি য়াছে, তথন বিধনা বিবাদের প্রথা অবল-মন ভিন্ন অনর্থ নিবারণের আর কোন উ পায় হইতে পারে লা।

গত বংশর আহায়ণ মাদের এরোবিংশ দিবসে এই শুভ কর্মের অমুষ্ঠানার দ্র ইরা ক্রমে ক্রমে একেণ ও কারস্থ
ভাতীর কএকটা বিধবার বিবাহ ব্যাপার
সম্পন্ন হয়। তৎপরে করেক মাস আর
বিবাহ হর নাই। ইহাতে অনেকেই সিভাত করিরা রাধিয়াছেন, এবং স্করে প্রটার করিতে আরম্ভ করিয়াছেন, বে বিশব
বিবাহর আইন রহিত হুইরা নির্মান্ধ, প্র

বিধবার বিবাছ ছইবেক না । কিছু এ কিছ দ্বান্ত যে নিতান্ত জাতিমূলক এবং ঐ প্রচার চেক্টা যে কেবল বিষেধ মূলক,তাছা সম্প্রমাণ করিবার নিমিত্ত প্রয়াস পাইবার প্রয়োজন নাই। গত অপ্রহারণের অন্টাবিংশ দিবলে কলিকাতা রাজধানীতে একটীবিধবারবিবাছ সম্পন্ন ছইয়াছে, ইহাই তাছার দেলীপামান প্রমাণ। বাঁহারা এত দিন লোকের নিকট এই অলীক কথা বথার্থ বলিয়া প্রচার করি-য়া আমোদ ও আম্ফালন করিয়া বেড়াইয়া-ছেন, এক্ষণে তাঁহাদিগকে বোধ ছয় কিছু অপ্রতিত হইতে ছইবেক।

# বিজ্ঞাপন।

আন্ত্রোবর্ণাকুলের ক্লাসরুক এঞে--টস ডিপজিটরি।

ক্রেডাজা -কলিকাতা

ম'হারা আমাদের এছালম হইতে ন-গদ মূল্যে বালকলিকোপবোগী অথবা জন্য প্রকার পাঠ্য গ্রন্থ কর করিবেন, তাঁহাদি-গকে নিম লিখিত নিরমালুসারে ক্মিশন প্রদান করিব, কিন্তু ছুল্ ড ছুল্ লা জা গাঁও যে সকল গ্রন্থ ক্ষুলালর পাওৱা নাম না, তাহার পক্ষে <mark>উক্ত নিরম পরিপালন ক-</mark> রিতেপারিব না'।

১ অবধি ৫ ক্টাকা পর্যক্ত শতকরা ২২॥০
পুত্তক বিশেষে ১৯৯৯ ১৯৯৯
৫ অবধি ২৫ টাকা পর্যান্ত শতকরা ১৫
৬ (পুত্তক বিশেষে ১৯৯৯
অসম্কৃত একেন্ট প্রতি
নগদ মূলো ক্রেয় করিতে অসমর্থ ব্যক্তির।
বদি এক মান মধ্যে টাকা দেন ৬০
আমাদের নিক্ত প্রকাশিত গ্রন্থ ২৫

🗐 খার, এম, বস্থু এণ্ড কোম্পামি

# বিজ্ঞাপন।

নিম্নলিথিত ছাই প্রকার পুস্তকের প্র-রোজন হইলে কলিকাতা বছবাজার হাড়-কাটার গলি পঞ্চাননতলা ছাত স্থানটাদ পাইনের বাটাতে হিতৈবিশী সভার সম্পা-দক প্রীযুক্ত বাবু কানাইলাল পাইনের নিকট কিয়া ফুতন চিনাবাজারছ প্রীযুক্ত বিশ্বরূপ হালদার এপ্ত কোং নামক ২৭॥০ দংখ্যক কার্যালয়ে তত্ত্ব করিলে বিনামুল্যা পাওয়া যাইবেক। মকঃসল হইতে তাকের টিকিট প্রেরিত না হইলে বেয়ারিং ভাক-যোগে পুস্তক পাঠান হইবেক।

On the Utility of Public Worship. The Supreme Being of the Brahmo Theology and his administration of the Government of this world.

# বিজ্ঞাপন

তত্ত্বোধিনী সভার সভা বা সভা ভিন্ন আন্য বে কোন ব্যক্তি মানিক ॥॰ আনাঃকিবরা সভার প্রদান করিবেল, ভাঁহারা নিরমানুসারে সভার পুরুষ্ঠানস ছিত্ পুরুষ্ঠান পাইজে প্রার্থেন ।

प्रक्र कर प्रकृष्णियों शुक्रिका क्रिकाम क्राइ त्रांकामाकार्षक त्रकृष्णियों क्राइ कार्यानक रहे त्र करिकारक क्राकृष्णि का चित्रक स्था क्राक्रिका क्राइ क्राइक महत्त्र स्था



# धर्माणिका।

প্রথম কালে জ্ঞান শিক্ষার সময় বালক গণকে ধর্মোপ্রদেশ প্রদান করা যে নিতান্ত কৰ্ত্তবা, তাহা বছবিধ যুক্তি ও বিবিধ প্ৰ করে প্রমাণ দার। প্রতিপদ হইতেছে। শি ফার তারতমো যে মনুযোর ধর্মজোনের কতদূর পর্যান্ত ইতর বিশেষ হয়, বিচক্ষণ বাক্তি কিঞ্চিৎ বিবেচনা করিলেই তাহা অনায়াদে বোধগমা করিতে পারেন। প-রম নায়বান পরমেশর মনুবা মাতেরই মনোভূমিতে ধর্মের বীজবপন করিয়াছেন, বে ব্যক্তি যে পরিমাণে আপনার মনোভূ-মিকে কর্ষিত করিতে পারে, তাহার অন্ত-রন্থিত ধর্মারুর সেই পরিমাণে বর্জিত হয়। বেমন ইতর কেত্রে কোন রুক্রের বাঁজ বপন করিয়া ভাহাতে বারি সেচন ও যত্ন সাধন না করিলে তাহা আক্রিত म्य ना, এवः **अवरङ्ग क**िष्ट अकृति छ हरे-লেও সে অঙ্কুর যথা সম্ভব তেজ প্রাপ্ত না **ম্ব্যাজ্জার ৰূপে বর্জিত ও কলমুথ হ**য় না, কিরৎকাল নিজেজাবস্থায় অবস্থান ক-রিয়া ক্রমে শীর্ণ ও শুষ্ক হইয়া যায়, সেইৰূপ মন্তব্যের অন্তর্ম্বিত ধর্মাবীজেও শিক্ষাবারি সেচন না করিলে তাহা ফুন্দর ৰূপে অঙ্কু तिष रग्न वा ace कथिए जक् तिष्ठ रहे-লেও ভাষা উপযুক্ত তেল প্ৰাণ্ড না দইয়া ফলশালী হয় না, অবস্তু ও অশিকা হেডু দেই ধন্মান্ত্র অতি মান ভাবে কাল্যাপন করে বা দিনে দিনে পুষ্ক হইয়া যায়। অ-তএব জগদীখন প্রদন্ত ধর্মানীজকে অন্তর্গুরুত ও বজিত করিবার জন্য তাহাতে বিহিত্ত বিধানে শিক্ষাবারি দেচন করা সক্তোভা-বে কর্ত্বা, তাহা না করিলে কোন ক্রমেট মনুখ্য সম্পূর্ণ ক্রপে ধর্মাকল লাভে অধিকা-রী হইতে পারে না।

পুরাহন্ত পাঠ করিলে বিলক্ষণ প্রতীতি इय, य कारल कारल शृथिवी मरधा यथन যে পরিমাণে ধর্ম শিকার বিস্তার হইসুডে **७९कालीन लाएक मिहे श**तिमार्गहे धर्मा उन्न লাভ করিতে সমর্থ ইইয়াছে, এবং যে দে শীয় লোকে ধর্মা শিক্ষার প্রতি যে একার মনোযোগ করিয়াছে, তাহারা তদমুরূপ ধ-चाधिकात आख स्ट्राह्य। भृक्तकारम मि-সর রাজে। যে সময় লাল। প্রকার শিংপবি-দ্যাদির প্রচার হয় এবং ষৎকালে ভত্তশ্ব লোকে আক্ষা নিপুণতা প্রকাশ করিয়া অসামান্য প্রাসাদ ও স্তত্তাদি প্রস্তুত করে, তৎকালেও মিসর দেশে ধর্ম শিক্ষার সম-ধিক প্রচার না ইওয়াতে তথার যে সমস্থ **चित्राहित इंग्लिश क्रिक्स कर्न्ड** রা তাহা লিপিবন্ধ করিতেও হৃদয়ে বেদনা বোধ করিষ্ণাছেন। মিসর দেশীর পূর্ব্বকালীন লোকে অপরাপর শিশে ক্সান প্রচার ও অ-गामा विचारत्रं श्री (य श्री कार्र

মনোযোগী হইয়াছিল, ভাহারা ৰালক গ-गटक धर्मा भिका ध्वमान **कत्रत्य जामूम म**बः-সংযোগ না করাতে কোন বংপেই সহজের অল্পেদে অধিকঢ় হইতে পারে নাইশ। পু-ব্যতন গ্রীস ও রো**ম** দেশীর লোকেরা স্ব স্বালককে যে প্রকার যুদ্ধাদির শিক্ষা প্র-দান করিত দেৰূপ ধর্ম শিক্ষা দিত না. এ-জন্য তৎকালে ঐ সকল স্থানস্থিত লোকের কেবল জিঘাংসা ও অর্থনম্পুহাদি নিক্নট বলি সকল উত্তেজিত হইত এবং তাহারা ভদনুসারে কেবল চির্দিন খুক্ত বিগ্রাহ ও নর হতা, ধনাপহরণ ও দেশ লুঠনাদি দা-ৰুণ দুখিত কৰ্মে <mark>লিপ্ত থাকিয়া স্থভাৰক</mark>ে কলভিত করিত। পূর্ব্বকালে গ্রীম ও রোম দেশে এক এক বুদ্ধ উপ**লক্ষে যে সকল অ**-ভাগের হইয়া গিয়াছে, ভাহা মনে হইলে এখনও হৃত্কম্প হয়ু+। ধর্ম পরায়ণ লোকে দৈবাং একটি মকিকার প্রাণ বধ করিলে যে প্রকার কাতর হয়, গ্রীস ও রোম দেশীয় বীৰ গণ সহস্ৰ সহস্ৰ মন্ত্ৰৰা হিংসা ও শত

। নগর দথ্য করিয়াও **তাহার সহস্রাং**-শের একাংশ কাতর হইত না। শৈশব কালে ভাহার: ব্যাবিধি ধর্মোপদেশ প্রাথ না হ-ওয়াতে ভাষাদিনের উৎকৃষ্ট ধর্ম প্রবৃত্তি সকল নিজেজ ও হীন বল হইয়া থাকিত এবং পুনঃ পুনঃ নিক্নট বুত্তি সকল পরি-চালিত হওয়ায় তৎসমুদায় মহা তেজাখিনী হইয়া উঠিত, সুত্রাং আর অসৎকর্মে ভা-হাদিগের কিছুমাত্র অনিচ্ছা উৎপন্ন বা আত্ম গ্লানি উদ্ধুৰ ছইত না। বে সময় মনুষ্য জাতি বিহিত বিধানে ধর্মচর্চা ও ধর্ম শিক্ষার াত মনোযোগ করিত না, তৎকালে কি ইউরোপ কি এসিয়া কি আজিকা সকল अारन दक्तन युक्त विध्यक्षानि व्यक्तानादत्रवरे আতিশ্যা ছিল, তৎকালবন্তী এক এক জন কোমল স্বভাবা স্ত্রীলোক যে সকল হিংসার কাৰ্যা অনুষ্ঠান করিয়াছে, তাহা লিপিবন্ধ করিতেও লক্ষ্য বোধ হয়। সিপিউ, হেনি-বল সেকন্দর, তৈমুরলঙ্গ, জঞ্জিজখান প্র-ভৃতি প্রাচীন হোদ্ধাদিগের নাম শ্রবণ ক-

\* Wilkinson's manners & customs of the ancient Egyptians.

† Dick's philosophy of Religion pp. 271-272-273.

রিলে এবং ভাষাদিগের এক এক ব্যক্তির युक्त विवद्रगं शांठे कद्रिटण, द्यमम क्रम्टब्रह्न বিকল্ডা লয়ে, সেই ৰূপ ক্লিওপেট্রা প্র-ভৃতি পূৰ্যবদালৰতী জীলোক দিগেরও চরিত্র আরণ হইলে সন **অভিন**্তর আ-गानि (मर्ग करम यक धर्म निकाब कहात হইতে লাগিল এবং যে পরিমাণে ভর্তে দেশীয় লোকে আপনাদিগের উৎক্রই বৃদ্ধি সকল মার্জিত ও বর্দ্ধিত করিতে আরম্ভ করিল তত্ত ঐ সকল দেশ হইতে নামা অত্যাচার অন্তরিভ হইতে লাগিল,এবং সেই পরিমাণে কল্যাণেরও আবির্ভাব হইল। লু**থরের ধর্ম** প্রচারের পর ভর্মণ দেশীর লোকের যে সম-ধিক ধর্মোলভিও কল্যাণ সিদ্ধি হয় তা-হাতে আর কোন সন্দেহ নাই, পিটরকার ক্ষিয়া রাজ্যে ধর্মাচর্চা বিস্তার করাতে, যে তত্রস্থ লোকের ধর্মা প্রবৃত্তি স্থান্দর রূপে প-রিশুদ্ধ হয় এবং তাহারা বিবিধ প্রকার আ-হিতাচার হইতে পরিতাণ পায়, বোধ করি তাহা বিষয়গুলী মধ্যে সকলেই স্বীকার ক-রিবেন। এই ৰূপ পৃথিবীর পূর্বে রুভাস্ত পাঠ করিলে বিলক্ষণ প্রতীতি হয়, যে যৎ-কালে যে দেশীয় লোকে ধর্ম শিক্ষায় অ-বংহলা করিয়াছে, তথন তত্ত্বে লোকে সেই পরিমাণে অধ্যাবস্থার অবস্থান করিয়াছে এবং যথন যে দেশে ধর্ম শিক্ষার ও ধর্ম চচ্চার যে প্রকার বিস্থার হইয়াছে, তথন সে দেশীয় লোকের স্বভাব সেই পরিমাণে পরিশুদ্ধ হইয়াছে।

ধর্ম শিক্ষার প্রতি অবহেলা করিলে বে মানব মগুলী মধ্যে কি পর্যান্ত অকল্যাণ উ-ভাবিত হইতে পারে,তাহার প্রমাণ অদ্যাপি অনেক স্থানে বিদ্যানা রহিয়াছে। তা-তার রাক্ষ্যের মনুষ্যেরা অদ্যাপি প্রায় আপামর সাধারণ সকলেই দক্ষ্যরুত্তি করিয়া থাকে এবং বিদেশীর পথিক ও ব-ণিক দিগের প্রতি নামা প্রকার দৌরাস্থ্য করে। আরব রাজ্য মধ্যেও দক্ষ্যরুত্তি চৌ-ব্যারুত্তি লাম্পট্য প্রভূতি ভয়ক্ষর পাপের বি-লক্ষণ প্রায়ুর্ভাব আছে। চীন দেশীর লোকে শিক্ষার স্থান্তর প্রকার্ত্তে বিলক্ষণ পাই, কিছ ধর্ম শিক্ষার স্কাবের প্রকার্ত্তে গোপনে বিভর

व्यक्तिवा कतिया चाटका विकित्रकार छ-পৰীপ বাসী প্ৰায় ক্ষিকাংশ লোকেই নর रुजा क्तारक कृठका छाने करत मा अवश প্রায় বছতর লোকেই নর্মাংস ভক্ষণ করে। নিউজিলও প্রভৃতি বছতর দ্বীপ ও উপদীপ বাসী অসভা লোকে বালক কাল হইতে কোন প্রকার ধর্মোপদেশ, ও ধর্মা শিক্ষা প্রাপ্ত হয় না বলিয়াই তাহারা উৎকট উ-ৎকট পাপাচরণে কিছুমাত্র শক্ষিত হয় না ত্রীসন নামক একজন ভ্রমণকারী ব্যক্ত ক বিয়াছেন, যে একদা তাঁহারা সমুদ্র পথে গমন করত এক ভয়ন্তর বিপদে পতিত হ हेबाडिएलन, वार्द्धि नामक शारनत नि-কটে তাঁছাদিগের পোত কল মগ্ন হইলে পর ঠাহারা অনেকেই অতি কটে তীর প্রাপ্ত হইলেন, কিন্তু তথাকার কতকণ্ডলি অসভ্য লোকে ভাহাদিগের প্রতি এত অভ্যাচার করিল, যে তাঁছারা জল ছইতে রক্ষা পা-ইয়া স্থল প্রাপ্ত হওয়াপেকা সাগর জলে নিহত ইওয়াই শ্রেয় জ্ঞান করিয়াছিলেন। প্রথমতঃ কতকগুলি অস্ত্রধারী মনুণা আ-শিয়া **ভা**ছাদিগের মধ্যে অনেকের প্রতি অসমত প্রহার করিতে আরম্ভ করিল এবং বিধিমতে বিষমযন্ত্রণা প্রদান করিতে লা-গিল। অনস্তর উক্ত স্থানে তাঁহাদিগের পোত মগ্ন ইইবার স্থাদ প্রচার কওয়াতে পোতস্থ পণাদ্রবা ও আরোহীদিগের নন্টা-विश्व जवामि लुठिवात कमा मामानिक इ-ইতে নানা প্রকার লোক আসিতে আর্ড্র করিল এবং দকলেই স্বীয় স্বীয় অবস্থা মত ধনাদি না পাইয়া হতভাগ্য আরোহি দি গকে নির্দায় ৰূপে প্রহার করিতে প্রবৃত্ত হ-ইল, তত্রস্থ গ্রীলোকেরা পর্যান্তও আদিয়া ভাহাদিগের অঙ্গে নিষ্ঠীবন প্রদান ও চ-ক্তে বৃলি প্রক্ষেপ করিতে আরম্ভ করিল। व्यनखेत थे निर्मन्न छुताचा मिटशत मध्या (कह-কেই পোত এক চুর্ডাগ্য মনুষ্য দিগের অ-নেককে খত করিয়া আম মধ্যে লইয়া গেল এবং তথার লইরা গিয়াও বিজাতীয় বস্তুণা व्यमान कतिन। थे प्रकाश लाटकता छर्-गना नहीत मध, अनगन, आम ७ गठि छ मारन क्रमण अवर अनगनावकात्र शा महिकाकि जीव

क्षत्र नाम उरक्रे प्रकृष्ट भविष्यम गायन প্রভৃতি নানা প্রকার ক্লেশ প্রাপ্ত হইল এবং মধ্যে মধ্যে জীলোতকরা কৌত্হলা বিষ্ট হইয়া আবিক্ল ভাহাদিগের অঞ প্রস্তরাহাত করিলও বালক গণও সংস জননীর অমুকরণ করিয়া ভাহাদিশের কে শাকর্ষণ ও অফেতে ধলি প্রদান করিতে লাগিল। এই রূপে তাহাদিগের আহার য জ্ঞণার অবধি রহিল না। কিন্তু তথাকার কোন লোকেই ভাষাতে খেদ প্রকাশ বা তাহা নিবারণ করিল না। অভ এব কাহা বিলক্ষণ প্রতীতি হইতেছে, যে পুর্ব্বোলি থিত স্থানবাসি অসভা লোকে যথাবিধি ধর্মা শিকা প্রাপ্ত হয় নাই বলিয়াই ভাহারা জ-नाशाहम छेखा धाकात निर्मा वावशाव कवि-তে প্রব্রত হইরাছিল, উচারা বালক কালে উপযুক্তমত ধর্ম শিক্ষা প্রাপ্ত হইলে এবং স্থাদা ধর্মের চর্চা করিয়া মনোগত ধর্ম প্রবৃত্তি সকল মার্জিত করিলে কথন উল্লি-থিত ৰূপ পাপাচরণে সাহস্ হইত না। পর্ম ন্যায়বান্পর্ম পিতা মনুষ্য মাত্রকেই মহত্ত্ব লাভে অধিকারী করিয়াছেন এবং সকল মন্তব্যকেই সমান প্রকৃতি প্রদান ক রিরাছেন, কিন্ধ শিকা ও উপদেশের ভার-তমা হেতু কোন মনুবা লোক সমাজে দে বৰৎ প্ৰতীয়দান ছইতেছে এবং কোন ম মুব্য পশু অপেকাও অধমাবস্থায় অবস্থিতি করিতেছে।

প্রথমবিদ্বার জ্ঞান শিক্ষার সময় বালক গণকে ধর্ম শিক্ষা প্রদান না করিলে যে বিমম ভয়কর অনিই উদ্ভাবিত হওয়া সন্তর,
তাহা আমাদিগের এদেশেও সুস্পই প্রকাশ রহিয়াছে। পূর্ব্বাপেক্ষা এক্ষণে এদেশে বালক শিক্ষার প্রণালী যে অনেক
উৎকৃষ্ট হইয়াছে ভাহাতে আর কোন সদেহ নাই, কিন্তু পিতা মাজা ও শিক্ষক গণ
বালকের বিদ্যা শিক্ষার প্রতি যাদৃশ মনোযোগ করেন, ধর্ম শিক্ষা বিষয়ে ভাদৃশ
মনোবোগ করেন, ধর্ম শিক্ষা বিষয়ে ভাদি

শিক্ষার সময় ধর্ম শিক্ষা প্রদান না করাতে যে সকল গুরুতর অনিষ্ট উদ্ভব হইতেতেই, বিচক্ষণ ব্যক্তি কিলিংকাল মনোনিবেশ ক-রিলেট ভাষা অনায়ানে অবগত হইতে পারেন। মানব জাভি ধর্ম বিহীন হইলে যে সংসারের কি পর্যান্ত অকল্যাণ জমিতে পারে, তাহা বর্ণ করিয়া শেষ করা অসা-ধা, ভাবোধ পশু অপেকা অধার্মিক মনুষ্য অধিক ভরন্ধর। কিন্তু এদেশে ধর্মা শিক্ষার প্রতি যে প্রকার অমনোযোগ দৃষ্ট হইতে-(ছ. टेश जन्म दक्ति वा द्वांती इटेल পরि-ণামে এখান হইতে ধর্মতত্ত্ব বিলুপ্ত হইবার সম্পূৰ্ণ সম্ভব। শিক্ষা ও উপদেশাভাবে বিদ্যালয়ত্ব অনেক ছাত্ৰ ও স্থাশিকিত নৰ্য मध्यमाञ्जी मिरशत गरधा व्ययमरकत गरम ध-শ্মের মূর্ত্তি ক্রমে ছারার ন্যার হইরা বাই-তেছে এবং যে পরি**যাুণে ধর্মের তেজ স্থান** চইতেছে, সেই পরিমাণে অধর্মের শুভাও রুদ্ধি ইইডেডে। আমরা যদি বর্ত্তমান শিক্ট সম্প্রদায় গণিত লোক দিগের ধর্মাযুষ্ঠান বিষয় বিশেষ বংগে অনুসন্ধান করিয়া দেখি ভাষা হইলেই উহার বিশেষ প্রমাণ প্রাপ্ত

हेश कि बाटकरशत निषय, स्व वि-म्यानत ७ भारेमस्मित भक्त वालक मिटात স্বভাব শোধন ও গৌরব বর্জনের নিদানসূত ধর্মা শিক্ষার অভাবে সেই সকল বিদ্যালয় ও পাঠশালা ভাহাদিগের অধঃপত্তমের কা-রণ হয়? আমরা দেখিতেছি যে ছাত্রগণ (यथन क्यान विम्हालय अविके रुरेया विम्हा শিক্ষা করিতে আরম্ভ করে, অমনি কুসং-সর্গে লিপ্ত হইয়া ক্রমে অর্থন্ম অভ্যাস ক-রিতেও প্রবৃত্ত হয়। যে **সকল পাপাচ**রণ ৰারা মনুযাকুল একেবারে অধঃপতন প্রাপ্ত হয় এবং যে সমস্ত অধর্ম ও অপকর্ম জন্য मः मारतत উৎদেদ দশা উৎপন্ন হইবার নি-ভাত্ত সম্ভব ধর্মোপদেশাভাবে ছাত্র গণ বি-मानस अविके स्ट्रेस आत्र उरममुमारसम्हे मृच्छे। छ। दलाकन करत व्यवश् करम असुकत्रन করিতে প্রবৃত্ত হয়ণ আমরা যদি একে একে अरमनीत्र ममन्त्र विमानिद्यांत यानक नार्यत স্ভাব ও চরিত্র অনুসন্ধান করিয়া কেখি, **एटि। इट्टब**्धान प्राथिकारण नालकरकड़े

অধৰ্মপক্ষে লিপ্ত বেবিতে পাই। বিদ্যালয়ক ছাত্রেরা বে সক্ত অধর্ম অভ্যাপ করে ভাষা কোন মতেই উল্লেখের বোগ্য নহে, ভঙ্গ-মুদার স্মরণ করিলে হৃদয়ে বেদনা বোধ ও निषातम् । विकास जिल्हा रहा। हात्र ! हेरो कि সামান্য আক্ষেপের বিবর! যে বিদ্যালয় ধর্মোরতির একুমাত্র প্রধান স্থল,কেবল এক णिकात व्यकारक त्मरे विद्यायिक्टतरकरे বালক দিগের মনে ঋফতর অথর্ণের স্থ্র পাত হয়। শিক্ষক গণ বালক দিগের জ্ঞান রেন, যদি তাহাদিগের ধর্ম শিক্ষার জান্য ভদমুৰূপ দৃষ্টি রাখেন, তাহা হইলে ছাত্র গণ কথনই স্বেচ্চারি চইয়া উক্ত প্রকা-রে আপনাদিগের স্বাভাবকে মলিন করিতে সমর্থ হয় নাঃ কেবল শিক্ষার ক্রটি ও শি-काटकात्र कामन्थान काना वात्रक श्रामाना প্রকার অধর্ম পঙ্কে লিগু হয়। যদি এ-তদ্দেশীর প্রত্যেক বিদ্যালয়ের প্রাত্যহিক বিবরণ প্রাপ্ত হওয়া যায় তাহা হইলে দৃষ্ট হয়, যে প্রতিদিন এক একটি বিদ্যালয়ে নানা প্রকার বিগহিত কর্ম সকল অ-নুষ্ঠিত হয় এবং প্রতি বিদ্যালয়ের শিক্ষক দিগকে জিজ্ঞাসা করিলেও তাহার প্রমাণ পাওয়া যায়। কিন্তু ধর্মা শিক্ষার দারা ঐ সমস্ত অভ্যাচারের বর্থা সম্ভব উপায় নির্দারিত হয় নাবলিয়া উহা ক্রমে বৃদ্ধিই रहेटल बादक। विश्वि विधादन छेन्द्रम्म না পাওয়াতে দিন দিন বালক দিগের ধর্ম প্রবৃত্তি নিজেক হইতে থাকে এবং তা-हाफिरशत এই क्रथ मश्कात करण, (व व्या-মরা অসত্য কথাই ব্যবহার করি আর চৌর র্ক্তি ও অন্যায়াচার, নিঠুরতা প্রস্থৃতি অন্য কোন কুকার্য্যই অমুষ্ঠান করি, ডাহাতে जात्रामित्तत्र कान शनि नारे, जानता पू-গোল জ্যোতিষ পুরার্ভ গণিত শাস্ত্র ও পদার্থবিদ্যাদি অভ্যাস করিয়া বুদ্ধি বৃদ্ধিকে মার্জিড করিতে পারিলেই লোক ন্যাকে প্ৰতিষ্ঠাভাজন ও মহত্ত্বে আস্পাদে অধিকদ असे करण हात गर म-হইতে পারিব। ব্যাল্পতাৰে অবংকা করিয়া কেবল অক্তপাত্র नवार्वरिका अकृष्टि क्षिणेत्र विकिष्टे गू- অকের প্রতি মনোভিনিবেশ করিয়া কালকেপ করে এবং ভদমুক্শ অমানিকেই শিকণীর ও অমুক্টের বলিয়া ভানে। স্কর্মাং তাহাদিগের ক্ষরেস্থিত ধর্মপ্রোত দিনে দিনে করু হইয়া বায়, ভাহাদিগের নিক্-ইবৃত্তি সকল কোন কারণে উত্তেজিত হ-ইলে তাহা নিবারণ করিবার আর কোন উপায় থাকে না এবং ঐ পঠদ্দশাতেই অ-ধর্মাভাান বিলক্ষণ জটাভূত ইইয়া বায়।

পাঠাবস্থার প্রথমতঃ বিন্যালয়েতেই বে সকল ছাত্রেরা এই ৰূপে ধর্মজ্ঞান বিবর্জি ত হয়, তাহার: বয়ঃপ্রাপ্ত হইয়া দংসার প্রবেশ कतित्व जाहामित्रत हाता ता मकन ख ত্যালারের সমাবনা, বিজ্ঞ লোকে তাহা বোধগমা ক্রিতে অন্যোদেই ন। ভাগদিগের মৰে কোন প্রকার নি ুল্ট প্রবৃত্তি প্রবৃত্তা **হছলৈ ভাছার**। ভদ-নুগানি চইয়াই কার্য্য **করিতে উ**ন্তে হল ! ভাহার। কেবল সৌক্ষিক রক্ষা করিয়াই জী ্রন যাত্রা সমাধান করিতে তেফী। পায়, ভা-হাদিশের মনে ভিতুমাত্র ধর্ম ভয় থাতে মাকার মতে ধর্ম ভয়ের কেশ মাত্র আ থাকে, সে যে কি ভয়ন্তর জন্ত, ভাছা লিখিয়া শেন করে, যায় মা ! কি নিরুক্টরতি ফি **डिश्कृ** े था अतृत्वि, भन्नसा भन्न यान रा কোন ব্ৰিড উচ্ছেজিড ইয়, তেখনই তথেৱে মেই রুভি চরিতার্থ করিছে ইচ্ছা হয়, কিছ কোন কারণে বার্ষিক লোকের কোন নির্ফীর্ডি চরিতা**র্থের ইচ্ছাহ্ইলে** তিনি अवन। पर्य अवस्ति अन्ति। (मर्के रेष्ट्रात नि বারণ করিয়া আপনাকে অধর্মপঞ্চ ইইতে দুরে রাখেন, আর অধার্মিক লোকে তথ करार महे हेल्यात अलुवामी हहेता छारा চরিতার্থ করছ আপনাকে পাপ কুপে নি-ক্ষেপ, করে। ুখতএব বালাবস্থা ইইতে যাহার মন ধর্মশাসনে অনুশাসিত না হয় व्यवश्थिमात्रम् अञ्चाम मा करत, तम ह-ग्राटा मनागारमञ् श्रवां विरमास्यत य सूर्गठ रहेश हिंद्र कीचन अध्याद्याद्य छ।-नमान रहा है त्य वाङि कवन लाक उद्य अकाद्य कान निम्हनीत कर्म मा-पन कतिए माहमी इस ना अवर लोकिक প্রতিষ্ঠা হইতে পরিত্যক হইবার আশকার वाक अद्भा कृष्ण करत जा, त्म दक्रवन लो-কিন্ধ নিন্দা প্রতিষ্ঠার প্রতিক্ষর্ণ পাতিত করি बारे काल्याश्रम करत, धर्चीत निक्रक अकवात দৃষ্টি পাত্তও করে না। নে ব্যক্তি গোপনে (बन्धा प्रक्तिरत प्रक्तिशादक नमल पानिनी যাপন কার্য়া পুনর্বার দিবা ভাগে এ কান্তে প্ৰতিঠাভাজন ছইতে আইনে এবং স্থাগে পাইলে ছলে ৰলে বা কৌশলে ল্যোকের ধন মোৰণ, সর্বান্ধ হরণ প্রা স্তু-ক্রিয়া আপনার লোডাদি রভিনে চরিতার্থ করিতে **পারে। বস্ততঃ** কেনে কুকুৰ্মাই ভাষার অকর্ত্তব্য থাকে না.তবে বাচ কিছুদিন লোক ভারে কিঞিৎ বিরুত থাকে, কিন্তু প্র্যাভয় বিহীন মন্ত্রাকার লোক ভয়ন বা কতদিন স্বায়ী **হয় এবং সে** লৌকিক ভয়ই ভাষাকে ক**ডদুর পর্যান্ত অ**পশা চইতে দুরে রাখিতে পারে। **তা**হার ছুট ইচ্ছ: স্কল পুনঃ পুনঃ চরিভার্ম ছইয়া ক্রমে যত রন্ধি পার তত্তই ভাহার লৌকিক ভয় হুসে इट्रेंट थ, तक अवश तम तमारकत स्थापकार ख সকল প্রকার কুলিয়াই করিতে পারে ! পরিণামে সে প্রাসিদ্ধ পাপাচারী হইরা উঠে, ইন্দ্রির চরিতার্থ করাই ভাহার স্বার্থ স'-ধন নোধ হয় এবং ঐছিক নামানা সুখ লাভই আহার স্বৰ্গ ভোগ ভুলা জান হইতে থাকে। ধে প্রকার ছুক্রির খট-মের বিষয় : বিশ্বিত **হইল এদে**শীয় ওবুলা खन । यमानियुत्र हात मिन्नरक भाग विक. প্রদান করিবার পদ্ধতি না পাকাতে তাল-দিলের মধো অনে**কেরই সেই** প্রকার *ত* রিত্র ঘটিরা উ**ঠিতেছে এবং অ**ধি**ল**রে প্রধ্য শিকার কেনে উপায় বিধান না করিছো ক্রনে সকলেরি ঐ প্রকার **সন্দ**ে**স্বভা**র সংঘটন দ্ৰবায় সম্পূৰ্ণ **সম্ভাৰনা দৃটি হুটু**ভেৱেল। अध्यक्षत विमाजिमानी स्मता मुख्यकारी লিনের নধ্যে প্রান্ত অধিকাংশেরই ুধর্মো-তে অনাস্থাও দুদ্ধার শৈথিল্যভাব দেখা ষার, ধর্ম শিক্ষার অভাবই তাহার এক মাত্র কারণ বলিয়া অমুভূত হুইভেছে। **হউক দেশের স্থানিকিত সম্প্রদারে**র গুলোর প্রতি এ প্রকার অনাদর হওয়া মহান্দ্রের কারণ সন্দেহ সংই, প্রভাদৃশ বিষ বৃক্ত ই ইতে বে কি প্রকার গরলমর ফ্লোওগার ইওরা সন্তব ভাষা বর্ণন, করিতে গারা হয়।

যদি কেশের স্থাশিকিত সপ্তলীতেই ব-শ্বের আদর না থাকে, তবে এদেশে ধর্মত ভ্র बका भारवात चात कि मध्य! जाही इ-होता करम करमें मकन लाक वर्माहु छ इ-केट्ड थाकित्य। **मध्यात्र मध्या मकल लाउक** সমাল স্বস্থা প্রাপ্ত হয় না, স্থতরাং স্কল্ লোক সমভাবৈ উঠান ধর্মাদির শিক্ষাও পায় नः, ८कह छात्र श्रुटश छेशामन आवन ७ छ-ত্তাদি পাঠ করিয়া জ্ঞান ধর্মাদি প্রাপ্ত হয়, এবং কেহ কেহ<sup>়</sup>বা স্থশিকিত দিগের দুকী দুদর্শন করিয়া জ্ঞান ধর্মের মশা লভে করে। মনুষ্যের এই **রপ প্রকৃতি দৃউ** হয় ্য স্থানিকিত ও শিক্ত সম্প্রদায়ীরা যে কার্য্য অনুষ্ঠান ও যে প্রকার ব্যবহার অরল্যন করে. সাধারণ লোকে বিনা উপদেশে প্রায় তাহার অসুকরণ করিয়া খাকে, অভএব যদি এ-দেশীর শিক্ট সমার্কে ধর্ম চর্চার শৈথিলা ২৪,তবে সাধারণ লোকেও অব**ন্ধ বে**তাহার অনুগামী হটয়া ক্রমে ধর্মেতে অনাদর ক-িবে ইহাতে সন্দেহ্কি ? যদি অশি-ক্ষিত সাধারণ লোকে দেখে, যে উত্তম रिनाराग् । विशंका दुक्षिमान् लाटक অনায়ানে বেশ্যা গমন, মিখ্যা কথন ও অ-পহরণাদি সকল প্রকার কুকর্ম করিয়া কুল হইতেছে না এবং কোন ৰূপে শকা প্রাপ্ত ইইভেছে না, তবে তাহারাও উক্ত প্রকার অধর্মাচরণ করিতে কিছুমাত্র শক্ষিত হইবে না। ভাহারা অনারা**নে** ওনিঃশকে স-কল প্রকার কুকর্ম সাধন করিবে এবং প-तंग्यत नकत्व कृकची हहेता काम काम ध्धान रहेए जाक खत्र विमुख रहेरत। শদি দেশুর্যাপী যাবভীয় লোকেই এক প্র-कात व्यथर्मा निश्व हरू, जत्त तम व्यथमा व्य-মুঠান করিতে **আর কেহ গৌকিক আল**-ফয়ে শক্ষিত হর না, **স্ত্**রাং এদেশের না-বতীর লোকে পাপাচরণেরত হইলে এদেশ मट्या ७ व्यथमाञ्चर्काच भटक कि हमात लाक छत्र थाकित्व ना, भारभन्न भग अदक्रवाह्न পরি**ষ**ার হট্যা **উঠিবে। অতএব স্থান**-

किए विके नमाद्य क्रूकित्रात कारात रहे লে, জালা যোরভুর অনর্থের কারণ হর। <del>पर्काशका क्षाब ना हहेश अहसीत लाहक</del> ক্রমাগক কুকর্মশালী হইকে তাহাদিগের বংশ পরস্পরারও অধর্ম ক্রোতে ভাসমান হওয়া নিতাক সমুদ্র । যদি পিতা ভাতাদি अल्बन कियान्कारम श्रामक शवरक धर्मा শিক্ষা প্রদান না করে এবং আপনারাও পর্ম শাসন অবসম্বন, সৎকর্মে আছা ও অ-मरकार्य व्यापत्र ना कात्र, छाहा हरेल এ বালক গণই বা আর কি উপায়ে সংগ-থে উপনীত হইতে পারে, তাহারা স্বস্থ শুরু জনের অনুকরণ করিয়া ক্রমে পাপ-পদেই মগ্ল হয়, অতএব এদেশ মধ্যে ধর্ম শিক্ষার পদ্ধতি প্রচলিত না থাকাতে চির-কালের জন্য এদেশের অধঃপতন হইতেছে, পরিণামে কোন কালে যে ইহার কোন কল্যাণ উদ্ভব স্কুৰে, ভাষারও পথ রুক্ **४३ (७६६) यनि (मर्ग्गङ्ग छ**त्रव**र्थ)** मृत कति-বার জনা অর্থ সামর্থ্যাদি নানা উপায় দারঃ চেক্টা করা আবশ্রক হয় এবং যদি প্রজার कना। वर्कतन्त्र अना ७ लाक प्रचारक च-ত্যাচার নিবারণ হেতু রাজ নিয়ম ও রাজ मण्डांनि विधान क**ता (ध्वत्रकत इ**स, **उ**त्न এ-দেশের চিরত্তকাণ নিবারণ নিমিত্ত অ বিলম্বেই বালক পণকে জ্ঞান শিক্ষার স-हिड भर्म निका अमान क्या मर्यट्डां छ। त्व ক ভবা।

# অাজ্যোৎকর্ষবিধান।

পূর্বে উক্ত হইয়াছে, যে পর্যান্ত আমান দিগের চিন্তা শক্তির একপ যোগাতা না হইবে যে আমরা অনায়াদে বুদ্ধি সাধা মকল বিষয়েরই মর্মগ্রহ করিতে পারিব, সে পর্যান্ত বুদ্ধি বিষয়ক্ক উৎ কর্ষের আর কিছুতেই শেব হইবে না। এক্ষণে কোন্ কোন্বাাপারে নেই যোগাতাটি প্রকাশ পায়, তৎ সমুদারের নির্দ্ধেশ করা যাইডেছে।

যে কোন পদার্থের তত্ত্ব নিরপণ ক রিছে বইবে, একাঞ্চিত্তে তাহার ছাব-না ও জ্ঞান্ত পর্যবেক্ষণ করা আবক্তক। বছ বিধ নৌসাদৃষ্ঠ বপ্তত যে সক্ষা দাৰ আশাউতঃ এক জাতীয় বলিয়া আ-তীয়মান হয় কিন্তু বাস্তবিক পর্কার বিভিন্ন, সে সমুদায়ের তাদুশ ছব কা প্রভেদ ওপ্রতীয়মান শাদৃত্যের হেতু নির্দারণ করা আবর্ত্তক। বিশেষভঃ বিশেষ বিশেষ कार्या भर्यगित्वाहरम मामाना काउन ७ मी-ধারণ নিয়মের অবধারণ করিয়া বিশ্ববাা-পী সতা শৈলের চুড়া প্রাপ্ত হওরা সর্কো-পরি আৰশ্যক , এই কর্প ব্যাপার স-কল সুসংপ্র নাহইলে বুলি রুত্তি ঘটিত छे दर्भात बात लिय इहेवात विषय कि? বুদ্দি পরিচালনের যে সমস্ত উৎকৃষ্ট প্র-कात निकिष्ठ इहेन उन्नात्था (भारवास्कृष्टिके স্থা প্রধান ও সমধিক অনুশীলিত হইবার বিষয়। বিজ্ঞান শাস্ত্র বেস্তা পণ্ডিতেরা रग वसूचातात अथान महान दिवशा भणा ७ মাননীয় হইয়া থাকেন উল্লিখিত বোধ শক্তি সম্পন হওয়াই তাহার কারণ। ভাঁহার वित्मव वित्मव कार्या मृत्के भागाना निग्न পুঞ্জের উদ্ভাবন করিতে ও সদ্বীর্ণ যুক্তিনদী দারা প্রশস্ত সিদ্ধান্থ সাগরে উপনীত হইতে পারিরাছেন বলিয়াই ঐ কপ অসামান্য लीत्रदात जाल्लाम इक्ताएकन। कार्छ थ-স্তর বাধাতু খণ্ড সকল অথবা অন্য কোন বস্তু উর্দ্ধে ক্ষিপ্ত হুইলেও ভূতলে পতিত হইয়া থাকে, ইহা সকলেই আবহমান কাল দেখিয়া আদিতেছে, কিন্তু ধরণী মুখোজ্জ,-ল কারী নিউটন্ ঐ প্রাকৃতিক নিয়মটি অ वलम्ब कतिमा अहे अल महान मिकास कः রেন যে যাবভীয় ভৌতির পদার্থ আকার ও দূরত্ব অনুসারে, প্রস্পর অংশ ব অধিক আকুই থাকিয়া বিশাল বিশ্বমন্দি-রের উপকরণ হইয়াছে ও তাহার উপরে আমাদিগের ভূয়দী কল্যাণ সন্ততি নির্ভর করিতেছে। একজন কোন দেশের পুরার্ভ পাঠ করিয়া ভাষার বাবজীর বিশেষ বিশেষ বুজান্ত শুলির বিবরণ করিয়াই নিরস্ত হয়; কিন্তু আরি একজন সেই সমস্ত বিবরণ একত সৰ্বাৰ পূৰ্বাক এক হ'তে পৰ্যা-লোচৰ ক্রিয়া সেই সকল ঘটনা পুঞ্জের নিগঢ় কারণ নির্দারণ করিতে সমর্থ হয়ে-न छेवर स्मर्के समीह स्वाकिमर्गत किंक्य অনুত্তি, ভাহাদের সভাতা সন্ধনের কত দূর স্ত্রাক্ষা, কোন্কোন্কিরের উপর তা शामित्राव महानामकान विकेत करत धन বছও নিৰ্দেশ করিতে পারেন। একনাতি কোন জাতীয় লোক দিগের ব্লীতি নীণি কিশেব বিশেব আচার ব্যবহারাদি দুটি **করিয়া ইতন্ততঃ তাহারুই প্রদঙ্গ করি**য়া বেজায় ঃ কিন্তু আনা কোন বাক্তি সেই সমধ্য আচার, ব্যবহারাদির মূল স্থান্ত থ রিয়া মন্তুশোর এক্লতি কিৰপ ভাগাই নি**দিন্ট** করিয়া খাকেন। এই ৰূপে **যে** विश्व ध्वा बाहरत , प्रामामा मर्थन अट्यकः বিশেষ দৃষ্টির যে অধিক প্রাধানা তাছা সংবতিই প্রতীয়মান হইবে। কিন্তু ইলা-नीचन त्लात्कत कि विकित चलाव स्थेत्राटह, প্রশন্ত সভামার্গে গরিভ্রমণ ও সমুবোর সাধারণ প্রক্ষতির পর্যালোচন করিতে প্রায় কেইউ 'সমুংস্ক ছলনা, প্রভাত জাকি-ফিংকুর সামানা নাপার লইয়া সকলেই আদর করিয়া থাকে। হা! ক্রমণঃ উৎরুষ্ট इंडेकाव (ठकें। कतिया मनुषा नारमत छे<sup>छ</sup>। युक्त इटेर्स अपन दामना काशास्त्रा रहाना. সকলেরই যেন বাল। ভাবে কাল কর্তন করিতেই লালন। হইতেছে। চিম্।, অ-নুভৰ, বিচার প্রাভৃতি বাবভীর উৎকৃষ্ট মনোবৃত্তি সমুদায়ের প্রাশস্তা লাভ করাই रम मसूरवात ममाक् छे दक्ष माधन, जान (करूरे मत्न करत् नः। वक्क कः **आरज्**रश्रकशं বিধানের অঞ্চ বলিয়া যে কোন বিগয়েব প্রদক্ষ করা যায়, মন ও বুদ্ধির স্বীর্ণত। পরিছার করাই যে তাহার মুখা উদ্দেশ্ত তা**হাতে** আর **স**ংশয় নাই।

চতুর্থ তথ সামাজিক উৎকর্ম। আমালিগের প্রকৃতি ক্ষেত্রে ক্ষেত্র প্রাতি, দয়া,উপটিকীয়া প্রভৃতি যে সমস্থ অমৃত ফলের বীজ নি কৃত হইরাছে তাহাদের অন্ধরণ, পরিবর্জন ও শোধন করাই এই উৎকর্ষের নিষয়। আমরা, পিতা মাতা, ভ্রাতা ভগিনী, পুত্র কলত্র প্রভৃতি আত্মীর বর্গ ও অপর বঞ্চ বাহ্মব দিগের সহিত একটি অনির্বহনীয় ক্ষে সম্বন্ধ রহিয়াছি সতা বটে কিন্তু যা হাতে সেই বৃদ্ধন কোন কপে ক্লেশ্বর না

নিয়ত আনন্দধারা নর্মণ করিছে थारक. छिमरश विरमव यंत्रवाम् शाकारे আমাদিগের ঐহিক স্থির কল্যাণের উপায়। ্লা অহ গ্রন্থ ইতর জ**ন্তরা বে ৰূপ ক্লা-**জানিক মাজোর বশতঃ **পাত্রভেবে, ভেহ** ্রীতি প্রাছতি ভাষ সমস্ত ব্যক্ত করিয়া **পাকে,** মনুখোরাও পেই ৰূপ খভাব সিন্ধ সংকার গ্রাক পিতা মাডার প্রতি ভক্তি, ভার্যার সাহত প্রতি, পুত্র কন্যার প্রতি স্বেছ ও অপর ব্যক্তি দিগের সহিত সন্থাবহার ক-বিলা থাকে সন্দেহ নাই; কিন্তু তাহারা লায় পরতার বশ্রদ হ**ইয়া ঐ ব্যক্ত স্থা**-ভবিক সংকারের উচিত মত প্রয়োগ ্রিটেড সমর্থ হয় বলিয়াই বাবতীয় কন্তর শ্রের হট্যাতে ও সকলেরই উপরে প্রভুত্ব করিছেছে, ধলি কোন ব্যক্তি **স্বাভাবিক** শংক্ষার মাজের 'মফুশা**ননে তাহার পুজের** পাঁত অঙ্গা ক্লেই সমূতি বিস্তার করিতে गत्यः, कियः तम पाशमादक वृश्वि जीवी मसूचा বালে কাৰ্য থামে জন্ম ও **ধর্মের স্থাত্ত** সকল সঞ্জিত ক্রিরা এ**বং স্থার্থ পরতা** শ্না, ভূখার স্বতাব ছারা স্বজাতির প্রতি অন্যবন্ধ ও পর্ম পিডার প্রির **পুত্র হইবার** টপণুজা কারতে মুরু মা পা**য়, তাহা হইলে** ঞ্জার ডাডুর সহিত ভাহা**র আর বিশেষ** ि भागा विस् विभाग काम विमीर्ग क्षा, जाजानितात कामगास **मनुगा कृत्व अ**हे শ্রপ প্রভাবের্*র আর্থিকা দেখ* যায়। ক্ৰমা পুল দিগৰে উক্ত ৰূপ **উদার প্রকৃতি** সম্পন্ন করিতে যত্ন কর' **যে পিডা মাডার** অৰম্য \*কভাৰ। ক**ৰ্ম, ভুৰ্জাক্ৰমে ভা**ৰ্ अतस्यात्र अन्यक्षा इत्र मार्चे। शृक्षी श्राम নিচায় এরপ বিষয় লোক দুউ হয়,তা-হার: সায় কুও বা অন্যায় **সেহ পরতন্ত্র** व्यक्ति भ्राप्त भूज मिरशत विमान्त्रनीतन বিশয়ে প্রাঙ্মুখ হইয়া থাকে; তক্রারা, ভাগার যে ঐ একা**ন্ত নিরুপায় বালক**ুরু-ান্দর ক্ষান ধান্দের উন্নতি ও **উত্তর কালে** াহাদের বাবতীয় বৈষ্ট্রিক স্থাস্থাদের পথ একেব।রে রুগ্ধ করিয়া দি**তেছে,তাহা স্বপ্নেও** ক্ষন মনেকরে লা। কোন কোন লোকে কাল-ক গণকে শিক্ষিত করা আবস্তুক বোধ করে

बर्छे। किसं काशामिश्रदक : महबानाक दव नक्त कत्रानके काशहरत क्यान केटम्ख থাকে; স্তরাং কতক**গুলি অশুদ্ধ** বর্ণ বিন্যাস ও বংগামান্য ভারপাটি করিছে মিকান্দি-तारे मित्रख रहा। धारे करण वीनक मिरशत शत्क यमिष्ठ किছूना किছू উপায় ,₹३-য়া থাকে; কিন্তু হতভাগিনী বালিকাগণের শিক্ষা বিষয়ে আর কেছই বজু করে নাঃ দেশের বিচিত্র আচার অনুসারে দ্রী লো-কের বিদ্যাভ্যাস করা একেবারে বিরুদ্ধ বলিয়াই ভির রহিয়াছে। যাহা হউক ইদানীখন কোন কোন খদেশ মঞ্চলাকাজ্ঞী मश्या लाकमिरशत चारुतिक यरप्र छात्न স্থানে জ্ঞানালোক বিকীৰ্ণ হইবার যে ৰূপ উপায় হউতেছে,দেশে দেশে বালক ও বা-লিকা বিদ্যালয় সকল সংস্থাপিত হইতেছে, ভাহাতে কখন না কখন যে উপ্রেছে পশু ভাবের নিরাকরণ হইতে পারিবে, এমন আশা হইহাছে।

এই কলে যেমন অন্যায় শ্লেষ প্রবৃত্তি নিবস্থান অশুভ **ফল উৎপন্ন** হইয়া থাকে. मिट अप प्रशा, उपिहिकीशांपि अनामा दृष्टि অন্যায় প্রয়োগ দ্বারা কিন্তুর জনিক্ট হট্ডে পারে। দয়। মানব এক্লিতির অ্যুপম অলক্ষার ভাষাতে আর সংশয় কি ? কিন্তু উপযুক্ত স্থানে এ-যুক্ত না ২টলে উহা আর কিছুতেই শোভা করী হইতে পারে না।উপযুক্ত পারে প্রদত্ত क्ट्रेलके डेबा माठा ५ भूकीचा डेजरबब्ब धानन धन्तिनी इस ; तीन दीन कुथाङ বাজিকৈ অধ্নান, আতপক্লান্ত ভুক্ষাকুল বাক্তিকে পানীয় প্রদান, নিরুপায় শাতাতুর বাক্তিকে বস্ত্রদান, কুষ্ঠা, অন্ধ্য, খঞ্জ প্রভৃতি কার্য্যাক্ষম ব্যক্তি দিগকে অর্থদান, অজ্ঞান তিমিরাজ্য ব্যক্তিকে জ্ঞান দান ও শোক ভাপিত নাজিকে অঞ্চ প্রদান করিয়া বে অনুপম বিশ্বন্ধ সন্তোধ লাভ হইয়া থাকে. তাহা যে ভূক্তভোগী হইয়াছে, সেই বলিতে भारत। किन्छ इस भनाकि अञ्चनाम कर्मा-लिय विभिन्ने विज्ञान करें शुक्ते वानुगा-विके सके लाके पिरशत काके पृत्के महा-भेत रहेशा मुख्य स्टब्स पार्वा विश्वदान करा।

काल सरमाने सामानुपात कारत साथा **र** विकास स्थान क्षेत्रक लाटक जा । आमानि-त्यक हमान्य करे मण नगान का पाने विकास मुक्ते प्रदेशा शाक्त किन कर कर वर्षकार प नवरमञ्जित स्मादक जिकाकीयी क्रेडा বে প্রভাব পুরুষ পুরুষ পরাটন শ্রীপুত मृषि जिका काडा जेक्द्रशृद्धि क्वतिरहरू, কত কত পরিক্ষাৰ নিয়ুখা নীয়াখনের নির্দা-पि छीर्थ अद्दर्भ बागः कर्त्सिः मानदर्शंका-वदक्षण क्रवा अक्षा का का किया विकास विकास विकास विकास विकास किया विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास कतिहरू क्षिमात नश्या मंत्र है। गाँधा। एक जिल्ला है जन ? ज नकत महामदसरा **एनकर्षावित्र 👉 विनय्नः 🗠 व्यक्तिकः 🔍 एप्रन**, উহোরাই বা কি করিয়া খাকেনি? " ক-কুণাকর: ুবিশ্ববিধাতা : বে: প্রতিপ্রায়ে মন্তব্যকে হস্ত পদাদি কর্ম্মেন্তিয় ও চকুঃ ক্ষোত্রাদি জ্ঞানেন্দ্রির বিশিষ্ট করিয়া সৃষ্টি করিরাছেন, সে সকলকে অকর্মণ্য করি-তে প্রব্রক্ত ছঙ্গলকে অধর্ম না বলিয়াইবা আর কোন শঙ্গে উক্ত করিব ? এই রূপ উপচিকীৰ্যা রুদ্ধির অবগাপ্রয়োগেও সমা-জের বিস্তর অনিষ্ট ঘটিতেছে।

কেহ অনন্যগতি পানাসক্ত পাপান্ধার ক্ষমন্ত পিশাসার শাস্তি বিধান করিতেছেন, কেহ্বা কোন নউমতি ও বেস্থাসক্তি প্রভৃতি বাসনকলাপে ছতসর্বাস্থ নরা-খনের ছুম্পুর্ত্তি পুঞ্জের পোবকতা ক-ব্লিতেছেম, কেহ কেছ ৰা কোন দক্ষা ব্য- 🗐 বহারাজীবী #ব্যক্তি দিগের সহারতা করি-ক্লা লোকের মানি**ক প্র**বাহ প্রবল করি-**্রেছেন**ে **হা** 👭 কড কালে যে আমাদিগের रणन रहरे बहे नमस भनाव नामाजिक बावश्वक मिकानिक स्टेटव, कक कारण व প্রচলিত থকের ভীববভূত্তি অন্তর্হিত হ-্ট্রের্ড্র "জনং ক্রজনালে বে জাত্যাল্লিমান, अकृष्टि बावजीत मन्त्र अखिद्वाधी अस्ता नवकात संबुद्धः निताक्षणः बहेर्षः, बनिद्ध ्राप्ति मा। क्लाफ स्व श्रीक मक्क विमा अ म्हारणप्र एक्सणिक जानाविक मा क्**बे**ट्रे य क अतिकाम यात्रा की विकासिका करा CONTRACTOR IN MINISTER BASE अवस्था अनु म निकार मुद्दीत सहस्य महिला

नवानक वारक वारक वारक वारक वारक कृष्टिक भन्नामा नाराया जेत्रहर शान शरन अपूर्वक मा स्ट्रिक्ट, दय मार्चाक नका मर्ट्यत अक्षांत काता कात्रांत अस्थित पट्यातः ज अक्ष का इब्र नकम विमर्क्ति उ. में इंडेर्टर, ্ছিয়াচয়িত অজ্ঞান অভিত বিৰম ছকত क्रमाकाछ विश्वक धर्मानीताः विद्योष्ठ न ক্ষ্টুৰে, এবং দক্ষতির মধ্যে পরক্ষার প্রণয় ুনিব**ন্ধান : সম্মান কিনাপ**, পিতা পুরের মধ্যে ক্ষিপ্রাকার ব্যবহার কর্ত্তব্য, পরস্পার ভাত্ **अंदर्शत मध्या कीमृश चाहता विश्वि इत. ঞ্জিবাদী ওস্থদেশস্থন গণের প্রতি কিন্ধ**-প্র সম্ভারহার করা উচিত,ও ভূমওলবাসী যা-ৰ্থীয় গোঁকের প্রতি কিপ্রকার দৃষ্টি করিডে **क्त**, **राभधान्त ध**हे मूम्स्य विषद्यंत वर्धार्थ ख्यान ७ अञ्चर्छाटनत अग्रहाव शाकिएत. (म श्रमाञ्ज सामानिकात नामानिक उरकटर्यत আর কিছুতেই শেষ হইবেনা

#### মহাভারত। আদিপর্বা

१৮ अथाय---महर्श्वा

া বৈশব্দায়ন কহিলেন, কচ বিদ্যালাভ **করিয়া এড্যাগমন করিলে দেবতারা সা**-ভিদয় হর্মপ্রে হইলেন এবং ভাঁহার নি কট সেই বিদ্যা অধ্যয়ন করিলী ক্লডার্থ न्यना ठिट्ड स्वरहाटकर निकछ जानिय निद्वमन कतिलन, एर शृतकत ! তामात বিক্রম প্রকাশের সময় উপস্থিত হওরাছে. একণে বিপক্ষ কুল ধংসকর। সমাগত मर्कारनय मुर्थ अहे कथा व्यवग कतिया (म-বরাজ তংক্ষাং তথা হট্তে প্রস্থান করি-লেন, এবং ক্রিয়ন্দ্র গমন করিয়া প্রক প-तम तमगीत बँदन अधिक इरेबा प्रिथितन কভকগুলি কন্যা তীরদেশে স্ব স্ব বস্ত্র রাখিয়া জনকীয়া করিতেছে। তথন তিনি রায়ুর অরপ পরিএব করিয়া প্রচ্ঞবেলে क्याब्रिट्यंत वेळ नकवे विकेश मिनिष्ठ के-क्रिजा - मिर्लन । क्योंजा अक्ट्रेस वक्कालिन भव स्ट्रेट डिलिंड रहेन वर्र का व बंध निकटी लाहेन छाहारे बालन बंदन ৰ্মিয়া প্রিবাৰ ক্রিটে লাগিল।

ত্বপ্রত্নর। শর্মিটা না লানিয়া দেববা-মান্ত ৰস্ত্ৰ স্বীয় বোধে গ্ৰহণ করিলা পরিধান করিতে উদাতা হইলে ঐ উপদক্ষে উভয়ের বিষম বিহোধ উপস্থিত হইল। দেবখানী कहिरलन, व्यात चस्रत करना! जूरे निया হয়না আমার বর পরিধান করিতেছিল; এত খ্ডোচারে তোর কথন ভাল হইবেক ar i अभिशा भर्मिको कहिलान, **जा**दा स्वि-দানি তোর এত অফকার কেন ৈতেতে ভাষাটের কত অন্তর, তাডুই জানিস্মা, একন্য এত গর্মে করিতেছিদ্। আমার (शह) कि स्यन कतिश कि উপदেशन क-ব্রিয়া ধ্রাল খেকপে থাকেন, ভোরে পিডা িল আদনে উপবিদ্যা হইয়া স্তুতি পাঠকের ন্যায় বিনীত বচনে নিয়ত স্তব করিতে থাকে ৷ যে ব্যক্তি স্তব মাত্এল ও প্ৰতিগ্ৰহ করিয়া জীবন যাত্রা নির্বোহ করে, তুই তার কুলা: আরু ঘাঁহাকে সকলে তার করিয়া খাকে, চিনি অর্থ দিয়া মুকলের প্রার্থনা পূর্ব করেন, কখন দাহার নিক্ট প্রতিগ্রহ ক-্রন না, আনি ভাঁহার কন্যা। অরে ভিক্ক তমরে! কুই যত ইচ্ছাত্থ কর মনভাগ ক্র, ক্ষেত্র কর হিংসা কর, অগ্রা শাপ দ, আমি ভোকে মন্ত্রণ বলিবা আ**ছব**রি मा ।

দেশ্যানী শশ্বিষ্ঠার এই রূপ গর্ম পূর্ম বচন প্রবণ গোচর করিয়া কোণে কম্পিত ফলেবরা কইলেন এবং সেই বস্ত্র ধরিয়া हे। नाहानि कतिएक नाशितन। . उपनित শব্দিষ্ঠা কোধ ভরে কথীরা হইয়া অগ্রপ্র শ্চাৎ না ভাবিয়া বল পূর্বক দেবযানীকে এক স্মিহিত অন্ধ কুপে নিক্ষেপ করিলেন এবং কুপে পতিত হইয়া দেববানীর প্রাণ विद्याल वहेशारक, धरे खित कतियां नदछती গণ সমভিব্যাহারে গৃহে গমন করিলেন। সেই সময়ে এছ্যতলর রাজা ব্যাতি অ্বা-রোহবে মুগরায় নির্গত ইইয়াছিলেন। মুগেন্ র অত্তেলণে বনে বনে ভ্রমণ করিয়া অস কহি-ভ সাতিশয় ভ্ৰাস্থ ও পিপাসায় একান্ড অভি-লত হুইয়া জলের অনুসন্ধান করিতে করিছে 🖠 महे कूटभन मिक्के छेशक्ति कृहिला व्यव् তৰধ্যে দুৰ্ভি নিব্দেশ মাজ এক সৰ্ব্যক্ত হ

न्तरी ७ नक्षांसकात स्विता सावितीएक क त्रम स्थापत कवित्रो विष्यक्राणक करेरवर्षः पनकर काराक (माकाकृता क्**राक्षाकर क**र तिहा सपुत्र गडायश लूक्क गांड ना बाटका লিজানা করিবেন**া হক্ষরি। ভূমি কে**, कारात कमा, ७ किक्ट्राओर विक कूल पठि**उ हरेता, तन। तम्यामि कहिताम.** দৈত্যেরা দেবগণ বারা সংক্রামে নিহত एइरन शिन नश्रीवनी विशा अचारव ७९-ক্ষণাৎ তাহাদিগকে আৰু দান করিয়া ৰাঃ (कन, जाबि (कहे शकाहादवीत कना : আমি বে এই আন্ধ কুলে: পভিড হইয়া निकास स्थापात नाम तामन कतिरक्तिः তাহা তিনি অবগত নহেন। এক্সণে মহা-त्राक !, आमात धहे मकिन इस्त ध्रित्रा আমাুকে কুপ হইতে উদ্ভ করুন। আপ-নি সহাকুল প্রস্থাত,প্রভূত যশঃশালী, বিবাডে দয়াবান্, মহাবল পরাকার ও অভি শাস্ত স্বভাব ; অনুগ্রহ করিয়া আপনকার আ-মাকে এই কুপ হইতে উদ্ধৃত করা কর্ত্তকা য্যাতি পরিচর আবংগ ভারাকে অসামান্য ব্রাহ্মণ তনয়৷ জানিয়া তদীয়া দক্ষিণ কর এইণ পূৰ্বক ভাহাকে তৎক্ষণাৎ কুপ হই-তে উত্তোলিত করিলেন এবং সমুদ্রিত म छायन शूर्वक कै। हात निक्छ विमास लाहेजा নিজ রাজধানী প্রস্থান করিলেন।

धरे नमत्त्र (मदयानीत महहती धूर्विका नरुना (नरे श्वादन উপश्वित प्रदेशा-भी त्याक मञ्च इत्रदा करित्वन। वृर्वितक ! তুমি স্বরায় পিতার দিকটে বিয়া বল, শ-শিষ্ঠা সামার এই দুরবস্থা করিয়া গিয়াছে, चात जामि इयशक् त्राकात नगरत शहरू করিব না। তদমুসারে খুর্ণিকা সত্তর গম্মে अजाणदर्शत निकृषे अशिक्ष क्रेशा स्वत-यानी मध्काख ममख बुखाख निरंतन कतिना। रुकाराया चारमाकांक संबंध कतिया यह-পরোনাত্তি কুভিড ও ছাখিত বৃষ্টলেন এবং কন্যার অবেষণার্থে তৎক্ষণাৎ তথা হট্ডত थकान कतिया अस्तरिक्षिकाम एकाने आहा उनियान सरेता श्रीकाकृत महरू अन्य पूर्व महरून के हार्क क्षारकारत जानिवास कार्रिकी STATE OF THE PARTY OF THE PARTY

याजकनीकृतात स्व हुःय स्वाध कतिश বাকে; বোধ করি তুমি কোন পাপ ক तिसांचित्न, बाबि तारे माल्यत्रे धरे 🖚 नाजानं रहेन। त्वस्यानी कवित्समः, जाज! আমার পাণের দিছাতি হউক আর না হউক এখন সে কথা মাকুক, শৰ্মিষ্ঠা আমাকে বে দকল চুকোকা কৰিয়াছে ভাহা বলি,মনদিয়া खन। ७ हे बिलासी, भिर्मिकी (यंजादिव सिन-কল কথা কহিয়াছিল, অবিফল সকল ভ<sup>ি</sup>ল শুক্রের নিকট কহিয়া বলিলেন, সে যেরপ কহিয়াছে, যদি আমি ধথাৰ্মই দেৱল হই, তাহা হইলে আমি শর্কিটার নিকট অপ-রাধ শ্বীকার ও ক্ষমা প্রার্থনা করিব। নতুবা ভাষাকে ইছার সমুচিত প্রতিফল দিতে হ-हेर्दक। एक कहिस्सन दश्माः कृति যাচক চাটুকা**র অধ**না প্রপ্রত্যাশীর কন্যা নহ , ভোমার পিতা কাছাকেও স্বব করে লা, ভাষাকেই সকলে আরণ করিয়া থাকে; व्यवस्था निष्क इवश्रकी, भवताय देख म-ক্ষণাত্মক বজাতি প্রভৃতি সকলেই জানেন। শামার অটিসুনীয় প্রভাব। ব্রস্থা ভূষ্ট হইয়া এই বর দিয়াছেন, স্বর্গ, মতা প্রভৃতি যে द्राल विकिष्टू बहु चाह्न, आधि उरमञ्जा-য়ের অধীশর। জগতের হিচের নিমিত্ত আ-মিই জল কৃষ্টি করি, জামি যাবতীর শতের পৃষ্টি সম্পাদন করি। আমি একথা পরি-হাস করিয়া কহিতেছি না, যাহা কহিলাম ইহার একটাও অলীক নহে। শুক্র বিষা-দম্য়া ছংখা দুৱা শোকাভিত্তা তনয়াকে এই ৰূপ মনেহের বচন পরস্পরা ভারা সা ষুরা করিজে লাগিলেন।

শুক্ত কহিলেন, হে দেব্যানি! দৈ নর পরের ডিরকার বাক্য মহ্ করিয়া উপেক্ষা করিয়া থাকে, ভাগার এই স্থাবর জঙ্গা-প্রক জগৎ জয় কর। হয়। যে ব্যক্তি উচ্ছু-**इन्त व्यापन बाग्न ऐक्टिक त्याम तिश्र** নিগ্রহ করিতে পারে,তাহাকেই সাধু লেতে श्रक्षक नाइधि विनिधा भगा करतम, नकुरा व वाकि अवस्त्रक रहेश अवसम्बद्ध नवसात

हर, काहारक मातं**षि वला यात्र ना**। व হাক্তি ক্ষমান্তণ বারা উত্তিক্ত কোথের নি-এছে করে তাহার সমস্ত লগৎ কর করা হয়। যেমন সর্প জীগৃত্বক পরিতাপে করে সেই ৰূপ যে ব্যক্তি ক্ষান্ত্ৰ প্ৰভাৱে উ-জিক্ত কোধ রিপুকে হিনর্জ্জন দিতে পারে, তাহাকেই প্রকৃত পুরুষ বলিয়া লোকে গণ্য করে। দে ব্যক্তি কোধের দম**ন ও তি**র-कात वादका উপেका श्रममंत्र करत अवः মন্তাপের হেতু উপস্থিত হইলেও সম্বর্ত নাহয়, সেই স্কৃতি সিহ্বিভাজন হয়। এক বাক্তি শত বংসয় ব্যাণিয়া অবাধে মাসে মানে যজানুষ্ঠান করে, আর এক বার্তি কালারও উপর জোধ প্রকাশ করে না। এই **छेडरात भर्या अर्जायम वाक्टिहे ध्यया**ः বালক বালিকারা হতচেতন হইয়া পর**স্পর** যেরপ বিরোধ করে, প্রাক্ত ব্যক্তি সেরপ कदत्रम मा ; वालक वालिकाता वलावल वि-বেচনা ও পুর্ব্বাণর পর্য্যালোচনা পরিশুন্য ছ্ইয়াই সেত্রপ করিরা খানে। •

দেবঘানী কহিলেন, তাত! আমি বা-লিকা বটি, কিন্তু ধর্ম সমুদয়ের উৎকর্ষা-পক্ষ পরিজ্ঞানে নিতান্ত অক্ষমা নচি; এবং ক্রোণ ও ক্ষমা এ উভয়েরও বলাবল বিচারে অসম্থান্চি: কিন্তু বেত্যক্তি অ পন মজল বাঞ্চা করে, ভাহার শিধা হউ য়া যে অশিধাের বাবহার করে, ভাহাকে ক্ষম। করা বিধের নছে। অভিএর যেস্ত্র অসদাচার তথায় আরু আমে;র বাস করি তে প্রবৃত্তি নাই। যাহায়ো খনেত বংশ ও ব্যবহার ধরিয়া অকারণে নিক্ষা করে, আন্ম মঞ্লাকাজকা প্ৰাক্ত বাজি ভাদুৰ পাণি 🕏 দিগের নিকট বাস করিবেন না.। <mark>আ</mark>র ষ্টাহারা অন্যের বংশ মর্যাদা ও ব্যবহারের সাধ্তা জানিয়া সমুচিত সমাদর করেন, তা-**मृण नाध् श्रुक्तय मिद्रशत मनिधान वाम क**-রাই ছোয়ংকপে। ভাত! বলিতে কি, শ-र्मिष्टात (महे नकन पूर्वाका विविमित्त वा-दकात नात आमात कारदश विक एकता আছে ও ঘোরতর যাতনা প্রদান করিছে-हि। जामि कान करमहे अमिर्ड नाहि-उके मा। कांगारीन बांकि विनदक व ভাগাবান লোকের উপাদনা করিছে হয়, ইহা অপেকা চুক্তর কর্ম আর কিছুই নাই। প্রেরা কছেন,তাদৃশ ব্যক্তি দিন্তের প্রেক ক্লগ্রাফা মরণ ভাল।

### বিভ্রাপন।

ফাগামী ১১ মাঘ শনিবার স-দ্ধ্যা ৭ ঘণ্টার সময়ে অফ্টাবিংশ সামুৎসরিক ব্রাহ্মসমাজ হইবেক!

> শ্রীতানন্দচন্দ্র শর্মা শ্রীবাবেশর শর্মা উপাচার্য্য ।

# বিজ্ঞাপন।

ত্র-কাম্যাশরদিবের প্রতি নিবেদন যে কাহার। ১৭৭৯ শকের স্থীয় স্থীয় সাস্ত্র-রিক দলি ১১ মাছের মধ্যে সমাজে প্রেরণ করেন

> শ্রীবাদেশর শর্মা। সম্পাদক।

# विकाशन।

তত্ববোধিনী সভার সভা বা সভা ভিন্ন
আনা ধে কোন ব্যক্তি মাসিক। এনানা করিয়া সভায় প্রদান করিবেন, ভাঁহারা নিরমানুসারে সভার পুস্কালয়ন্থিত পুস্ক
ক্ষণ পাইতে পারিবেন।

# বিজ্ঞাপন।

আস্ক্রোবর্ণাকুলের স্লাদবুক একে। তাঁদ ডিপজিটরি।

করবড়াঙ্গা--কৈলিকাতা

ট্রেনীং দিন্তিম (ইংরাজী) .... ক এবংসর মহাল্লা হেয়ার সাহেবের স্থা-রবার্থ দায়ংসরিক সভার জনাইট্রেনীং ক্রুলের প্রধান শিক্ষক জীযুক্ত বার জিপ্তি মুশেপাথার মহালর নিক্ত প্রথম জনালী বিষয়ে বে এক স্থানি বক্ত পাঠ করেন, অধুনা তহে। উলিখিত পুতকাকারে প্রকানিত। কইয়াছে এবং বিক্রেয়ার্থ আমানিগের প্রস্থালারে প্রস্তাত আছে। শিক্ত সন্তান দিনাকে বে প্রকার প্রশানীতে আছে। বেওয়া কর্তবা, তাহা বংকেপে অভি পরিপাটী রূপে উক্ত প্রয়ে বিহুত হইরাছে, ঐ পুরুক থানি শিক্ষকদিগের পক্ষে বিশেষ কর্ম্মোপ্রথানী, সন্দেহ নাই।

ঘাঁহার। আমাদের গ্রন্থানার হইতে ল-গদ মূল্যে বালকশিক্ষোপ্রহোগী অথবা অন্য প্রকার পাঠ্য এন্থ ক্রায় করিবেন, ভাঁহাদি-গকে নিম্ন গৈবিত নিম্নামুসারে ক্ষমিন প্রদান থরিব, কিন্ত চুলাভ ও চুম্পাপ্য অ-র্থাৎ যে সকল এত সচরাচর পাওয়া বার না, তাহার পক্ষে উক্ত নিয়ম পরিপালন করিতে পারিব না।

১ অবধি ৫ টাক। পর্যান্ত শতকরা ১২॥। পুন্তক বিশেষে ... ১০

৫ অবধি ২৫ টাকা পর্যাস্ক শতকরা ... ১৫ প্রিস্তক বিশেষে .... ১০

অক্ষত্ত এজেন্ট প্রতি ... তিন নগদ মূল্যে ক্রয় করিতে অসমর্থ ব্যক্তিরা যদি এক মান মধ্যে টাকা দেন ' ৬াণ আমাদের নিজ প্রকাশিত গ্রন্থে :২৫

শীমার, এম, বস্তু এণ্ড কোম্পানি

# বিজ্ঞাপন ৷

বঙ্গ ভাষা সুবাদক সমাজ হইতে প্রকাশিত পুত্তক এ সভার কার্যালয়ে বিজ্ঞাথি প্রত্ত আছে, তাহার মূল্য নিরূপণ। রহৎকথা—প্রথম ভাগ ।।
চক্মকিবাক্স ও অপুর্বে রাজবক্স
বিষয়ক প্রত্তাব
মংশ্যনারী বিষয়ক প্রস্তাব বিষয়ক প্রত্তাব

ত্তি এই তত্ত্বাহিনী পরিকা, কলিজাতা কর্ত্তর বোলানিকা হিত উত্তবাহিনী কলাই কার্য্যালয় এই তে অভিযাসে কালাপিও হয়। ইয়ার বুলা এই ইয়া বুলাই পুন্ধার সম্পন্ন ১৯১৪ প্রতিষ্ঠান্ত্র একচ



# অন্টাবিংশ সায়ৎসরিক ব্রাক্ষসনাজ।

কলিকাড়া ১১ মাধ্ ১৭৭৯ সাক।

পত ১১ মাঘ শনিবার স্কান ৭ ঘণীর সময়ে ত্রাজ্যমাজের অস্টাবিংশ দামৎনরিক কার্য্য জতি সমারোহ পূর্বক নির্বাহ হয় । প্রথমতঃ উপাচার্য্য মহাশ্বরের। বেদীতে উপবেশন করিলে, প্রীযুক্ত নবীনকৃষ্ণ ব-স্পোপাধাায় নিম্ন লিখিত প্রস্তাব পাঠ করিলেন।

"মানৰ জাতির উন্নতি সিদ্ধি ও স্থুখ রু-चित्र कमा कर्शनीयुद्ध य ममञ्ज भगादर्शत কৃতি করিয়াছেন, তথাগো ধর্মাই দর্বে গ্র-थान। धर्मा हाता मनुषा ते अकात डेनजा-বস্থায় উপনীত হইতে পারে এবং ধর্মা দারা त्म सामृत्र छेरक्रके छ्शाश्वामन कतिएड .म-यर्थ रहा, जात कान शमार्थ बातारे म्यान श्रुषी रुट्रें पादत ना। धर्म व मानव काष्टित सर्देख्य ध्वरान कावण ध्वर धर्माहे বে মনুযোর সার ধন, বোধ করি কোন ব্য-জিরই তাহাতে সংশর হইতে পারে মা। কিন্তু আশ্চর্যোর বিষয় এই বে আমরা ৰাহাকে বকলের সার বলিয়া খীকার ক-त्रिटिक, धरः ममञ्ज विषयात्मका त्यारे ৰূপে প্ৰভাক্ষ করিভেছি, তাহাতে ধৰাবিধি नक्र कतिएक क्रके हरेएकहि सा, श्रामात्रिक

নংস্থানের জন্য যে প্রকার গুরুতর **যতু** করা আবশ্রক, তাহা দূরে থাকুক আমরা সামান্য সামান্য বিষয়ের জন্য বাদুৰ তেন্টা করিয়া থাকি ধর্মোমতি পক্ষে তক্তপর করিনা। আমরা ধদি প্রত্যেকে ভাপন আপন প্রাতাহিক কার্যা পর্যালোচনা ক-রিয়া দেখি, তাহা হইলে স্থাস্ট দেখিতে পাই, যে আমরা দিবানিশি কেবল বিষয়-চেটা, বিবয় ভোগ ও বিষয় রুস চিন্তা ক িায়াই কালক্ষেপ করি। কদাচিৎ একবার ধর্মাতত্ত্ব মনেতে উদয় হউলেও ভাষাতে গাঢ় ৰূপে, চিত্তাভিনিবেশ করিতে পারি না এবং কিবাপৈ যে আমাদিদের ধর্মেতে অ-থিকার জালিবে ভালাও একবার চিতা ক-तिया (मधि गा। निक् हेश निकार गङ्या, (य विना युक्त कान विषयुष्टे निष्य दल ना । वि-শ্বণিতা পরমেশর ভাঁহার এই অক্ষয়ভাগুরে বস্তব্যরাকে অন্নজলাদি সমুদায় প্রয়োজনীয় भनार्थ भतिभूर्ग कतिशा तः श्विशारहरू, किन्ह भागता अककारण निरम्ब के इहेरल रामन अहे পূর্ণ ভাগুরে পৃথিবী মধ্যে বাস করিয়াও অন্ত্রণাভাবে সুং পিগদার প্রাণ ভাগে করি. भारे बाग धर्म विकास एक एक जूना इहेला **চিরদিন আমাদিগকে ধর্মা রসাভাগনে ব-**ঞ্চিত্ত থাকিতে হয়। গতিকিয়া সমাধানা ক্রিয়া কেবল অভিলাব দ্বারা কোন স্থা-নাৰর প্রাপ্ত ইওয়া বেসন অসম্ভব, ভূমিতে বী স্বপন করিয়া ভাষা আরু রিউ ও বর্দ্ধিত।

না করিলা তথকল লাভের আশা করা

নোনন অধ্যার, বিভিত্ত বিধানে সাধন না ক
রিয়া ধর্মা কলাকাকা করাও তত্ত্বপ অস
রব। অগ্রহ যিনি অপুর্ব ধর্মাতত্ত্বর স্পান

কার, সম্পূর্ণ কপে মন্ত্রা নামের উপযুক্ত।

ঘটিত ইচ্ছা করেন এবং সমাক কপে মা

নব স্বান্ধার স্বপাস্থাদনের অভিলাম রাখেন,

তাগ্রমনোবাকো ধর্মা সাধন করিতে তাঁহার

রেনান হওয়া উচিত।

করুণাপুর্ণ প্র**মেশ্বর আমানিগের** কম্বিতিও তথ গৌভাগা প্রভৃতি সমুদায় 🛭 সম্প্রের কারণ, খাঁচা হইতে আমর। জনক জননী ভ্ৰাভা ভগিনী ও স্বান্ধীয় সুস্থ প্ৰভৃতি ভক্তি প্রতির পাতে সকল প্রাপ্ত হইয়াছি, এবং দিনি রুপা করিয়া এ সমুদায় বিশ্বকে আনা:িবের স্থাধের কারণ করিয়া স্থাটি ফ্রিয়াড়েন, বছতর লোকে তাঁহাতে প্রীতি কারতে অবদেলা করিয়া শামানা বিষয় রণে সল্ল থাকে এবং সামান্য বিষয় ভো-গই ভালাদিগের মনকে সম্বরে আরুষ্ট করে िछ उद्धारा कमाणि धराश विषयणा कहा উচিও নংখ, যে জগনীখরের প্রেমায়ত পানাপেকা জগতের আর কোন বস্তুই অধিক স্থা দায়ত এবং আরু কোন বিঘ-য়ই মন্ত্রণ মনে অধিক আছলাদ সংখার করিতে পারে। যেমন শক্তিয়ীন বদ্ধ পক্ষ বিহল উচ্চতর তরার ফলাস্বলেনে অন্ধিকা-हैं। इड्डा पश्मामाना नीहल अरवाडे मुख्ये খাকে এবং অধঃস্থামী সামানা ক্রব্যের লা-লাগায় বাৰ থাকে, সেই কপ লয়ুচেতা কুজ দ্বী লোকে **ঈশ্ব**রের প্রেমান্ত পানে **অ**-चिकाती या दहेशाहे मामाना विषय छाटन ज्**श्र दादर এवः भवता कुछ विष**रम्बर থিনা করে। যে বিধয়াসক্ত পুরুষ স-यंदमा दिवस तरमा स्था था कि एक दाइम करत एक एक अध्यादा अक्यात (अहे भूगीनमः) গুরুমার অনা**স্থাদিত অপূর্ব্ব ঐতিরদের** অব্যাদ পায় তাহা হইলে কি আর সে কোৰ ৰূপেই ভাহা বিশ্বত হইতে পারে? তাহার নন অবস্থ সেই অমিকটেনীর তে-थामुख भाग कतिएंड है जेगाड देश बर्द र

তজ্জনা পৃথিবীর সকল স্থুখ সম্পদ পরি-ত্যাগ করিতেও উদাত হয়। যে বাজি কার্য্য ভারা বিষয় রস ভোগ, বাকা ভারা ও সেই রস চর্বিতচর্বণ এবং মনেতেও বিষয় রস চিন্তন ৰাতীত কণ কালের জন্যও अन्य कान विषयतत अधुनीतन करत ना বে ব্যক্তি দিবানিশির মধ্যে একবার এতে ঈশবের তত্ত্রসের আলাপ করে না জা-হার মহিমা চিন্তন পূর্বাক ভাঁহাতে একবার মনোভিনিবেশ করেনা এবং বাক্যেতেও একবার ভাঁহার গুণ কীর্ত্তন করে না, সে ব্যক্তি কি প্রকারে অনুপ্রম ইশ্বর তত্ত্বের পরিচয় পাইবে, এবং কিরপেই ভাহার ভংগ্রেমারত পানে প্রবৃত্তি হুইবে। মনু-বোর এই ৰূপ প্রকৃতি যে, যে বিষয় সর্ক-দা অনুশালন করা যায় ভাহাই অধিক আ-যক্ত হয় এবং যাহা নিতা নিতা অভ্যাস করা হয় ভাহাতেই বিশেষ অধিকার জন্মে। আমরা বালক কাল হইতে বেলপ বিষয় জ্ঞানের উপদেশ পাই, বিষয় লইয়া অনু-শীলন করি এবং বিষয় রসের চিন্তা করি. যদি তদমুসারে জগদীখনের অপূর্য তড়ের জ্ঞান প্রাপ্ত হই এবং তাঁহার তত্ত্বামুশীলন 🛊 করা অভ্যাস করি, তাহা হইলে বিলক্ষণ দেখিতে পাই, যে ভাঁহার সেই সুধাতুলা অসামান্য জীতি রসের নিক্ট সামান্য বিষয় সম্পদ কিছুমাত্র বোধ হয় না, উ:-হার প্রেমামৃত পান জনিত অপূর্বে ফুবের নিকট বিষয় ভোগ জনিত হ'ব, সুখ বলিয়া हे नेना इस मा जवर छाहात महे शूर्न अ-कर्पत निक्षे এक १९ भमार्थ विषया है य-सुकुछ इस ना। এই विषया यहि काहातं छ সংশর থাকে, তবে তিনি পরীক্ষা করিয়া (एथून, अथिन क्षमान शाहेर्यन। जिनि क्ष-তিদিন বথা নিয়মে জগদীবরের তত্ত্বরস আলোচনা করিয়া ভাঁহার প্রকৃত পরিচয় লাভ করুণ, প্রত্যাহ নিয়মিত ৰূপে ঈশ্বরের জ্ঞান শক্তি দরা প্রীতি প্রভৃতি অনিক্চনীর মহিলা সকল চিন্তা করিয়া উছেতে চিক্ত मिविके क्ल्रेन बेवर क्षिकरण क्लाह बारम रमरे नर्वनाकि मनाउन नुसंबदक वर्षमान बर्टन क्षणांक क्रमान, कहा क्रिका कारांत्र

হৃদয় স্থিত প্রেমধারা আপনা হইতে উপিত হইরা সেই অনম্ভ প্রীতির সাগর জগদী-শ্বরে প্রবাহিত হুইবে এবং তাঁহার মন শেই অনুসম প্রেমরদের আস্বাদ পাইয়া পুনঃ পুনঃ ভাচাই ভোগ করিতে যাস্ত হইবে সং-माद्रित नकल सूथहे छ।हात निकरे गामाना बर छाउँ। प्रमान इहेरत अवर शार्थि। मकन সম্পদ ভালার নিকট অগ্রাহ্ হইয়া উঠি বে। তিনি উক্ত কপে যত প্রমার্থ রদের অনুশীলন করিবেন ততই তাঁশার মনে सूछन सूछन हे स्मित्र मदन अकृषिक स्हेर्ड থাকিবে, তিনি যেনগ কখন দেখেন নাই তাহাই দেখিবেন, যে রস কথন আয়াদন करतम नाहे, जाहात्रहे आश्वाम आध रहे-दिन अनः (ध सूर्थ कथन छ। ११ करान नाइ সেই তথ্য উপভোগ করিবেন। তিনি স মূরে বেনন শত শত ফুডন বিষয় প্রভাগ क्रिया नव सूर्यंत आश्वाम भाइरवन, स्मञ् ৰূপ বাছেতেও এজগৎ তাহার নিকট মূত্ৰ হ্বাপ ধারণ ফরিয়া ভাঁথাকে মূতন স্থা প্র-দান করিবে। তিনি দিবাকরের ভূতন (माज) मन्दर्भन कतिर्दन, नक्छ मश्रामत মুতন ভার নিরীক্ষণ করিবেন, এবং নদী নির্বার বন উপবন গিরি গুছা প্রভৃতি যাব-ভীয় পদাৰ্থকে নববেশে শোভিত দেখিবেন। তিনি কোকিলাদি স্থরৰ বিহল কুলের मधूत चत्र ध्वत्। कतिश्री षशूद्ध स्वयं जाचा-দন করিবেন এবং স্থান্ত কুস্থুন চয়ের দৌ-**ইভও তাহাকে ফু**তনানন্দ প্রদান করিয়ে। তিনি জনক জননী আত্মীয় সুক্ৎ গণকেও অভিনৰ ভাবে অবলোকন করিবেন, এবং **যা**বভীয় **মনু**ষ্ট জাতির সহিত তাঁহার এক মূতন সমস্বা নিবন্ধ হইবে, তিনি ইছ লমেই कवाखत आख स्टेट्यम अदः हेह त्मादक বাস করিয়াই লোকান্তর বানের হ্রপ্রাস্থ:-षम कतिर्दन। विख् धहे श्रकात ष्राताक শামানা স্থা ভোগ নিডান্তই যত্ন সাপেক, विना यद्भ मसूया कथनहे এপ্রকার অপূর্ব ছব ভোগে অধিকারী হইতে পারেনা।এই बन इसे रहान कतिए इहेरल, स्वा नित्रास প্রেমময় পবিত্র পুরুষের পরিচর পাওয়া किया है कर्यना अन्य सर्वामा महत्वामहत्वा छ।-

हात बाजुभम मिक्सा ७ व्यमामामा गासूनी আলোচনা করা উচিত। পৃথিনী মধ্যে কত স্থানে কত প্রকার স্থানর পদার্থবিদা-মান রহিয়াছে এবং কত স্থানে কত শত সক্ষাপুণ সম্পন্ন সাধু পুরুষ বিদ্যোন রহিয়া-ছেন,কিন্তু যাবং ঐ সকল পদার্থাদি কাছারও প্রভাক্ষ গোচর না হর, তাবং কি কোন ন্যক্তিরই ভাষতে প্রীতি বা আদর জন্মে? यथन (य त: क्रि क्षेत्रका १ व) (मोन्सर्या मा-ক্ষাথকার করে, তথনি সে ভাষাতে মগ্ন হ- ' ইয়া যায়। অতএব বিলক্ষণ প্রভিপন হ-हेरजरू, स मनूबा स পर्याय क्लभीयरतत সাক্ষাৎকার লাভ করিতে না পারে তাবৎ ফোন রূপেই ভাঁছাতে গ্রীতি করিতে লম-র্থ হয় না, যে চিত্তে তাঁহার অনুপ্র তত্ত্ব প্ৰতিভাত নাহয়, দেমন হইতে কি ৰূপে ঠাছার প্রতি শ্রীতি উপ্রত হুট্রে।

পূর্ণ সত। পদার্থের প্রত্যক্ষ লাভ কর। किष्टू अभावत बालात बरह, छेरा मसुना মাত্রের ই পক্ষে দত্তব। যে ব্যক্তি যথাবিধি সাধন করে, দেই তাঁহার সাক্ষাৎকার প্রাপ্ত रूहेट्ड मनर्थ हत्। हेहा मडा **बट्टे, या** खा নির্বাচনীয় পরম পুরুষ ইন্দ্রিয় প্রতাক্ষ কোন काम भनारथीत नाम नत्यन, किन्छ हेटा दिन -য়া তিনি যে কোন ৰূপেই আমাদিলের প্র-ত্যক বোগা নছেন, এমন নংগ, জড় পদার্থ ভিন্ন যে আরু কোন প্রকার পরার্থকে মা-কাংকার করিতে পানা যাঘনা ইহা কোন মতেই *সভা*ত হটতে প**ং**া না৷ নন ভারা তাঁহার অধীণ জ্ঞান, অনস্ত শক্তিও অগার করণার বিষয় আমেচচনা করিয়া তাঁহার অন্তপম তত্ত্ব চিত্র স্থাবিষ্ট করি-ल्हे उँ। हात्र माक्या थ्यात गान कता मात्र, এবং অনায়াদেই তাঁখার জীতি রদের আ-श्वान थाइन कतिया। मानव अव्यटक भक्ता क-রিতেও সমর্থ হয়, এলকাণ্ড ভাঁচার ম-হিমা কলাপেই পূর্ণ হইয়া রহিয়াছে, এবং সমন্ত গংলার ভাঁহারই প্রেনামৃত ছারা অ-ভিষিত্ত রহিয়াছে, আমরা কেবল আলভ করিরা তাহা পান করিতে ক্রটি করি। তিনি আপন সন্তাম গণকে ভাঁহার ঐতি-क्ष केंग्रुकाः क्ष्मा विख्तन कतिनात्र क्रना छ-

কৈঃব্রে আন্তাদ করিতেছেন,কিছ আদরা নেই " মহান নাদের প্রতি বধির হইরা র-হিয়াছি "আমরা বদি ভাঁহার আভ্যন্তরিক মকরান শন্তের প্রতি ঐতিপাত করিয়া তৎপথ অবলয়ন করি, তাহা হইলো আনা-রাসেই ভাঁহার ভত্ত্বস পান করিয়া আনি-বেচনার আনান্দ অনুভাব করিতে পারি।

স্থা নিধান জগদীপরের অমৃত ভত্ত্ব পান করিবার যে সকল পথ আছে, আমা-নিগের এই ত্রাহ্মধর্ম ভাহার একটি প্রধান

যাশ্তে মনুষা জাতি চিত্ত কেত্ৰ গৰিত্ৰ করিয়া **ভাহাতে ঈশ্বরের প্রী**ভির বীজ বপন করিতে পারে এবং দেই বীজ অরুরিত ও বর্ত্তিত করিয়া তৎকলাস্থাদনে অধিকারী হয়, সেই উদ্দেশেই এই ব্রাহ্ম-ধর্ম প্রচারিত হইয়াছে এবং দেই উদ্দে-শেই এই ব্ৰাহ্মসমাজ সংস্থাপিত হইয়াছে। বাঁহার। অরুপম পরমার্থ রস পান করিয়া মনুষা জন্মকে সফল করিতে ইচ্ছা করেন এবং সংসার মধ্যে জগদীশ্বরের প্রীতি রম প্রচার করিতে অভিনাম রাথেন এবং নিতা কল্যানকর প্রমর্থে তত্ত্বকে পৃথিবীর সকল मन्त्राम कर्मकः शहिश्चे कार्यमा आस्थ-শের উর্তি সাধনে নিয়ত যার্বান্ছওয়া 😮 কারমনোবাকে৷ ব্রান্থাকো আছা করা তাঁ-হাদিগের নিভাত্ত উচিত : কেবল বাকো-তে পরমার্থ ভত্ত্বের প্রশংস। করিলেই কিছু ধর্মানুরাগ প্রকাশ পায় না এবং কেবল वाको बाता अ स्टब्स् का मिक्कि इस ना, या-হাকে আমরা সকলের সার এবং নকল হ-ইতে মহৎ বুলিয়া অঞ্চীকার করি, ভাহাতে কায়ননোবাক্যে অস্কা করা নিতান্ত উচিত এবং তাহার প্রতি সকল বিষয় অপেকা অ-धिक सञ्ज कता कर्दवा। आमता विन छे०कृष्टे विषर्व व्यवस्था कविया नर्वतः नामाना বিনয়েতে রভ থাকি, তাহা হইলে কি আ-मानिर्शत किছूगांव महत्व थारक? अञ्जव যেধন আমাদিপের নিতা কালের সংস্থান द्ध विषय आभामित्वत हिन्नम्दिनत प्यवणक्त ध्वर वाहा चामानिरभन हेर शह लाटकर कृत्योव काञ्चन, ग्रमारद्वेत समक्ष अने भारणभा छाराहे क्रिशालन करा सामानियां के निक দেই বিষয় সহতে সংস্থাপিত করা আনা-দিপের কর্তবা, এবং সেই সম্পদ সাধন করাই আমাদিগের বিষয়। "
অনন্তর তীযুক্ত সীর্কিন্সিইটি নকোশা-

আন্তর আয়ুক্ত <del>সামিশুইনির নাকোপনি</del> ধান বে প্রকাশ পাঠ করিন, তাহা নিৰে

প্রকৃতিত হুইল।

र पार्थ! अमा कि जानत्मत मिन! **त्**व দিনের প্রতি লক্ষা করিয়া আমর৷ মাসাৰ্থি মানস র্মনায় উৎসবরসের স্থাদ গ্রহ ক-রিয়াছি,যে দিনের সমাগদ প্রত্যাশার নিরস্ক-র উৎসাহ কাননে বিচরণ করিয়াছি, স্পা-क्लाम मभीत्। त्मरम कतिशाहि, स्विमम মুখ প্রত্যের ভ্রাণ লইয়াছি; সেই মহোং-সবের দিন অদ্য উপস্থিত। হে ব্রাহ্মগণ ! হে ভ্রাত্বর্গ ! আমাদিগের পরম আশা নিবন্ধান ব্ৰাহ্মসমাজ অদ্য অফ্টাবিংশতি বর্ষ বয়ঃক্রম অতিক্রম করিয়া এক অভিনব বর্ষে প্রবেশ করিলেন। অতএব ভাহার বয়ে!রদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে কত দুর 🕮 হৃদ্ধি इहेग़ाह्य-एवं উष्प्रत्नं कवा हम जहात्र कि পর্যান্ত দিদ্ধি হইয়াছে, তাহার প্রতি লো-(कत कि श्र्या गुडेव। बाजा कविशाहः, नक-লে এক মত হইয়া একবার সবিশেষ অভি-নিবেশ সহকারে পর্য্যালোচন কর। যদিও দেখিতে পাও একাল পর্যান্ত মহতী আশা তক্র অমুরূপ ফল লাভ হয় নাই, তথাপি ভোমাদিগের একে বারে ভথোদ্যৰ বা গ্রিয়মাণ হওয়া কর্ত্তব্য নছে। কোন মহোচ ভূধরের শি**খর**ভাগে যেমন **অণ্প সময়ে** অনায়াদে আরোহণ করা সাধা হয়না, অসী-মবৎ প্রতীয়মান বম্ম ভূমওল মধ্যে আভি পরিজনণ করা যেমন সম্ভাবিত হয়না, স্থ-থবা কোন বিহোহযুক্ত বিশৃত্বল রাজ্যে শান্তি স্থাপন ও শৃত্বলা বন্ধন করা বে-यन कान करमरे खरिला नन्मन रम नी, গেই ৰূপ <u>ভোমাদিপের অফুপ্র অসামান্য</u> नभारकत बहान् छरमञ्जल अधिरत हे नन्त्रम হওয়া সম্ভব পর নহে। বিবেচনা করিয়া त्मिथिता ट्यामारमञ् अत्यानाम स्टेमाइने वा विवश कि? (जामता त्य मशेत्रमी भन्न **अवरी अवस्थान कड़िकार, त अनिकारनीय** पांच प्राप्ता करते निवित्ता करते सहा আত্রা লইরাছ, ভাহাতে ভোমাছিলের ক-স্মিন্ কালেও নিরাশ তাপে সম্ভাপিত হইবার সভাবনা নাই | চাতকেরা যেমন ধরাতল পতিত জলপামে পরিতৃপ্ত না হইয়া নীরদ দের নীর ধারার প্রতীক্ষা করতঃ অন্ত-রীক এতি প্রতিক্ষণ নিরীক্ষণ করে, অথবা যেনন স্তুপর চির রোগাকান্ত, নিয়ত উল্থ শেবন দার৷ <mark>অতি মাত্র ব্যাকুলিভ চিত্</mark> মানবৈরা, রোগাবিশানে বাসনান্ত্রপ আহার বিহার করিতে পারিবে মনে করিয়া ৩-ত্যাশাপন্ন থাকে, কিয়া কোন সন্ধীৰ্ণ, অন্ মতল, পরিল পথে পতিত হইলে প্রিক্রো বেমন অভিমাত্র ক্লিট হুইয়া প্রশস্ত পরি পুঞ मार्क छेडीर्व ब्हेट्ड शाहित्व मानत नारव বিশ্রাম সুখ অন্তভ্র করিবে বলিয়া আৰু: করে, অথবা কোন চুজিক দেশবাসী বাজি রা জাবিকা নিজাহার্থে দারুল চক্ট তোল করতঃ, ভাগাজনে কথন নতুমতা অভিনত ক্ষণাকিনী হইলে আচুর প্রমাণে তো-भारि खेवा भक्त थाश्व इहेरव बिल्हा বেনন আশ্বস্ত থাকে, দেহ কপ ভোমরা সংধারের কুটিলচক্রেপভিত থাকিয়া আন্দেদ আতি শস্ত্ৰ স্বজাতীয় জীব নগের বছবিং कुमरक त विस्थानित एवं काञ्च ती कृष्ठ क हैता ছ विषय विषय चला श्रुक्ष अञ्जल मर कतिरलंख दर्भान मः दिश्य मध्दा भारे मख ভাগ হারী রূপানিপু পরম বঞ্র সহ্বাস জনিত মনূপম আনন্দ রনের অংশাদন করিতে সমর্থ মইবার অবশ্বভাবিনী আখা সাগরে যে সম্বরণ করিতেছ, তালাতে चात मः नव्र कि ? भत्रम काकृषिक भव्यम-কলাত্রর বিশ্বাধিপতি তোমাদিগকে াে গরীয়সী প্রকৃতি প্রদান করিয়া এই বরা রাজ্যের নিবাদী করিরাছেন, ভোমগ এই স্থির কল্যাণ ধারা বর্ষ কু সমাজে সম্বন্ধ হইরা তাহারই অন্তর্মপ কার্য্যে প্র-ত্ত হইরাছ। শত শত সুর্বেশ্ব ছুরাশ্ব পা মরেরা তোমাদিগকে এই শ্রেরদী প্রত্তি হইতে পরাঙ্মুখ করিবার নিমিত্ত কত ষত্ন পাইয়াছে, কত কুংকজাল বিস্থার করিয়াছে, কত নিন্দা, কৃত বিজ্ঞপ, কত-हे वा करें कि अत्याश कतियाह, बना यात्र

না; কিন্তু ভোমরা প্রবল বাত্যাহত মহী-ধরের ন্যায় অবিচলিত থাকিয়া তৎসমুদায়ে দুক্পাত মাত্রও কর নাই, বরং শভ শুল সাহস ও দৃঢ়তর অধ্যবসায় সহকারে সং-কম্পিত কার্য্য সাধনে নিয়ত আগ্রহান্থিত ও যত্নান রহিয়াছ। যাছারা নিতান্ত অপ প্রাণ ও **চুর্বাল** প্রাকৃতি, ভাহারটে উত্তর-কালে বিঘ ঘটিবার আশকার মাহ্ম করিয়া কোন শুভকর কাষ্যে। প্রবৃত্ব হুই**তে** পারে মা; আরে এরতে তৃইয়াও মহোরা বর্গাত দর্শনে নিরস্ত হয়, তাহ্যদিগলে মধ্যম জে ক্লতি ধলিয়া গণাকর। যায়: কিন্তু মীহার: ভোমালিগের মাথে পুনঃ পুনং পাছত চ ইয়াও অবিচলিত তিতা সমায়ক কভব, ক্ষের অনুষ্ঠান করেন, ভাগালালী ভত্তম প্রকৃতি মধ্যে পরিগ্রিত ইইয়া থাকেন। একাল পর্যান্ত তোমাদিগের অনাম উৎসা-र्ध्त भरपालयुक्त कल पर्या माई नर्छ, किस अर्थे छ । मरकाल जाकाममाल विवास । ইবার পুর্মের তে,মানিনোর জন্ম ভান বেরূপ বিশাপ অবস্থায় ছিল, ভাষ্যে লাখত বভ-মান অবস্থার ভুলনা করিবে বিস্তর বিভিন্ন-ত। লাঞ্চিত হাইবে, মনেস্থ নাট। সংক্রে: **যে সকল অমা**ন্তেট্টেড চাহিত আচারে ব্য-বহারাদি এচলিত ভিল, তংক্ষণাকের **অংশক্ষাক্ত** স্থানক সংক্ষাৰত তাৰিয়া আৰু শিতেতো এপথাত যদিও <del>এ</del>নে व्यक्तिस्था विकास तालकातात कि मार BIG MAN SLAND NO TEN G ক্ষাৰ ভাষা, পাৰ্যভাষ বিশ্ব উপায় হইরাজে বলিতে এই 🔠 প্রাঞ্জে এই আ বিষ বিষ বাজের একমার স্থাতি ছিতি ভাগ কৰে। মাইলেন্ড ব্যাহ প্ৰাক্তবাৰ স্বস্থা ও স্বৰূপ এটা অধিনাংশেরই বেলেগম্য रहेज नी, अकटनहे छुव ५ छत्तीन निहारिछ ভূতি বিশেষকে জনতেও প্রস্থা, পাতা ও দক্তে। জ্ঞান করিত। কিন্তু এফালে এ-ক্ষাত্র নিয়বর্থ নিধ্যকরে নিত্য পুরুষ ব্য-তীত আর বেছ যে এই দুক্সান দুত্র-পঞ্জের প্রাভূ হইটে পারে না, তাহা খ-নেকেরই শ্রুতীতি হইরাছে। পূর্বতন মান্য भेरत क्लूबिड मानम कर्नात विक्क लक्ष

্ল্যান্তিঃ প্রতিভাত হউতেই পারিত ন'; ্তিস্ক টালালী অনেকানেক নহায়া লেকে শ্রিকশ্পিত ব্রহ্ম স্থ্রপের মনন ও অনুধ্যা-তে অধিকারী হইরাছেন। অধুনা **অনেকা**-াক পুলা জেন্ডে অমূত কলপ্সদ ত্রাহ্মসমা-ত বুকা নাগিত হইয়া উৎসাহ বারিসেকে নয়-উত্ত ও বছল বিমল স্থাপা কিশলযে ্ভবিত কটাতেছে, বিষম বিষয় চিন্তা জ-নিত বিচ্ছিত্য অমহারিণী ব্রহ্মানজ ছারা নিসক্তঃ বিশৃত হইতেছে এবং কুদংকার কপ বিষলতা সকল জ্ঞান মিছিরাতপে জন মশং পরিওক হইয়া যাইতেছে। ভারত রাজের স্থানে স্থানে বিশেষতঃ বন্ধ ভূমি মধ্যে অন্যাপি অসংখ্য কুপ্রথা সকল বি-লাগান প্রচলিত আছে বটে, কিন্তু ভাষাতে পুরের মত আন্থা আর প্রায়েই দেখিতে প্রতিপ্র বাস না। ধালাদের অবিবেক কর্ষি-্র ক্লাম্বর কেন্দ্রে কুলংকার ক্রপ কল্টক রক্ষ ালিমাত্র বজমূল হইয়া আছে, যাহার, ফী-নাবিধি কুবাব**লারে জন্মতিটিভে প্রীতি ব**ং াল করিয়া আদিয়াছে, কেবল তা**ল**-াট মাখিজালে পতিত হইয়া ভত্তং কুঞ থাকে প্রম পুরুষার্থ সাধক জ্ঞান করিলা শেহতের রাল রবিলাতে, নতুরা মালাদের কিছুমাত্র জানের উত্তেক চইয়াছে, যা-ছারা মাজিলত বুলি সহকারে স্পদ্ধিব। চনা করিতে সমর্গ হট্যাছে , সভাভা বুর স্থবিমল আলোক দ্বারা বাহাদিগের হাদর ডুমি উভারোত্তর উত্তাসিত হাই-তেছে, ভাহারা আর কোন ক্রমেই অ-আনের কার্যাকে অভান্ত ধর্ম মূলক ব-লির বোধ করে লা। একণে অনেকে বিশ্বর নীতিপুণ বিমল জ্ঞানগর আশেষ থিধ গ্রন্থাদি পাঠ ভারা চিভের মালিনা গতিহার পুরাক অবি**কণ্শিত প্রকৃত ধর্মের** भक्तावत्याम् प्रमर्थ इहेब्राह्म এदः अक-माज रेग्डमायस भत्र का चकरण चत्र पि পান করিয়া অন্য ব্যক্তি দিগকেও ভাষা-াই দীক্ষিত করিতে বল্প পাইতেছেন।

এই নদক্ত অন্যানা বিষয় বিবেচনা ক্রিয়া দেখিলে অভিনৰ বিবেকাস্তধায়ে বল দেশীয় অশেষ কুসংকার পাশের হয

উত্তরোত্তর ছেদন হইবার উপক্রম হই-রাছে, ভাষা অবস্থাই স্বীকার করিতে হটবে। বিমল বুদ্ধি সকরিত লোক স-কলের সতা ধর্মের আঞার এছণে যেমন অভিঃতি হইতেছে, সেই ৰূপ উচার আত্মসিক ক**ল স্বৰণ স্থদেশের বি**গহিত আচার পদ্ধতির পরিশোধন দারা সামাজিক উংকর্যবিধানেও মন্ত্রাধিকা হইতেছে। উ-থানশীল ধর্ম মিহিরের বিম**ল জ্যোতিঃ যত** বিকীণ হইতেছে, ততই জমাক্ষকার তি-রে,হিত হইয়া সদ্চার মার্গের প্রকাশ হ্ইতেছে। এক:৭ যে কোন **মতিনা**ন্ বাজি পবিত্র জাক্ষধর্মের কিছুমাল সর্ম গ্রহণে সমর্থ ইইয়াছেন, তিনি প্রবঞ্নাকে অবতাই অবমাননা করেন; বিশুক্ত সত্য ত্রতাবলয়নে তাঁহার অনস্থাই বাসনা হই রাছে ; ছঅবেশের উপরে তঁ:হার অবশ্যই বিদ্বেষ কলিয়াছে, এবং স্থালিসাবে প রমার্থ সাধন করা যে মনুযোর সর্বাধা ক-ভুৱাইছাউচিহার অবৈ**তাই** বেশেগমা হই-রাছে।এই ৰূপে সাংসারিক। প্রতিরোধী কাপটা অধারলাদি জবনা ভবে সমুদারের ভিরেভোব কইলে লোকের ক-খানে বৃদ্ধি নাতীত যে কোন মতেই অনি**উ** ছটিবার দভাবনা নাই, তাহ। অনেকৈই সুনিত্র পারিপ্রহেন। পুরের জৌ গণের সংময়ণ প্রথা প্রচলিত থাকায় দেশে যে কি প্ৰায় অনিষ্ট প্ৰবাহ প্ৰবল ছিল, তাহী কাছারো অবিদিত নাই, কিন্তু একণে অনুমরণ দুরে থাকুক বিধবা র**ম**ী গণের পুনঃ পরিণয় হইবারও উপায় ইইরাছে। ন্যায়ানুগত বিধৰা বিবাহ শক্তে সঞ্ভ ব-লিয়া নিশ্চিত হুইয়াছে এবং বিধবা গ-ব্রজাত পুত্র কন্যা গণের পৈতৃক বিষয় হ্ইবার প্রতিপোষক রাজ নি-য়ম নিবল্ল হইয়া ভাহার পথ বিলক্ষণ পরিষ্কৃত করিয়াছে। সৌভাগা ক্রমে ব-মুদায় দেশ মধ্যে এই উন্বাহ তত্ত্ব শোধিনী क्रित अधारि आह्य काश इट्टा वाखिए व জ্রণ হত্যাদি ভয়ন্বর অনিউরাশি হিন্ট ই-ইয়া জনসমাজের যে কত দুর মঙ্গলোরতি मञ्जाविक इहेरक शांत्रित, वृक्षिमान् राक्षि

মাত্রই তাহা বিলক্ষণ ক্রদরক্রম করিরাছেন। অন্যান্য বিষয়ক উন্নতির কথা আর কি উল্লেখ করিব, আমাদিগের গৌড়ীর ভাষা বিষয়ে একবার মনোনিবেশ করিয়া দেখ। পূৰ্বে বৰনাদি ভাষা সংশ্বিষ্ট হওয়ার বঞ্জা ভাষার যে কি পর্যান্ত ত্তরবন্ধা ছিল, তাহা मकरनारे विस्थय करण व्यवश्रात जारहर । নানা ভাষায় বিক্লান্ত ছওয়ায় উচায় এতাদুশ क्षायुत इक्क्राहिल, एर উटाटक ना शांत्रशी नाहिस्ती मा याक्रमा । कि छूडे वना गाहे ৰ না। একাল পর্যাত প্রকৃত সাধুভাবার ভু রদী জীবন্ধি ও উচিতমত প্রচার না হওয়ায় উক্ত ৰূপ বিচিত্ৰ ভাষাই অনেক হানে বা-ব**জত হইয়া থাকে।** রাজকীয় কাথা সং-ক্রান্ত যে কোন বিষয়ে বাসলা ভাষাত আ-বশ্বক করে, ভাষা প্রায়ট ঐ দ্বল ভাগায় লিখিত হয়। যাতা হউক একংশে গৌগীয় **স্থললিত ভাষার দিন দিন যদেশ উল্ল** ভি **হটতেতে,** এবং গণিত माहिड्यापि বিবিধ বিদ্যা সংকাশ্ত যে সমস্ত গাৰ্ব এন্ড উহাতে অনুবাদিত প্রচিত হইতেছে, ভাছাতে অন্মতেশীয় জন গণের অচিরেই জ্ঞান ধকোর উল্লাভ ছাইনে, স্ব-নাই ৷ ्य है गमस বাহারই ব্রাহ্মধর্মের অনুমোদিত ও শাসভূত। এসমুদার সম্পায় হইলে বঞ্ডুমি যে কি অনিবৈদনীয় মধুর ভাবে বিভূলিত হইবে. বলিতে পারি না। হে সর্বেচ্ছ পর্মেশ্র! বতকালে আমাদিনের উক্ত মনোর্থ পরি-পূर्ণ करेरव, जुनिहे कान। <u>ছে ব্রাক্ষরণ !</u> वहें त्रकल विषय अधारमाहम शुक्रक वर-वात अनुवादम कतिया प्रच, आभाषित्वत মহতী আশার উভরোভর কত একার আ স্পদই উপস্থিত হইতেছে। এই সকল আশাস্থল অবলয়ন করিয়া আমর৷ যেৰূপ অমুপম আনন্দ সম্ভোগ করিয়া থাকি, অ-দাই তাহা সবিভার প্রকাশ করিবার 🛢 প-যুক্ত দিন। আমরা সাধামতে সকলে এই त्रज्यीटक अहे नमाज मन्तित्व मगदक इ-रेब्रा अहे बन साममहे हित्रकाल वाक कति- थांकिव, किन्त भाव्याम श्रकारनव नाम नदक्के भाभाविशदक दिवासाय सायन

করিতে হইবে। যে পুণ্যশ্লোক ম**া**পুরু-বের প্রমাদে আমাদিগের উক্ত কপ আন্দর্ লাডে অধিকার कश्चारक, थाङ्कात वृच्चि উৎসাহ अकादव 13 িন্তীর্ণ ভারত রাজের মুগান্তর উপস্থিত হটবার স্থালপাত হইয়াছে, যিনি এই ব্রা জ্ঞানমাজেরপ মহা কুক্ষের রোপণ কর্তা, ছিনি त्य आधानिदात जामाह्यसभ में पिंकी दी इ-ইয়া ইয়ার উপযুক্ত কল দর্শন করিছে शास्त्रम भारी, हेका के व्यामास्त्रत व्याटा खिला যাবেদৰ ক্ষল উল্লায় অনুষ্ঠিত কল্মণকর কার্য্য সমূত ছাত্র। জন সমাত্রের বেরুণ উ-মতি হঠতে পারিবেও লবার দ্রদ্দাপর বাল দেশের যাদ্রশা পরিবর্তনে এইবার সাহার না আছে,ডিনি জাননেত দাবা ভাষামন্মেই ভারনোক্ষ ক্রিতে সমর্থ হট্যা যে বিপুল আনন্দ্র ভ করিয়াচিনেন, ভারাতে সার সংশয় কি 🚰 ভিন্ন আলে কিছু কাল সাঁথিও ও কিন্তু। ৰাহ্য লয়েকে প্ৰভাৱক ক্ৰিডে প্ৰতিয়ে যে ক্তন্ত্র প্রিভাগ ২৮তেন ভাগে বর্না-ভীত। তিনি দর্গে কার্যান্ড্রে অকালে প ভিতে না হইয়া যদি একলে পাষ। ২ সংসারব। মে বিয়াজ্যাৰ থাভিত্তৰ, জন্মা হউলো, ১০ ক্ষণে আমানিটের সামাজিক উৎকল্বর যে বিষ্ণু চিন্স **দেখ**া যাইতেন্তে, আহা এ**হস্ত**া র্জি পাইতে পটাতে, তালা সন্দেহ माहै। खनीन दक्ष छोमा । इसि लक्ष वक्ष उल মাক্ষান প্রত্ন বিজ্ঞানের আর্থ খোল সংগ আপ্ত হত পাই, তথা এক কোনা হন পাৰ ৰূপ প্ৰচেত বিজেনে বিজ্ঞাং অনুভব ক বিষয়ের হাধকার তুলি রাম্যনালে রাচ भवाग नथार्थ वाक्तरविद्यान श्रदेशका ভাষদোহন রাগ্র অনামানা ধীশক্তি প্রভাবে

রামনোর্থ রাল জনামান বাশার জাজারে অপার শান্ত শিকু মহন করিরা ব্রাঞ্চার্কার বীজ স্কল এই যে অমূলা রচনুর উল্লার করিয়াছেন,

"ব্ৰন্ধ বাএকসিদমগ্ৰন্থানীৎ লামাৎ কি গুলামীৎ তদিদং সক্তমন্ত্ৰত।

তদের নিত্যং জ্ঞানমনস্তং শিবং শৃত্ত ক্র' নিরবয়বনেকমেরাদ্বিতীয়ং : 
নিরবয়বদেক মেরাদ্বিতীয়ং দর্মাজ্ঞান দর্মান মর্মবাদি কর্মনিয়ক্ত সর্মাজ্ঞান দর্মান

नश्चनाति नश्चनित्रक् मसीक्षाः नश्च विष् नश्चनिक्षिण्यक्ष्यः भूनमञ्जनिभमिति । একস্থা ভগৈবোপাসনয়া পার্ত্তিকলৈ-হিক্তঞ্চ শুক্তভাবতি।

জন্মিদ্ গ্রীতিক্তম্ম প্রিয়ক যোসাধনক ত-ছুপাসনমের ব

ক্ষিত্র কালেও বিহার আর প্রভাহীন হ-जेदात महावन! नाहै। शुधिवी मत्था एव প্রত্যে সভ্তার সমাদ্র থাকিবে, যে প-হা, হা মনুবারে জাদর সিংহাসনে (বিবে-ক সংক্ৰে অধিটান থাকিবে, যে পৰ্যান্ত অন্ত বিশ্বাজ্যের বিলয়দ্শ উপভিত না ২ইবে, সে প্ৰয়ন্ত উহা মানৰ প্ৰক্লতিকে অবভাই বিভূষিত করিবে, সন্দেহ নাই। এক ব্যক্তিত এই অনুপন পরিশুদ্ধ ধর্ম্ম শীক্তের সবিশেষ মর্ম্ম প্রথাশ করে ক লাচ সমাবিত নহে; তবে জ্যোতু গণের প্তুম্ল নিবারণার্থে তাহার ভাল ভাৎপর্যা निर्द्धनः कत्। विरुध विद्यवनात्र किथिए বিশ্রণ করা যাইটেডছে। এই অ্থিনে বি-শথপাদের উৎপত্তি হইবার পূর্বের একমাত্র সজিদানন্দ পরপ্রক্ষ বর্ণতেরেকে আর কিডুট ভিল্মা, ভাঁছারই অনিকাচনীয় ঐশীশালি প্রভাবে সমুদায়ের কৃতি হুইয়াছে, ভিনি বে ফেনে পদার্থের স্ঠটি করিয়াছেন, মত-লট বিশ্বর, কিন্তু ওঁ, চার আর কোন বাং লেই দংশ হুইবার প্রস্তি নাই; তিনি কুটস্থ নিতা, তিনি যেমন কালের ব্যাপা মতেন ভেম্মনি দেশেরও ব্যাপ। হইতে প্র বেন না ভিমি সকলেরই বলগক, সকলে-রই নিয়ন্তা, সকলেরই আঞ্চর, তাঁলার ন-हिमात अभीमा नारे, उद्यादात अंत्रां गारे. নিরব্ভিন কল্যাণই ভারার সকল কার্যেয়ে উদ্দেশ্য এবং অধিল চরচের মধ্যে যে কিছু কার্যা নির্বাহ হইডেছে, স্বলই তাঁহার ভারণমা, তিনি জ্ঞান শ্বরণ, অনন্ত প্রক-গ, মলন স্থলপ, ও স্বভন্ত, তিনি স্বৰ-য়ব পুনা, এক্মাত্র হৈত বজ্জিত, ভাইার ইদুশ দিবিব্ৰুপ্প শ্বৰূপের কিছুমাল পরিব-र्खन इरोदात मस्रावना नाहे; जिनि शूर्व भ-'কপ, উপমা রহিত। কি ইহকালে কি পর-কালে যে কোন বিষয় আমাদিগের প্রক্লত মঞ্চলের হে হু বলিয়া নির্দারিত হয়,একমাত্র उँ होतर উপामना जारात निमान। कैरान

**छिशाममाञ्च एकाम अकान करो गांधा मटक**ः ভাঁহার প্রতি একান্ত নিশ্চন প্রীতি এবং যে কার্য্য তাঁহার অভিথেত ও প্রার বলিয়া নিশ্চিত হয়, তাহা সম্পান করাই ভাঁহার উপাসনা । ্রঞ্জাদৃশ্র অনারাস সাধ্য পরি-ওল ধর্মভত্ত যে উদার চরিত মহাপুরুষ কর্জক আবিষ্কৃত হইরাছে, ঘাঁহার আন্তরিক গ্রবড়ে আমাদিগের সর্ব্ধা প্রকার স্করবস্থা শোধনের স্ত্রপাত হইয়াছে, তাঁহাকে কি আমরা কোন কালেও বিশ্বত পারিব ? উঁহোর মৃত্যু জন্য বিলাপ করিতে ও তাঁহার অশেষ ঋণ সমূহের কী-র্ভন করিতে কি আমরা কথনও নিরস্ত হ हेटल शांतिव ? कमाए मटह । छाहात नि-कर्षे वामामिशरक वातकीवन अक्रुकिम क-তজতা পাশে অবশ্বাই আবদ্ধ থাকিতে হ-ইবে। কালক্রমে আমরা হুজাতীয় বিবিধ কুসংকার হইতে মুক্ত হইয়া চিরু সঞ্জাত কলম্ব নকল নিরাক্ত করিতে সমর্থ হট-লে, ও সভাতার উল্ল সীমায় আরোহণ ক-রিয়া নতুষ্য নামের শেক্ত গৌরৰ রক্ষা করিতে পারিলেও,কোন অনির্দেশ্য স্থাথের অবস্থায় অৰ্থিত হুইলেও, রামমোহন রা-মই যে এসমুদায়ের মূলীভুত ইছা অব-শ্রুষ্ট ক্রিডে হইবে। তাঁহার মর্গোর্র কালে এই ব্রাক্ষ্মান্স নিরা-শ-ীরে নিমগ্ন হইবার উপক্রম হইলে, দেব প্রতিম বে মহোদয় বাজি , আ-গন অকপট সভা প্রিয়তা গুণে ইহার হস্তাবলয়ন হইয়াছিলেন, বিনি অসীম উ-ৎসাহ প্রকাশ পূর্বাক ইহার স্মীরুদ্ধি সাধনে সংকল্প করিরাছিলেন, তিনিও আমাদিণের স্থাতি পথ হইতে কদাপি অন্তৰ্হিত হইতে পারিষেন না। তাঁহার নিক্টেও আমর। কোন বালে ক্ৰজ্জতা ঋণে মুক্ত হুইতে পারিব না। রামমোহন রার বয়স্কীর কীর্ত্তি করাপের সঙ্গে সংক্র তাঁহারও অরূপম গুণ ममञ्ज कीर्जिज हरेएछ शांकिरव ; 🗥 🚬

হে পরমান্ত্র কি বিশ্বপতে! তোমার কি
অনিক্রিনীর মহিনা, কি বিক্রিন কর্মণা। কি
ধরাতক কি সভোমগুল নর্করেই ভোমার
মহিনারাণ সমর বিশ্বস্থানী বিষ্টাই ; নর্ক

অই তোমার অনস্ত কর্মণার স্রোভ প্রবা-হিত হইতেছে। আমরা বে দিকে নেত্র-পাত করি কেবল তোমারই অপার মহি-मात निमर्णन नित्रीका कति, व मिटक कर्न পাত করি কেবল তোমারই ঋণ গান আ-বণ করিতে থাকি, যে কোন ভক্ষণীয় প-দার্থ রসনা সংযুক্ত করি, কেবল তোমারই क्क्रण तरमत जाश्रामन शाहे। कि श्रामन पृर्वतिया, कि बर्शन प्रशिवत, कि नामाना দীপ শিখা,কি গ্ৰহ নক্ষত্ৰাদি জ্যোতিঃ পুঞ্জ, সকলই কেবল তোমার অমন্ত শক্তির নি-क्रमान । जुनि जेकात काक्रमा श्रद्धरा आनामि-ণের প্রার্থনা করিবার কিছুই অপেকা ताथ नारे, आर्थप्रिक्या विषयं नकन भट्यरे প্রদান করিয়াছ। তবে এই একমাত্র প্রার্থ-না, কুমতির পরামর্শে ভোমাকে প্রীতি ক-রিতে যেন কথনই আমাদিপের বিরতি না হর এবং সংসার মধো কোন কার্যাটি -তোমার প্রিয়, কোন্টি বা অপ্রিয়, তাহার সমাক্তরান লাভে সমর্থ হইয়া আমরা ধাবজীবন যেন মনুব্যের সমুচিত সাধ্পথে সঞ্জবণ করতঃ কুতার্থ হইতে পারি।"

অনন্তর উপাচার্য্যের ব্রহ্মোপাসনার নিদ্দিন্ট পদ্ধতি পাঠ করিলেন, ত্রান্ধেরা ঈশ্বরের জ্ঞান ও শক্তি খ্যান করিলেন এবং করেক জন ত্রাহ্ম উপাচার্য্যাদিগের সহিত মিলিত হইয়া সমস্বরে তাঁহার মহিমা প্রতি-পাদক কএকটি জ্ঞাতির আর্ভি করিলেন। তৎপরে উপাচার্য্য স্ত্রীযুক্ত আনুন্দচন্দ্র বে-লান্তবাগীশ ব্রাহ্মধর্শের জারিল ক্রান্তি তাং-পর্যের বহিত ব্যাখ্যা করিলেন এবং বিতীর উপাচার্য্য স্ত্রীযুক্ত বার্ণের বিদ্যালন্ধার বে প্রস্তাব পাঠ করিলেন, তাহা পদ্দাতে প্রক্ টিত হইল?

"হে বিঅপিতা বিখেশর ! তুমিই সমস্ত বিখের স্থানী ভিতি তল্পের মূল কারণ। যথন তক্তজনের মানস মন্দিরে তোনার জ্ঞান প্রভা উদর হয়, তথন এই পরিভূপ্তমান তুলোক ও সমস্ত ছালোকের চিল্কচন্দ্রকারিণী পরম রমণীর শোভা কতাই আনন্দের কারণ হয়। হে নাক! ভোমার জ্ঞান ক্ষান্ধ বারণ হয়। হে নাক! ভোমার জ্ঞান করের প্রস্তুত্ব বার্থ ও সহায় করের প্রস্তুত্ব বার্থ ও সহায় করের প্রস্তুত্ব

তেছ হয়। তে খাদেশীয় ৰাজাৰ গণ!
তোমরা দিবরের ইচ্ছামত কার্যা, করিরা তাঁছাতে প্রীতি তক্তি সমর্পণ কর,
আর মনুবার কুটিল উপদেশ পথের পথিক হইও না। সংসারামল সভও পুরুষ
সেই অমৃতমরের গুণ বর্ণনা ও গুণানোচনা
করিয়া বেমন পরিতৃপ্ত হয়েন, এমন আর
কিছুতেই, হন না। সকল স্থাকর জ্ঞানিদ্রের লাভ করিয়া—ছলভ মনুব্য কথ
প্রাপ্ত হইয়া যে বাজি সেই সর্বা স্থানার প্রেমে মহা না হয়, সে কি মনুব্য?

যেমন পিতার জীবন পুত্রদিগের স্থগের নিমিত্ত, বেমন দয়াবানের জীবন অনাথের कना, मिहे श्रकात नेचदित्र महाव किन-ল জীবের মঞ্লের নিমিক্ত। মহুষ্য পূ-থিনীতে সহস্ৰ সহস্ৰ পুণা কৰ্মানুষ্ঠান করিয়া সে প্রকার স্থুখ লাভ করিতে পারেন না, যাহা তাঁহার প্রেমের প্রেমিক ব্যক্তি লাভ করিয়াছেন। যিনি যে পরিমাণে ভাঁদার নিষ্মানুগত হইয়া চলিবেন, তৎ পরিমানে তিনি স্থী হইবেন। তিনিই পুরাতন,তিনি-रे अवाधिरात मुक्तिमान खना मुक्त रुख দকলে মিলিয়া তাঁহারই পদে প্রনিপাত কর। যাঁহার। তাহা বাজীত অনাকে উপা-দনা করেন, তাঁহাদিধের জান্তির আর অন্ত नारे " तनः यनिनमुशामरा " लात्क याहा উপাসনা করে তাহা ঈশার নর। সেই এক অদিতীয় ঈশবের আশ্রয় ব্যতীত এই বিবিত্র ভয়োস্ভাবক সংসার হুইতে উপ্তীর্ণ হইবার আর পথ নাই "নান্য প্ডা-বিদ্যতে হয়নায় " মুক্তির জন্য অন্য আর উপার নাই। উ: হার স্মরণ আবণ কীর্ত্তন করিলে আল্লা পবিত্র হয়, ঠাহাকে প্রীতি করিলে এবং ভাঁহার ইচ্ছান্ত কাষ্য ক-রিলে জম পথের পথিক **হইতে** হয় না। আমাদিগের দেহ ছারা যে কর্মা নিম্পন্ন হয় ৰা বাক্য স্বারা ৰাহা উচ্চারিত হর অথবা मन बाता वाह। चाटकानिक रुब्र, छेरा चाच अमारमंत्र व्यक्तिकी हरेल वामता महत्क-ই জ্ঞাত হইতে পারি যে ঈশ্বরের আ-জ্ঞাধীন হইয়া চলিতেছি, নভুবা তক ছারা छेरा निर्धातन कता जरूस वर्गाभात मटर।

এই কগতের অধিকাংশ লোকেই ইতন্ততঃ त्रशं जमन कतिराउदक, किस किनिहे वर्षाः গ পদা পদাবীতে পদার্পণ করিছেছেন, मिन मक्त अगरप्त भाष्मारमञ्जू अण्- न-হালর হারণের প্রতি শ্রন্থা ভক্তি প্রীতি তবিয়া যথাসাধ্য ভাঁছার প্রিয় কার্য্য সা-্বল করিতেছেল। ভিনিষ্ট ধনা, ভিনি-ই বধার্য পুণাবান। একপ মহুত্রা যদি সমন্ত ভূমগুল নিজারত্ত করিতে পারেন, ্থাপি তিনি ধর্ম পদবী হইতে এক প-দও বিচলিত হয়েন না, ভাঁহার সমূপ্ত ক্রুদয় সেই মহামহেশ্রের জ্ঞান বারি পাইয়া একে**বারে লীতল হ**ইয়া গিয়াছে। ফিনি স্থাময় পুর্বনের সভাপ নাশিনী 'মমূতময়ী চক্রিক। পাইয়া আছাকে শীতল করিতেছেন, তিনি কি ইচ্ছা পূকাক অগ্নির প্রথার তাপে দ্রান্থ হৈছে বাসনা করেন। এখানে যাহা ননোহর জ্ঞান হয় ও বাহাতে প্রণয় স্থাপন ক্রা যায় সে সমস্তই অচির তাটো⊹ পুৰের যে সকল আচামবর্ণনিবিড় কানন কল পুষ্প উৎপাদন করিয়া ধরণীর বিপকার ও শোভা সাধন করিয়াছিল এই শাতের প্রান্ত চাবে উহা নক প্রায় হইয়াছে, সকলের আনন্বর্জক বস্তু ঋতুর সমা-গভে যে সকল বিহঙ্গ দলের স্থমগুর হনিতে অমু-করণ প্রযুক্ত হুইয়া উঠে, তাহাও কিষিণ্ধ कारलंत करा। वर्षा कालीन स्व नकल <u>জোতে। বাহা নদী স্বীয় আনন্দ লহরী লীলা</u> বিস্তার করিয়া মন্ত্রুবোর মন কক্ষু পরিত্ঞ করিয়াছে ভাহাই বা কোথায়, আর যে সকল প্ৰশস্ত ক্ষেত্ৰ স্থামবৰ্ণ নহীন দূৰ্বাদলে শোভিত ছিল, তাহা আর দেখা যায় না। কি আক্ষয়া ! স্বভাবের কতই পরিবর্জন ? ইতি পূর্বের যাহা দেখিয়াছি, উহা আর নয়ন গোচর হয় না। এই শীত ঋতুর সমা গমে नक्स वस्त्र एक आत्र, शृथिवी यन জরাজীণাবস্থা প্রাপ্ত। হইয়াছেন। এই ৰূপ শত শত পরিবর্ত্তন দেখিয়া অজ্ঞালোক মনে করিয়া থাকে **যে পুনর্কার আর সে সুখের** কারণ সকল উপস্থিত হইবেক না, কিন্তু छेश वाखविक नम्न, **जावात (महे लोजा**ना रमस पामित्रा नक्त्रारक ऋषी कतिहव । <sup>4</sup>क≥

क्वर अद्विवर्कत्क कृष्णानि छ स्थानि छ " मसूरमात्र कीवमधं से मित्ररमत क्यीन. তিনিও क्षेत्र प्राची कथन सूची, कथन पनी क्षन निर्धन ; किन्न जरे शृथिवीटक है वीहा-দিগের আশা ৰক্ষ জাছে তাঁহাদিগের মন্ত হত ভাগ্য আর কে আছে; বর্ণন তিনি भानव शीला नवत्र कित्रदन, ७४न क्छ শোচনা ও কত ছংখ করিবেন। তিনি বিবে-চনা করিবেন, বে আমি যে জ্ঞান শিক্ষা क-রিয়াছি, তাহা এই পর্যান্ত, জামি বে ধ-শাস্তান করিয়াছি, উহার শেব হইল. ত্রী, পুত্র, বন্ধু, বান্ধার, ধন, দৌভাগ্য স-कल इहेट अक कारल रिक्ट इहेलाम. আমার আছা একেবারে ধূলিসাৎ হই-ল, এইৰূপ তিনি কভই থেদ করিবেন। ঘিনি ন্যায়বান্ ঈশ্রের মঙ্গল অভিপ্রায়ে বিশাস রাখেন, তিনি মৃত্যু সময়ে মৃতন ফুতৰ আৰম্প লাভের প্রত্যাশায় মহা আ-নন্দিত হয়েন, কারণ তিনি জানেন পৃথিবীর তাবং বস্তুই পরিবর্তনের চুজ্জরি নির্মের অধীন, অতএব তাঁহার আগ্নার পরিবর্তন মাত হইল, ইহাতে বিশেষ কুক হইবার বিষয় কি? আর ডিনি ইহাও জ্ঞাত আ-ছেন বে পিপাসা থাকিলে জল থাকা যেমন সন্তব, ক্ষা থাকিলে অন্ন থাকা যেমন সন্ত-ব, সেইৰূপ সমন্ত ভীবের উল্ভি হইবার যথন বাসমা আছে, আর সে বাসনা বখন এখানে পূর্ণ হয় না, তখন ভাঁহার সে বাদনা অবশ্বই এককালে পূর্ণ হইবেক। পিতা কি উপযুক্ত পুত্রকে ৰমন্ত ধনের অধিকারী ना कतिया जुल कहरेज भारतन? जामामिटनत পরম পিতা সর্বাদাই আমাদিকে কল্পণা বি-তরণ করিতেছেন , তাচ্ছীল্য না করিলেই আমরা উহা লাভ করিতে সমর্থ হই। **নেই পাপাবিদ্ধ জগৰিধাতা আমাদিগের** এমত এক সময় উপস্থিত করিবেন, বে সময় ष्पामाहित्वत्र कान जुंका मान्ति भाहेत्वक. ধর্মা ভূকা: পরিভূগু হইবেক, বে সময় আ-মাদিণের রোগ শোক হুংথ তাপ পলায়িত रहेरवक, रवजगत्त्र व्यवश्व नाचक भून स्व বে নমরে বোগানকের উৎস-প্রেমানকের छरेग अन्ताभन छरमात्रिक स्ट्रेटक बाकिटन।

হে জগৎ বিধাতঃ! আমি ভোষার এক নিমেবের কঙ্কণা কি বর্ণন করিয়া শেয করিতে পারি? ভূমি ন সাপাডডঃ कृ: श्र द्रानि स्ट्रेट द्र । क्छ मक्त विवास করিতেছ, তাহাই বা কে বলিতে পারে। বিজ্ঞানই তাহার ৰংকিঞ্চিৎ একাশ ক-রিতে পারে।যেখানে **অজ্ঞানান্ধ ব্যক্তি** সমন্ত ব্যাপারকে অমঙ্গল পরিপূর্ণ বোধ করেন, সেখানে জ্ঞান চক্ষু অমৃতময় মঞ্জ-লম্য় ফল প্রতাক্ষ করিতে থাকেন। মহা-নিউকর ভীষণ ভূমিকম্প, মহামর্থকর শশু হর জল প্লাবন, ষ্যা প্রলয়কারী প্রবল রঞ্জাবাত, আথের গিরির মহানিউ সাধক क्रवीकृष्ठ थाजू क्षवाक, क्षठ छ कावानन, भ-পর্বতোপরি অসঙ্গত শীতল তুষার র্টিও অসম প্রচণ্ড সূর্যা কিরণ, এই জাপাত প-রিতাপী স্বভাব কার্যা হইছে কত মঙ্গলই উৎপন্ন হইতেছে। ভীষণ ভূমি কম্পে ভূমি পরিষ্ভ হয়, জল প্লাবনে নদী প্রোতশ্বতী ও দোৰ শ্ন্যা হয়, প্ৰবল ৰঞ্চাৰাতে বায়ু পরিশুদ্ধ হয়, আগ্নের গিরি হইডে মহা-নিউকর ধাতুরাশি নিংস্ত হইয়া পর্বত সমূহ উৎপন্ন করে, দাবানল হইতে অগ্নি স-মুহ সমুৎপাদিত হইয়া বায়ু ও সৃত্তিকাকে দোষ খুন্য করে, ভুষার রুষ্টি পর্বতোপরি ক্রমাগত পতিত হইয়া নদী সমূহ উৎপ-ম করে, এবং উহার জল একেবারে শুভ हरेबायात्र ना, 'ध्यदः अध्यतः इपर्या किंत्रण **(मण विर्मारय शहूब करण कल मक्कामि डे**श-পন্ন হটর। লোকের উপকার সাধন করে। (इ मानव! अहे ऋषित्र आक्रयां (कोनवा কথনই ভোমার বৃদ্ধিগমা নহে। ভূমি যা-হাতে কেবল বিশুস্থাল প্রভাক্ষ কর ভাহার नमूनगरे क्न्यन, क्र्यि याश्टल विश्वत्मत লেশমাত্রও দর্শন করিতে অসমর্থ, তাছা নি-রম বাতীত আর কিছুই নয়। ভূমি বে কা-রণে তোমার জ্রন্ডার প্রতি দোঘারোপ করিতে প্রবৃত্ত হও, তাহাতে তাঁছার অনুপয क्रम्यारे अकाम शाहा वृश्वि वारादक वा-मक्रावाद कावन कान कत, जाहा नमस स-গতের মক্ত বিধান করে। হে ত্রাঞ্ধণ! स्थानत्र। त्यद्रशत सम्माज्य । शक्ति सम्बा सहिता

বে অসামান্য ছুঞ্সছুভার এহণ করিয়াছি, ভাৰা কভুদুর সংখ্যম করিয়াছি? আমা-দিগের এবজে কি আখবর্ষ ৰূপ অমৃতময় তরু পুস্প কলে স্থানোভিত হইরাছে। আ-মরা উৎসাহের সহিত কি ধর্ম যুক্তে পাপ-পিশাচীকে পরাজয় করিয়া এবং কুদংকার পাশ ছেদন করিয়া আমাদিগের বত্ন ও প-রিশ্রম বার্থক করিয়াছি। সামরা মাতৃ স-পেকা গুরুতরা কম ভূমি হইতে কি কু-সংকর ৰূপ কণ্টকময়ী লভা সমূলে উল্বু-লিত করিয়াছি। জাতু শ্বপ বদেশীর वार्कि निरात क्रमन्न कृषित क्हेर्ड अञ्चान তিমির মোচন করিতে কতদূর সমর্থ হই-য়াছি। ৰদিও এক্ষণকার স্থশিক্ষিত বাজি বৃ-**क्लित कूनःकात करम ज्ञानीज हरेरजहा**, তথাপি যে অবস্থার প্রতি তাঁহাদিগের লক্ষ তথার উপনীত হইতে অনম্ভ কালের আ-বশ্চক। হে করুণানিধান বিশ্ববিধাতঃ! কত দিনে এদেশীয় লোকের অজ্ঞান তি-মির মোচন করিবে? কত দিনে ইহাঁরা তোমার অভিপ্রেত হুখ দৌভাগ্য লাভ ক-রিবে? ভূমিই সকলের মূল কারণ, অত-এব সকলে এক্য হইয়া ভক্তি পূৰ্ব্বক ভো-মাকে প্রণাম করিতেছি এবং অতি বিনীত ভাবে তোমার শূরণাপন্ন, হইতেছি। "

অনস্তর প্রীযুক্ত দিলেন্দ্রনাথ ঠাকুর বে প্রস্তাৰ পাঠ করেন, তাহ। নিমে উদ্ভ হইল।

" অদ্য আমাদিগের অন্টাবিংশ সাম্থসরিক ভ্রাহ্মসমাজ, অদ্য কি নৌভাগের
দিবস। হে সর্বান্তর্যামী পরমেশর। অদ্য
ভোমার মঙ্গল-মর মুন্তি আমাদিগের সকলের অন্তঃকরণকে আমন্দে পরিপূর্ণ করিতেছে, এবং সম্থ-সরের মধ্যে মুখন যে কিছু
ভোমার অভিপ্রায়ানুগত কর্ম করিয়াছি,
ভাহার শেষ পুরকার যে ভোমার সাক্ষাধলাভ, ভাহার নিমিত্তে আমাদিগের সকলের মন উৎস্ক ইইভেছে। সম্থ-সর
কলে স্থা বে একাদিক্রমে আকাশমার্গে
পরিভ্রমণ করিয়া আনিয়াছে, চন্দ্রমা যে উদয় ইইয়া মধ্যে মধ্যে ভাগংকে পূলকে
পূর্ণ করিয়াছে, দদ্যী নির্কর বে ক্রন্ত ও

मन्दरवर्ग अवारिक सरेवा श्रविरोत माना मःद्रम मध्यत्रथ कतित्राष्ट्र धवर नृथिवीरक ভূষিত ও পবিত্রিত করিয়াছে, প্রাধি গণ বে ष्रभञ्जकान नानाविध कार्या श्रेष्ठ स्रोता-ছে, আর অধিক কি কৰিন, এই অপরিনের সগতের অন্তর্গত সমস্ত বস্তু যে স্থাস্থানি-ক্ষিত্ত নিয়ম ছইতে অদ্যাপি এক পর্যাণু ও পরিচাত হয় নাই, এ সকল তোমাভিয় খার কাহার ইচ্ছার প্রভাবে **সম্পন্ন হইরা**-(छ। পुरियो यपिए ४१म दग्न, सूर्या ठता यशिष्ट जामुन्धा रुत्त, नक्का मक्का यशिष्ट निः ধাণ হয়, তথ:পি তোমার অভিপ্রায় অ-মাদি কাল পর্যান্ত অটল ভাবে অবস্থিতি কবিতে। ইহা কি তোমার **অভিপ্রায় নহে** বে বেমন ফুর্যা চল্ল প্রকৃতি তোমার অর্থ-ওনীয় বাচ্চার অনুবর্তী হইয়া অপ্রমাদে তোমার কার্য্য সাধন করিতেছে, সেই ৰূপ আমরাও তোমার প্রদর্শিত পথে চির্দিন বন্ধ থাকিয়া অকুভোভয়ে লোক যাত্ৰা নি-র্বাহ করি। ইহা কি ডোমার অভিপ্রায় नत्ह. त्व कहे लाकाकी ने ममास मिनात আমরা বে কয়েক ব্যক্তি উপস্থিত আছি, সকলেই একান্তঃকরণ হইয়া ভোমার অধি-ঠান উদ্দেশে স্থা অন্তঃকরণের কবাটযুগপৎ প্রসারিত করি এবং ভোমার অর্চনার নিযুক্ত থাকিয়া সংসার তরঙ্গের কোলাহল দূরী-ক্লত করি। তোমাকে বলিতে হয় না, বে আমরা বাহা একান্ত মনে ব্যক্ত করিতেছি, তাহাতে সুহর্তেক প্রণিধান কর। কারণ इमिमहान्, देनि नर्सवाशी,दुवि चहवीयी। ভোষার কি মঞ্চনময়ী প্রকৃতি, ভূমি বারুকে প্রেরণ করিতেছ; আলোক প্রভা বিকীণ করিতেছ, আমাদিগের খনকে উন্নত করি-एक, এবং **भागांगिरशत मरन अञ्चलात अ**-ণরান্ধর নিবেশ করিতেছ, বে ভাহা প্রক্রু-টিত হইলে মনুহো মনুহো শত্ৰুতা বাকে ना, नर्कान स्टबंद नकात रहा, এবং পৃথি-বীতে ও স্বর্গেতে কিঞ্মিলাতা বিভিন্নতা খানে না। যদি কাহারে। মনে কুটিলফুর্য श्राम मा श्राप्त, सीम काश्रादता छेशक विव मुचि ना भारक, यकि नकरता लेका रहेका सक्र-एक मक्क नाश्यम अपूक्त कहा काता क्**के**रस

धरे जनर जिल्ला सर्वत्र साम जात का-ধার সত্তৰ ৰয়। পৃথিবীর এখবছা কেনা আকাজন কয়ে। যে ব্যক্তি প্ৰতি দিবা-ভাগে সংখ্যায় শিলাটেক সহিত নাক্রণ সং-आरम धर्ष रेसम, छिनि श्रेष्ठ रूमगीए क्षणतीयदात किक्डे डेज़ अवदा रहेरछ युक्ति भारेवात आर्थना करतम। (व य-राषा गात्र भटन शक्तित्राक लाटकत निक्रक হইতে ক্রমাগত নিষ্ঠর আঘাত প্রাপ্ত হ-रान, जिनि कार्विशूर्व क्या क्या कर्यका महारमञ् পথে আবিষ্কৃত রাধিয়া অলৌকিক থৈক णानिकन भूक्तिक भत्रिक्षक प्राप्तः कहरण ४-স্মানুষ্ঠানে আপনার সমস্ত জীবন সমর্পণ করেম। এই যে উন্নত এবং প্রথম জাশার উৎস, হে জগদীকর! তাহার তুমিই এক মাত্র প্রবর্ত্তরিকা; অতএব ভোমার অচি-স্থনীয় সকল স্বভাব, তোমার প্রগান প্রীতি. **ভোমার বর্ম্মলোক পালনী শক্তি, এস-**মন্তের উপর নিতান্ত নির্ভন করিয়া বন্ধি-**छिहि, य जूमि बक्रमिनी** ब्राह्मित कारकत मन ह-ইতে কপটতা উত্তন কর, সকলের মধ্যে পরস্পার বাহাতে ঐক্য নিবন্ধ হয়, তাহার विधान करू, नकरमह मरन खाक्रमघारकह উন্নতি চেকী৷ উদ্দীপন কর এবং সকলের মনে মহাক্সা জীমুক্ত রাজা রামমোহন রায়ের पृष्ठीरस्त अनुनामी रहेवात श्रद्धां छटस-জিভ কুর।<sup>১</sup>

পরে করেকটাত্রদ্ধ সঙ্গীত গীত হইরা সভাভঙ্গ হইল।

বিজ্ঞাপন

হিতৈবিণী সতা হইতে আগামী বৈশাধ মাসাবিধি প্রতিমাদে ব্রাক্ষণর ও নীতি বিষ-রক পত্র প্রয়োজন মতে ইংরাজী কিয়া বাজ-লা ভাষায় লিখিত হইয়া প্রকালিত হইবে। ভাষার প্রতি ধণ্ডের মূল্য এক পরসা মার্ল। উক্ত পত্রের পরিমাণ আট্পেলী করমার অর্ক্ষ করমার স্থানাধিক হইবে। সভ্যাও অন্যান্য মহালর পণের সমীপে নিবেলন বে উহিয়ো উক্ত পর্যর শেখা খারা সাহায্য প্র-নামে অনুবক্ত হরেন এবং উল্লিমের আ-প্রস্তুত্ব করেন।

तका कारण बात रहेत्व पक्रशासिकी तकांत्र आहि। तका अहि बारण आहे श्रीव्याह अस् क्षेत्र शितांकाका आसे अरबत s



ত্ৰকাশ্ৰক্ষিক্ষপ্ৰকাশী দ্বানা একিকাশী জিলিদং সৰ্ক্ষত্ কং। তদেবনিতঃ জানমনত শ্ৰেণিবং স্তক্ষ্মিরণ বংনক মেৰা দিতীয় শৰ্কাশালক নিমন্ত সক্ষান্তম সৰ্কাশিয় সৰ্কাশিয়ন জুলক্ষ্মিনত। এড স্যত সৈমে বাপালনখা পানুতিক সমিধ কণ্ড কণ্ড কণ্ড ডিম্মিন্ প্ৰীতিকাশ কিমন্তিৰ কাশ্ৰিমিক জন্মিন কিমন্তিৰ জিলাক কিমন্তিৰ নিমন্তিৰ সমিধিক কণ্ড কণ্ড কৰ্মিন কিমন্তিৰ

# धर्माभिका।

বালক গণকে বিহিত বিধানে ধর্মশিকা প্রদান করা যে নিত। ত আবেছাক ও নিতাত সন্তব, ইভি পূর্কেরে প্রভাবদন্ত দান। তাহা এক প্রকার প্রতিপম হইয়াছে, কিন্তু কি কি উপায় দারা শিশু গণকে উপযুক্তমত ধর্ম-শিকা প্রদান করা যাইতে পারে, একাণে তাহারই বিষয় বর্ণন করা যাইতেছে।

ধর্ম বিষয়ক শিক্ষা প্রদানের নানা প্রকার পথ আছে ৷ তল্পথে বাকা দারা সজ্সাদেশ প্রদান, কার্যা দারা সন্দ্ ভান্ত প্রদশন্, বালক গণকে সংসংসর্গে সংস্থাপন ও
ভাহাদিগের উৎক্রকী বৃত্তির পরিচালন ও
নিক্রকী বৃত্তির নিরোধ করণ, ইত্যাদি কতিপর উপায় অবলয়ন করিলেই তাহাদি
সক্রে এক প্রকার ধর্মশিক্ষা প্রদান করা স্থসাধ্য হয়।

১—এথমতঃ বাক্য বারা উপদেশ করণ।
বালক গণের বীর বীর ধারণাশিক্তি অনুসারে, ভারাদিগকে ধর্মতান্তের উপদেশ করা
করিয়। পিতা মাতা বা শিক্ষ বে সময়
কোন বালককে ধর্মতান্তের উপদেশ দেন,
তথকালে তাঁহাবিলের ইয়া বিবেচনা করিয়া বেবা উভিত কে তাঁহাবিলের উপদেশ
বার্মা কর্মাল সম্মান কলে বালকের হুল্যালম
ইতিকৈ কিনা বৈ সকল ধর্মোনালশ
বার্মান বিক্রানা করিছে ক্রমান না
ব্যান বিক্রানা করিছে ক্রমান না
ব্যান বিক্রানা করিছে ক্রমান না
ব্যান বিক্রানা স্থানিক ক্রমান না
বিক্রানা ক্রমান ক্রমান না
বিক্রানা স্থানিক ক্রমান না
বিক্রানা বিক্রানা স্থানিক ক্রমান না
বিক্রানা বিক্রানা স্থানিক ক্রমান না
বিক্রানা বিক্রানা বিক্রানা
বিক্রানা বিক্রানা বিক্রানা বিক্রানা
বিক্রানা বিক্রানা
বিক্রানা বিক্রানা
বিক্রানা বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বিক্রানা
বি

তন্দারা তাহাদিগের কিছুমাত্র উপকার দ-र्भितात महादमा मार्ट। कुछ भिश्रदक क-ঠিন শব্দ ও অস্পত্তী ভাবে উপদেশ কঃ-রিলে কেবল উপদেকীর পরিভাম বিকল হয়। যে সকল ধর্মোপদেশ শিশুদিগের মনেতে সলিবিক্ট হয়, তাহা ফদাপি নির্থক याम्र मा, यमि ७ भव्यमा ध्ये भवन छे प्रामृत আন্ত ফল দেখিতে পাওয়া যায় মা, কিন্তু তদ্ৰেপ উপদেশ কোন না কোন কালে অ-বস্থাই স্বীয় ক্রম প্রকাশ করে। যেমন কোন কোন শন্যের বীঙ্গ দীর্ঘকাল ভূমিতে প্রজ্য থাকিরা এক সময় সংখ্রত লয়, সেই ৰূপ কোন কোন ধৰ্মোপ্ৰেন্দ বান্দ গণেৰ मरनामरथा निह्छ थे। किशा भीर्य कारबात शह यकीय कालाध्यापन करता निकात तथ्य বালক গণ যে সকল উলদেশ বাকোর প্রতি নিতান্ত অবহেল। করে, হয়তো সে সকল কথা এক সময় তাহাদিগের আরণান্ত জ-ইয়া ভাহাদিগকে গুরুতর অধর্ম হইতে রকাকরিতে পারে। অতএব **সর্বলাস**-স্বরে ধর্মোপনেশের কল প্রত্যক্ষ না হই লেও বালক গণের অবস্থামুকারী উপদেশ क्रिक भनरहें कहा कर्जन नरहे। काम ध्यकात केशनक शाहरमाहे गिक शनरक नीकि भिका अमान कर्ता विश्वतः वाकक গণকৈ ধর্মোপদেশ করিবার সময় সংস্কেপ नीर्वितात राजकात मा सर्विता काशत मुख

বিভার ক্রমে পরিষ্কার করিয়া ব্যাখ্যা করি-्ल वित्यव **छेशका**त मर्त्या अप्यवस्य শিশু বাবকৈ কথা জ্বলে কোন উপদেশ প্র-লাল করিলো শে উপদেশ ভাছাদিগের বে-মন তুন্দর জ্বপে ক্রেয়জন হয়, সর্বোদ্ধ ত সংক্রিপ্ত বাকা সকল ভদ্রেপ হয় না। লাগ্ৰহ গ্ৰহ ইতিহাস প্ৰ**সঞ্জে যে সকল উ**-পরেশ আবণ করে, তৎসমূদার তাহাদিগের মলেতে বন্ধানুল মইয়া বনে এবং ভাষার ্দাৰ প্ৰণত তাহারা অনায়াদে বিচার ক-রিতত পারে। কোন বালক কোন অপরাধ ক্তিলে ভক্ষনা ভাষাকে কট ও কৰ্কণ ৰাক্ষো ভংগনা না করিয়া মিফ বাক্য ছারা সাস্তু-দা করা উচিত এবং **ভাহাকে স্বরং সেই** লোবের বিচার করিতে ভার দেওয়া কর্তব্য। কি বলেক, কি যুৱা,কিরুদ্ধ,সকল সমুক্ষ্যের ই এই প্রকৃতি যে যথন পর মুখে কোন গ্র-লার খীয় দোষ আবণ করে, তথ্য ভাহা-দিগের সেই দেখি পরিহারের ইচ্ছা নাহ-**डेहा बद्द महनट्ड यनाना छाह्यद छेम्ह** হয়: অপরাধি ব্যক্তিকে **ভূর্**ক্যে **প্রয়ো**-গ করিলে অবশ্বই তহোর ফ্রোধের উদয় হয় এবং মনুষ্য যখন মুগোক্ত হয় তথ্ন কোন ৰূপেই সভাগেতা ও দোৰ গুণ স্থির করিতে পারে না। তাহাকে যদি স্থাৎ সেই দোষ বিচার করিবার ভারাপণ করা যায়, তাহা হইলে দে ব্যক্তি কোপযুক্ত না হইয়া প্রশাস্ত মনে আপন দোষ বৃধিতে পারে এবং ভজ্না সাপ্রাধ হইয়া মনে মনে শোচনা করে। মনুযা বে দোষ আপনাতে অতিশয় **লঘু দেখে অন্যের পক্ষে তাহাকে** শুরুতর ৰূপে দেখিতে পায়। অতএর ছাত্র বা পুত্র অপরাধি হইলে নেই অপরাধ খনা ব্যক্তিতে আরোপ করিয়া ভাহাকে বি-গার করিতে দেওরা ক**র্জন্ম, ভাছা হইলে** गर्टा हे त्म जाशन **जश्जात्यतः मस्य जा**व বুৰিতে পারে এবং ভাষা ছইতে সম্বক ৰূপে নিবু**ত্ত** থাকিতে ভ'চেকী পাছ<sup>া</sup> **ৰখন** কেনি মনুবা শ্বিক্লক অপরাধ শ্বেদং বিভার করিতে প্রবৃত্ত হয়, তথাই ভাষার জোগারি रिकृषि अवृति भवन सरकामा आवर्तन HIT OF THE BUTTON NAMED OF STREET

জাএত হয়, প্রভারাং তজ্জা ভাষ্ট্রের জনা-য়াবে অক্ত জপরাধে প্রাবৃদ্ধ করিছে পারা यात्र अवर प्रकाता ज्ञानाहारमञ् चाहारक कू-कर्म रहेएक लिक्क अभिन्न। नरकार्य शहक করান যায়। ছাত্র বা শুক্তাবিদ্ধ শীব্দপরাধ नमार्गन कत्रिता (काश्मात्रमा क्रेड्डा अक थक त्रवत स्कार बाह्यात्र कतिएक स्वाबहरू. কিন্ত অপরাধি পুত্র বা অপক্ষাধি ছাত্রকে কটু বাক্য খারা তাড়না লা করিয়া যিকী क्यात अभरम्भ अमान क्यात (व क्छश्न তাহা লিখিয়া শেষ করা অসাধ্য। কটু वाका बाता वि वालकरक काम मरकहे क-कर्म रहेरछ निरुष ७ मध्करम् बाङ्क क রিতে পারা বায় না, প্রশান্ত বচন দারা উ-পদেশ করিয়া তাহাকে অতি সহজেই ধর্ম পথের পথিক করিতে পারা যায়। মাহাতে ধর্ম্মের প্রতি বালক গণের বিশেষ অফুরাগ জ্ঞে, অবকাশামুসারে তাহা বিশেষ করি-য়া ব্যাখ্যা করা কর্ত্তব্য। প্রতিদিদ বেমন निक्षि निरमाञ्चमादत वालक निर्शाद कान শিক্ষা প্রদান না করিলে ভাহারা কোন ক্রমেই কুভবিদ্য হইতে পারে না, সেই ৰূপ ঞ-ত্যহ কোন সময় নির্দ্ধিক করিয়া যথা নি-রমে শিশু সন্তানকে ধর্মোপ্রেশ প্রদান না করিলেও সে কোন ক্রমে ধর্মজন্ত লাভ করিতে সমর্থ হয় না। প্রতিদিনই বালক গণকে কোন নিৰ্দিষ্ট কালে ধৰ্মোপদেশ প্রদান করা আবশুক নিয়মিত উপদেশ বাহকার প্রতি বালক গণের যে প্রকার আদ্ধা জন্মে, সামান্য ব্যক্যের:প্রতি কথ্মন্ত্রী নে वाश करण हो। व्यटनक जारनके ब्रधान धरकत जत्मक श्रकात श्रमक रहेता बाह्य भवः जानक नमन जाना करते हैं छाराह शक्ति व्यक्ति পাত হয়, কিন্তু আন্ধা, পূৰ্বাক যে ব্যক্তি সেই বাংকার প্রতি মনোরোগ করে এবং वञ्ज भूक्षक जाहाटक अस्टब्स भारत करहे. <u>रमके जाराज क्या नाइफ पश्चिमात्री स्ता।</u> बिसमिङ छैलारपना काहा सामक और स्मानकार कर्म करन करत. कानावकरे वास्त्रिक्षत (ACTIVATION AND ADDRESS OF THE PARTY OF THE REFERENCE PROPERTY OF THE PARTY OF THE PARTY

ক্রিবার সময় " ধর্মা পালন ক্রিলে ক্লাণ रुप्त, कतर क्षापर्या (नवा कतिरवं व्यवक्र) घटते " जेवृत्र नश्याल बाका क्षरतार्थ मा क-বিয়া যে প্রকার ধর্ম পালন সামা বাদুশ অভ সংঘটন হইতে পারে এবং যজেপ অধর্ম কর্ম্মার। যে প্রকার অশুভ উৎপন্ন হইবার मखारमा, छारा वित्मय कतिला विवत्न क-রিলে শিশু সন্তান দিগের নেই উপদেশের **शक्ति चुउरे मत्तद्र आएत जटन जन्द जारा-**রা অবক্ষই তদমুষ্ট্রী কার্য্য করিতে চেউ। इट्डा य अकात धर्म कामा अनुष्ठाम কব্রিয়া বে শকল লোক যে প্রকার স্থ **ट्यांश कतियादम् जैवर एवल्य म**ेमादित সাধন করিয়াছে, ও অধার্মিক লোক ধর্ম পথ পরিভাগে করিয়া আপনার ए পृथितीत यामृण आएक छेरभामन कति-য়াছে, উপদিউ ছাত্র বা পুত্রদিগকে বিশেষ क्रिया उरम्भूगास्त्र निमर्गन धनर्गन করিলে ভাহারা স্থুস্পান্ট ৰূপে ধর্মাধ-শ্বের ভাৎপর্য্যাবধারণ করিতে পারে এবং ইচ্ছ। পূর্বেক ধর্মের শরণাপন্ন হইতে রও হয়। স্থানর বস্তর প্রতি শতঃ প্রীতি হওয়। মনুষ্যের যেমন শ্বভাবসিদ্ধ, মহৎ বিষয়ে প্রস্কার উদয় হওয়াও তাদৃশ প্রকৃতি মূলক। উপদেশক গণ যদি সমুচিত বাকা ছারা স্ব স্থ উপদেশ্য দিগের মনে ধর্ম্মের মহস্ত্র প্র-ভিষাত করিয়া দিতে পারেন, তাহা হইলে অনায়ানেই তাহারা ধর্মেতে একা করিতে উদাত হয় ৷ পুদ্র অথবা ছাত্রাদি উপদেক नगरक केन्द्रत कटब्रुत छेगरनम कतिवात नयत्र खाद्यां विरुद्ध क्रिके क्रिक्शित्त क्रिक শক্তি ও করুণার বিষয় বিশেষ করিয়া वर्गमकता विरथस, छाए। एट्रेंटन छेरानिटनात মনে আপনা হইতেই ঈশ্বরেডে আজা ভক্তির উদর হর এবং তাহা হইলে উহারা **व्यक्ष** शृक्षक कंगनीयरतत रक्षम मान्ती ভৌগ করিছে ব্যঞ্জ হয়। আলাটেয় गर्नेम भेगार्थरे जनावि भूगायत जनते गरियोत् नाक व्यापात्र कतिरस्टर, अवर স্বাক্ত বস্তুতিই ভীষ্টার জার পার্ক্ত ও কর नात किंद्र दिशीनामान आकाम जारेकार्यः, WHALL MINE ALL AND WHEN

কৰা এসজেই স্থানিবাকে ঈশার তক্ষ্যে उन्रात्म क्रिएक शास्त्रम, बदः छेङ श्रकान বিহিত উপদেশ ৰারা উপদিষ্ট দাজিও ক্রমে ক্রমে ঈশরের অপূর্যতত্ত্বাত ক-রিতে সমর্থ হয়। শিশু গণ বে অবস্থায় পিতা মাতা ও আচার্যোর নিকট হইডে অপরাপর বিষয়ের উপদেশ অবণ করে, পিতা মাতা প্ৰস্থৃতি যদি তৎকালে স্বীয় ৰ-क्षानिकारक विश्वि विधारम धर्मा उरखूत 🕏-भटनम करतन, जाहा हरे**ल कथन ल नमख** उপদেশ निक्ल इस ना। वालक गर्व नर्धम গুরু বাক্য দারা অপরাপর যাবতীয় নিষ-য়ের ভার লাভ করিতে সমর্থ হয়, তথ্য তাহার। বে বাক্য ছার। অবশ্বস্থ ধর্ম জ্ঞান-ও লাভ করিতে পারিবে, তাহা সহজেই 🕮-ভিপন্ন হইডেছে ৷

২।--- বিতীয়তঃ সক্ষান্ত প্রদর্শন। স্কা-স্ত প্রদর্শন ছারা বালক পণকে বেমন সহ-জে ধর্মা শিক্ষা প্রদান করিতে পারা বার, অন) কোন উপায় ছারাই বেৰপ পারা যায় না: খাঁহারা বিশেষ কপে মানব প্রকৃতি আলোচনা করিয়া দেখিয়াছেন, তাঁহারাই বিলক্ষণ জানিয়াছেন, যে কোন বাজিকে কোন বিষয়ের শিক্ষা দিতে হইলে কাৰ্য্য ঘারা ভাহার দৃ**উান্ত প্রদর্শন ক**রা কভ**দুর** পৰ্যান্ত কৰ্ত্তব্য এবং সেই কাৰ্য্যত উপদেশ কি পর্যান্ত ক্রমশালী হইয়া থাকে: বাক্য দ্বারা সহস্রবার উপদেশ করিলে যে উপকার না দৰ্শে, এক দৃষ্টান্ত প্রদর্শন দারা তাহা व्यमात्रादमङ् निक्ष हरे एक भारत। निर्मिष्ठः অস্প্রয়ন্ধ বালকেরা প্রকৃতি বিদ্ধ প্রবৃত্তি হেতু সভত্ত অনুকরণে রত! বালক পণ স্বাপিতা মাতা শুরু স্ক্ৎ এড়তি কর্ছ পক্ষীরদিগকে যে প্রকার বাক্য কহিতে 🛎-বৰ করে, সেই ৰূপ কথা কহিছে অভ্যাৰ করে, যে ৰূপ আচার ব্যবহার করিছে मर्जन करत, त्मारे क्षण आज्ञात रावहात अ-सुष्ठान कतिरण क्षेत्र रहा, अवर क्षेत्रा को-তৃক হাজালাপ ও অপরাপর রীক্ষি নীক্ষির विष्टां प्रमान क्षणांक करते, काम्य हे जान-नविक किया। कार्य । निका भावत व्यक्ति **अक्रमान विराम अक्रुक्ति कर्मन असम स्था**न

সহজেও বেষন সমূরে বালক দিগের খ-छाटब अटबन कटब, छोड़ोबिटनब उन्निक থাক। সমুদার কথনই সেরপ করিতে পারে না । বালক গণ শুরু জনের কার্বোর অ-নুকরণ করিতে গে প্রকার রত হয়, তাহা-নিধের উপদেশাল্পারে কার্য্য করিছে ত গ্ৰপ হয় না। অত্যাজ**চিন্ত শিশু গ্ৰ**িষে খালন আপন শুরুজন যুগের **উপদেশ বা**-দনাপেক: অনুষ্ঠিত কার্যোর অধিক অনুগত ক্ষ এবং তাহাদিগের **আচরিত কার্য্য সকল** हेका धृद्यक जन्माम करत, माना चारमहे ভাগার নিদর্শন বিদ্যমান রহিয়া**ছে।** বিচ-कर्न का 🤣 करतात्र सत्रामी**लन कति** ज्वाहे গাধার ভূরি ভূরি প্রমাণ প্রতাক্ষ করিতে भारतन । य भहितास्त्रद्ध क्षेत्रान भक्तीय स्था-কের! সকলে পৎক্রিয়ার অস্থান,সভা বাকা বাৰহার এবং নাায় দরা ও জীতি ভক্তি প্র-ভূতি উৎকৃষ্ট প্রের্ভি সম্পারের **অসুশী**লন করেন, ভংগরিবারত ক্ষুদ্র বালকেরাও তা-হার অন্তক্রণ করিয়া সর্বাদা সেই রূপ माधु अनुकेश्व रुट रह, जात याहाता भवान। শ্বদৎক্রিংরে অভুষ্ঠান, অসতা বাকা বাবেচার এবং দেখ জিবা দয় অহমরে দি কুপ্রবৃতি नकरततः अभूततः इधेत्। नाना श्रकातः व्यवसं কর্মা করিয়া থাজে, ভাষাদিগের সন্তান স-**স্থতি এবং শি**ষ। প্রভৃতি **অন্মকারী গণ**ও भाषना रहेट७ डेङ अकात यदमान्छान করিতে অভ্যাস করে। যে পরিবারের প্র-ধান পক্ষীয় লোক্দিণের মধ্যে সর্বাদা প্রণয় ও ঐকাভাৰ বিরাজ করে, তৎপরিৰারত্ব বালক বালিকারাও প্রান্ন তদনুষায়ী হইয়া অপেনারা পরস্পার প্রণয়ভাবে সম্বন্ধ থাকে এবং যে গৃত্ত কর্ত্ত বর্ণের মধ্যে পরম্পর দ্বেঘভাৰ ও অসম্ভাব সঞ্চারিত হয়, সেম্বল বাল্যকেরাও প্রায় তদনুৰূপ ভাব ধারণ ক-রে। যে পরিবারের প্রধান বর্গে নিক্ষত ব্রুলন বিদ্যার অনুশীলন করিয়াই কালক্ষেপ করে, তক্ত সন্তানগণও লববিং বিদ্যালুশীলন ক-प्रिय़ स्वी रूप, चात्र : (यक्त कर्फा निर्मन मरमा हेल्सि ऋरमत्र माधिक धार्म्याहरू चात्रः वाणकः विचादकां । हेस्सितः स्ट्रावंत क्रियाना क करिएक एक विकास अपने अवस्थित जान

ररटम रच मखाम कथान रम चाउ रेजनवारका रहेरा मार्ग भारमत असुक्रान कतिरा থাকে। পান দোষাজ্ঞিত বংশলাত কোন একটি কুত্র শিশুকৈ একদা পান পাত্রে जन शृरी कतिया मना भारतम् अञ्चलन क-রিতে দেখা বিরাছে। বৈ দকল শর্লমতি मिल प्रव भागम जानम खन जमस्य मर्क मा পশু हिश्मा ७ পশু वैधानि क्रिज़ी जी-मापिত रहेएँ अञाक बंदरं, जाराही च च क्रमें हो निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा क्रिकी है। রোপ করিয়া ভাল ছেদন বা কর্ডন পূর্ব্বক ক্ষাপনাদিসের ক্রিখাংশা ভূজিকে চরিতার্থ করে। অকপটচিত শিশুগণ যে আগন আপন গুরু জনের অকুষ্ঠিত কার্য্যের অকু-করণ করিতে খতই রত হয় এবং খনটোস পূৰ্বক তাহা অভ্যাস করে; এই ৰূপে তা-বার ভূরি ভূরি প্রমাণ দর্শাম ষাইতে পারে। সতএব ধাঁহারা আগন আপন পুত্র ও চা-ত্রদিগকে ধর্মাশকা প্রদান করিতে অভি-লাষ রাখেন, ভাঁহাদিখের অভে স্বীয় স্থভাব শোধন কর। উচিত। আপনি নিশাল না হইলে কখনই অনোর মালিন্য দূর করিতে পারা যায় না। যে ব্যক্তি কার্য্য ভারা<sup>্</sup> সর্বনা প্রদান করে, ভাহার কুকর্মের শিক্ষা भौतिक धर्माभरमम् बाता कि कन मर्निस्य? ধর্মশিকা কেবল মুখভারতি দারা কপন-ই সম্পন্ন হয় না, উহাতে কার্যাস্কান ু আবশ্রক করে। বে ব্যক্তি শ্বরং াসর্বন দা অধর্ম দেবা করিয়া কেবল কর্ম স্বারা পুত্র ও ছাত্রদিগকে ধর্মান্তুগত করিতে অ-ভিলাষ করে, ভাহার জুলা অবোধ আর কেইই নাই। ক্ষেত্ৰতে কণ্টক লডায় বীন্ধ-বপন করিয়া চম্পক পুষ্পা প্রাপ্ত ক্রবার আশা করা বেমন অসম্ভব ভাহার অভিনাব-ও তক্ৰপ অনসভ। «অস্ক বাজি পধ প্ৰদ-र्भक रहेरण त्यमन राखान्यम रहे, व्यवार्किक लाएक वर्ष निका खनान कतिएक हन करका-विक छन्नक क्ल क्लेश छर्छ। वीक्श्न कार्वाण्डं मास्र करात पृक्तिः। वर्षेत्रेक क THE CLASS WHEN THE VALUE OF THE PARTY. THE WHENCH WHEN THERET. PROPERTY AND PERSONS ASSESSED.

त्व, कांश्रा विश चत्रः गांगकृष हुई-ভে গারোখান করিতে না পারেন, তাহা रहेल भूकानिकह वा किवल कन्न्यां হইতে উদ্ধার করিয়া ধর্ম শিখরের চূড়াক্ষ্ করিবেন? পুঞাদি অহপাত্র গণ কোন ৰূপে ছজিরান্বিত না হয়, প্রার সমূব্য মা-**जित्र हे को, किंद्र मार्गिक मार्गि** কর্মা দোবে লে ইচ্ছা চরিভার্থ করিছেড পারে না। বে সংক্রিয়া সর্বতে সন্দর্শ-ন করিবার ইচ্ছা হয়, তাহা সর্বাত্যে জা-পনাতে দৃষ্টি করা কর্ডব্য এবং যে কুকিয়া অন্যেতে না থাকিবার প্রার্থনা, ভাহা অগ্রে আপনা হইতে দূর করা বিধের। স্বরং স-ৎক্রিয়ার অনুষ্ঠাতা না হইয়া সদসুষ্ঠিত হ-ইতে ইচ্ছা করা নিতাস্ত অনুচিত। ইচ্ছু যদি স্বয়ং মিউর্স স্থা হয়, তবে কি আর সে ক্থন অন্যকে মিউ করিতে পারে। বে ব্যক্তি আপনার মঙ্গল সাধন করিতে অক্ষয় হয়, তদ্বারা কি কখন অন্যের কুশল সম্পন্ন হওয়া শন্তব? কুপ পরিপূর্ণ না হইলে আর তাহার দলিল দারা অন্যত্র প্লাবিত হয় না। অতএব বাঁহারা অন্য ব্যক্তিকে ধর্ম শিক্ষা প্রকান করিয়া সংসারের মঞ্চল সাধন করি-তে ব্রতী হন, ভাঁহাদিগের দর্বন। স্বীয় স্থ-ভাবের প্রতি দৃষ্টি রাখা কর্ত্তব্য। জগতে ধর্ম বিস্তার করিবার যে সমস্ত পথ আছে, ভন্মধ্যে আপনি ধার্ম্মিক হওয়াই প্রধান পথ। আপনি ধর্মানুগত হইলে যে কেবল আপ-नात्रहे कुमल इश अमन नटह, धर्म मुक्तान धनर्मन बाता नश्मादात्र । हिंछ नाथन कति-তে পারা বার। স্থা বেদন খ্রং জ্যো-তিয়ান্হইয়া অক্ষাওকে ক্যোতিশয় করে, ৰাৰ্ষিক ৰাজিও দেই মণ ঘ্ৰকীয় ধৰ্ম প্ৰভা যারা দমত সংগারকে ধর্মরাধ্যে রঞ্জিত करतः। भत्रम कानवान् भन्नरमध्य वर्षाध-র্শের সহিত চমৎকার নিরম সংখাপন ক রিরাহেন। আপনি ধর্ম পথের পাছ হ-रेरन र नवान वहिंछ अपृष्टिक उत्पूर-गानी सहेता तारे गर्भ व्यवस्था नृप्यक जाकवी सर्वकाश रह, वार्षिक विद्यात अहे वर्ष गाम गूरकात वार प्राप्त वर्षहीत क रेका (र गुक्त कोवाजिक जात्वकान कर्मा

राज्ञन इथ्य खात्र करत, व्यथानिक मिरशत **এर हत्रम मख। अन्नीयत अनी** छ এই नि-র**ম লঞ্জন করাতে অনেক মনু**ষ্য **জ**গতে পাপ প্ৰৰাহ প্ৰবাহিত করিয়াছে এবং অ নেকে উক্ত নিয়ম পালন করিয়া সংসারকে ধর্ম ভূষণে বিভূষিতও করিয়াছে। অনেক ধার্মিক লোক স্থকীয় ধর্ম দুউান্ত স্বারা পুত্তাদিকে ধর্মামুগত করিয়া অমৃত কল ভোগ করিতেছেন, এবং অ্নেক অধার্শ্বিক মর্ব্য আপন অসদ্কীত লারা সভান স-ভতিকেও খসংপথ গামী করিয়া বিষম বিষে অর্জরীভূত হইতেছে। যে বিখ্যান্ত ও প্রতিপর পুরুষের প্রতিবছ জনে দৃষ্টি-পাত করিয়া কাল্যাপন করে, এবং বছ জনে বাহার অনুকরণ করিতে রও হয়,পাপ কৰ্মা হইতে ভাহাকে সৰ্ফাদা সভক ধাকা উচিত। তাছার পাপাচার বছবাক্তির পাপ ক্রিয়ার কারণ হয় এবং ভাহার পুণা-जरू जनःशः लाकरक जमूख कन क्षमान করে। যাহা হউক মানব প্রকৃতি আলো-চনা করিলে প্রভীতি হয়, যে ধর্মানুষ্ঠান বারা সদ্টোন্ত প্রদর্শন করা ধর্ম শিক্ষা প্রদানের এক প্রধান উপার।

৩।--ভৃতীয়তঃ সংসর্গ। বালক গণকে विश्उ विधारन धर्माणिका क्षपान कत्रगार्ध नम् छोत्र क्षत्रभव कता समन धानकक, **নেইৰণ ভাহাদিগকে স**ভত সংসংসূৰ্গে রক্ষা করাও নিতান্ত বিষেয়। সংমর্গের ক্ৰম দুকীন্ত অপেকা স্থান নহে, দৃষ্টাত্ত ৰারা বালক গণ বেমন অনায়াসে উভ্যাধম অবস্থা প্ৰাপ্ত হয়, সংসৰ্গ হেডুও সেই ৰূপ তাহাদিগের উন্নতি ও তুর্গতি ঘটিয়া থাকে। ৰঙ্গ হেতু মূৰ্য পণ্ডিভ হয়, পণ্ডিভ হাজিও পাণ্ডিত্য খুন্য হয়,ধাৰ্দ্মিক অধাৰ্দ্মিক হয়,ছঃ-শীল স্থূপীল হয় এবং সরল হ্যক্তিও কপটভা অভ্যাস করে ও কপট লোকেও সরলতা প্রাপ্ত হর। যে বালকের স্থভারতঃ মুস্পুরুদ্ধি সকল উত্তেলিত থাকে,তাহাকেও ক্রমাগত সংস্ কে ক্লো করিয়া নংখভাবাপন্ন করা বার এবং শ্ৰেক সংখ্ঞাৰ বিলিক সাধু বালকত কুৰংলকে লি**ক ক্**ইলা মঞ্চ গাড়ি প্ৰাপ্ত राज अवन् नारका देखा थानक काल करे

েট্ মনুষা মনে প্রদীপ্ত হইতে থাকে। কি বালক, কি যুবা, কি বৃদ্ধ, কেছই সভত একাকী কাল্যাপন করিয়া স্থী হয় না। युवा वाकि रामन वाशन नमवत्रक स्क्र অবের সংসর্গ ভিন্ন থাকিতে পারে না, বাল-কেরাভ সেইৰূপ এক বয়ক্ষ বালকের সহিত ্রী গাদি না করিয়াও **স্থির থাকিতে সমর্থ** क्श मा कि **स एक कार्य वालक नर्यमा** া অধিক কাল একতো বাস করে, **তম্বগে** বৰি অধিকাংশ শিশুর মন্দ স্বভাব ও কুচ-রির হয়, ভাষা হ**ইলে অবশিক বালকের**ও অংপল হ**ইতে মন্দ স্বভাব হইয়া উঠে।** সঞ্জী দিগের মধ্যে অধিকাংশে যে কার্য্য অনুষ্ঠান বা যে ভাব ধারণ করে, অবশিষ্ট ভাগ ভাষা না করিয়া কোন মতেই ক্ষান্ত খাকিতে পারে না। সহবাসী স্কৃৎ দি-গের অন্যুরোধ বিষম অন্যুরোধ, সে অন্ত-রেয়েধ বোধ হয় কেহই হেলন করিতে সমর্থ হয় না, সতত সম্চর বাহাবের সম্ভোষার্থে প্রায় কোন ক্রিয়াই অকর্ত্তবা ধাকে না। न-শ্চর দিখের সভোক কন্য কোন সময় নায়

কুড হয় এবং **অ**পরাপ**র সকল সাধু কর্মাই** পরিবজিত হইরা ধানে। সহবাদী স্থত্তং দিগের অসম্ভোব এমনি অসম বে লোকে তক্ষনা আর কর্তব্যাকর্তব্যের প্রতি কিছু-মাজ দৃষ্টিপাত করিতে পারে না। মন্ত্রুষ্য বরং ধর্ম পদবী পরিত্যাগ করিতে প্রস্তুত হয়, ভথাপি সহবাসী দিগের অসত্তোব ও অ-নাদর সহু করিতে সাহস করে না। যে কার্য্যের প্রতি নিভান্ত অপ্রকৃত্তিও স্বতি-শর অ্ঞান্ধ: থাকে যে কার্য্যকে অতিশন্ত গ ৰ্ফিত ও *নিন্দি*ত বলিয়া বোধ হয়, বাহার অনুষ্ঠান করা দুরে থাকুক, নাম অবণ মাজে মনেতে ঘূলা ও লজার উদর হয়, সম্বয়ক সঙ্গি দিগের অমূরোধে অনেক ব্যক্তিত-**अक्षण काशास्त्र ७ ५० हरेएक वाधा** रहा। সতত সহবাসী বৰ্জের সহিত সমভাবংশস হইবার প্রত্যাশার কড স্থাল **যালক বে** कत्म माञ्चन इन्मजिक्तत माभात हरेगा छ-তিয়াছে: ভাষার কংখ্যা করা করিকা পুরি াতি বত প্ৰসাদক ক্ৰেণ্টৰ সন্তুপ্ত বিষ্ণ মানু, আছে, বেগ্ৰহ্ন, ভাৰার অধিকাংশই नक कमा मक वहेताहरू । अधरम वावात मना পাৰের প্রতি নিভাস্ত বের ধাকে, এক বিচ্ছ স্থরাক্তার্শ করাকে বে পাপ কর্ম বলিয়া জানে, কিছুদিন পানাসক্ত পুরুষ দি-গের সংসর্গ করিলে সেওা এক জন প্রসি-দ নদাপায়ী হইয়া উঠে: যে স্কারিত ৰাধু পুরুষকে পরস্তী মাতৃৰৎ বোধ করি-তে দেখানিয়াছে, লম্পটের সঙ্গ বোষে শেই ব্যক্তিই আবার বিখ্যাত প্রদারাস-क बिला मुके स्टेशाइ। अहे बन न-ক্লোবে অনেক সত্য ব্ৰতাবলয়ী মন্ত্ৰা মিথ্যা কথা অভ্যাস করিয়াছে, অনেক সাধু বাক্তি চৌর্য্য রুদ্ধি অভ্যাস করিয়াছে, এবং অনেক দরাশীল লোকেও ভরত্তর নিষ্ঠুর ररेक्का छेठिकारह। कलाउः मक्र रहेकु स কত সাধু স্বভাব মনুষ্য কত প্রকার জ-ধর্মে লিপ্ত হইয়াছে, এবং কত অসাধু লোক সাধুত। লাভ করিয়াছে, তাহা সম্যক ৰূপে वाउन करा स्माधा बरह। यथन मः मर्भ कल মনুষ্যের উত্তমাধন ঘটনের প্রতি একপ প্রবল কারণ বলিয়া প্রতীয়মান হইতেছে, তখন ঋজু স্বভাব বালক গণকে ধর্ম শিক্ষা-व्यमान कंत्रलंद क्या ए गर्वमा छक्तमा-ধম সঙ্গের বিচার করা নিতান্ত আবশ্যক তাহাতে **আর সন্দেহকি? সরল স্বভা**ব শিশুগণ আপন সজী দিগের মধ্যে দশকন-কে যে কার্য্য করিতে দেখে ভাহার দো-ৰালোৰ বিচার না করিয়াই আপনা হইভে তাহার অনুষ্ঠান আরম্ভ করে। ধরিও কোন বালকের প্রকৃতি উত্তম হয়, এবং সহসা কোন কুকর্ম অমুষ্ঠান করিতে নাহন করে না, সক্লোবে ভাষারও স্বভাব ক্রমে मिलम रहेशा छेटठे. (जह भिरा ध्यथमकः क-বল নজীর অনুরোধে নিতাত অনিক্ পূৰ্ব্যক বে কাৰ্য্য অনুষ্ঠান করে, জনাগত দৰ্শন ও অনুষ্ঠান ছারা উক্ত কার্য্য ভাষার विकाकन व्यक्तांक रहेवा यात्र धवर शक्तिनाटम ক কুজিনা প্রায়িত্যান উন্না ভারান্ন করিন रवेता छेळ । करे बदन भरतक सहावितिक केलम नामक कृतरक शामक व्यवस बाता: किया तार इसाइक वामकान देनान

चनाकारम ज्यम रहे. त्मरे बन मरकत् छत्। पां करकर उक्षम स्ट्रेड नमर्थ स्तः। সহবাসী মিতা গণের প্রণয় ও সমাদর বেম-ন প্রার্থনীয়, তাহাদিগের অনাদর ও অঞ্চলা-ও তদ্রপ অসহ। বেদলের মধ্যে কোন অপকর্ম অনুষ্ঠিত হইলে সমুদার মিত্র এক-ত্রিত হইয়া সেই কুকন্মী বা কুকন্মীদিগকে তিরকার ও ভংশনা করে, সে ছলে কুক্রি-য়ার অনুষ্ঠান হওয়াই অসম্ভব। সহবাসী মিত্র দিগের অনাদর ও তৎসনা কুক্সী বালকের পক্ষে যেমন ঋকৃতর দও, গুরু জ-নের শাসন ও শিক্ষকের ভাড়না মে ৰূপ নহে। প্রণয় পরিচিত সহবাসী গণ কুকর্মা বেধীও সংকর্মানুরাগী **হইলে লো**কের অধর্ম ঘটনা হওয়া নিভান্ত অসম্ভব। অত-এব বালক গণকে ধর্ম শিক্ষা প্রদান কর-গার্থে তাহাদিগকে সর্বাদা সৎসংসর্গে রক্ষা করা সর্বতোভাবে বিধেয়। যাহাতে বা-লক গণের কুদংসর্গ ঘটনানা হয়, পিতা भाजात (महे नित्क नर्तन। मृष्टि ताथा छ-চিত এবং বাহাতে বিদ্যালয়েও কোন মন্দ শঙ্গ ঘটিতে না পারে, শিক্ষক গণের তা-হার প্রতি সর্বতোভাবে মনোযোগ করা কর্তবা।

৪া—চতুর্যতঃ উৎকৃষ্ট বৃদ্ধির পরিচালন ७ निक्षके दुखित नित्ताध कत्र। त्य मकन নিক্লফ বৃত্তি উত্তেজিত হইলে মনুষা অ-थार्भिक रश व्यवश य नमल उरक्रके अवृद्धि वनवर्षी रुरेटन यसूषा धर्मा भिषदा आद्रा-হৰ করিতে প্রারে, অতি শৈশবাবন্থা হই-তেই তাহাদিগের কার্য্য আরম্ভ হয় এবং অতি শিশু কালেই ভাহাদিগের হুদে বুদ্ধি প্রকাশ পায়, অভেএব ঐ সময় হইতেই বালক গণকে ধর্ম শিক্ষা প্রদান করিতে আরম্ভ করা আবশ্যক। উক্ত সময় ধর্ম শিকা প্রদান করিতে আরম্ভ করিলে অভি সহ-(करे वालक भगरक धर्म शर्थक शिक्क করা বাইতে পারে। শৈশবাবস্থা বৃহতে ৰাহার নিক্ষ বুজি সকল উত্তেজিত হুইয়া चारेरम अवर जेरकके श्रद्धां प्रश्निम निष्डम वजेरक बाटक, शतिशास जाबारक जेशाय-जाकि काका धर्य लिका क्षेत्रान करा प्रकार

কঠিন। অভএৰ ৰাহাতে ৰালকের কুঞ-রুক্তি সকল নিজেজ হইয়া ধর্ম প্রবৃত্তির अधीन इस अवर छेरकू के तृष्टि नकन करम अवना इहेश निकृष्टे वृक्ति मकनरक वर्षा-নিয়মে চালন করিতে পারে, প্রথম হইতেই পিতা মাতার সেই দিকে দৃটি রাখা ক-র্ভব্য। বে রুদ্ধি স্থীয় বিষয় প্রাপ্ত হইয়া সর্বদা চরিতার্থ হয়, তাহাই সম্ধিক তে-জিখিনী হয় এবং যাহা পুনঃ পুনঃ নিরাশ হয়, সে হৃত্তির আর কিছুমাত্র তেজ থাকে না। যে বালকের স্বাভাবিক ক্রোধাধিকা थाटक, ভाहाटक यनि সর্বাদা ক্রোধোৎপাদক বিষয় হইতে পৃথক্ বাখা যার এবং সভত প্রশাস্ত ভাবের উপদেশ দেওয়া বায়,তাহা হ-ইলে অবশ্বাই দিনে দিনে তাহার ক্রোধরুত্তি वलहोंना हड़ेटल थारक, अवर याहात लाख বুদ্ধি প্রবলা বোধ হয়, তাহাকেও ক্রমাগত লোভ জনক দ্ব্যাদি না দশাইয়া যাহাতে লোভের উদয় না হয় এমত ভাবে রাখিলে অবস্থা ক্রমে তাহার ঐ রম্ভি নির্ভ হইতে খাকে। এই ৰূপ নিয়ম অবলয়ন করিয়া नकल क्षकात्र .निकृषे वृज्जित्क हे निर्देश क-রিতে পারা যায় এবং সমস্ত ধর্ম প্রবৃত্তিরই তেজ সাধন করা যাইতে পারে। বিষয় পাইলেই মনোগত রুদ্তি লাঞত হয় এবং विषयात अञाव शहरताहे वृख्तितः किशिध তেজ মফ হয়। অতএব যে বৃদ্ধিকে নিরো ধ করা আবশ্রক এবং যে বালকের যে রুজি শ্বভারতঃ উত্তেক্তিত থাকার তাথার অধর্ম चंद्रेनात मञ्जादना, जाहात मन्युट्ग माहे বুদ্ধি উদ্ভেজক বিষয় উপস্থিত করা অস্ত্র-চিভ এবং ভাহাকে তদ্ধপ অবস্থাতেও রক্ষা করা অবিধি। আর পুজাদির যে সকল ধর্ম প্রবৃত্তি তেজস্বিনী হইলে তাহাদি-পের পুণ্য সঞ্চার ও পাপ ত্যাগ হওয়া সহক হয়, উলিখিত উপায় ছারা পুনঃ পুনঃ মেই দকল প্রবৃত্তিকে মার্জিডও বর্দ্ধিত করা আৰম্ভক। এই ৰূপ নিয়ম অবলয়ন করি-য়া প্ৰথম কাল হুইতে বালক গণকে ধৰ্ম निका धामन क्रिएड बाह्रड क्रिएम, छा-হানিধের মর্শ্বরত্ব লৌহ সম্পূর্ট অংশকাও মুক্ত করু ক্ষতের ক্লিডে ব্যু এবং কল্মিন কালেও

কোন বলে বিনটি বা অপক্ত ধইতে পারে मा। যে বিজ্ঞাও বিচক্ষণ পিতা বালকের বিদ্যারত্ত কাল পর্যান্ত প্রতীক্ষা না করিয়া প্রথম হইতেই উলিখিত প্রকার নিয়মে তা-হাকে ধর্মাশিকা প্রদান করিতে আরস্ত ক-রেন, ভাঁহার সন্তানাদি অনানাদেই পবিত্র ধর্ম ধ্ফেত্রে বিচরণ করিতে পারে এবং তিনি স্বরংও চরমে পরম কল ভোগ করে-কোন বালকই এক কালে উক্তম বা অধন হয় না, কেই জনমাগত নিক্লই বুভি দকলের অনুগত কার্য্য করিয়া অধঃপতন थां अ हत. क्र रा मध्यवृत्तित वभवकी ह-ইয়া ক্ৰমে ক্ৰমে উন্নতাবস্থায় উপনীত হয়। অতএব প্ৰথমকাল হইতেই যদি পিতা মাতা ও শিক্ষক গণ বালকের মনোর্ভির প্রতি দৃতি রাখিরা তাহাদিগকে যথাযোগ্য ৰূপে পরিচালিত করেন, ভাহা হইলে প্রথম হই তেই বালকের অধর্ম দংঘটন হইবার মু-লোৎপাটিত হইয়া যায়, এবং প্রথমাবধিই शर्म वीत्मत मः श्वान स्टेट्ड शास्त्र । बातक गर्भंत्र मरनातृष्डि मकन क्षथमाविध यिमिरक অবনত হয় পরিণামে আর সেদিক হইতে র্বজির পুনরাবর্জন হওয়া অতি কঠিন। অত-এৰ প্ৰথম হইতেই শিশু দিগের মনোরুদ্ধি শকল বর্থাবোগ্য রূপে পরিচালিত করিয়া ধর্ম্ম শিকা প্রদান করিতে আরম্ভ করা বিধের।

বালক গণের ধর্মাশিকা সম্পাদনের যে সকল মহৎ মহৎ উপায় আছে, যদিও তংসমুদায় এন্থলে সম্পূর্ণ রূপে উক্ত হইল
না, তথাপি বালকের পিতা মাতা ও শিক্ষক
গণ যদি পূর্বোলিখিত কএকটি উপায় অবলয়ন করিয়া যথানিয়মে তাহাদিগকে শিক্ষা
প্রদান করেন বোধ হয় তাহা হইলেও কিকিৎ উপকার দর্শিতে পারে।

পাপকর্মে মানব প্রকৃতির কি কি অনিষ্ট ইইতেপারে, তাহার সংক্রেপ বিবরণ !

১০০ সংখ্যা প্রকার ৮০ প্রকার কর্মার ইটা কি প্ররিভাগ, কি মুর্যধর ক্রিমার এই অবীক বিধারকার ক্রমান্তর্যাক্র

रहेटन ना, त्वकाटम एउडाइड माश इटाइन উৎপত্তি হয় নাই ও তাহার গরলময় কলের আহাদ কাহারে৷ অনুভূত হয়নাই ; ভ্রমাণ **छेहात नमुरक्ष**ं **डेच** नम कतिएड स्कर्ट रेक्श का बन्न करब मा वंदर भरनरक है " भाभ कर्त्र, जामानिरश्च चाछातिक धर्म " अहे मर्च एकी विषय **मरकात रूप मनिम मिदक ऐ**हात বর্জনেই অনবরত রত রহিয়াছে ! মন্তব্যের পক্ষে ভ্ৰম প্ৰমাদে পতিত হওয়া কিছু বি-চিত্ৰ কথা নহে ; কিছ উক্ত ৰূপ ভয়ন্তর ভ্রম স্থার কিছুতেই এত্যক্ষ হইবার নহে। পু-থিবীতে পাপ বে একটি মনের ভাবমাত্র প-ৰাৰ্থ, অমুষ্ঠাৰ ভারাই তাহার বিল্ফণ পরিচয় পাওয়া যাইতেছে; কিন্তু আশ্চ-র্যোর বিবর এই, বাহার নাম শুনিলে শক্তিত ও কম্পিত হওয়া উচিত, যাহা অপেকা অ-ধিক অনিউকর ও শোকাবছ ব্যাগার আর किङ्कु एउ इस्ट भारत मा, जाहाई चनाव-নিজ ও অত্যাবশ্বক কার্য্য বলিয়া লোকের निकटि अजीवनान इहेटल्टा अमन कि পাপাচরণে লোকে এতদূর আদর ও আ-গ্রহ প্রকাশ করে ধেন মনে করে উছা অভিপ্রায়সিভ। যদি প্রাদি প্রাণী বর্গের বর্ডমান অব-স্থার পরিবর্ত্তন হয়, যদি জন্ত মাত্রই আপন আপন প্রকৃতি নির্দ্দিউ প্রবৃত্তি নি-চরের অবাধা क्हेंग्रा উঠে, यनि नकत्त्रहें স্ব স্বভাবনিদ্ধ সংস্কার সমূহের বৈ-পরীত্যে বদৃচ্ছাচরণে প্রের্ভ হয়, ভাহা ररेटन नकन लाटकरे अक काटन विच्या विके रम नामर मारे, किन्न दुक्किवी म-মুবাদিগকে ক্দয়ক্তি বিবেকের অমৃত্নর भानन व्यवस्थान शृक्षक कुभागिशाविनी जा-चित्र व्यरताहरन अव्यानकृत्य निमध ७ वि-বমতর চ্ছাতপঙ্কে অনবরত বিলুপিত হ-ইতে দেখিয়াও কেচ্ই বিশ্বিত বা পরিতা-পাৰিত হয় না। বিশ্বিত হওরা দুরে ধা-কুক ঐ ৰল পশুৰৎ ব্যৰহারকে প্রস্কৃতিবিদ্ধ পুরুষার্থ সাধক জ্ঞান করিয়া, সকলে সম্বিদ क ज्ञानक छ जुन्ही जनर नावे कवित्रा शाक। क्ष के बादक वहानकात विकास नारहीत and the latest the second

আত্রর স্থানি প্রতিষ্ঠা লোকের দুঃপ্র
পারাবার উচ্ছবিত করিতেছে, কত কত
কপটথর্দ্মি স্থাপিরারণ পায়ওবাং নরল
ক্ষর মানবদিগকে অধর্মজালে আবদ্ধ
করতঃ বিশুক্ষ ধর্ম পদবীতে সঞ্চরণ জনিত
অনুপম স্থাম্বাদে বঞ্চিত করিতেছে, কত
কত দহ্য মুর্জিধারি পামরেরা জ্বণা অর্জ্জনিশৃহ। ও অত্যাকাজ্জা চরিতার্ধত। নিমিত্ত
করাল স্থাপিরতা পর্পরে দয়াকে বলিদান
করিয়া স্থলাতি শোণিত প্রবাহে বহুস্বারাকে
মাবিত করিতেছে,কে বলিতে পারে ? কিন্তু
তাহারাই আবার কৃতী, ধার্ম্মিক ও শৌর্যান্যালী বলিয়া সর্বত্র সম্মান ভাজন, পূজনীয়
ও খ্যাত্যাপম হইতেছে।

" এই ধরাতলই আমাদিনের সূথ দুঃ গ ভোমের স্থল, পরকালে স্থুখ তুঃখের ভোগ সমস্ত অলীকমাত্র, অতএব যে কোন উ-পারে হউক্ ঐহিক স্থুখ লাভের চেকা করাই সর্বাতোভাবে কর্ত্বা; মর্ণান্থে খার কাহাকে আপন শুভাশুভ কর্মের পরিচয় দিতে হইবে ? গ' ইত্যাকার ভয়-মর মতের অনুবর্তী হইয়াই পাপশীল মরেরা আপন আপন অভীক চুদ্ধত ক-र्ण्य अतृ इ इहेशा थाटक, मरमाह नाई। किन् যাঁহারা সদ্বিচার সংকারে উক্তরূপ সাংঘা-তিক মতের প্রভূত অনিষ্ট কল প্রভাক করিয়া উহা নিতাস্তই জান্তি মূলক বলিয়া 🕻 প্রতীতি করেন, তাহার: উক্ত মনুষা কুল বংহারের কারণ স্বরূপ সর্বান্থকর মতের नित्राक्तरण जवकारे काश्मरमावाका महका-বে যত্ন করিয়া থাকেন তাঁহারই আলোচনার্থ পাপকর্মে মানব প্রকৃতির কি কি ঘনিষ্ট হইতে পারে, ভাষার সংক্রিপ্ত বিবর্ণ বণন করা বাইতেছে।

ছড়জের অবস্তত্তাবী কল রোগ, শোক, পরিতাপ, নির্কেদ, আক্সানি প্রভৃতি ব-ছবিধ যন্ত্রণার ব্যাপার সমস্ত ধর্থন স্টরা-চর প্রত্যক্ষ গোচর হইতেছে, তথন ইয়া আনকোচে বলা ঘাইতে পারে বে, বৈ স-কল সমুক্ষ্য উৎকৃত স্থারালে আনা-দিলের মনোর্জা রঞ্জিত রহিয়াছে, অ-বৈশাস্থ্য প্রত্ত হুইলে সে স্কল্ট প্রভা-

পুনা ও কলকিত হইরা বার। - প্রথমতঃ আ-মানিগের অক্লডির একটি প্রধান অলভার খৰণ ৰে বৃক্তি, পাণকৰ্ম দারা তাহা ঞ ভুড **ধোবাজিভ হয়। শোপকারী ব্যক্তি**র: প্রগাঢ় জমান্ধকারে অন্ধীসূত হংরায় স্বপ্র-শক্ত যুক্তিমার্গ হইতে যে পদে পদে পরি-ভাষ্ট হইতে থাকে, তাছার ভূরি ভূরি উ দাহরণ প্রাপ্ত হওয়া থার। লোক মধ্যে বে কোন বিষয়ে বাহার সম্কু অভিরতি ণাকে, তাহা বিবেক সহক্রত যুক্তি**যুক্ত** বলিয়া সপ্রমাণ করিবার নিমিন্ত সে অ বশুই এয়াদ পায় সন্দেহ নাই, কিন্তু বিবেচনা করিয়া দেখিলে উক্ত ৰূপ অবধা প্রয়াদ ছারা অনেক স্থলেই যুক্তির বিশুদ্ধ শ্বৰূপে তুরুপনের কলক মাত্র অর্পিত হইয়া থাকে: খাহারা অভান্ত রূপণ স্বভাব ৰশ-তঃ প্রতি নিয়তই কেবল ক্ষতি লাভের প্রতি দৃষ্টি রাখিতে তৎপর থাকে, স্কুতরাং অর্থ লাপেক্ষ অভ্যাৰশ্ৰক বিষয়ের ব্যয়েও নঞ্ চিত বা প্রাপ্ত মুখ হইয়া আক্ষবঞ্চনা জ্ব-নিত অশেষবিধ ক্লেশ ভোগকরে,ভালারাভ তাদৃশ প্রত্যক্ষ বিরুদ্ধ বাৰহারের প্রতি যুক্তি প্রদর্শন করিতে ত্রটি করে না। লক্ষ্যলেশ পূনা যে সমস্ত ছুরাক ক্ষে মন্ত্র-ना मिन्नरक, ज्यापन छेभयुक डेशव्हिंड बद হার অসম্ভট হইরা সাধ্যাতীত উচ্চ পদ ব অসদৃশ সম্মান লাভে ব্যোচিভ ও ছুরভি সঞ্জি দ্বারা স্বাভীক্ট সংধলে সবিশেষ যত্রবান্ ক্টতে সচরাচর দুফি করা যায়, ভাহারাভ স্ব স্থ চেটিড বিষয়ে কোন মা কোন যুক্তি প্রয়োগ করিয়। খাকে। এমন কি বাছার: নিক্লফ রুজি নিচয়ের দাস হ**ইয়া সা**ধু**জন** বিগণ্ডিত অফিঞ্চিৎকর ইন্দ্রির স্থুখ সজোগে চিরকাল ব্যাসক্ত থাকে, তাহাদিগকেও কু-টবুদ্ধি সকলিত অযুক্ত অসদ্ যুক্তি ভারা আপন আপন অভিন্তিত জঘণা ব্যা-পার সকলের নির্দ্ধোধত্ব প্রতিপাদন ও ব-ছতর গুণ বর্ণন করিতে দুটি করা বার। এই ৰূপে লোক প্রবৃত্তির প্রচালোচন ষারা সবিশেষ অনুসন্ধান করিয়া দেখিলে অশেব মক্রময়ী যুগ্তির খে কতদুর তুর্গতি ইইডেছে, ভাষা বিশক্ষণ বোধগনা হইতে

পারে: ৮০ আহাবাল বে নহীয়নী নশক্তির ব প্ৰভাবে জীব স্থীয় মুখ্য ভাৎপৰ্য্য নিষ্ इडेट्डिइ, ए। इट्डि अधिकात्र बाकात्र बसू-वा कांजि कीव ध्यक विनया व्यवधातिक ও নিশীত হইয়াছে, বাহা বারা সদসংপ-দর্খ সকলের প্রকৃত ৰূপে প্রভেদ ইও-য়াই উচিত ; অধিক কি বলিব, বাহার 🤏-সাহাযো জুরবগাছ অধিল সং-সার তত্ত্বে মর্ম্মবোধে ও বিশ্ব সম্রাটে-র অভিপ্রেত অনন্ত জ্ঞান পূর্ণ প্রাকৃতিক विश्वमावितित यथार्थ ख्लान लाए जमर्थ स्हेत्रा পরম পুরুষার্থ প্রাপ্ত হওয়া বিধেয়, সেই বিশ্বসঞারিণী যুক্তিকে বিষয়াসক্ত পাপা-চারি নরাধম গণের ভার্মনাধনের উপবো-भी, अबर अयुक्त वाालादा क्षेत्रुक रह-থিয়া ধার্ম্মিক লোক দিসের অন্তঃকর-ণে কতই ক্লেশ অমুভূত হয়। উসস্ভ শোকেরা কোন অগপত কথার উলেখ বা अश्वकादिक राज्यकत वााशादतत अञ्चलेन করিয়া ভাহার পরিশোধন নিষিত্ত যেমন পূর্ব্বাপেক্ষা অধিকতর অসঙ্গত বছবিধ প্র-লাপ বাষ্ট্য প্রয়োগ ও অস্কৃত ব্যবহারে থা-রুত্ত হইয়া থাকে, পাপকারী ব্যক্তিরাও সেই ৰূপ অমানবোচিত নিভান্ত যুক্তি বি-কুল্ক কার্যোর অকুষ্ঠান করিয়া লোক ল-किर्णायी बिलाया भेगा हरेराज कता यडजूत शास्त कृष्युक्ति वाता आ-পন অমুষ্ঠিত ছক্ষর্মের কর্তব্যতা প্রতি-পাদ্ৰে সমুৎসূক ছইয়া কেবল শেষ উপহাসের আম্পান হয়। ফলতঃ ময় বিচার পরাঙ্মুখ অজ্ঞান লোক দিগের भाभ कर्षा ए वन्त्रीया करम अवृत्ति म्हिता थाटक, काशाटक केनारमब्रहे अकि चारका राज्य शतिए इस्टरा छाम अर्थ বিহংখিনী যে বিষম্বলী প্রকৃতির বশস্ত रहेल क्ष्मुया कांत्र बसूबा बॉलंकारे शतिन-निक रहेएक आदि मा, वाराद स्वताय विनी मर्माणालिकी फिरलक्षमाम किरमान्छ करेमा হিচাহিত চিকাল্ড শুডাগুড বিবেচনার ব্যক্তি হাইতে হয়, ভাহতক উদাৰ সৰস্থা-नाः अधिता चाह कि तथा पानेरक श्रीका है

## बराकात्रकः। जारनसः

HAPPY !-

देवनन्त्राप्तम करिएमम, क्रममञ्जू क्रमण् ন্ভাৰ্য রোধ পারবশ হইরা বিংহাসলো-পবিফ রালা বুবপর্কার নিকট উপস্থিত হ-ইলেন এবং কোন কথার ন্যান্তার না করিরা কহিতে লাগিলেন, নহারাজ 🗀 অবর্ণা ফ-রিলে তৎকণাৎ ভাষার কল ভোগ হয় লা. किंड तरहे जनमें जनरंगर जनुकाम कर्या-কে সমূলে নিশাত করে। যদি কর্তা খন্ত কল ভোগ না করিয়া বার, ভাহার পুত্র ঋ-থবা পৌত্রদিগকৈ ভাছার কল ভোগ করি-তে হয়। বুহস্পতিক্রম কচ আমার মি-करे जवात्रम कतिए जानिताहिन, ता व-র্মান্ত, নাধুনীল ও কুক্তাবাগরায়ণ; ভূমি জন্য ত্বারা তাহার প্রাণ বধ করিয়াছিলে। আপঞ্চি আবার ভোষার কন্যা আমার দেবয়ানীর প্রাণ বধান্দেশে ভাহাকে অস্ত্রকুণে নিক্ষে-প করিয়াছিল। এই সকল অভ্যাচার হ ইতে আইক কইয়াছে, এজনা আমি ডো-মাদিগকে পরিস্তাগে করিয়া ঘাইব। অতংপত ষার ভোষার রাজ্যে যাস করিতে পারিব ন। আমি যে সকল কথা বলি, ভূমি সে नमुकाहरक विका चार्या छेवा अवार्ण व-শিরা বোধ কর, নতুবা ভূমি তদলুসারে আ-পনার শোষ সংশোষনে বজুবান না হইয়া তদ্বিবরে উপেকা প্রদর্শন কেন কর। বুধ-পৰ্বা কহিলেন, হে ভৃত্তকুল ভিলক ! আ-মি কখন ভোষাকে অধাৰ্মিক বা মিখ্যা-বাদী দৰে করি বা, সতত ধার্ম্মিক ৰভাবাদী জান করিয়া থাকি। আমি কথন ভোষার প্রতি অবজ্ঞা প্রয়ণন করি না, স্বতএব কোপ করিও মা, স্বানার শ্রন্তি প্রসঙ্গ হও। যদি ভূমি খানাদিখনে পরি-ভাগে করিয়া আন্তাৰ বাত, ভাহা হইলে भागारको चात अर्कान अधि नाहे, चामहा गाधन गर्ड बार्डिंग कतिन। सक कहिएका, क्षाना नमुद्रावे बादन कहा, व किन्नि-नवाज्ञ रे अञ्चल कर्त, जानांत्र क्रमान् रह जा-नामम् क नपनाम करेग्राहरू कारा कामि क्य परिवर्ध चारित्र से, अर्थरक चारि অত্যন্ত জান্ধবানিশ্ব ব্যুক্তপান্তি বেমন ইলের পরস্থ সবাছ আমি তেমনি তোমার। বিদ্ধানাকে নতোমার হাকের রাখিতে ইক্ষাধাকে, জালা বইলে বেরনানীকে, প্রনাম কর, আমার দেবরানীগড় প্রাণ। স্থপর্যা কবি-লেন, যে তার্গব! অক্সর দিগের বাহা কিছু সম্পত্তি আছে, এবং ভূমগুলে গো, অব, ছ-তী প্রজৃতি বাহা কিছু আছে, ভূমি বে সমুন্দারের ও আমার কিছু আছে, ভূমি বে সমুন্দারের ও আমার কিছু আছে, ভ্রমি বে সমুন্দারের ও আমার কিছু আছে, ভ্রমি অর্বাহিত প্রানার কহিলেন, বিদ্ধানাম অনুরাহিত রাম্বার করিতে পারি।

অন্তরেশ্বর রুম্পর্কা শুক্রনচার্টের এই কথা শুনিরা তৎক্ষণাৎ তাহা অঙ্গীকার ক विरामन अवः एका हार्या (स्वत्रामीत वि-करि शिया कहे जरून कथा कानाहरलन। .(म्बदाती कहिरतन, (म लिछः! छपि (व च-ক্সরদিধের সময় সম্পত্তির অধীশর একখা রাজা স্বয়ং বলুক, নতবা আয়ার প্রতার জ-धिरवक ना । एक जा जाकारक अहे कथा जा-माहेलम्। जन्न वयश्रवा (प्रवस्तिरक क-হিলেন, ছে মধুর ছাসিনি! ডোমার যে কোন বশ্বতে অভিলাম থাকে বল, বদি ভাগ ছৰ্ম হয়, তথাপি আমি ভোমাকে তাহা अमान कवितः छश्चन (मन्यानी कहिरलन আহার অভিলাষ এই, শর্মিষ্ঠা সহস্র অন্তর কনা সহিত আমার দানী হউক : আমি भहितीका रहेना यक्षेत्र भक्ति ग्रहर गारेव, छ খন ভাষাকে আমার ব্যক্তিয়াহারে তথায় बाक्टक क्ट्रेटवक । उन्नभर्या भाग बर्किनी পরিকারিকারে কর্বিরান, ক্রমি যাও গীড়া **अधिकारक फ्रांतिसा जाता (त्रवसानी त्य** कामना कत्रिप्राद्धन, कामा नत्नाकन कत्रक । थाकी द्वाकात प्यारम्भ शारेका वर्षिकाद जि-क्ये विश्व करिय, डाकक्टना ! बाका (छा-महारू ज्याच्यान कविशास्त्रन, फेंग्सर विकडे রুলা, এবং, পিছে স্থালের মঞ্চলা রূর; স্কর্জা-हाजी द्ववद्वातील जन्नद्वादश लक्क्सक्य श-जिल्हाम कर्राता वार्रेडाहरूम : (क्लेशनीटक , কাৰ্য কৰিবায় ক্ৰিমিক আৰি ভোমাকে क्रिकार व्यक्तिमासका कर्ष शहरक रचे-' राष्ट्र) प्रविद्धाः करिएकम्, तम् (१ सामनः क

ब्रिटनक, मानि अधेवर प्राप्ता कतिन; चाह বেবহাদীকে প্রদায় করিবার মিমিলে গ্রাক্তও ৰাকা কৰিবেন, ভাষাও করিছে প্রাস্তুত আছি। व्यायात लाट्य एक ए प्रवेशामी व्य क्रान्त्र কুল ত্যাগ করিয়া বান, তাহা ক্লাচ ক্রিছিড मदर। धरे बनिया मर्चिका मिविकान मा-ৰচা ও দানী সহজ্যে পরিবৃতা হুইয়া সম্ভৱ অন্তঃপুর হইতে নির্গতা হইলেন, এবং দেব-वानीत निकटण डेशश्चि इसेग्रा कहिरसम. শুরু কন্যে! আমি দাসী সহত্র সহিত তোমার দাসী ভ্রয়া পরিচর্য্যা করিব এবং পাণিএছণের পর যুখন ডমি পতি গুছে যা ইবে আমি দাসী ভাবে তোমার সম্ভিবা शादत याहेव। जधन मिनतानी कहिलान: चाधि চাটकाর ও ভিক্কের कना, फूबि तांक कना। स्टेश कि करण आबात सानी ह-हैरव। नर्मिक्टी कहिरतन, शिकु कुरतात वि-পদ উপস্থিত হছলৈ যে কোৰ উপায়ে ভাষার প্রতিবিধান করিতে হয়, এলনা তোমার দাসী হইলাম : এই ক্রপে শর্মিকা দাশী ভাব স্বীকার করিলে দেবয়ানী পি-তাকে কহিলেন, ডাত! আমি অক্লোশ হ-रेशाहि, अकृत्य मशत्व आदयम कृतिएकि এখন বুরিলাম ডোমার বিদ্যাবল ও বিজ্ঞা-मनश चटमाच । कनाः कर्जक এই स्थ উক্ত ও দানব রাজ কর্ত্ত পুজিত হইয়া শুক্র स्केयत्न श्रुत श्रद्धम कवित्तव।

## **४) ऋश्या**शः

এই নবরে রাজা ব্যক্তি ছুগবায় নির্মান্ত ক্রীয়ান্তিনেন ৷ তিনি ছুগের ক্ষমুসর্বে ছুলে বলে অফা করিয়া লাভিশয় ঝান্ত ও পিলা নাম একাত অভিত্ত ক্রীয়া ললাক্ষক ক্রিকে ক্রিকে ব্যুক্তালনে পুন্রায় কেব প্রবেশেই উপস্থিত হইলেন। দেখিলেন,
নর্মালকার ভ্যিতা স্থরণা কমা সংল চারিদিকে বেউন করিয়া পরিচারিকাভাবে
অবস্থিতি করিয়া আছে, মধ্যদেশে এক স্থভুলানিনী কর্মাস্থলেরী কামিনী উপবিজ্ঞা
আছেন, এবং আর এক পরম স্থল্মরী কানিনী তাঁচার চরণ স্থক্রমা করিতেছে।

ताका छाशांपिएत मसीपवर्षी हेरे ता एवत्रानीटक महाधन कतियां कृष्टिलने स्व-क्षातः! ट्यामिनिश्य प्रिश्तां स्वामात स-त्रःकतरः स्वाप्त को जुश्त सिख्यानां कित्र कि को जुश्त अर्थात करें मश्चती दक्ष श्रेत खर रूपे कृषि अर्थाता करें मश्चती दक्ष श्रेत खर रूपे का क्षात वरण स्व श्रेष्ट महिला क्षात है। रूपे का किर्याल, स्वामि मिर्याल ममूगांय निर्यालय स्वत स्वमागार्थीत कर्मा, स्वामांत्र नाम प्रवस्ती: स्वास स्वामांत्र कर्मां, स्वामांत्र नाम प्रवस्ती: स्वास स्वामांत्र कर्मां, स्वामांत्र माने, स्वास श्रीत्र क्षात्र स्वास स्वास

स्रुनिश को दुकाविक हरेश बाला कि एकामा कतिराजन, स्वयनति ! इंनि त्राक्तका। इ-ইয়া কি কারণে তোমার পরিচারিকা হই-রাচ্ছন, জানিবার নিমিত্র আমার অভান্ত (कोङ्क्ल कमिट्डाङ । प्रवंशी किक्टलम, ষেত্রপা বিধি নিকাল থাকে সকলকেই ত-তদনুযালী কর্মা করিছে হয়; রাজকনার খে দালীভাবে আমার পরিচর্য্যা করা ভাহাও रेनरभिक्तमा मूलकः, वाज्यात रम विवस्स আপনি আর কোন কথা উপাপন করিবেদ না ৷ আপুনকার রাজার নাায় আকার ঐ-কার ও বেশ ভূষা দেখিতেছি, এবং আপনি পণ্ডিতের নায় বছন বিন্যাস করিভেছেন, খতএব ২লুন আপনি কে, কাহার পুত্র, ও কোথা হইতে আগমন করিতেছেন? যথাতি কহিলেন, আমি বাল্যকালে ব্ৰহ্মচৰ্য্য করিয়া সাজেপিক সমস্ত বেদ অধ্যয়ন ক-রিয়াছি: আমি স্বয়ং রাজা, রাজবংশে জন্ম গ্রহণ করিয়াছি, স্থামার নাম ধ্যাতি। ८वरामि कहिएलन, बर्गलाक वानि त्याम कार्यााणणरक धहे अस्तरण यागम्ब

করিরাটেছন, আনিতে বালনিক্রিনি রাজ্যা কহিলেন, তে কল্যানি। আনি হুপরা উল্লেখ্য রাজধানী হুইছে নির্মান্ত হুই, পরিভি শেবে পিথালার অভিজয় কান্তর হুইরা কল্পানাভিলাকে এই প্রবেশে উপরিয়াছি। কল্পানাভিলাকে এই প্রবেশে উপরিয়াছি। কলেক কণ ভোষাকিগের সহিত্য কথোপাকবন করিলাম একশে অমুষতি কর, প্রস্থান করি। তথন দেবরাদী কহিলেন, মহারাজ প্রায় এই তুই সহস্র কালী ও আমার প্রবিচারিণী শর্ষিটা সহিত ভোষার অধীন হুইলাম; অভংগর ভূমি আমার স্থা ও আমী হুইলে, দেবভারা ভোষার মুক্ত কর্মন।

দেবয়ানীর অকন্মাৎ এই ৰূপ আত্ম স-মর্পাণ অবলোকন করিয়া যথাতি সন্ধচিত হইয়া কহিলেন, হে শুক্ত তনরে ! ভূমি ভা-ল বিবেচনা করিতেছনা। আমি ভোষার বোগা পাত্র নহি। ভূমি ব্রাহ্মণ কন্যা, আমি ক্ষত্ৰিয় জাতি ; তোমার পিতা কথনই আ-মাকে কন্যা দান করিতে সম্মত হটুবেন না। **क्रियामी कहित्यम, महाहास्य**! ক্ষাত্রিয় উভয়ের পরস্পর ষেরূপ সম্বল তাহাতে আমার পাণিএছণ করা তোমার পক্ষে বিশেষ দুষণাধ্য নছে; বি-শেষতঃ তুমি শুরুং ঋষি ও ঋষির পুতা; আন-ভএৰ তুমি অসম্ভূচিতচিত্তে আমার পাণি গ্রহণ কর। রাজা ক**হিলেন, দেবরানী! চা**-রিবর্ট এক ব্রহ্মার অঞ্চ হইতে উদ্ভৱ হ-ইয়াছে যথাৰ্থ বটে; কিন্তু সকল বৰ্ণেব্লই ধর্ম ও আচার পৃথক্ পৃথক্। এই চারি ব-(र्वत माथा जाका नर्कात्यक्षे। जामि शैनदर्व ছইয়া কি ৰূপে শ্ৰেষ্ঠ বৰ্ণের কন্যা পরিজ্ঞাই ক্রিডে পারি। তথন দেবয়ানী কহিলেন. মহারাজ! পূর্ব্বাপর এই প্রথা প্রচলিত হ-ইয়া আদিতেছে, পাণি গ্রহণ করিলেই বি-বাহ ক্রিয়া সম্পন্ন হয়। সবে করিয়া সেখ যৎকালে আমি কুপে পতিত ছিলাম, ভুমি আমার পাণি এহণ করিয়াছিলে; এই জন্ম একৰে আমি ভোমাকে পতিত্বে বরণ করি-८७ कि । स्ट्राम विद्युष्टमा कतिहरू रमस् विद्युष्ट ভুলি স্থানার পঞ্জি ইইরাছা এক্ষেত্র স্থা নাজি वात कामात्र शाहि लाले अविदेशक प्राप्ति

## ত্ত্রবোধিনী পত্রিকার চতুর্থ কল্পের ত্তীর ভাগের নির্ঘণ্ট পত্ত।

| >७e मःখ्या <b>পৃষ্ঠ</b>                     | ু ১৭১ মংখ্যা পুত                                   |
|---|--|
| क्चरतम् महिमा-व्यवरशिक्तम्                  | भर्मा भिक्ता १७                                    |
| শক্ত ভূমি ও নরীচিক।                         | জ্বাহক্ষ্বিধান ১৬                                  |
| দহাভারত—আদিপর্ব ৭৪ অধায়                    | क्रेश्वरतत महिमा                                   |
| ১৬৬ সংখ্যা                                  | <b>বিপুরা রাহ্ম</b> সমাজের জ্জীয় সাধ্যস্থিক গভ ৮১ |
|   | মহাভারত—আদিপক গ্রহণায় . ৮০                        |
| ন্তেকি ১৩                                   | <b>&gt;१२ म</b> र्च्या                             |
| भेचरत्र महिमा-न्नारलिसिम >६                 | and thomas was to take                             |
| रिक्षान गर्छ। ১৮                            | जारभारकर्षविधान                                    |
| বিপুরা বাহ্য গরাজ পঠিত ভোক 🕠 🗦              | দেহেৰ সহিত আ চার সময় ১৯                           |
| ত্রিপুরাত্ব শাখা ব্রহ্মসমাজের বজ্তা ২১      | रिकानवाडी ১৯                                       |
| মহাভারতআদিপর্ক ৭৪ অগায় ২২                  |  |
| <b>১৬৭ সংখ্</b> য                           | ১৭৩ সংখ্যা   |
| কৰিকাডা ব্ৰাহ্মসমানের বক্তা ২৫              |  |
| क्रेश्रद्भव महिमाद्रमानिस्य ७ खारणिस्य . ३৮ |  |
| थ्यभर्म ၁২                                  | থাপ কৰ্মে নামৰ এফুডির কি কি                        |
| ম্যামন সিংহত ব্রাক্ষাসমাজের গ্রাপ্ত         | অনিণ্ট ছইতে পারে ভাহার ১ৎক্ষেপ                     |
| সাহৎস্ত্রিক বজাতঃ ০:                        |  |
| ১৮৮ সংখ্যা                                  | चारशांदकर्व विश्वास >• ६                           |
|   | ৰিন্দান বর্জে। ••• ১০৮                             |
| শীবাজার সহিত পর্যায়ার সম্বন্ধ ৩৭           | ्रीवयंत्री विवास                                   |
| সংরক্ষিত শব ১০                              | ) 348 <b>ग</b> ংখ্যা                               |
| रिकान गर्डा 53                              | থৰ্মনিকা ১১৩                                       |
| ১৬৯ সংখ্য                                   | क्षांट्यांटकर्व विभान >>৮                          |
| টশ্র জগতের আ্রায় ৪৯                        | মহভেরেত-আদিপর্ব ৭৮।৭৯ খালার . ১২১                  |
| ছুঞ্জিবিজন ৫১                               | シープ)16 万代電影  |
| মহাভারত—মাদিপর্ব ৭৫ অখ্যায় ৫৫              | অটাবিং শ সামংসরিক ব্রংগ্রনমন্ত্রের                 |
| नेश्वरद्वाशांगना ৫१                         | সমন্ত বিবরণ : • ৫                                  |
| . >৭০ সংখ্যা                                | 595 সংখ্যা   |
| के बद्दत महिमा-क्वाणिः                      |  |
| হিন্দুসাভির পূর্বানি—কুতব্যনার ৬৪           |  |
| यहां खाद्र छ- जानिशर्स १६ अथाय ७ <b>६</b>   | 1  |
| হিতৈৰিণী সভার দ্বিতীয়সাৰৎসরিক সভা ৭১       |  |

## অকারাদি বর্ণ ক্রনে তব্ববোধনী পাত্রকার হতুর ক্রেছের তৃতীয় ভাগের নির্মন্ট পত্র।

|                                   | मः थ्रा | Qui. | পূঠ        | करना  | 21               |
|-----------------------------------|---------|------|------------|---|------------------|
| क्षथर्ष                           | 599     | ,    |            | Francis   | ەردى⊹<br>ۋەردى⊹  |
| व्यादशादकर्य नियान                | 395     |      | 19         |   | ore<br>Selection |
| d h                               | ১৭২     |      | <b>F</b> A |   | 3 * *            |
| A &                               | 390     |      | 5.4        | বিধৰা বিবাহ   | >>-              |
| · · · · · · · · · · · · · · · · · | 3'9 B   |      | 5363       | \$ 1 man 1 man 2 ma | 33.              |
| मेशाइद्रगरिया — अवटलिक            | 7 > 6¢  |      | >          | বিশুরা ১৬৬  |                  |
| ঐ প্রশেষ্টিয় , .                 | 300     |      | 3@         | के अथ के . 500  | 2.               |
| 🖣 রুসনেন্দ্রিয় ও আর্গেন্দ্রি     | म ५७४   | • •  | ২৮         | ক কলিকাভঃ ১৬৭   | . R.C            |
| बे स्माडि                         | >9.     |      | 6.2        | र्ध गणमन्त्रिर ১৬৭  | - २४             |
| ঈশবের মহিমা                       | 595     |      | 9.20       | d from  | 77               |
| ঈশ্ব জগতের আগ্রয়                 | 242     |      | 6.9        | a second  |                  |
| ঈশ্বোপাসনা                        | 563     |      | 43         | of minimum more for any   | P.G.             |
| জীয়াখার সহিত                     |         |      | ·          | बस्याची प्रभावित्यः   | , E.F.           |
| পর্যাঝার সংস্ক                    | >65     |      | 29         | TELEVISION AND STREET   | •                |
| ব্যেক ়                           | 244     |      | 200.       | ৭৪ স্বধ্যায় ১৬৬  | 53.<br>S         |
| দৃষ্টি বিভাৰ 🕠 🦈                  | 202     |      | ¢ >        | वे १६ आधाम ३७३  | ee.              |
| দেধ্যে সহিত আত্মার                |         |      |            | के १७ जराच ३५०  | Ø₽.              |
| गण्या                             | >92     |      | **         |   | P-3.             |
| ধর্ম শিকা                         | 595     | ***  | 40         |   |                  |
| à à                               | 199     | • •  | 550        | S   | 8 @<br>#2        |
| à à                               | 9.6     |      | 5/39       |   | 819.<br>95.,     |
| ধার্মিকের সুখ ছবে 🤐               | J/9.2   |      | be         | famouston and Dill  | ,7°,<br>œ∎       |
| পাপ কৰ্মে মানৰ প্ৰাকৃ ব           |         |      |            | was an Fernance and the   | -                |
| ৰিকি অনিট হইতে পাৰে               |         |      | i          |   | 8 *              |
| ভাহায় সংক্ষেণ বিৰয়ণ             |         |      |            | তে এই তক্ষোধিনী প্রতিষ্ঠা, কলিকতা নগ  |                  |
| ·                                 | 230     |      | 288        | হোগানীকোঁৰিও তক্তবোধিনী সভার কার্যালয় হা   | द्भ              |
| ৰিজ্ঞান বাৰ্ডা                    | 300     |      | 25         | তে অভিমানে প্রকাশিত হয় :ইছার বুলা এক টাত   | ₹                |
| à à .:                            | ১৬৮     | ,    | 88         | ১ হৈছ শ্নিবার সম্ব: ১৯১৯ কলিগতাম :১৯  | i                |

সক্ত প্রবেশ মাস কইতে তল্পবোধিনী সভার প্রতি সভ্য প্রতি মাসে এইপত্রিকার এক খট বিনায়ল্যে প্রাক্ত করেন: